अर्हम् ।

प्रातःस्मरणीय पंजाबकेसरी न्यायांभोनिधि

श्रीविजयानन्दसूरिवरविरचित

॥ नवतत्त्वसङ्ग्रह ॥

तथा

उपदेशबावनी

संपादक

प्रो० हीरालाल रसिकदास कापडिया, एम् ए.

प्रथम संस्करण

वि सं १९८८] वीरसंवत् २४५८ [इ स १९३१

आत्मसंवत् ३६

मूल्य रु ४

प्रकाशक-हीरालाल रसिकदास कापडिया
भगतवाडी, भूलेश्वर,
मुंबई

मुद्रक-रामचन्द्र येसू शेडगे,
निर्णयसागर मुद्रणालय
२६।२८, कोलभाट लेन, मुंबई.

न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानन्दसूरिपट्टधर श्रीमहावीर जैन विद्यालय मुंबई, श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब गुजरांवाला, श्री वरकाणा पार्श्वनाथ जैन विद्यालय (मारवाड) इत्यादि अनेक संस्थाओंके उत्पादक

आचार्य १०८ श्रीमद्विजयवल्लभसूरिजी महाराज.

जन्म वडोदरा	दीक्षा राधनपुर	आचार्यपद लाहोर
सं. १९२७ कार्तक सुदि २	सं. १९४३ वैशाख सुदि १३	सं. १९८१ मागशीर्ष सुदि ५

पालनपुरनिवासी पारी डाह्याभाई सूरजमल तरफथी तेमना वडील बंधु स्व. झवेरी मणिलाल सूरजमलना स्मरणार्थ

निवेदन.

सवेगी दीक्षा अगीकार कर्या पहेला परतु ढुढक (स्थानकवासी) मतना परित्यागनी भावनाना उद्भव अने स्थिरीकरण बाद प्रथम कृति तरीके जेनी विश्वविख्यात पजावकेसरी न्यायांभोनिधि श्रीविजयानन्दसूरीश्वरना वरद हस्ते 'विनोली'[1] गाममा वि स १९२७ मां रचना थइ ते आ नवतत्त्वसंग्रहने प्रकाशित थयेलु जोइ कोइ पण सहृदयने आनद थाय ज तेमा पण वळी मारा सद्गत पिताना सतीर्थ्ये अने धर्मस्नेही तेमज मारा प्रत्ये पूर्ण वात्सल्यभाव राखनारा आचार्य श्रीविजयवल्लभसूरिए 'मोहमयी' नगरीमा अग्र स्थान भोगवता श्रीगोडीजी महाराजना उपाश्रयमा आपेला सदुपदेशनु आ मुख्य परिणाम छे[2] ए स्मरणमा आवता मारा जेवाने अधिक आनद थाय छे. अगाउथी ग्राहक तरीके नाम नोंधावी नकल दीठ चार रुपिया श्रीविजयदेवसूर सघ (पायधुनी, मुंबई)नी पेढीमा भरी जे ग्राहकवर्गे आ प्रकाशनमां जे आर्थिक प्रोत्साहन आप्यु छे तेटले अशे आ प्रकाशनरूप पुण्यात्मक कार्यमा तेमनो हिस्सो छे, एम मारे कहेवु ज जोइए. आ कार्यमां २५१ नकलो नोंधावानी जे पहेल श्रीविजयदेवसूर सघनी पेढीना कार्यवाहकोए करी ते बदल तेमने धन्यवाद घटे छे. विशेषमा प्रकाशन माटे रकम एकठी करी आपवामा ए पेढीना ते वखते मेनेजिंग ट्रस्टी तरीके श्रीयुत मणीलाल मोतीलाल मूळजी तरफथी ए पेढी द्वारा जे अनुकूलता करी आपवामा आवी तेनी आभारपूर्वक नोंध लेवामा आवे छे आ ग्रथ धारेला समये बहार पडवाना कार्यमा केटलाक अनिवार्य प्रसगोने लइने जे विलम्ब थयो ते बदल हुं दिलगीर छु आ ग्रथ तैयार करवामा जे हस्तलिखित प्रति मने काम लागी छे ते झडियाला गुरु (Jandiala Guru) ना भडारनी ७४ पत्रनी छे, तेमज ते कर्ताए स्वहस्ते लखेली जणाय छे एमा पीळी हरताळनो केटलेक स्थळे उपयोग करायो छे, अने कोइक स्थळे ग्रन्थकारे पोते तें सुधारेली जोवाय छे. आ प्रति मने मेळवी आपवानु जे स्तुत्य कार्य श्रीविजयवल्लभसूरिए कर्यु ते साहित्यप्रचार अगेनी तेमनी सक्रिय सहानुभूतिना प्रतीकरूप छे एम कह्या विना नहि चाले आ प्रमाणे आ ग्रथना प्रकाशनकार्यमा तेमनी तरफथी जे विविध प्रकारनो सहकार मळ्यो छे ते बदल हुं तेमनो अत्यत ऋणी छु एना स्मरणलेश तरीके आ संस्करणमां तेमनी प्रतिकृतिने सानद अग्र स्थान आपु छुं[3] दक्षिणविहारी मुनिराज श्रीअमरविजयना विद्वान् शिष्य मुनि श्रीचतुरविजये आ ग्रन्थना १३६ पृष्ठ सुधीनां द्वितीय वेळाना शोधनपत्रोनी तेमना उपर मोकलायेली एकेके नकल तपासी मोकली छे ते बदल तेमनो सानद उपकार मानवामां आवे छे.

---

१ आ संबधमा श्रीविजयवल्लभसूरि कहे छे के—"चौमासे बाद हुशिआरपुरसें विहार करके दिल्ली शहर तरफ गये, और संवत् १९२४ का चौमासा, दिल्हीसें विहार करके जमना नदीके पार "विनौली" गाममे जा किया, जहां भी कितनेही लोकोने सनातन जैनधर्मका श्रद्धान अंगीकार किया इस चौमासेमें श्रीआत्मारामजीने "नवतत्त्व" ग्रथ बनाना शुरू किया; संवत् १९२५ का चौमासा श्रीआत्मारामजीने "बडौत" गाममें किया, जहां "नवतत्त्व" ग्रथ समाप्त किया, जिस ग्रथको देखनेसेंही ग्रथकर्त्ताका बुद्धिवैभव मालुम होता है"

आ टिप्पणमा ग्रन्थ 'बडौत'मां सं १९२५ मां पूर्ण थयानो जे उल्लेख छे ते विचारणीय छे आ संबंधमां श्रीविजयवल्लभसूरिनु सादर लक्ष्य खेंचता तेओ सूचवे छे के "मने जेवु याद रहेल तेवु लखायेल, कारणके आचार्यश्रीना स्वर्गवास पछी जीवनचरित्र लखवामां आवेल छे एथी स्खलना होवानो संभव छे. माटे ग्रथकार पोताना हस्तलिखित पुस्तकमां ज पोते जे संवत् लखे छे ते ज खरो समजवो"

२ जुओ "श्री आत्मानद प्रकाश" (पु. २७, अं २, पृ ३९-३८). ३ एमनी शुभ नामावली अंतमां आपेली छे

श्रीयुत लालचद खुशालचंद (बालापुर) तर्फसे गुरुभक्तिनिमित्ते

योगा भोगानुगामी द्विज भजन जनि शारदारक्ति रक्तो,
दिग्जेता जेतृजेतामतिनुतिगनिभि पूजितो जिष्णुजिह्वै ।
जीयाद्दायादयात्री खलबलदलनो लोललीलस्वलज्ज
केदारौदास्यदारी विमलमधुमदोद्दामधाम प्रमत्त ॥

Lakshmi Art Bombay

वेदान्तादि दर्शनशास्त्रोनु अध्ययन करवानी एमने सोनेरी तक मळी विविध दार्शनिक साहित्य तेमज व्याकरणादिनो अभ्यास थता यथार्थ सत्यनुं एमने दर्शन थयु. आथी खोटी रीते मूर्तिपूजादिनो अपलाप करनारा ढुंढक मतनो एमणे परित्याग कर्यो. केटलाक कदाग्रही स्थानकवासी साधुओए अने गृहस्थोए एमने हेरान करवामा कचास न राखी, परंतु ए बधा कष्टो तेओ समभावे निर्भयतापूर्वक सहन करी गया, केमके "सत्ये नास्ति भयं क्वचित्" ए वाक्य उपर एमने पूर्ण श्रद्धा हती. एमने एवो अटल विश्वास हतो के जो हुं साचे मार्गे चालु छु तो समग्र ब्रह्माण्डमां एवी कोइ शक्ति नथी के जे मने नाहक सतावी शके. स्थाने स्थाने जैन धर्मनो विजयडंको वगाडता अने अनेक स्त्रीपुरुषोने सन्मार्गे दोरवता एओ पंजाबमाथी [१]१५ साधुओ साथे नीकळ्या अने श्रीअर्बुदाचळ, श्रीसिद्धाचळ (पालीताणा) वगेरे तीर्थोनी यात्रा करी 'अमदावाद'मा वि. सं. १९३२ मा पधार्या. आ समये वेष तो ढुंढक साधुनो हतो. केवळ मुखवस्त्रिका उतारी नाखवामा आवी हती. अहीं गणि **श्रीमणिविजय** महाराजश्रीना शिष्य मुनिरत्न गणि **श्रीबुद्धिविजय (बुटेरायजी महाराजश्री)** पासे एमणे तपागच्छनो वासक्षेप लीधो अने एमने गुरु तरीके स्वीकार्या. आ समये एमनी उमर ३९ वर्षनी हती. दीक्षासमये **आनन्दविजय** एवु एमनुं नाम राखवामा आव्युं, परंतु **आत्मारामजी** ए ज पूर्वेनु नाम विशेषतः प्रचलित रह्यु एमनी साथे आवेला १५ साधुओ एमना शिष्य अने प्रशिष्य बन्या 'अमदावाद'थी विहार करी विविध तीर्थस्थानोनी यात्रा करता, मतांतरीय विद्वानो साथे शास्त्रार्थ करी तेमने निरुत्तर करता, जैन शासननी विजयपताका देशे देशे फरकावता, अने स्याद्वादमार्गना यशःपुंजनो विस्तार करता तेओ वि सं १९४३मा 'सिद्धाचळजी' आवी पहोच्या. बहु जनोनी प्रार्थनाथी एमनु चातुर्मास अहीं ज थयु. एमनो सत्यपूर्ण अने सारगर्भित [२]उपदेश, एमनु निर्मळ अने निष्कलंक चारित्र, एमनी अद्भुत प्रतिभा, विश्वधर्म बनवानी योग्यतावाळा जैन धर्मना प्रचार माटेनी एमनी तालावेली इत्यादि एमना सद्गुणोथी आकर्षाइने एमना दर्शन-वन्दनार्थे तथा तीर्थयात्राना निमित्ते विविध देशोमाथी आवेला लगभग ३५००० सज्जनो समक्ष देवोने पण दुर्लभ अने अनुमोदनीय 'आचार्य' पदवी श्रीजैन संघे एमने उत्साह अने आनंदपूर्वक अर्पी अने एमनु **श्रीविजयानन्दसूरि** एवु नाम स्थाप्यु वि. सं. १९४५ मा एमणे 'महेसाणा'मा चातुर्मास कर्युं. आ समये संस्कृतज्ञ डॉ **ए. एफ्. रुडॉल्फ हॉर्नेल्** नामना गौरांग महाशये एमने जैन धर्म संबधी

---

१ एमनां नामो नीचे मुजब छे—

(१) विश्नचंद (लक्ष्मीविजय), (२) चंपालाल (कुमुदवि०), (३) हुकमचंद (रंगवि०), (४) सलामतराय (चारित्रवि०), (५) हाकमराय (रत्नवि०), (६) खूबचंद (संतोषवि०), (७) घनैयालाल (कुशलवि०), (८) तुलसीराम (प्रमोदवि०), (९) कल्याणचंद (कल्याणवि०), (१०) नीहालचंद (हर्षवि०), (११) निधानमल्ल (हीरवि०), (१२) रामलाल (कमलवि०), (१३) धर्मचंद (अमृतवि०), (१४) प्रभुदयाल (चन्द्रवि०) अने (१५) रामजीलाल (रामवि०)

अत्र कौंसमां सूचवेलां नामो संवेगी दीक्षा लीधा बाद पाडवामां आव्यां हतां

२ ज्यारे एओ उपदेश आपता त्यारे कोइ प्रश्न करतो ते तेओ पूर्ण गंभीरताथी सांभळता अने तेनो शांत चित्ते संतोषप्रद उत्तर आपता प्रश्नकार स्वधर्मी होय के परधर्मी होय, जिज्ञासु होय के टिखली होय परंतु तेनु दिल दुभाव्या विना तेओ तेने संतोष पमाडी निरुत्तर बनावता आ संबंधमां जुओ **सरस्वती** मासिक (भा १६, खण्ड १) तेमज एमांथी उद्धृत **संक्षिप्तजीवन** (पृ ११-१५)

लाक प्रश्नो 'अमदावाद'निवासी श्रावक शाह **मगनलाल दलपतराम** द्वारा पूछ्या. एनो उत्तर ता ए महाशयने पूर्ण संतोष थयो. त्यारबादना प्रश्नोत्तरोनु सक्रिय परिणाम शु आव्युं तेना जिज्ञासुने हॉर्नेल्ने हाथे संपादन थयेला सटीक **उपासकदशांग**मा ए विद्वाने जे कृतज्ञताप्रदर्शक निम्नलिखित आ सूरिवरने उद्देशीने रच्या छे तेनु मनन करवा हु विनवु छु.—

"दुराग्रहध्वान्तविभेदमानो !, हितोपदेशामृतसिन्धुचित्त ! ।
सन्देहसन्दोहनिरासकारिन् !, जिनोक्तधर्मस्य धुरन्धरोऽसि ॥ १ ॥
अज्ञानतिमिरभास्कर–मज्ञाननिवृत्तये सहृदयानाम् ।
आर्हततत्त्वादर्श–ग्रन्थमपरमपि भवानकृत ॥ २ ॥
आनन्दविजय ! श्रीमदात्माराम ! महामुने ! ।
मदीयनिखिलप्रश्न–व्याख्यात ! शास्त्रपारग ! ॥ ३ ॥
कृतज्ञताचिह्नमिद, ग्रन्थसंस्करण कृतम् ।
यत्नसम्पादित तुभ्य, श्रद्धयोत्सृज्यते मया ॥ ४ ॥"

वि. स. १९४८मा आ डॉ. हॉर्नेल् महोदय एमना दर्शनार्थे 'अमृतसर' आव्या. अहो तेमनी जनता ! वि. स. १९४९मा 'चिकागो'मां भरवामां आवनार सर्वधर्मपरिषद्ने अलंकृत करवानुं एमने ामन्त्रणपत्र मळ्यु, प्रतिकृति तेमज जीवनचरित्र माटे पण अभ्यर्थना करवामां आवी. परंतु नौकानो ाश्रय लीधा विना 'अमेरिका' जवु अशक्य होवाथी, श्रीयुत **वीरचंद राघवजी गांधी** बार् ऍट् लॉ ए हाशयने पोतानी प्रतिकृति, सक्षिप्त जीवनचरित्र अने जैन सिद्धान्त विषयक निबध आपी पोताना प्रतिनिधि रीके पसद कर्या. थोडो वखत पासे राखी एमना सुवर्ण जेवा ज्ञानने श्रीविजयानन्दसूरिए सुगन्धनो ोग अर्प्यो. 'मुबइ'ना जैन सघे श्रीयुत **गांधीने** अमेरिका मोकल्या. "The World's Parliament f Religions" नामना पुस्तकना २१ मा पृष्ठमा एमनी प्रतिकृति आपी निम्नलिखित उद्गारो मुद्रित राया छे.—

"No man has so peculiarly identified himself with the interests of the *Jain* community as Muni *Ātmārāmji* He is one of the noble band sworn from he day of initiation to the end of life to work day and night for the high mission hey have undertaken He is the high priest of the *Jain* community and is ecognised as the highest living authority on *Jain* religion and literature by oriental scholars".

वि स. १९५३ ना जेठ मासनी सुद बीजे 'गुजरावाला' गाममा एओ आव्या. आ समये याना जैनोए एमनु अपूर्व स्वागत कर्यु ज्वराक्रान्त देह होवा छतां एमणे धर्मोपदेश आप्यो, परतु आ एमनो अतिम उपदेश हतो हवे फरीथी 'भारत'वर्षना भाग्यमा आ महात्मानो ब्रह्मनाद श्रवण करवानो सुप्रसग मळे तेम न हतु सैसमीनी रात्रिए नित्यकर्म समाप्त करी सूरिवर्य निद्राधीन बन्या. एम करतां बार वाग्यानो समय थयो. आ वखते दशे दिशामा शान्तता अने निश्चलतानु साम्राज्य स्थपायेलु हतु कायर मृत्युमा एवी ताकात न हती के आ महर्षिना अखंडित तेजनी ते सामे थइ शके.

१ जे समये महाराजश्रीनो स्वर्गवास थयो तेवारे अष्टमी घती हती, एथी एमनी निर्वाणतिथि अष्टमी गणाय छे

आथी ते धीरे धीरे गुप्त रूपे पोतानी कुटिल जाळ पाथरी रह्यो हतो. निर्भय सूरिवर तो क्यारना ए स्वस्थ बनी मृत्युनु स्वागत करवानी तैयारी करी रह्या हता. आवे वखते पण एमना शरीरनी शोभा चन्द्रकान्तिने हास्यास्पद बनावी रही हती. एमना मुखमाथी 'अर्हन्' शब्दनो दिव्य ध्वनि नीकळी रह्यो हतो सामे बेठेलो शिष्यपरिवार आ सर्वोत्तम नादनुं उत्सुक हृदये पान करी रह्यो हतो. एटलामा समय पूरो थयो. लो भाइ अब हम जाते हैं, अर्हन् एम कहेता कहेता ए सूरीश्वर स्वर्गे संचर्या. मनोहर रात्रि भयानक रूपे परिणमी शात रस करुणरूपे परिवर्तन पाम्यो. बीजे दिवसे एमना देहनो अग्निसस्कार करवामां आव्यो. आ प्रमाणे एमना स्थूल देहनो अस्त थयो, परतु साधुताना साचा आदर्शनी ए ज देह द्वारा आचरी बतावेल ज्योति तो सदाने माटे उदयवती बनी गइ.

आ प्रात.स्मरणीय सूरिवर्य विद्वानोना नि सीम प्रेमी हता. [1]विद्याव्यासगने लइने एमने हाथे बहु ग्रंथोनो उद्धार थयो छे. अनेक जनोने एमणे सन्मार्गी बनाव्या छे. तेमां खास करीने 'पजाब' देश उपर एमनो पारावार उपकार छे. ए देशने उद्देशीने एमने जैन धर्मना जन्मदाता तरीके सबोधी शकाय. एमनी यश.पताकारूप त्याना अनेक जैनमदिरो आजे पण आ वातनी साक्षी पूरी रह्या छे 'सिद्धाचल'मां एमनी पाषाणमयी प्रतिमा स्थापवामा आवी छे ए एमना प्रत्येना सज्जनोनो प्रेम जाहेर करे छे. अमदावाद, पाटण, वडोदरा, जयपुर, अबाला, लुधियाना वगेरे स्थलो एमनी मूर्ति तेमज चरणपादुकाथी विभूषित बन्या छे ए एमनी धर्मसेवानो प्रताप छे. 'गुजरावाला' शहेरमा एमनी स्मृतिरूपे भव्य समाधिमदिर बनाव्यु छे ए त्यांनीं जनतानुं मन एमनी तरफ केटलुं आकर्षायेलु हतु ते सूचवे छे.

जैन साहित्यने समृद्ध बनाववा तेमणे केवो सतत प्रयास कर्यो छे ए तेमनी नीचे मुजब **तत्त्वनिर्णयप्रासाद**गत जीवनचरित्रने आधारे रजु करातो विविध कृतिओ कही रही छे.—

(१) **नवतत्त्वसंग्रह** स १९२४-२५, (२) **आत्मबावनी** स १९२७, (३) **चोवीसजिनस्तवन** स. १९३०, (४) **जैनतत्त्वादर्श** स १९३७-३८, (५) **अज्ञानतिमिरभास्कर** स. १९३९-४१, (६) **सत्तरभेदी पूजा** स. १९३९, (७) **सम्यक्त्वशल्योद्धार** स. १९३९-४१, (८) **वीसस्थानक पूजा** स १९४०, (९) **जैनमतवृक्ष** स. १९४२, (१०) **अष्टप्रकारी पूजा**. स १९४३, (११) **चतुर्थस्तुतिनिर्णय** (भा. १) स. १९४४, (१२) **श्रीजैनप्रश्नोत्तरावली** स. १९४५, (१३) **चतुर्थस्तुतिनिर्णय** (भा २) स. १९४८, (१४) **नवपदपूजा** स. १९४८, (१५) **स्नात्रपूजा** सं. १९५० अने (१६) **तत्त्वनिर्णयप्रासाद** स १९५१.

अतमा एटलु ज निवेदन करीश के आत्मभावमां रमण करनार **श्रीविजयानन्द** सूरीश्वरनो जन्म सार्थक थयो छे जेमने एमना दर्शननो लाभ मळ्यो छे तेमनी नेत्रप्राप्ति सफळ थइ छे. जेमने एमनो सुधामय उपदेश साभळवानी तक मळी छे तेमना कर्ण धन्यपात्र छे. जे माताए आ सूरिरत्नने जन्म आप्यो तेमने सहस्रश धन्यवाद अने वन्दन घटे छे. जे जैन सघे एमनु गौरव कर्युं छे ते विचक्षण संघने मारा प्रणाम छे. जे 'भारत' भूमि आवा महात्माओनी जीवनभूमि बने छे-ते बहुरत्ना वसुन्धरा सदा जयवती वर्तो.

---

[1] सन्मतितर्क जेवा प्रौढ ग्रन्थनु एमने पठन कर्युं हतु एम माननानां खास कारणो मळे छे

[2] २०००० स्त्रीपुरुषोने धर्ममार्गे चडाववा उपरांत एमणे केटलाए स्थानकवासी साधुओने पण जैन धर्मनी प्रशस्त नौकाना कर्णधार बनाव्या [3] उपदेशबावनी ते आ ज होय एम जणाय छे

विषयानुक्रम

जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानन्दसूरि (श्रीआत्मारामजी) महाराजके मुख्य शिष्य

१०८ श्रीमान् श्रीलक्ष्मीविजयजी महाराज

मेड़ता (मारवाड) के वासिंदे पुष्करणा ब्राह्मण स्वर्गवास १९४० पाली (मारवाड)

मुनिमहाराज श्रीहर्षविजयजी, आचार्यमहाराज श्रीविजयकमलसूरिजी, श्रीहंसविजयजी
महाराजजी के गुरुदेव प्रकाश के सब साधुओं के भाव पितागुरु

पालनपुर जीला आबाला (बराड) निवासी शेठ लालचंद खुशालचंदजी तरफसे गुरुभक्ति निमित्त

न्यायाम्भोनिधि–पञ्चनदोद्धारक–जैनाचार्य–१००८ श्रीमद्—

विजयानन्दसूरीश्वरविरचितः

॥ नवतत्त्वसङ्ग्रहः ॥

श्रीमत्सर्वज्ञाय नमः ।

शुद्धज्ञानप्रकाशाय, लोकालोकैकभानवे ।
नमः श्रीवर्धमानाय, वर्धमानजिनेशिने ॥ १ ॥

अथ नवतत्त्वसंग्रह [1]लिख्यते, प्रथम 'जीव'तत्त्व लिख्यते—पन्नवणा पद १.

(जीवभेद)

नरकनाम—रत्नप्रभा १ शकर(र्करा)प्रभा २ वालु(का)प्रभा ३ पंकप्रभा ४ धूम्रप्रभा ५ तमा ६ तमतमा ७.*

पृथ्वीभेद—कृष्ण मृत्तिका १ नीली मट्टी २ [2]एवं पाच वर्णकी मट्टी ५ पाडु ६ पनग-धूल ७ कक्कर ८ रेत ९ लवण १० [3]रांग ११ लोह १२ तांबा १३ सीसा १४ रूपा १५ स्वर्ण १६ हीरा १७ हरिताल १८ [4]सिंगरफ १९ मनसिल २० पारा २१ [5]मूंगा २२ सोवीराजन २३ [6]भोडल २४ सर्व जातिके रत्न–पन्ना माणक आदि, सूर्यकांत आदि मणी इति.†

---

* "नेरइया सत्तविहा पन्नत्ता, तजहा—रयणप्पभापुढविनेरइया १ सक्करप्पभा० २ वालुय-प्पभा० ३ पकप्पभा० ४ धूमप्पभा० ५ तमप्पभा० ६ तमतमप्पभा० ७"। (प्रज्ञा० सू० ३१)

† "सण्हबायरपुढविकाइया सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा—किण्हमत्तिया १ नीलमत्तिया २ लोहिय-मत्तिया ३ हालिद्दमत्तिया ४ सुक्किल्लमत्तिया ५ पांडुमत्तिया ६ पणगमत्तिय ७, सेत्त सण्हबादरपुढवि-काइया" । (सू० १४) "खरबायरपुढविकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—पुढवी १ य सक्करा २ वालुया ३ य उवले ४ सिला ५ य लोणूसे ६–७ । अय ८ तव ९ तउ १० य सीसय ११ रुप्प १२ सुवन्ने १३ य वइरे १४ य ॥ १ ॥ हरियाले १५ हिंगुलए १६ मणोसिला १७ सासगंजणपवाले १८–२० । अब्भपडलब्भवालुय २१–२२ बायरकाए मणिविहाणा ॥ २ ॥ गोमेज्जए २३ य रुयए २४ अंके २५ फलिहे २६ य लोहियक्खे २७ य । मरगय २८ मसारगल्ले २९ भुयमोयग ३० इंदनीले ३१ य ॥ ३ ॥ चंदण ३२ गेरुय ३३ हंसगब्भ ३४ पुलए ३५ सोगंधिए ३६ य बोद्धव्वे । चंदप्पम ३७ वेरुलिए ३८ जलकंते ३९ सूरकंते ४० य ॥ ४ ॥" (प्रज्ञा० सू० १५)

---

१ लखाय छे। २ आ प्रकारे। ३ कलाइ धातु। ४ हिंगलोक। ५ परवाळा। ६ अभरख।

अप्काय—ओस १ पाला २ धूंयर ३ गडा ४ हरतणु ५ वर्षानो ६ सभावे शीतल ७ सभावे उष्ण ८ खारा पाणी ९ खट्टो पाणी १० लवणवत् खारा ११ वारुणसमुद्रोदग १२ खीरोदग १३ घृतोदग १४ इक्षुरसवत् १५ कूप आदि जलाश्रयना.*

तेजस्काय—अंगारा १ ज्वाला २ मुंमर ३ अर्ची ४ उंल्मुक ५ लोहपिंडमिश्रित ६ उल्कापातनी अग्नि ७ विजली ८ भुभर ९ निर्घात अग्नि १० अरण आदि काष्ठ घसने सें उपनी ११ सूर्यकांत मणीसे उपनी अग्नि १२ इत्यादि जाननी.†

वायु(काय)—दशो दिशना वायु १० उत्कलिका ११ मंडलि वायु १२ गुंजा १३ झपड १४ झंझा १५ संवर्तक वायु १६ घनवात १७ तनुवात १८ शुद्ध वायु १९ इत्यादि ज्ञेयम्.‡

वनस्पति प्रत्येक—आम्र आदि वृक्ष १ बेंगण आदि गुच्छा २ गुल्म—वनमल्लिका आदि ३ लता—चपक आदि ४ वल्ली—कोहल आदि ५ पर्व—इक्षु आदि ६ तृण—दर्भ आदि ७ वलया—केतकी आदि ८ हरि(त)—तंदुली प्रभृति ९ ओषधि सर्व जातना धान्य १० कमलादि ११ कुहण—भूमिस्फोट आदि १२.‖

अनंतकाय लिख्यते—हलदी १ आर्द्रक २ मूली ३ गाजर ४ आलू ५ पिंडालू ६ छेदे पछे (वाद) वधे ७ नवा अकूरा ८ कृष्ण कंद ९ वज्र कंद १० सूरण कंद ११ खेलूडा १२ इत्यादि. पंन्नवणापदात् ज्ञेयं लक्षणम्.§

---

* "वादरआउकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—उस्सा १ हिमए २ महिया ३ करए ४ हरतणुए ५ सुद्धोदए ६ सीतोदए ७ उसिणोदए ८ खारोदए ९ खट्टोदए १० अंबिलोदए ११ लवणोदए १२ वारुणोदए १३ खीरोदए १४ घओदए १५ खोतोदए १६ रसोदए १७"। (प्रज्ञा० सू० १६)

† "वादरतेऊकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—इंगाले १ जाला २ मुमुरे ३ अच्ची ४ अलाए ५ सुद्धागणी ६ उक्का ७ विज्जू ८ असणी ९ णिग्घाए १० संघरिससमुट्ठिए ११ सूरकंतमणिणिस्सिए १२"। (प्रज्ञा० सू० १७)

‡ "वादरवाउकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—पाईणवाए १ पडीणवाए २ दाहिणवाए ३ उदीणवाए ४ उड्ढवाए ५ अहोवाए ६ तिरियवाए ७ विदिसीवाए ८ वाउब्भामे ९ वाउक्कलिया १० वायमंडलिया ११ उक्कलियावाए १२ मंडलियावाए १३ गुंजावाए १४ झंझावाए १५ संवट्टवाए १६ घणवाए १७ तणुवाए १८ सुद्धवाए १९"। (प्रज्ञा० सू० १८)

‖ "पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया दुवालसविहा पन्नत्ता, तंजहा—
रुक्खा १ गुच्छा २ गुल्मा ३ लता ४ य वल्ली ५ य पव्वगा ६ चेव।
तण वलय हरिय ओसहि जलरुह-कुहणा ७ १२ य बोद्धव्वा ॥ १ ॥" (प्रज्ञा० सू० २२)

§ "साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया अणेगविहा पन्नत्ता तंजहा—अवए १ पणए २ सेवाले ३ लोहिणी ४ मिहुत्थु ५ हुत्थिभागा ६ (य)। अस्सकन्नि ७ सीहकन्नी ८ सिउंढि ९ तत्तो मुसुंढी १० य ॥ १ ॥ रुरु ११ कुंडरिया १२ जीरु १३ छीर १४ विराली १५ तहेव किट्टीया १६। हालिद्दा

---

१ हिम। २ धूमस। ३ करा। ४ पृथ्वीने भेदीने तृणना अग्र भाग उपर रहेनारू पाणी। ५ जेम। ६ तणखा। ७ उमाडियु। ८ जाणवु। ९ आवो। १० पन्नवणाना पदथी लक्षण जाणवु।

बेइंद्री—पूरा १ (पायु)क्रम(मि) २ कुक्षिक्रम ३ गंडोला ४ गोरोमा ५ निकुरिपा ६ मंगल ७ वसीमुख ८ सूचिमुख ९ गोजलोक १० जो(जलो)क ११ संख १२ लघु सख १३ कौडी १४ घोघे १५ सीप १६ गजाइ १७ चदणग १८ मातृवाहा १९ समुद्रलीख २० संबुक-संखविशेष २१ नंदियावर्त २२ इत्यादि जान लेना.*

तेइंद्री—उपविता १ रोहणी २ कुंथुया ३ कीडी ४ उद्दंस माकड ५ दंसक ६ उदेही ७ फलवेंटी ८ बीजवेंटी ९ जूका १० लीख ११ कानसिलाइ १२ कानखजूरा १२ [1]पिसूं १३ इंद्रगोप १४ हस्तीसोंडा १५ सुरसली १६ तूरतुवक १७ चीचड.†

चतुरिंद्री—अधक १ पोतिक कोच्छलीया २ माखी ३ डास ४ उडणा(उडणेवाले) कीडा ५ पतंग ६ ढंकुण ७ कुकुड ८ कुहण ९ नदावर्त १० सगरडा ११ कृष्ण पाखना १२ एवं पाच वर्णनी पाखना १६ भमरा १७ भमरी १८ टीड १९ विछु २० जलविछु २१ गोवर माहिला कीडा २२ अक्षिवेद् आख मे पडे २३ इत्यादि.‡

---

१७ सिंगनेरे १८ य आतूलुगा १९ भूलए २० इय ॥ २ ॥ कवूय २१ कन्नुकड २२ सुमत्तओ २३ वलइ २४ तहेव महुसिंगी २५ । नीरुह २६ सप्पसुयधा २७ छिन्नरुहा २८ चेव वीयरुहा २९ ॥ ३ ॥ पाढा ३० सियवालुकी ३१ महुररसा ३२ चेव रायवत्ती ३३ य । पउमा ३४ माढरि ३५ दतीति ३६ चडी ३७ किट्टी ३८ त्ति यावरा ३९ ॥ ४ ॥ मासपण्णी ४० मुग्गपण्णी ४१ जीवियरसहे ४२ य रेणुया ४३ चेव । काओली ४४ खीरकाओली ४५ तहा भगी ४० नही ४७ इय ॥ ५ ॥ किसिरासि ४८ भद्द ४९ मुच्छा ५० णगलई ५१ पेलुगा ५२ इय । किण्हे ५३ पउले ५४ य हढे ५५ हरतणुया ५६ चेव लोयाणी ५७ । कण्हे कदे ५८ वज्जे ५९ सूरणकदे ६० तहेव खल्लूरे ६१ । एए अणतजीवा जे यावन्ने तहाविहा ॥ ६ ॥" (प्रज्ञा० सू० २४)

साधारणनु लक्षण—

"चक्काग भज्जमाणस्स, गठी चुन्नघणो भवे । पुढविसरिसेण भेएण, अणतजीव वियाणाहि ॥ १ ॥
गूढसिराग पत्त सच्छीर ज च होइ निच्छीर । ज पि य पणट्ठसधिं अणतजीव वियाणाहि ॥२॥" (सू० २५)

* "बेइदिया अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—पुलाकिमिया १ कुच्छिकिमिया २ गडूयलगा ३ गोलोमा ४ णेउरा ५ सोमगलगा ६ वसीमुहा ७ सूइमुहा ८ गोजलोया ९ जलोया १० जालाउया ११ सखा १२ सखणगा १३ घुल्ला १४ खुल्ला १५ गुलया १६ खधा १७ वराडा १८ सोत्तिया १९ मुत्तिया २० कलुयावासा २१ एगओवत्ता २२ दुहओवत्ता २३ नदियावत्ता २४ सबुका २५ माइवाहा २६ सिप्पिसपुडा २७ चदणा २८ समुद्दलिक्खा २९"। (प्रज्ञा० सू० २७)

† "तेइदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—ओवइया १ रोहिणिया २ कुथू ३ पिपीलिया ४ उद्दसगा ५ उद्देहिया ६ उक्कलिया ७ उप्पाया ८ उप्पडा ९ तणहारा १० कट्ठहारा ११ मालुया १२ पत्ताहारा १३ तणवेंटिया १४ पत्तवेंटिया १५ पुप्फवेंटिया १६ फलवेंटिया १७ वीयवेंटिया १८ तेवुरणमिंजिया १९ तओसिमिंजिया २० कप्पासट्ठिमिंजिया २१ हिल्लिया २२ झिल्लिया २३ झिंगिरा २४ किंगिरडा २५ बाहुया २६ लहुया २७ सुभगा २८ सोवत्थिया २९ सुयवेंटा ३० इदकाइया ३१ इदगोवया ३२ तुरुतुवगा ३३ कुच्छलवाहगा ३४ जूया ३५ हालाहला ३६ पिसुया ३७ सयवाइया ३८ गोम्ही ३९ हत्थिसोंडा ४०"। (प्रज्ञा० सू० २८)

‡ "चउरिंदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—अधिय १ पत्तिय

---

१ चांचड । २ धान्यमां उत्पन्न थतां लाल रंगना जीवडां ।

पंचेंद्री तिर्यंच—जलचर-मत्स्य आदि १ स्थलचर-गो आदि २ खेचर-हंस आदि ३ उरपर-सर्प आदि ४ भुजपर-गोह नकुल [1]गिलेरी [2]किरली आदि ५ [3]इति अलम्.

मनुष्य—कर्मभूमिज १५ अकर्मभूमिज ३० अंतरद्वीपज ५६ (१०१) संमूर्च्छिम.*

भवनपति—असुरकुमार १ नागकुमार २ सुवर्णकुमार ३ विद्युत्कुमार ४ अग्निकुमार ५ द्वीपकुमार ६ उदधिकुमार ७ दिक्कुमार ८ वायुकुमार ९ स्तनितकुमार १०. [4]पंदरे परमाधार्मिक असुरकुमारभेद.

व्यंतर—पिशाच १ भूत २ यक्ष ३ राक्षस ४ किन्नर ५ किंपुरुष ६ महोरग ७ गंधर्व ८.

जोतिषी—चंद्र, सूर्य, ग्रह ८८, नक्षत्र २८, तारे एवं पांच भेद जोतिषी.

---

२ मच्छिय ३ मसगा ४ कीडे ५ तहा पयंगे ६ य । ढकुण ७ कुक्कड ८ कुक्कुह ९ नदावत्ते १० य सिंगिरडे ११ ॥ १ ॥ किण्हपत्ता १२ नीलपत्ता १३ लोहियपत्ता १४ हालिद्दपत्ता १५ सुक्किल्लपत्ता १६ चित्तपक्खा १७ विचित्तपक्खा १८ ओहंजलिया १९ जलचारिया २० गंभीरा २१ णीणिया २२ तंतवा २३ अच्छिरोडा २४ अच्छिवेहा २५ सारंगा २६ नेउरा २७ दोला २८ भमरा २९ भरिली ३० जरुला ३१ तोट्टा ३२ विंछुया ३३ पत्तविच्छुया ३४ छाणविच्छुया ३५ जलविच्छुया ३६ पियंगाला ३७ कणगा ३८ गोमयकीडा ३९"। (प्रज्ञा० सू० २९)

* "मणुस्सा दुविहा प० त०—समुच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य। . गब्भवक्कंतियमणुस्सा तिविहा प० तं०—कम्मभूमगा १ अकम्मभूमगा २ अन्तरदीवगा ३ । .. अंतरदीवगा अट्ठावीसविहा प० तं०—एगोरुया १ आहासिया २ वेसाणिया ३ णगोला ४ हयकन्ना ५ गयकन्ना ६ गोकन्ना ७ सक्कुलिकन्ना ८ आयंसमुहा ९ मेंढमुहा १० अयोमुहा ११ गोमुहा १२ आसमुहा १३ हत्थिमुहा १४ सीहमुहा १५ वग्घमुहा १६ आसकन्ना १७ हरिकन्ना १८ अकन्ना १९ कण्णपाउरणा २० उक्कामुहा २१ मेहमुहा २२ विज्जुमुहा २३ विज्जुदंता २४ घणदंता २५ लट्ठदंता २६ गूढदंता २७ सुद्धदंता । सेत्तं अंतरदीवगा । (यादृशा एव यावत्प्रमाणा यावदपान्तराला यन्नामानो हिमवत्पर्वतपूर्वापरदिग्व्यवस्थिता अष्टाविंशतिविधा अन्तरद्वीपास्तादृशा एव तावत्प्रमाणा तावदपान्तरालास्तन्नामान एव शिखरिपर्वतपूर्वापरदिग्व्यवस्थिता अपि, ततोऽत्यन्तसदृशतया व्यक्तिभेदमनपेक्ष्य अन्तरद्वीपा अष्टाविंशतिविधा एव विवक्षिता.) अकम्मभूमिगा तीसविहा प० तं०—पंचहिं हेमवएहिं, पचहिं हिरण्णवएहिं, पंचहिं हरिवासेहिं, पंचहिं रम्मगवासेहिं, पचहिं देवकुरूहिं, पंचहिं उत्तरकुरूहिं । . कम्मभूमगा पन्नरसविहा प० त०—पचहिं भरहेहिं, पंचहिं एरवएहिं, पंचहिं महाविदेहिं"। (प्रज्ञा० सू० ३७)

---

१ खिस्कोली । २ गिलोडी । ३ एटले पर्याप्त । ४ समवायांगना १५ मा स्थानकमां एनां नामो नीचे मुजब आपेलां छे —

"अंबे १ अंबरिसी २ चेव, सामे ३ सबले ४ त्ति आवरे ।
रुद्दोवरुद्दकाले ५-७ अ, महाकाले ८ त्ति आवरे ॥ १ ॥
असिपत्ते ९ धणु १० कुंभे ११, वालुए १२ वेअरणीति १३ अ ।
खरस्सरे १४ महाघोसे १५, एते पन्नरसाहिआ ॥ २ ॥"

वैमानिक—सुधर्म १ ईशान २ सनत्कुमार ३ महेन्द्र ४ ब्रह्म ५ लांतिक ६ महाशुक्र ७ सहस्रार ८ आनत ९ प्राणत १० आरण ११ अच्युत १२, नव ग्रैवेयक ९, पांच अनुत्तर—विजय १ विजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ सर्वार्थसिद्ध ५ एवं सर्व २६.* इत्यादि जीवभेद जान लेना.

(संख्याद्वार)

पूर्वोत्पन्नसंख्या—मनुष्य वर्जी २३ [1]दंडकमे असंख्याते, वनस्पतिमे अनंते, मनुष्यमे संख्याते वा असंख्याते इति संख्याद्वारम्.

---

* "देवा चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा—भवणवासी १ वाणमंतरा २ जोइसिआ ३ वेमाणिआ ४। भवणवासी दसविहा प० त०—असुरकुमारा १ नाग० २ सुवन्न० ३ विज्जु० ४ अग्गि० ५ दीव० ६ उदहि० ७ दिसा० ८ वाउ० ९ थणिय० १०। वाणमंतरा अट्ठविहा प० त०—किन्नरा १ किंपुरिसा २ महोरगा ३ गंधव्वा ४ जक्खा ५ रक्खसा ६ भूया ७ पिसाचा ८। जोइसिया पचविहा प० त०—चंदा १ सूरा २ गहा ३ नक्खत्ता ४ तारा ५। वेमाणिआ दुविहा प० त०—कप्पोवगा १ य कप्पाईया य। कप्पोवगा बारसविहा प० त०—सोहम्मा १ ईसाणा २ सणंकुमारा ३ माहिंदा ४ बंभलोया ५ लंतया ६ महासुका ७ सहस्सारा ८ आणया ९ पाणया १० आरणा ११ अच्चुया १२। कप्पाईया दुविहा प० त०—गेविज्जगा य अणुत्तरोववाइया य। गेविज्जगा नवविहा प० त०—हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जगा १ हिट्ठिममज्झिम० २ हिट्ठिमउवरिम० ३ मज्झिमहेट्ठिम० ४ मज्झिममज्झिम० ५ मज्झिमउवरिम० ६ उवरिमहेट्ठिम० ७ उवरिममज्झिम० ८ उवरिमउवरिम० ९। अणुत्तरोववाइया पचविहा प० त०—विजया १ वेजयंता २ जयंता ३ अपराजिता ४ सव्वट्ठसिद्धा ५"। (प्रज्ञा० सू० ३८)

---

[1] ते ते जातिना समुदायनु ग्रहण करवा माटे (तज्जातीयसमूहप्रतिपादकत्वार्थे) 'दंडक' शब्द योजायो छे जेने विषे जीव पोते करेला कर्मोनो दंड पामे ते 'दंडक' कहेवाय छे आ संबधमां एवो पण खुलासो नजरे पडे छे के एकार्थक सरखो पाठ जेमां आवतो होय ते 'दंडक' कहेवाय छे जेमके दल, नरा, णख, घल, मल वगेरे धातुओ गतिवाचक होवाथी ते 'दंडक' धातुओ कहेवाय छे कुले दंडको चोवीस छे तेनां नामो माटे श्रीभगवतीसूत्र (सू० ८)नी व्याख्या करता श्रीअभयदेवसूरि नीचे मुजबनी गाथानु टाचण करे छे —

"नेरइया १ असुराई १० पुढवाई ५ बेंदियादओ ३ चेव ।
पंचिंदियतिरिय १ नरा १ वंतर १ जोइसिय १ वेमाणी १ ॥"

मोटे भागे 'नेरइया' शब्द द्वारा साते नरकने लगता सरखा पाठो-आलापको-सूचवाया छे, माटे ते एक दंडक जाणवो 'असुरकुमारा जाव थणियकुमारा' इत्यादि शब्दो वडे जुदा जुदा आलावाओ सूचवायेला होवाथी एना दश दंडको गणाय छे एवी रीते एकेन्द्रियना अधिकारमां प्राय 'पुढविकाइया' इत्यादि शब्द वडे पृथक् पृथक् आलावाओ सूचवाया छे, तेथी एना पांच दंडको गणाय छे

नरकना सात, व्यंतरना आठ, ज्योतिष्कना पाच अने वैमानिकना २६ भेद होवा छतां ए प्रत्येकना एकेक ज दंडक गणाय छे, ज्यारे भुवनपतिना दश दंडको गणाय छे तेनो शो हेतु छे? आनो उत्तर एम सूचवाय छे के असुरकुमार अने नागकुमार वच्चे नरकना प्रस्तर (पाथडा)नु तेमज नारकी जीवोनु अंतर छे, एवी रीते नागकुमार अने विद्युत्कुमार वच्चे, एम भुवनपतिना अन्य भेदो आश्री छे आवु अंतर नारक, व्यंतर वगेरेना संबधमां नथी तेथी, ते प्रत्येकनो एकेक दंडक गणाय छे, जोके रत्नप्रभा अने शर्कराप्रभा वच्चे तेना आधारभूत घनोदधि, घनवात, तनुवात अने आकाशनु अंतर छे

(१)

अथ पूर्वोत्पन्नसंख्या लिख्यते

श्रीपन्नवणा शरीरपद १२ मे वा अनुयोगद्वारे (सू० १४२) तथा [1]पंचसंग्रहे च कथितम्

प्रथम नारकी के जीव वर्तमान मे है	प्रतरके असंख्यातमे भागमे जितने आकाशप्रदेश आवे ती(इ)तने जीव प्रथम रत्नप्रभा नरकमे है प्रतरका स्वरूप अने (और) श्रेणिका स्वरूप कथ्यते-सात रज्जु लंबी अने सात रज्जु चोडी अने एक प्रदेशकी मोटी इसकू तो घनीकृत लोककी एक प्रतर कहीये अने सात रज्जु प्रमाण लंबी अने एक प्रदेश प्रमाण चौडी अने एक प्रदेश प्रमाण मोटी इसकू घनीकृत लोककी एक श्रेणि कहीये । जिहा कही समुच्चये प्रतर अने श्रेणिका भाषा है तिहा (वहा) ऐसी प्रतर अने श्रेणि जाननी इत्यल विस्तरेण.	श्रेणि अंगुलप्रमाण चौडी अने सात रज्जु प्रमाण लंबी तिस श्रेणीमे असत् कल्पना करके श्रेणि २५६ कल्पीये तिसका प्रथम वर्गमूल काढीये तो १६ होइ(वे), दूजा-(सरा) वर्गमूल काढीये तो ४ निकले है तिस दूजे वर्गमूलकू पहिले वर्गमूलसूं गुण्या ६४ होइ तिण चौसठ ६४ श्रेणि प्रमाण तो चौडी अने सात रज्जु लंबी असी सूची नीपजे तिस सूचीमे जितने आकाशप्रदेश है तितने पहिली नरकमे छ नरकके नारकी कम करके इतने नारकी जान लेने
दूजी नरक	श्रेणिके असंख्यातमे भागमे जितने आकाशप्रदेश आवे तितने दूजी नरकमे नारकी जान लेने	श्रेणिके प्रदेशका वर्गमूल काढतां जब बारमा वर्गमूल आवे तिस बार १२-मे वर्गमूलका भाग पूर्वोक्त श्रेणिके प्रदेशाकू दीजे जो हाथ आवे तितने नारकी दूजी नरकमे जानने एव सर्वत्र ज्ञेयम्.
तीसरी नरक	श्रेणि के असंख्यातमे भाग	श्रेणिका १० मा वर्गमूल भाग हाथ लगे
चौथी नरक	,,	श्रेणि ८ स(मा ?)मूल भाग हाथ लगे
पाचवी नरक	,,	श्रेणि ६ छठो वर्गमूलका भाग ,,
छट्ठी नरक	,,	श्रेणि ३ तीजो वर्गमूलका भाग ,,
सातवी नरक	,,	श्रेणि २ दूजे वर्गमूलका भाग ,,
बादरपर्याप्त तेजस्काय	०	[5]किंचिन्न्यून घनावलिके समय प्रमाण
प्रत्येक निगोद पृथ्वीकाय अप्काय	पर्याप्ते लोकके असंख्यातमे भाग.	लोकके असंख्यातमे भाग

१ पंचसंग्रहमां पण कह्युं छे । २ कहेवाय छे । ३ विस्तारथी । ४ सर्वे स्थळोमां । ५ कइक ओछा ।

बादर अपर्याप्त पृथ्वी अप् तेज वायु प्रत्येक निगोद सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त पृथ्वी अप् तेजो वायु निगोद	असख्याते लोकके प्रदेशप्रमाण	असख्याते लोकके प्रदेशप्रमाण.
बेइंद्री तेइंद्री चौरिंद्रीनी संख्या	प्रतरके असख्यातमे भागमे कोडा कोड असख्यात जोजन प्रमाण तो चोडी अने सात रजु प्रमाण लबी ऐसी एक श्रेणी लीजे तेहने प्रदेशोकी असत् कल्पना ६५५३६ की करीये तिसके वर्गमूल काढीये प्रथम वर्गमूल २५६ का, दूजा १६, तीजा ४, चोथा २ ए कल्पना करके चार वर्गमूल है पिण (किन्तु) परमार्थ थकी (से) असख्याते वर्गमूल नीकले ते सर्व वर्गमूल एकठा कर्या अत्र तो २७८ हूइ पिण परमार्थथी असख्याते वर्गमूल प्रमाण तो चाडी श्रेणीया अने सात रजु लबीया एहवी बेंद्रीयानी सूची निपजे तिस सूचीमे जितने आकाश प्रदेश है तितने बेंद्री जीव जान लेने इति अनुयोगद्वारात् ज्ञेय तथा पन्नवणा पद बारमेथी है	एक प्रतर अगुल के असख्यातमे भागमें एक बेंद्री आदिक स्थापीये इम स्थापना करता घनीकृत लोकनी एक प्रतर सपूर्ण भराये इतने बेंद्री, तेंद्री, चोरेंद्री है, अथवा आवलिकाके असख्यातमे भागमें जितने समय आवें तितने कालमें एकेक बेंद्री, तेंद्री, चोरेंद्री अपहरीये तो असख्याती अवसर्प्पिणी उत्सर्प्पिणीमे सपूर्ण एक प्रतरके बेंद्री अपहरे जावे एव तेंद्री, चोरिंद्री पिण जान लेने एह समास अने पिछना 'अनुयोगद्वार[1] ना समास एक ही जानना केवल प्रकारातर ही है पर परमार्थथी एक ही समजना इत्यलं विस्तरेण
समूर्च्छिम मनुष्य	श्रेणिके असख्यातमे भाग	एक प्रदेशी श्रेणी सात रजु प्रमाण लंबी तिसमे सु अगुल प्रमाण प्रदेश लबे लीजे, तिसमे असत् कल्पना करे के २५६ प्रदेश, तिसका प्रथम वर्गमूल १६, दूजा वर्गमूल ४ का, तीजा २ का तिस तीजे कू पहिले वर्गमूलसू गुण्या ३२ होइ परमार्थ तो असख्यात का जानना तिस ३२ प्रदेशके खडकू एक समूच्छिम मनुष्यके शरीर करके अपहरीये जो एक मनुष्य और हुइ तो सात रजु लबी श्रेणिके प्रदेश अपहरे जाये ते तो नही है
गर्भज मनुष्य	पाचमे वर्गके घन प्रमाण	

१ आ प्रमाणे अनुयोगद्वारथी जाणवु ।

(१)

अथ पूर्वोत्पन्नसंख्या लिख्यते

श्रीपन्नवणा शरीरपद १२ मे वा अनुयोगद्वारे (सू० १४२) तथा [1]पंचसंग्रहे च कथितम्

प्रथम नारकीके जीव वर्तमानमे है	प्रतरके असंख्यातमे भागमे जितने आकाशप्रदेश आवे ती(इ)तने जीव प्रथम रत्नप्रभा नरकमे है प्रतरका स्वरूप अने (ओर) श्रेणिका स्वरूप कथ्यते-सात रज्जु लंबी अने सात रज्जु चौडी अने एक प्रदेशकी मोटी इसकू तो घनीकृत लोककी एक प्रतर कहीये अने सात रज्जु प्रमाण लंबी अने एक प्रदेश प्रमाण चौडी अने एक प्रदेश प्रमाण मोटी इसकू घनीकृत लोककी एक श्रेणि कहीये । जिहा कही समुच्चये प्रतर अने श्रेणिका मापा है तिहा (वहा) ऐसी प्रतर अने श्रेणि जाननी इत्यल विस्तरेण	श्रेणि अंगुलप्रमाण चोडी अने सात रज्जु प्रमाण लंबी तिस श्रेणीमे असत् कल्पना करके श्रेणि २५६ कल्पीये तिसका प्रथम वर्गमूल काढीये तो १६ होइ(वे) दूजा-(सरा) वर्गमूल काढीये तो ४ निकले है तिस दूजे वर्गमूलकूं पहिले वर्गमूलसूं गुण्या ६४ होइ तिण चौसठ ६४ श्रेणि प्रमाण तो चौडी अने सात रज्जु लंबी असी सूची नीपजे तिस सूचीमे जितने आकाशप्रदेश है तितने पहिली नरकमे छ नरकके नारकी कम करके इतने नारकी जान लेने
दूजी नरक	श्रेणिके असंख्यातमे भागमे जितने आकाशप्रदेश आवे तितने दूजी नरकमें नारकी जान लेने	श्रेणिके प्रदेशाका वर्गमूल काढतां जब [2]बारमा वर्गमूल आवे तिस वार १२-मे वर्गमूलका भाग पूर्वोक्त श्रेणिके प्रदेशाकू दीजे जो हाथ आवे तितने नारकी दूजी नरकमे जानने एव [4]सर्वत्र ज्ञेयम्.
तीसरी नरक	श्रेणि के असंख्यातमे भाग	श्रेणिका १० मा वर्गमूल भाग हाथ लगे
चौथी नरक	"	श्रेणि ८ म(मा?)मूल भाग हाथ लगे
पांचवी नरक	"	श्रेणि ६ छठो वर्गमूलका भाग "
छट्ठी नरक	"	श्रेणि ३ तीजो वर्गमूलका भाग "
सातमी नरक	"	श्रेणि २ दूजे वर्गमूलका भाग "
बादरपर्याप्त तेजस्काय	०	[5]किंचिन्न्यून घनावलिके समय प्रमाण
प्रत्येक निगोद पृथ्वीकाय अप्काय	पर्याप्त लोकके असंख्यातमे भाग.	लोकके असंख्यातमे भाग

१ पंचसंग्रहमां पण कह्युं छे । २ कहेवाय छे । ३ विस्तारथी । ४ सर्वे स्थळोमां । ५ कइक ओछा ।

मुनिमहाराज १०८ श्रीमान् श्रीहर्षविजयजी

ओसवाल रावलपिंडी (पंजाब) के वासिंद

स्वर्गवास शीरोही शहर, तारीख १ अप्रेल १८९०, उमर वर्ष ५०

वर्तमान आचार्य श्रीविजयवल्लभसूरिजीके गुरुदेव श्रीलक्ष्मीविजयजी महाराजके
आदर्श संघाडाके सब साधुओंके विद्यागुरु

गुजरांवाला (पंजाब) निवासी लाला माणिकचंद छोटालाल दुगडकी तर्फसे गुरुभक्ति निमित्त

	यह यंत्र श्री'*प्रज्ञापना' थकी तथा श्री'अनुयोगद्वार'थी	ए यंत्र 'प्रज्ञापना,' श्री'अनुयोगद्वार'श्री तथा †श्री'पंचसंग्रहे' श्वेतांवर आम्नायके ग्रंथ थकी जान लेना

*"नेरइयाण भंते! केवइया वेउव्वियसरीरा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तजहा—वद्धेल्लगा य मुकेल्लगा य, तत्थ ण जे ते वद्धेल्लगा ते ण असखेज्जा, असखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्ततो असखिज्जाओ सेढीओ पयरस्स असखेज्जइभागो, तासि णं सेढीणं विक्खभसूई अगुलपढमवग्गमूलं वितीयवग्गमूलपडुप्पण्णं अहव णं अंगुलवितीयवग्गमूलघणप्पमाणमेत्ताओ सेढीतो" । (सू. १७८) "असुरकुमाराण भंते! विक्खभसूई अगुलपढमवग्गमूलस्स संखेज्जतिभागो   एवं जाव थणियकुमारा" । (सू. १७९) पुढविकाइयाणं भंते! केवइया ओरालियसरीरगा प०? गो०! दुविहा प० तं०—वद्धेल्लगा य मुकेल्लगा य, तत्थं णं जे ते वद्धेल्लगा ते णं असखेज्जा, असखेज्जाहिं उस्सपिणिओसप्पिणिहिं अवहीरंति कालतो, खेत्ततो असखेज्जा लोगा, . तेया कम्मगा जहा एएसिं चेव ओरालिया, एवं आउकाइयतेउकाइया वि । वाउकाइयाणं भंते! केवतिया ओरालियसरीरा प०? गो०! दु० प० त—वद्धेल्लगा य मुकेल्लगा य, दुविहा वि जहा पुढविकाइयाण ओरालिया, वेउव्वियाण पुच्छा, गो० दु० तं०—वद्धेल्लगा य मुकेल्लगा य, तत्थ ण जे ते वद्धेल्लगा ते ण असखेज्जा, समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा पलितोवमस्स असंखेज्जइभागमेत्तेण कालेणं अवहीरंति नो चेव ण अवहिया सिया,   वणप्फइकाइयाणं जहा पुढविकाइयाण, णवर तेयाकम्मगा जहा ओहिया तेयाकम्मगा । वेइंदियाणं भंते! केवइया ओरालिया सरीरगा प०? गो०! दु० त०—वद्धे० मुक्के०, तत्थ ण जे ते वद्धेल्लगा ते णं असखेज्जा, असंखेज्जाहिं उस्सपिणिओसप्पिणिहिं अवहीरंति कालतो, खेत्ततो असखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असखेज्जइभागो, तासि णं सेढीण विक्खंभसूई असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडिओ असखेज्जाइं सेढिवग्गमूलाइ । वेइंदियाणं ओरालियसरीरेहिं वद्धेल्लगेहिं पयरो अवहीरति, असखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं कालतो, खेत्ततो अगुलपयरस्स आवलियाते य असखेज्जतिभागपलिभागेणं,.   . एव जाव चउरिंदिया । पचिंदियतिरिक्खजोणियाणं एव चेव ।   मणुसाणं भते! केवइया ओरालियसरीरगा प०? गो०! दु० त०—वद्धे० मुक्के०, तत्थ ण जे ते वद्धेल्लगा ते ण सिय सखिज्जा सिय असखिज्जा, जहण्णपदे सखेज्जा सखेज्जाओ कोडाकोडीओ तिजमलपयस्स उवरिं चउजमलपयस्स हिट्ठा, अहव ण छट्ठो वग्गो अहव ण छण्णउईछेयणगदाइरासी, उक्कोसपए असखिज्जा, असखिज्जाहिं उस्सपिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्तओ रूवपक्खित्तेहिं सेढी अवहीरइ; तीसे सेढीए आकासखेत्तेहिं अवहारो मग्गिज्जइ असखेज्जा असखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं कालतो, खेत्ततो अगुलपढमवग्गमूल तइयवग्गमूलपडुप्पण्णं,   । वाणमंतराण जहा नेरइयाणं ओरालिया आहारगा य, वेउव्वियसरीरगा जहा नेरइयाण, नवर तासि ण सेढीण विक्खंभसूई सखेज्जजोअणसयवग्गपलिभागो पयरस्स   । तासि ण सेढीण विक्खभसूई विछप्पन्नंगुलसयवग्गपलिभागो पयरस्स, वेयाणियाणं एव चेव, नवर तासि ण सेढीण विक्खभसूई अगुलवितीयवग्गमूलं तइयवग्गमूलपडुप्पन्नं अहवणं अंगुलतइयवग्गमूलघणप्पमाणमेत्ताओ सेढीओ,. .   ।" (सू० १८०)

† पचसग्रहना द्वितीय 'बधक' द्वारनी गाथाओ—

"पत्तेय पज्जवणकाइया उ पयर हरंति लोगस्स । अगुलअसखभागेण भाइय भूदगतणू य ॥ ४३ ॥
आवलिवग्गो अतावलीय गुणिओ हु वायरो तेऊ । वाऊ लोगासख सेसतिगमसखया लोगा ॥ ४४ ॥
पज्जत्तापज्जत्ता वितिचउअस्सन्निणो अवहरंति । अंगुलासखासखप्पएसमइय पुढो पयर ॥ ४५ ॥
सन्नी चउसु गईसु पढमाए असखसेढि नेरइया । सेढी असखेज्जसो सेसासु जहुत्तर तह य ॥ ४६ ॥
सखेज्जजोयणाण सूइपएसेहिं भाइओ पयरो । वतरसुरेहिं हीरइ एव एक्केक्कभेएण ॥ ४७ ॥

(२)*वृद्धि-हानि भगवती श० ५, उ० ८

०	वद्दति	हायंति
जीव	०	०
नरकादि वैमानिक २४	उत्कृष्ट आवलि असंख्य भाग	उत्कृष्ट आवलि असंख्य भाग
सिद्ध	उत्कृष्ट ८ समय	०
जघन्य सर्वत्र	१ समय	१ समय
विरह सर्वत्र अद्धा सिद्धक विरह तुल्य.		

छप्पन्न दोसयंगुलसूईपएसेहि भाइओ पयरो । हीरइ जोइसिएहिं सट्ठाणे त्थीउ संखगुणा ॥ ४८ ॥
अस्सखसेढिखपएसतुल्लया पढमदुइयकप्पेसु । सेढिअसंखंससमा उवरिं तु जहोत्तर तह य ॥ ४९ ॥
सेढीएकेक्कपएसरइयसूईणमगुलप्पमियं । घम्माए भवणसोहम्मयाण माण इमं होइ ॥ ५० ॥
छप्पन्नदोसयंगुलभूओ भूओ विगिज्झ मूलतिग । गुणिया जहुत्तरत्या रासीओ कमेण सूईओ ॥ ५१ ॥
अहवंगुलप्पएसा समूलगुणिया उ नेरइयसूई । पढमदुइया पयाइ समूलगुणियाइं इयराणं ॥ ५२ ॥
अंगुलमूलासखियभागप्पमिया उ होंति सेढीओ । उत्तरविउव्वियाण तिरियाण य सन्निपज्जाणं ॥ ५३ ॥
सामण्णा पज्जत्ता पणतिरि देवेहि संखगुणा । संखेज्जा मणुया तहि सिच्छाइगुणा वि सट्ठाणे ॥ ५४ ॥
उक्कोसपए मणुया सेढीं रूवाहिया अवहरंति । तईयमूलाहएहिं अंगुलमूलप्पएसेहिं ॥ ५५ ॥"

* आ तेमज आ पछीनां बे यन्त्रो परत्वे नीचे मुजबनु सूत्र छे —

जीवा णं भंते ! किं वड्ढति, हायति, अवट्ठिया[1] । गोयमा ! जीवा णो वड्ढति, नो हायंति, अवट्ठिया । नेरइया णं भंते ! किं वड्ढंति, हायति, अवट्ठिया ? । गोयमा ! नेरइया वड्ढति वि, हायति वि, अवट्ठिया वि, जहा नेरइया एव जाण वेमाणिया । सिद्धा णं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! सिद्धा वड्ढति, नो हायति, अवट्ठिया वि ॥ जीवा णं भंते ! केवतिय कालं अवट्ठिया [वि][2] । सवद्धं । नेरइया णं भंते ! केवतियं काल वड्ढंति ? । गोयमा ! जहन्नेणं एग समयं, उक्को० आवलियाए असखेज्जतिभागं, एव हायति, नेरइया णं भंते ! केवतियं काल[3] अवट्ठिया ? । गोयमा ! जह० एगं समयं, उक्को० चउव्वीस मुहुत्ता, एवं सत्तसु वि पुढवीसु वड्ढति हायति भाणियव्वं, नवर अवट्ठिएसु इम नाणत्तं, तंजहा-रयणप्पभाए पुढवीए अडतालीसं मुहुत्ता, सक्कर० चोद्दस रातिंदियाणं, वालु० मास, पंक० दो मासा, धूम० चत्तारि मासा, तमाए अट्ठ मासा, तमतमाए बारस मासा । असुरकुमारा वि० वड्ढति हायति जहा नेरइया, अवट्ठिया जह० एक समय, उक्को अट्ठचत्तालीस मुहुत्ता, एवं दसविहा वि, एगिंदिया वड्ढति वि हायति वि अवट्ठिया वि, एएहिं तिहि वि जह० एक समयं, उक्को० आवलियाए असखेज्जतिभाग, बेइंदिया वड्ढति हायति तहेव, अवट्ठिया जह० एकं समयं, उक्को० दो अंतोमुहुत्ता, एवं जाव चउरिंदिया, अवसेसा सव्वे वड्ढंति हायति तहेव, अवट्ठियाणं णाणत्तं इमं, त० समुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण दो अतोमुहुत्ता, गब्भवक्कतियाण चउव्वीस मुहुत्ता, संमुच्छिममणुस्साण अट्ठचत्तालीस मुहुत्ता, गब्भवक्कतियमणुस्साणं चउव्वीस मुहुत्ता, वाणमतरजोतिससोहम्मीसाणेसु अट्ठचत्तालीस मुहुत्ता, सणंकुमारे अट्ठारस रातिंदियाइ चत्तालीस य मुहु०, माहिंदे चउवीस राति० वीस य मु०, बभलोए पंचचत्तालीसं राति०, लतए नउति राति०, महासुके

१ घटे छे। २ घटे छे। ३ काळ।

(३)* अवस्थित(ति)यन्त्रम्-जीवानां सर्वाद्धा

नारकी	उत्कृष्ट २४ मुहूर्त	जोतिषी	उत्कृष्ट ४८ मुहूर्त
रत्नप्रभा	,, ४८ ,,	सु(सौ)धर्म ईशान	,, ,, ,,
शकर(र्करा)प्रभा	,, १४ दिनरात्रि	सनत्कुमार	,, १८ दिन ४० मुहूर्त
वालुक(का)प्रभा	,, १ मास	महेंद्र	,, २४ दिन २० मुहूर्त
पंकप्रभा	,, २ ,	ब्रह्मलोक	,, ४५ अहोरात्रि
धूम्रप्रभा	,, ४ ,,	लांतक	,, ९० रात्रिदिन
तमप्रभा	,, ८ ,,	महाशुक्र	,, १६० ,,
तमतमप्रभा	,, १२ ,,	सहस्रार	,, २०० रात्रि
भवनपति १०	,, ४८ मुहूर्त	आनत प्राणत	,, संख्याते मास
एकेंद्री ५	,, आवलिके असंख्यात	आरण अच्युत	,, संख्याते वर्ष
विगलेंद्री ३	,, अंतर्मुहूर्त (?)	(ग्रैवे०) पहिली त्रिक	,, ,, सौ ,,
सम्मूर्च्छिम पंचेंद्री तिर्यंच	,, २ ,,	मध्यम त्रिक	,, ,, हजार ,,
गर्भज पंचेंद्री तिर्यंच	,, २४ मुहूर्त	उपर त्रिक	,, ,, लाख ,,
सम्मूर्च्छिम मनुष्य	,, ४८ ,,	विजयादि ४	,, पल्योपमनो असंख्या-तमो भाग
गर्भज मनुष्य	,, २४ ,,	सर्वार्थसिद्ध	,, पल्योपमनो संख्या-तमो भाग
व्यंतर	,, ४८ ,,	सिद्ध	,, ६ मास

जघन्य सर्वत्र एक समय इति.

सट्ठिं राइंदियसतं, सहस्सारे दो राइंदियसयाइं, आणयपाणयाणं संखेज्जा मासा, आरणच्चुयाणं संखेज्जाइं वासाइं, एवं गेवेज्जदेवाणं विजयवेजयंतजयंतअपराजियाणं असंखिज्जाइं वाससहस्साइं, सव्वट्ठसिद्धे य पलिओवमस्स [अ]संखेज्जतिभागो, एवं भाणियव्वं, वड्ढंति हायंति जह० एक्कं समयं, उक्को० आवलियाए असंखेज्जतिभागं, अवट्ठियाणं जं भणियं। सिद्धा णं भंते! केवतियं कालं वड्ढंति?। गोयमा! जह० एक्कं समयं, उक्को० अट्ठ समया, केवतियं कालं अवट्ठिया? गोयमा! जह० एक्कं समयं, उक्को० छम्मासा ॥

जीवा णं भंते! किं सोवचया, सावचया, सोवचयसावचया, निरुवचयनिरवचया?। गोयमा! जीवा णो सोवचया, नो सावचया, णो सोवचयसावचया, निरुवचयनिरवचया। एगिंदिया ततियपए, सेसा जीवा चउहि वि पदेहि वि भाणियव्वा। सिद्धाणं भंते! पुच्छा, गोयमा! सिद्धा सोवचया,

१ जीवोनी सर्व काळ अवस्थिति छे।

(४) *(सोपचय आदि) भग॰ श॰ ५, उ॰ ८

	सोवचया	२ सावचया	सोवचयसावचया	निरुव॰निरवचया
जीव	०	०	०	सर्वाद्धा
एकेंद्री ५ वर्जी नरक आदि वैमानिक पर्यंत १९ दंडक	उत्कृष्ट आवलिके असंख्यातमे भाग	उत्कृष्ट आवलिके असंख्यातमे भाग	उत्कृष्ट आवलिके असंख्यातमे भाग	उत्कृष्ट आपापणे विरहप्रमाण ज्ञातव्यम्
एकेंद्री ५	०	०	सर्वाद्धा	०
सिद्ध	८ समय	०	०	६ मास

ए उत्कृष्ट कालना यंत्र, जघन्य सर्वत्र १ समय ज्ञेयम्.

(५) (†कृतादि युग्म) भग॰ श॰ १८, उ॰ ४

	जघन्य पद	मध्यम पद	उत्कृष्ट पद
पंचेंद्री १६ दंडक	कृतयुग्म १	कृतयुग्मादि ४ युग्म	त्रौ(त्र्यो)ज
पृथ्वी आदि ४ विगलेंद्री ३	,,	,,	द्वापरयुग्म
वनस्पति १ सिद्धे च	०	,,	०
स्त्रीसमुच्चय तथा १५ दण्डकें जूदी जूदी	कृतयुग्म १	,,	कृतयुग्म १

णो सावचया, णो सोवचयसावचया, निरुवचयनिरवचया । जीवा णं भंते! केवतियं काल निरुवचयनिरवचया?। गोमया! सवद्धं। नेरतिया ण भंते! केवतियं कालं सोवचया? गोयमा! जह॰ एकं समयं, उक्को॰ आवलियाए असंखेज्जइभागं। केवतियं कालं सावचया?। एवं चेव। केवतियं काल सोवचयसावचया? एव चेव। केवतियं कालं निरुवचयनिरवचया?। गोयमा! जह॰ एकं समयं, उक्को॰ बारस मु॰, एगिंदिया सव्वे सोवचयसावचया सव्वद्धं, सेसा सव्वे सोवचया वि सावचया वि सोवचयसावचया वि निरुवचयनिरवचया वि जह॰ एग समयं, उक्को॰ आवलियाए असंखेज्जतिभागं अवट्ठिएहिं वक्कतिकालो भाणियव्वो। सिद्धा ण भंते केवतियं कालं सोवचया? गोयमा! जह॰ एक्क समयं, उक्को॰ अट्ठ समया, केवतियं काल निरवचयनिरवचया? जह॰ एकं, उ॰ छम्मासा"। (सू॰ २२२)

† "नेरइया ण भते! किं कडजुम्मा, तेयोगा, दावरजुम्मा, कलियोगा?। गोयमा! जहन्नपदे कडजुम्मा, उक्कोसपदे तेयोगा, अजहन्नुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा १ जाव सिय कलियोगा ४, एवं जाव थणियकुमारा। वणस्सइकाइयाणं पुच्छा, गोयमा! जह॰ अपदा, उक्को॰ य अपदा, अजह॰ सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा। बेइंदिया ण पुच्छा, गोयमा! जह॰ कड॰, उक्को॰ दावर॰, अजह॰

१ वृद्धि सहित। २ हानि सहित।

(६) (*योग विषयक अल्पबहुत्व) भग० श० २५, उ० १

योग	सूक्ष्म एकेंद्री	बादर एकेंद्री	बेइंद्री	तेइंद्री	चौरिंद्री	असंज्ञी पंचेंद्री	संज्ञी पंचेंद्री
जघन्य अपर्याप्ता योग	स्तोक१ (थोडा)	२ असंख्य गुणा	३ असं	४ असं	५ असं	६ असं.	७ असं.
जघन्य पर्याप्ता योग	८ अस	९ अस	१४ असं.	१५ अस	१६ अस.	१७ अस	१८ असं
उत्कृष्ट अपर्याप्ता योग	१० अस	११ अस	१९ अस	२० असं	२१ असं	२२ अस	२३ असं
उत्कृष्ट पर्याप्ता योग	१२ अस	१३ अस	२४ अस	२५ असं	२६ अस	२७ असं	२८ असं

सिय कड० कलियोगा, एव जाव चतुरिंदिया, सेसा एगिंदिया जहा बेंदिया, पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया, सिद्धा जहा वणस्सइकाइया। इत्थीओ ण भते! किं कड०? पुच्छा, गोयमा! जह० कडजुम्माओ, उक्को० सिय कडजुम्माओ अजह० सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलियोगाओ, एव असुरकुमारित्थीओ वि जाव थणियकुमारइत्थीओ, एव तिरिक्ख जोणियइत्थीओ, एवं मणुसित्थीओ, एवं जाव वाणमतरजोइसियवेमाणियदेवित्थीओ"। (सू० ६२४)

* "सव्वत्थोवे सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स जहन्नए जोए १, बादरस्स अपज्ज० जह० जोए असंखेज्ज-गुणे २, बेंदियस्स अपज्ज० जह० जोए असं० ३, एव तेइंदियस्स ४, एव चउरिंदियस्स ५, असन्निस्स पंचिंदियस्स अपज्ज० जह० जोए अस० ६, सन्निस्स पंचि० अपज्ज० जह० जोए असं० ७, सुहुमस्स पज्जत्तगस्स जह० जोए अस० ८, बादरस्स पज्ज० जह० जोए असं० ९, सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स उक्को-सए जोए अस० १०, बादरस्स अपज्ज० उक्को० जोए अस० ११, सुहुमस्स पज्ज० उक्को० जोए असं० १२, बादरस्स पज्ज० उक्को० जोए असं० १३, बेंदियस्स पज्ज० जह० जोए अस० १४, एव तेंदिय, एवं जाव सन्निपंचिंदियस्स पज्ज० जह० जोए अस० १८, बेंदियस्स अपज्ज० उक्को० जोए असं० १९, एवं तेंदियस्स वि २०, एव चउरिंदियस्स वि २१, एव जाव सन्निपंचि० अपज्ज० उक्को० जोए असं० २३, बेंदियस्स पज्ज० उक्को० जोए अस० २४, एव तेइंदियस्स वि पज्ज० उक्को० जोए असं० २५, चउरिंदि-यस्स पज्ज० उक्को० (जोए) अस० २६, असन्निपंचिंदियपज्जत० उक्को० जोए अस० २७, एवं सन्नि-पंचि० पज्ज० उक्को० जोए अस० २८"। (सू० ७१७)

† १४ मा पाना उपरना सातमा यन्त्र सबधी सूत्र नीचे मुजब छे —

"सव्वत्थोवे कम्मगसरीरजहन्नजोए १, ओरालियमीसगस्स जहन्नजोए अस० २, वेउव्वि-यमीसगस्स जहन्नए अस० ३, ओरालियसरीरस्स जहन्नए जोए अस० ४, वेउव्वियसरीरस्स जहन्नए जोए अस० ५, कम्मगसरीरस्स उक्कोसए जोए अस० ६, आहारगमीसगस्स जह० जोए अस० ७, तस्स चेव उक्कोसए जोए अस० ८, ओरालियमीसगस्स ९, वेउव्वियमीसगस्स १०, एएसि ण उक्को० जोए दोण्ह वि तुल्ले अस०, असच्चामोसमणजोगस्स जह० जोए अस० ११, आहारसरीरस्स जह० जोए अस० १२, तिविहस्स मणजोगस्स १५, चउव्विहस्स वयजोगस्स १९, एएसि णं सत्तण्ह वि तुल्ले जह० जोए असं०, आहारगसरीरस्स उक्को० जोए अस० २०, ओरालियसरीरस्स वेउव्वियस्स चउव्वि हस्स य मणजोगस्स चउव्विहस्स य वइजोगस्स एएसि णं दसण्ह वि तुल्ले उक्को० जोए असं० ३०"। (सू० ७१९)

(७) पंदर योग परत्वे अल्पबहुत्व भग० श० २५, उ० १

योग १५	सत्य मन-योग १	असत्य मनयोग २	मिश्र मन-योग ३	व्यव-हारमन योग ४	सत्य वचन योग ५	असत्य वचन योग ६	मिश्र वचन-योग ७	व्यव-हार वचन ८	ओदा-रिक ९	औदा-रिक-मिश्र१०	वैक्रिय ११	वैक्रिय मिश्र १२	आहा-रक १३	आहारक मिश्र १४	कार्मण १५
जघन्य योग	१२ असं ख्य गुणा	१२ तुल्य	१० तुल्य	१० असंख्य	१२ तुल्य	१२ तुल्य	१२ तुल्य	१२ तुल्य	४ असंख्य गुणा	२ असंख्य	५ असंख्य	३ असंख्य	११ असंख्य	७ असख्य गुणा	१ स्तोक
उत्कृष्ट योग	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	९ असंख्य	१४ तुल्य	९ तुल्य	१३ असंख्य	८ असंख्य गुणा	६ असंख्य गुणा

* पदरमा पाना उपरना आठमा यत्र सबधी सूत्र नीचे मुजब छे —

"सव्वत्थोवा सुहुमनिओयस्स अपज्जत्तस्स जहन्निया ओगाहणा १, सुहुमवाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जह० ओगा० असंखेज्जगुणा २, सुहुमतेऊअपज्जत्तस्स जह० ओगा० अस० ३, सुहुमआऊअपज्ज० जह० ओगा० असं० ४, सुहुमपुढविअपज्जत्त० जह० ओगा० अस० ५, वादरवाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जह० ओगा० असं० ६, वादरतेऊअपज्जत्तजहन्निया ओगा० असं० ७, वादरआउअपज्जत्त-जहन्निया ओगा० असं० ८, वादरपुढवीकाइयअपज्जत्तजहन्निया ओगा० अस० ९, पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयस्स वादरनिओयस्स पपसि णं पज्जत्तगाण पपसि ण अपज्जत्तगाण जह० ओगा० दोण्ह वि तुल्ला असं० १०-११, सुहुमनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जह० ओगा० अस० १२, तस्सेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगा० विसेसा १३, तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्को० ओगा० वि० १४, सुहुमवाउकाइ-यस्स पज्जत्तग० जह० ओगा० अस० १५, तस्स चेव अपज्जत्त० उक्को० ओगा० वि० १६, तस्स चेव पज्जत्त० उक्को० वि० १७, एवं सुहुमते-उकाइयस्स वि १८।१९।२०, एव सुहुमआउकाइयस्स वि २१।२२।२३, एवं सुहुमपुढविकाइयस्स विसेसा २४।२५।२६, एवं वादरवाउका-इयस्स वि० २७।२८।२९, एव वादरतेऊकाइयस्स वि० ३०।३१।३२, एवं वादरआउकाइयस्स वि० ३३।३४।३५, एवं वादरपुढविकाइयस्स वि० ३६।३७।३८, सव्वेसिं तिविहेण गमेणं भाणियव्व, वादरनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जह० ओगा० असं ३९, तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्को० ओगा० विसेसाहिया ४०, तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्को० ओगा० विसेसाहिया ४१, पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयस्स पज्जत्तगस्स जह० ओगा० अस० ४२, तस्स चेव अपज्जत्त० उक्को० ओगा० असं० ४३, तस्स चेव पज्जत्त उक्को० ओगा० असं० ४४"। (सू० ६५१)

(८) (*सूक्ष्म पृथ्वीकायादिकी अवगाहना भग० श० १९, उ० ३)

		अपर्याप्ता जघन्य	पर्याप्ता जघन्य	अपर्याप्ता उत्कृष्ट	पर्याप्ता उत्कृष्ट
१	सूक्ष्म निगोद	१ स्तोक	१२ अस	१३ वि	१४ वि
२	सूक्ष्म वायु	२ असं	१५ अस	१६ वि	१७ वि
३	सूक्ष्म तेउ	३ अस	१८ अस	१९ वि	२० वि
४	सूक्ष्म अप्	४ अस	२१ अस	२२ वि	२३ वि
५	सूक्ष्म पृथ्वी	५ अस	२४ अस	२५ वि	२६ वि
६	बादर वायु	६ असं	२७ अस	२८ वि	२९ वि
७	बादर तेउ	७ अस	३० अस	३१ वि	३२ वि
८	बादर अप्	८ अस	३३ अस	३४ वि	३५ वि
९	बादर पृथ्वी	९ अस	३६ अस	३७ वि	३८ वि
१०	बादर निगोद	१० अस	३९ अस	४० वि	४१ वि
११	प्रत्येक वनस्पति	११ तुल्य	४२ अस	४३ असंख्य	४४ असंख्य गुणा

(९)*

	काइया (कायिकी)	अहिगरणी (आधिकरणिकी)	पाउ(दो)सिया (प्राद्वेषिकी)	परिताप	प्राणातिपात
कारण	सारंभ	सारंभ	सारंभ	समारंभ	आरंभ
काइया संबंध	०	नियमा	नियमा	भजना	भजना
अहिगरणिया	नियमा	०	,,	,,	,,
पाउ(दो)सिया	,,	नियमा	०	,,	,,
पारितापनिका	,,	,,	नियमा	०	,,
प्राणातिपात	,,	,,	,,	नियमा	०

* "जस्स णं भंते ! जीवस्स कातिया किरिया कज्जइ तस्स अहिगरणिया किरिया कज्जति, जस्स

पालनपुरनिवासी दोसी काळीदास माकळचद तरफथी तेमना पिताश्री
स्व दोसी साकळचद दलछाचदना स्मरणार्थे

प्रवर्तक मुनिवर्य श्रीमान् कान्तिविजयजी महाराज

जन्म	दीक्षा	प्रवर्तकपद
सं. १८९२ कारतक सुद २	सं. १९३६ माह सुद ११	सं. १९५७ माह सुद १०
वडोदरा	अंबाला	पाटण

(११) *भगवती शते १ उद्देशे २ कालयन्त्रम्

०	शून्य काल	अशून्य काल	मिश्र काल	सतिष्ठन काल
नारकी	३ अनत गुणा	१ सर्व स्तोक १२ मुहूर्त	२ अनत गुणा	२ असख्यात गुणा
तिर्यंच	०	१ सर्व स्तोक अत-मुंहूर्त त्रस आश्री	,,	४ अनंत गुणा
मनुष्य	३ अनत गुणा	१ सर्व स्तोक १२ मुहूर्त	,,	१ सर्व स्तोक
देव	,,	सर्व स्तोक १२ मुहूर्त १	,,	३ असख्येय गुणा

(१२) अथ षट् लेश्या द्वार उत्तराध्ययन ३४ मे वा श्रीपन्नवणा पद १७ परथी ज्ञेय

नाम १	कृष्ण लेश्या १	नील लेश्या २	कापोत लेश्या ३	तेजोलेश्या ४	पद्म-लेश्या ५	शुक्ल लेश्या ६
वर्ण द्रव्य-लेश्या अपेक्षा २	काली घटा १ महिप शृग गुली २ शकटना खजन ३ नेत्रनी कीकी ४ इन सदृश वर्ण कृष्ण	अशोक वृक्ष १ नील चासना पक्षं २ वेडूर्य मणि ३ शुक पक्ष ४ ऐसा वर्ण	अलसीना फूल १ कोकिलानी पक्ष २ परेवानी ग्रीवा ३ ऐसा वर्ण	हिंगुल १ धातु पापाण वि-शेप रक्त २ उगता सूय तेजोलेश्या वर्णत	हरिताल १ हलद्री २ सण ३ असन ए वृक्षना पुष्पवत् पीत	सख १ अकरत्न २ मचकुद पुष्प दधि रूपाना हारवत् शुक्ल

आरभिया कि० तस्स अपच्च० सिय क० सिय नो क०, जस्स पुण अपच्च० क० तस्स आरभिया कि० णियमा क०, एव मिच्छादसणवत्तियाए वि सम, एव पारिग्गहिया वि तिहिं उवरिल्लाहिं सम सचारेतव्वा, जस्स माया कि० तस्स उवरिल्लाओ दो वि सिय कज्जति सिय नो कज्जति, जस्स उवरिल्लाओ दो कज्जति तस्स माया० नियमा क० जस्स अपच्च० कि० क० तस्स मिच्छा० कि० सिय क० सिय नो क०, जस्स पुण मिच्छा० कि० तस्स अपच्च० कि० णियमा कज्जति" । (सू० २८४)

* "नेरइयससारसचिट्ठणकाले ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ? । गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त०—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ॥ तिरिक्ख जोणियससारपुच्छा, गो० ! दुविहे प० त०—असुन्नकाले य मिस्सकाले य, मणुस्साण य देवाण य जहा नेरइयाण ॥ एयस्स ण भते ! नेरइयसंसारसचिट्ठणकालस्स सुन्नकालस्स असुन्नकालस्स मीसकालस्स य कयरे कयरे हिंतो अप्पा वा बहुए वा तुल्ले वा विसेसाहिए वा ? । गो० ! सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणतगुणे, सुन्नकाले अणतगुणे ॥ तिरिक्ख० भते ! सव्व० असुन्न०, मिस्स० अणत०, मणुस्सदेवाण य जहा नेरइयाण ॥ एयस्स ण भते ! नेरइयस्स ससारसचिट्ठणकालस्स जाव देवससारसचिट्ठणजाव विसेसाहिए वा ? । गो० ! सव्व० मणुस्ससारसचिट्ठणकाले, नेरइयससार० असखेज्जगुणे, देवससार० अस०, तिरिक्खजोणिए अणत०" ॥ (सू० २३)

१ पाप ।

नाम १	कृष्ण लेश्या १	नील लेश्या २	कापोत लेश्या ३	तेजोलेश्या ४	पद्म-लेश्या ५	शुक्ल लेश्या ६
रस द्रव्य लेश्या आश्री ३	कटुक उव १ नींब २ अर्कपत्र इसके रससे अनत गुण कटुक रस	यथा त्रिकूट रस १ हस्ती पीपलना रस एहथी अनत गुणाधिक	तरुण आम्ररस कचा कंपिट्ठ फल रस इनथी अनंत गुणा कपायला रस है	पक आम्र रस १ पाका कोठ फल २ रस इनसे अनंत गुणाधिका	घर वारुणी मद १ पुष्पका मद २ मधु मध विशेष ३ सिरका इनसे अनंत गुणा	यथा खजूर रस १ द्राख रस २ खंड रस ३ मिसरी रस इनसे अनंत गुणा
गध द्रव्य-लेश्या आश्री ४	मृतक गौ १ मृतक श्वान २ मृतक सर्प ३ इनके दुर्गंध से अनत गुणाधिक	ए →व मू	ए →व मू	पूक सुगध-वत् तथा सुगंध पी सता जैसी सुगध इनसे अनंत गुणा	ए →व मू	ए →व मू
स्पर्श द्रव्य-लेश्या आश्री ५	करवतनी धार १ गौ जिह्वा २ साम वनस्पतिना पत्र इनके स्पर्शसे अनत कर्कश स्पर्श	ए →व मू	ए →व मू	यथा बूर वनस्पति १ म्रक्षण २ शिरीष कु-सुम इनसे अनंतसा कोमल है	ए →व मू	ए →व मू
परिणाम-समुचय ६	जघन्य १ मध्यम २ उत्कृष्ट ३ इनका ९ फेर २७ फेर ८१ फेर २४३ इस तरे असंखवे २ करणा नियमन करणाके इतने परिणाम है	ए →व मू	ए →व मू	ए →व मू	ए →व मू	ए →व मू
लक्षण विशिष्ट लेश्यानी अपेक्षा इह लक्षण है	२१ बोल पांच आश्रवना सेवनहार ५ तीन गुप्तियें अगुप्ति ३ षट्कायना अविरति तीव्र आरम्भी १	१५ बोल ईर्ष्या-पर गुन असहन १ अभि-निवेशकी १ तप रहित १ कुशास्त्री १ मायावी १	१२ बोल वांका बोले १ वक्राचारी २ नियडमाया ३ असरल ४ अपने दोष	१३ बोल नीचा वर्ते १ अचपल २ अमाइ ३ अकुतूहल ४ विनयवत ५	१२ बोल पतले क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४	१८ बोल आर्त रौद्र वर्जे २ धर्म-ध्यान ३ शुक्ल ध्यान ध्यावे ४

१ कोठ ।

नाम १	कृष्ण लेश्या १	नील लेश्या २	कापोत लेश्या ३	तेजोलेश्या ४	पद्म-लेश्या ५	शुक्ललेश्या ६
पिण देवता आदिके साथ व्यभि-चार नही विशिष्ट उत्कट शुद्ध अथवा अशुद्ध ७	सर्वेकू अहितकारी १ साहसिक अनविचारें कार्यकारी १ जीव हिंसा करता शंके नही १ या इसलोक परलोकीना कष्टनी शंका नही ते निर्द्धंस-परिणामी कहियें १ अजितेंद्रिय १ सूग रहित १ एवं २१ बोल	अहीकाता (?) समाचार विपये निर्लज्ज १ विपयका लापट्य १ द्वेषी १ शठ १ जात्यादि मदवान् १ रस लोलुप १ सातागवेपी १ आरभीसें अवरति १ क्षुद्रिक १ अन विचारें कार्यना कारणहार ते साहसिक १	आच्छादक ५ कपटसें प्रवर्ते ६ मिथ्यादृष्टि ७ अनार्य ८ उत्प्राशक ९ आग लोक लक आदिमे फसे ऐसे बोले ९ दुष्ट वचन बोले १० चौर ११ मत्सरी पर-संपद् असहन १२ द्रव्यके सहचर करके तिसके उरगते तद्रूप होना सो प्र(परि)णाम कहिये सर्वत्र	विनय करे ६ दमतेंद्री ७ शास्त्र पढीने उप धान तप-वान् ८ प्रिय धर्मी ९ दृढ धर्मी १० पापसे डरे ११ मोक्षा भिलापी १२ शुभ योग वान् एवं तेजो ना परिणाम अर्थात् लक्षण जान लेना अनगारस्य एतत्	प्रशात चित्त ५ दमिता त्मा ६ शुभ योगवान् ७ शास्त्र पठन करीने उपधान तपवान् ८ अल्प भापी ९ उपशम वान् १० जितेंद्रिय ११ ए लक्षण पद्मले-श्याना धणी अनागा रस्य एतत् सम्भ-वति, नान्य स्येति	प्रशात चित्त ५ दान्त आत्मा ६ पाच समिति समिता ११ तीन गुप्ते गुप्ता १४ सराग १५ तथा वीत राग १६ उपशांत-वान् १७ जितेन्द्रिय १८ एतदपि अनगार-स्येति लक्षणम्
स्थान प्रकर्ष अपकर्ष रूप अशुभना अशुभ शुभना शुभ ८	स्थान असंख्य कितने ? जितने असंख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय तुल्य क्षेत्रतः असंख्य लोकके प्रदेश नभ प्रदेश तुल्य	ए →व म्	ए →व म्	ए →व म्	ए →व म्	ए →व म्
स्थिति नारकीनी	जघन्य १० सागरो पम पल्योपमका	जघन्य ३ साग-रोपम पल्योप-	जघन्य १ सहस्रवर्ष			

१ इन्द्रियना उपर काबू राखनार। २ साधुनु आ। ३ साधुमां आ संभवे छे, नहि के अन्यने विषे। ४ आ पण साधुनु लक्षण छे।

नाम १	कृष्ण लेश्या १	नील लेश्या २	कापोत लेश्या ३	तेजोलेश्या ४	पद्म लेश्या ५	शुक्ललेश्या ६
	असख्यातमा भाग अधिक, उत्कृष्ट ३३ सागरोपम	मना असख्यातमा भाग अधिक उत्कृष्ट १० सागरोपम पल्योपमना असख्यातमा भाग अधिक	उत्कृष्ट ३ सागरोपम पल्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक	०	०	०
तिर्यच	जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त	→एवम्	→एवम्	→एवम्	→एवम्	→एवम्
मनुष्य	„	„	„	„	„	छद्मस्थ एवम्, केवली जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट देश ऊन पूर्व कोटि
भवनपति व्यन्तर	ज० दश हजार वर्ष, उ० पल्योपमना असख्यातमे भाग	ज० कृष्णकी उत्कृष्टसे १ समय अधिक, उ० पल्योपमना असख्यातमे भाग	ज० नीलकी उत्कृष्टसे १ समय अधिक, उ० पल्योपमना असख्यातमे भाग	ज० दश हजार वर्ष, उ० १ सागरोपम झंझेरी अने व्यतरकी स्वय ऊह्यम्	०	०
जोतिषी	०	०	०	ज० पल्योपमना ८ भाग, उ० १ पल लक्ष वर्ष अधिक	०	०
वैमानिक ९	०	०	०	ज० १ पल्योपम; उ० २ सागरोपम झझेरी	ज० तेजोकी उत्कृष्टीसे १ समय अधिक, उ० १० सागरोपम अंतमुहूर्त अधिक	ज० १० सागरोपम १ समय अधिक; उ० ३३ सागरोपम

१ अधिक ।

नाम १	कृष्ण लेश्या १	नील लेश्या २	कापोत लेश्या ३	तेजोलेश्या ४	पद्म लेश्या ५	शुक्ललेश्या ६
गति १०	दुर्गतिगामी	दुर्गतिगामी	दुर्गतिगामी	सुगतिगामी	सुगति-गामी	सुगतिगामी
आयु ११	आयुने अते है न करे तदा मृत्यु	अतमुर्हूर्त शेप आयु थाकते नर भव जहा जाता तिस भव सदृश लेश्याका स्वरूप होवे तिस लेश्याके प्रथम समय अथवा चरम समय काल अंतर्मुहूर्त लेश्या बीती है अने अतर्मुहूर्त ही है					
स्वध १२	अनत प्रदेशी	अनत प्रदेशी	अनत प्रदेशी	अनत प्रदेशी	अनत प्रदेशी	अनत प्रदेशी
अवगाहना १३	असख्य प्रदेश	असख्य प्रदेश	असंख्य प्रदेश	असख्य प्रदेश	असख्य प्रदेश	असख्य प्रदेश
वर्गणा १४	अनती वर्गणा	एवम्	एवम्	एवम्	एवम्	एवम्
अल्पवहुत्व द्रव्यार्थ प्रदेशा १५	३ असख्य गुणी वर्गणा	२ असख्य गुणी०	१ स्तोक	४ असख्य गुणी	५ असख्य गुणी	६ असख्य गुणी
विशुद्ध १६	अविशुद्ध	अविशुद्ध	अविशुद्ध	विशुद्ध	विशुद्ध	विशुद्ध
प्रशस्त १७	अप्रशस्त	अप्रशस्त	अप्रशस्त	प्रशस्त	प्रशस्त	प्रशस्त
ज्ञान १८	२।३।४	२।३।४	२।३।४	२।३।४	२।३।४	२।३।४।१
क्षेत्र १९	१ वहु	२ वहु	३ वहु	४ वहु	५ वहु	६ वहु.
ऋद्धि २०	१ स्तोक	२ वहु	३ वहु	४ वहु	५ वहु	६ वहु
अल्पवहुत्व	७ विशेप	६ विशेप	५ अनत गुण	३ सख्या	२ सख्या	१ स्तोक ६ अलेश्यी ४ अनंत

अथ स्थितिका खुलासा—समुचय कृष्ण लेश्याकी स्थितिमे ३३ सागरोपम अतर्मुहूर्त अधिक ते पूर्वापर भवनी अपेक्षा है. अने नारकीने ३३ सागरोपम पूरी कही ते नरक भवनी अपेक्षा सूत्र है. इसी तरेह देवतानी लेश्यामे पद्म आदिकमे तिस भव अने पूर्वापर भवनी अपेक्षा सूत्रकारनी विवक्षा है. एह समाधान उत्तराध्ययनकी अवचूरिमें जान लेना.

भाव थकी १९ वोलकी (का) अल्पवहुत्वम्

१ जीवके योगस्थान जघन्य आदि सर्वसे स्तोक. २ एकेक कर्मप्रकृतिके भेद असंख्य गुणे.

३ कर्म स्थिति स्थान जघन्य आदि असंख्य गुणे. ४ षट् लेश्या स्थान स्थितिरूप असंख्य गुणे. ५ अनुभागबंधके अध्यवसाय असंख्य गुणे. ६ कर्म प्रदेश दलरूप असंख्य गुणे. ७ रस छेद जीव राससे अनंत गुणे. ८ मनःपर्यायज्ञानके पर्यव अनंत गुणे. ९ विभंगज्ञानके पर्यव अनंत गुणे. १० अवधिज्ञानके पर्याय अनंत गुणे. ११ श्रुतअज्ञानके पर्याय अनंत गुणे. १२ श्रुतज्ञानके पर्याय विशेष अधिक. १३ मतिअज्ञानके पर्याय अनंत गुणे. १४ मतिज्ञानके पर्याय विशेष अधिक. १५ द्रव्यकी अगुरुलघु पर्याय अनंत गुणे. १६ केवलज्ञाननी पर्याय अनंत गुणे कर्मग्रन्थात्.

(१३) (लेश्याका अल्पबहुत्व)

अल्पबहुत्व	कृष्ण लेश्या	नील लेश्या	कापोत लेश्या	तेजोलेश्या	पद्मलेश्या	शुक्ल लेश्या
जीव	७ वि	४ वि	४ अनंत	३ असंख्यात	२ संख्यात	१ स्तोक
नारकी	१ स्तोक	२ असंख्यात	३ असंख्यात	०	०	०
वनस्पतिकाय	४ वि	३ वि	२ अनंत	१ स्तोक	०	०
पृथ्वीकाय १ अप् २	४ वि	३ वि	२ असंख्यात	१ स्तोक	०	०
तेजस्काय वायुकाय विकलेन्द्रिय ३	३ वि	२ वि	१ स्तोक	०	०	०
१ तिर्यंच पंचेन्द्रिय	६ वि	५ वि	४ असंख्यात	३ संख्यात	२ संख्यात	१ स्तोक
२ समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच	३ वि	२ वि	१ स्तोक	०	०	०
३ गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच	६ वि	५ वि	४ संख्यात	३ संख्यात	२ संख्यात	१ स्तोक
४ तिर्यंच स्त्री	६ वि	५ वि	४ सं	३ सं	२ सं	१ स्तोक
संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय	९ वि	८ वि	७ असं	०	०	०
५ गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय	६ वि	५ वि	४ सं	३ सं	२ सं	१ स्तोक

अल्पबहुत्व	कृष्ण लेश्या	नील लेश्या	कापोत लेश्या	तेजोलेश्या	पद्मलेश्या	शुक्ल लेश्या
संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय	९ वि	८ वि	७ असं	०	०	०
६ तिर्यंच स्त्री	६ वि	५ वि	४ स	३ स	२ सं	१ स्तोक
गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय	९ वि	८ वि	७ सं	५ सं	३ स	१ स्तोक
७ तिर्यंच स्त्री	१२ वि	११ वि	१० सं	६ सं	४ स	२ सं
संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय	१५ वि	१४ वि	१३ असं	०	०	०
८ गर्भज पचेन्द्रिय तिर्यंच	९ वि	८ वि	७ स	५ सं	३ स	१ स्तोक
तिर्यंच स्त्री	१२ वि	११ वि	१० स	६ सं	४ स	२ सं
तिर्यंच पचेन्द्रिय समुच्चय	१२ वि	११ वि	१० अस	५ सं	३ स	१ स्तोक
९ तिर्यंच स्त्री	८ वि	८ वि	७ स	६ स	४ सं	२ सं
तिर्यंच	१२ वि	११ वि	१० अनंत	५ स	३ स	१ स्तोक
१० तिर्यंच स्त्री	९ वि	८ वि	७ स	६ स	४ स	२ अस
१ देवता	५ वि	४ वि	३ अस	६ स	२ असं	१ स्तोक
२ देवी	३ वि	२ वि	१ स्तो	४ स	०	०
देवी	८ वि	७ वि	६ सं	१० स	०	०
३ देवता	५ वि	४ वि	३ अस	९ स	२ अस	१ स्तोक
४ भवनपति देव ५ व्यंतर देव	४ वि	३ वि	२ अस	१ स्तो	०	०
६ भवनपति देवी ७ व्यंतर देवी	४ वि	३ वि	२ असं	१ स्तो	०	०

शान्तमूर्ति मुनिमहाराज श्रीमान् हंसविजयजी महाराज

जन्म

सवत् १९१४

आषाढ वदि

अमावास्या

बडौदा, गुजरात

मुनिपद

सवत् १९३५

माह वदि ११

अम्बाला शहर,

पंजाब

पालणपुरनिवासी कान्तिलाल तरफथी तेमना पिताश्री
स्व झवेरी मोहनलाल वस्ताचदना स्मरणार्थे

(१४) श्रीपन्नवणा २ पदात् स्थानयंत्र क्षेत्र द्वारम्

जीवाके भेद	स्वस्थानेन- रहने करके	उपपातेन- उपजने करके	समुद्घात आश्री
पृथ्वी १ अप् २ तेज ३ वायु ४ वनस्पति ५ ए ५ सूक्ष्म पर्याप्ता ५ अपर्याप्ता ५ एवं १० बोल	सर्व लोकमे	सर्व लोकमे	सर्व लोकमे
बादर पृथ्वी १ अप् २ वायु ३ वनस्पति ४ ए चारों का अपर्याप्ता	लोकके असख्यातमे भागमे	सर्वसिंलोके- सर्व लोकमे	सर्वलोके असंख्यलोकके प्रदेशतुल्यत्वात्
बादर तेजस्काय अपर्याप्ता १	मनुष्यलोक	मनुष्यलोकके २ ऊर्ध्व कपाट तिर्यग् लोकका तट	सर्व लोकमे
बादर तेजस्काय पर्याप्ता १	"	लोकके असख्य भाग स्तोकत्वात्	लोकके असख्यातमे भाग
बादर वायुकाय पर्याप्ता १	लोकके घणे असख्य भागमे	एवम्	एवम्
बादर वनस्पति पर्याप्ता १	लोकके असख्यमे भाग	सर्व लोकमे बहुतमत्वात्	सर्व लोकमे
शेष सर्व जीव	"	एवम्	एवम्

(१५) *श्रीपन्नवणा अवगाहना २१मे पदात् स्पर्शनाद्वारम्

१ समग्र लोकमां असंख्य लोकना प्रदेशोनी बराबर होवाथी। २ अल्प होवाथी। ३ घणा अधिक होवाथी।

*"जीवस्स ण भंते मारणंतियसमुग्घाएण समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा प०? गो०! सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेणं आयामेण जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जभागो, उक्कोसेण लोगताओ लोगंते। एगिंदियस्स ण भंते! मारणंतिय० सरीरो० प०? गो०! एवं चेव, जाव पुढवि० आउ० तेउ० वाउ० वणप्फइकाइयस्स। बेइंदियस्स णं भंते! मारणंतिय० प०? गो०! सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेण आयामेण जह० अंगुलस्स असंखे०, उक्को० तिरियलोगाओ लोगंते, एवं जाव चउरिंदियस्स। नेरइयस्स ण भंते! मार० जह० सातिरेग जोयणसहस्सं, उक्को० अहे जाव अहेसत्तमा पुढवी, तिरियं जाव सयंभुरमणे समुद्दे, उड्ढं जाव पंडगवणे पुक्खरिणीओ। पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स णं भंते! गो०! जहा बेइंदियसरीरस्स। मणुस्सस्स ण भंते! गो०! समयखेत्ताओ लोगंतो। असुरकुमारस्स णं भंते!० जह० अंगुलस्स असं०, उक्को० अहे जाव तच्चाए पुढवीए हिट्ठिल्ले

मरणांत समुद्घात तेजस अवगाहना	नारकी	भवन० व्यंतर जोतिषी सौधर्म ईशान	३-८ देवलोक	९-१२ देवलोक	९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर	स्था व र ५	विकलेंद्री ३ तिर्यंच पंचेन्द्री	म नु ष्य
ज घ न्य	१००० योजन साधिक पाताल कलशकी भींति आश्री	अंगुलके असंख्यातमे भाग स आभरण आदि अपेक्षा(से)	अंगुल असंख्यातमे भाग स्त्रीसे भोग करी मरी तिहां उपजे अन्य वीर्यमे	अंगुल असंख्यातमे भाग स्त्रीसे भोग करी तिहां योनिमे पहिला वीर्य है तिहां उपजे	विद्याधर श्रेणि	अंगुलके असंख्यातमे भाग	->एवम्	->एवम्
उत्कृष्ट	सातमी नरक	त्रीजी नरकका चरम अंत	पाताल कलशके उपरले २ भागे	अधो-ग्राममे	अधो-ग्राममे	१४ रज्जु प्रमाण	७ रज्जु	७ रज्जु
तिरछा	स्वयंभूरमण समुद्र	स्वयंभूरमण समुद्रकी वे(व)दिकांत	स्वयंभूरमण समुद्र	मनुष्य क्षेत्र	मनुष्य क्षेत्र	१ रज्जु	१ रज्जु	अर्ध रज्जु
ऊर्ध्व ऊंचा	पंडग वन वापीमे	ईषत् प्राग्भार पृथ्वी	अच्युत देवलोक	अच्युत विमान बारमा देव०	अपना विमान	१४ रज्जु	७ रज्जु	७ रज्जु

चरमंते तिरियं जाव सयंभुरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्ले वेइयंते, उड्ढं जाव ईसीपब्भारा पुढवी, एवं जाव थणियकुमारतेयगसरीरस्स । वाणमंतरजोइसियसोहम्मीसाणगा य एवं चेव । सणंकुमारदेवस्स णं भंते० ! जह० अंगु० असं०, उक्को० अधे जाव महापातालाणं दोच्चे तिभागे, तिरियं जाव सयंभुरमणे समुद्दे, उड्ढं जाव अच्चुओ कप्पो, एवं जाव सहस्सारदेवस्स अच्चुओ कप्पो । आणयदेवस्स णं भंते० ! जह० अंगु० असं०, उक्को जाव अधोलोइयगामा, तिरियं जाव मणूसखेत्ते, उड्ढं जाव अच्चुओ कप्पो, एवं जाव आरणदेवस्स अच्चुअदेवस्स एवं चेव, णवरं उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं । गेविज्जगदेवस्स णं भंते !० जह० विज्जाहरसेढीतो, उक्को० जाव अहोलोइयगामा, तिरियं जाव मणूसखेत्ते, उड्ढं जाव सगाइं विमाणाइं, अणुत्तरोववाइयस्स वि एवं चेव" । (प्रज्ञा० सू० २७५)

(१६) श्रीपन्नवणा पद ३६मेथी समुद्घातयंत्रम्

७ समुद्घात	०	वेदनी	कषाय	मरणांतिक	वैक्रिय	तेजस	आहारक	केवल	असमवहता
स्वामी	०	४ गतिना	४ गतिना	४ गतिना	४ गतिना	३ नरक विना	१ मनुष्य	१ मनुष्य	४ गतिना जीव

७ समुद्घात	०	वेदनी	कषाय	मरणांतिक	वैक्रिय	तैजस	आहारक	केवल	असमवहता
काल	०	अंतर्मुहूर्त	अंत०	अंत०	अंत०	विना अंत०	अंत०	८ समय	०
अतीत काले	जघन्य	अनंती	अनंती	अनंती	अनंती	अनंती	१	१	०
	उत्कृष्ट	,,	,,	,,	,,	,,	४	१	
आगे करेगा, ते	जघन्य	करे तीन ही बीजो १	नही १ करे	→	ए	व	मू	→	०
	उत्कृष्ट	अनंती करे	अनंत	अनंत	अनंत	अनंत	४	१	०
अल्पबहुत्व	०	७ विशेष	६ असं०	५ अनंत गुण	४ असं०	३ असं०	१ स्तोक	२ संख्येय गुणा	८ असं० गुणा
क्षेत्र	दिशा	६	६	३,४,५,६,	६	६	३	६	०
विष्कंभ बाहुल्य		शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	सर्व लोक	०
आयाम लांबपणे		,,	,,	१४ रज्जु				,,	०
विग्रह समय संख्या		३	३	३	३	३	०	०	०
क्रिया	०	३,४,५	३,४,५	३,४,५	३,४,५	३,४,५	३,४,५	०	०

(१७) केवल(लि)समुद्घातयंत्रं

प्रथम आउज्जी(आवर्जी)करण करे—आत्माकूं मोक्षके सन्मुख करे; पीछे समुद्घात करे. जिस समयमे आत्मप्रदेश सर्व लोकमे व्याप्त करे तिस समये अपने अष्ट रुचक प्रदेश लोकरुचक पर करे इति स्थानांगवृत्तौ ।

समय ८	१ समय	२ समय	३ समय	४ समय	५ समय	६ समय	७ समय	८ समय
योग ३	औदारिक	औदारिक मिश्र	कार्मण	कार्मण	कार्मण	मिश्र	मिश्र	औदारिक
करण ८	दंड करे	कपाट करे	मथान करे	अंतर पूरे	अंतर संहरे	मथान संहरे	कपाट संहरे	२

मरणात समुद्घात तेजस अवगाहना	नारकी	भवन० व्यंतर जोतिषी सौधर्म ईशान	३-८ देवलोक	९-१२ देवलोक	९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर	स्थावर ५	विकलेंद्री ३ तिर्यच पचेन्द्री	मनुष्य
जघन्य	१००० योजन साधिक पाताल कलशकी भींति आश्री	अंगुलके असंख्यातमे भाग स आभरण आदि अपेक्षा(से)	अंगुल असंख्यातमे भाग स्त्रीसे भोग करी मरी तिहां उपजे अन्य वीर्यमे	अंगुल असंख्यातमे भाग स्त्रीसे भोग करी तिहा योनिमे पहिला वीर्य है तिहा उपजे	विद्याधर श्रेणि	अंगुलके असंख्यातमे भाग	→एवम्	→एवम्
उत्कृष्ट	सातमी नरक	त्रीजी नरकका चरम अंत	पाताल कलशके उपरले २ भागे	अधोग्राममे	अधोग्राममे	१४ रज्जु प्रमाण	७ रज्जु	७ रज्जु
तिरछा	स्वयंभूरमण समुद्र	स्वयंभूरमण समुद्रकी वे(व)दिकात	स्वयभूरमण समुद्र	मनुष्य क्षेत्र	मनुष्य क्षेत्र	१ रज्जु	१ रज्जु	अध रज्जु
ऊर्ध्वे ऊचा	पंडग वन वापीमे	ईषत् प्राग्भार पृथ्वी	अच्युत देवलोक	अच्युत विमान बारमा देव०	अपना विमान	१४ रज्जु	७ रज्जु	७ रज्जु

चरमते तिरिय जाव सयभुरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्ले वेइयते, उड्ढं जाव इसीपब्भारा पुढवी, एवं जाव थणियकुमारतेयगसरीरस्स । वाणमंतरजोइसियसोहम्मीसाणगा य एवं चेव। सणकुमारदेवस्स ण भते०! जह० अंगु० अस०, उक्को० अधे जाव महापातालाण दोचे तिभागे, तिरिय जाव सयंभुरमणे समुद्दे, उड्ढ जाव अच्चुओ कप्पो, एव जाव सहस्सारदेवस्स अच्चुओ कप्पो। आणयदेवस्स णं भते०! जह० अगु० अस०, उक्को जाव अधोलोइयगामा, तिरियं जाव मणूसखेत्ते, उड्ढ जाव अच्चुओ कप्पो, एव जाव आरणदेवस्स अच्चुअदेवस्स एव चेव, णवर उड्ढ जाव सयाइं विमाणाति। गेविज्जगदेवस्स णं भते!० जह० विज्जाहरसेढीतो, उक्को० जाव अहोलोइयगामा, तिरिय जाव मणूसखेत्ते, उड्ढं जाव सगाति विमाणाति, अणुत्तरोववाइयस्स वि एवं चेव"। (प्रज्ञा० सू० २७५)

(१६) श्रीपन्नवणा पद ३६मेथी समुद्घातयंत्रम्

७ समुद्घात	०	वेदनी	कषाय	मरणांतिक	वैक्रिय	तेजस	आहारक	केवल	असमवहता
स्वामी	०	४ गतिना	४ गतिना	४ गतिना	४ गतिना	३ नरक विना	१ मनुष्य	१ मनुष्य	४ गतिना जीव

७ समुद्धात	०	वेदनी	कषाय	मरणा-तिक	वेक्रिय	तैजस	आहारक	केवल	असम-वहता
काल	०	अतर्मुहूर्त	अत०	अत०	अत०	विना अत०	अंत०	८ समय	०
अतीत काले	जघन्य	अनती	अनती	अनती	अनती	अनती	१	१	०
	उत्कृष्ट	,,	,,	,,	,,	,,	४	१	
आगे करेगा, ते	जघन्य	करे वीन ही वीजो १	नही १ करे	→	ए	व	म्	→	०
	उत्कृष्ट	अनती करे	अनत	अनंत	अनत	अनत	४	१	०
अल्पबहुत्व	०	७ विशेष	६ अस०	५ अनत गुण	४ अस०	३ अस०	१ स्तोक	२ सख्ये य गुणा	८ अस० गुणा
क्षेत्र	दिशा	६	६	३,४,५,६,	६	६	३	६	०
विष्कभ वाहुल्य		शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	सर्व लोक	०
आयाम लावपणे		,,	,,	१४ रज्जु				,,	०
विग्रह समय सख्या		३	३	३	३	३	०	०	०
क्रिया	०	३,४,५	३,४,५	३,४,५	३,४,५	३,४,५	३,४,५	०	०

(१७) केवल(लि)समुद्धातयत्रं

प्रथम आउज्जी(आवर्जी)करण करे—आत्माकू मोक्षके सन्मुख करे; पीछे समुद्घात करे. जिस समयमे आत्मप्रदेश सर्व लोकमे व्याप्त करे तिस समये अपने अष्ट रुचक प्रदेश लोकरुचक पर करे इति स्थानांगवृत्तौ ।

समय ८	१ समय	२ समय	३ समय	४ समय	५ समय	६ समय	७ समय	८ समय
योग ३	औदारिक	औदारिक मिश्र	कार्मण	कार्मण	कार्मण	मिश्र	मिश्र	औदारिक
करण ८	दड करे	कपाट करे	मथान करे	अतर पूरे	अतर सहरे	मथान सहरे	कपाट सहरे	दड संहरे शरीरस्थ

समय ८	१ समय	२ समय	३ समय	४ समय	५ समय	६ समय	७ समय	८ समय
ऊर्ध्व अधो	लोकांत	लोकांत	लोकांत	लोकांत	लोकांत	लोकांत	लोकांत	लोकांत
पूर्व पश्चिम	शरीर-प्रमाण	शरीर-प्रमाण	,,	,,	,,	शरीर-प्रमाण	शरीर-प्रमाण	शरीर प्रमाण
उत्तर दक्षिण	,,	लोकांत	,,	,,	,,	,,	,,	,,
जीव प्रदेश	सर्व शरीरमे	बाह्य स्तोक	अभ्यंतरे स्तोक	लोका-काश तुल्य	लोका-काश तुल्य	अभ्यंतर स्तोक	बाह्य स्तोक	सर्व शरीरमे

(१८) श्रीपन्नवणा पद ३६मे सात समुद्धात अल्पबहुत्वम्

द्वार	वेदनी १	कषाय २	मरणांतिक ३	वैक्रिय ४	तैजस ५	आहारक ६	केवल ७
नरक	३ संखे	४ संखे	१ स्तोक	२ असं०	०	०	०
भवनपति	३ असं	,,	२ असं	५ संखे	१ स्तोक	०	०
पृथ्वी	३ विशेष	२ संखे	१ स्तोक	०	०	०	०
अप्	,,	,,	,,	०	०	०	०
अग्नि	,,	,,	,,	०	०	०	०
वायु	४ वि	३ स	२ असं	१ स्तोक	०	०	०
वनस्पति	३ वि	२ सं	१ स्तोक	०	०	०	०
बेइंद्री	२ असं	३ संखे	,,	०	०	०	०
तेंद्री	,,	,,	,,	०	०	०	०
चौरिंद्री	,,	,,	,,	०	०	०	०
तिर्यंच पंचेंद्री	४ असं	५ सं	३ अस	२ अस०	१ स्तोक	०	०
मनुष्य	६ असं	७ स	५ अस	४ स	३ स	१ स्तोक	२ स
व्यंतर	३ अस	४ स	२ अस	५ स	१ स्तोक	०	०
जोतिषी	,,	,,	,,	,,	,,	०	०
वैमानिक	,,	,,	,,	,,	,,	०	०

(१९) पन्नवणा कषायपदे अल्पबहुत्वम्

क्रोध द्वार सख्या	मान	माया	लोभ	अकषाय
४ वि	३ सं	२ स	१ स्तो	०
१ स्तो	२ स	३ स	४ वि	०
२ वि	१ स्तो	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
				१ स्तो
१ स्तो	२ स	३ स	४ वि	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०

आचारांगात् षोडश (१६) सञ्ज्ञास्वरूप[1]

१ आहारसंज्ञा—आहार अभिलाषारूप तैजसशरीरनामकर्म असाताके उदय. २ भयसंज्ञा—त्रासरूप मोहकर्मकी प्रकृतिके उदय. ३ मैथुनसंज्ञा—१ स्त्री २ पुरुष ३ नपुंसक इन तीनो वेदाके उदय. ४ परिग्रहसंज्ञा—मूर्च्छारूप मोहनी(य)कर्मके उदय. ५ सुखसंज्ञा—सातावेदनी(य)के उदय करके. ६ दुःखसंज्ञा—दुःखरूप असातावेदनी(य)के उदय. ७ मोहसंज्ञा—मिथ्यादर्शनरूप मोहकर्मके उदय. ८ विचिकित्सासंज्ञा—चित्तविप्लुतिरूप मोहनी(य) अनें ज्ञानावरणी(य)के उदय. ९ क्रोधसंज्ञा—अप्रतीति(अप्रीति ?)रूप मोहकर्मके उदय. १० मानसंज्ञा—गर्वरूप मोहकर्मके उदय. ११ मायासंज्ञा—वक्ररूपा मोहकर्मके उदय. १२ लोभ-

१ आचारांगमांथी सोळ संज्ञाओनु स्वरूप।

संज्ञा—गृद्धिरूपा मोहकर्मके उदय. १३ शोकसंज्ञा—विप्रलाप वैमनस्यरूपा मोहकर्मके उदय. १४ लोकसंज्ञा—स्वच्छंदे घटित विकल्परूपा लोकरूढि—श्वान यक्ष है, विप्र देवता है, काकाः पितामह(ाः) अर्थात् काक दादा पडिदादा है, मोरकी पांखकी पवनसे मोरणीके गर्भ होता है इत्यादि रूढि लोकसंज्ञा. ज्ञानावरणी(य)का क्षयोपशम मोहनी(य)के उदयसें है. १५ धर्म-संज्ञा—क्षांत्यादिसेवनरूपा मोहनी(य)के क्षयोपशमसे होय. १६ ओघसंज्ञा—अव्यक्त उपयोग-रूपा, वेलडी रूख पर चडे है. ज्ञानावरणी(य) क्षयोपशमसे है. उपरी १५ संज्ञा तो संज्ञी पंचेंद्री, सम्यग्दृष्टि वा मिथ्यादृष्टिने है यथासंभव. ओघसंज्ञा एकेंद्रादि जीवांके जान लेनी. ए सर्व निर्युक्तौ.

(२०) अथ आहारादि संज्ञा ४ यंत्रं स्थानांगस्थाने ४ उद्देशे ४ वा पन्नवणा संज्ञापद

४ संज्ञा नाम	१ आहारसंज्ञा	२ भयसंज्ञा	३ मैथुनसंज्ञा	४ परिग्रहसंज्ञा
नारकी	२ संख्येय गुणे	४ संख्येय गुणे	१ स्तोक सर्वेभ्यः	३ संख्येय गुणे
तिर्यग्	४ ,,	३ ,,	२ संख्येय गुणे	१ सर्वसें स्तोक
मनुष्य	२ ,,	१ स्तोक सर्वेभ्य.	४ ,,	३ संख्येय गुणे
देवता	१ स्तोक सर्वेभ्य	२ संख्येय गुणे	३ ,,	४ ,,
कारण ४।४	कोठेके रीते हूया	धी(धै)र्यहीनात्	मांस रुधिरकी पुष्टाइसें	मूर्च्छा होनेते(सें)
चार २	क्षुधा लगनेसें	भयके उदय	वेदके उदयते(से)	लोभके उदयते(सें)
,,	आहारके देखे सुनेसें	भयके वस्तुके देखनेसें	स्त्रीके देखे सुनेसे	उपगरणके देखे सुनेसें
,,	आहारकी चिंता करे(रने)से	भयकी चितासें	कामभोगकी चिंतोना करे(रने)सें	उपगरणकी चिंता करनेसें

(२१) सांतर निरंतर द्वारम्

गतिभेद	नारकी	तिर्यंच	मनुष्य	देवता
अंतर जघन्य	१ समय	०	१ समय	१ समय
,, उत्कृष्ट	१२ मुहूर्त	०	१२ मुहूर्त	१२ मुहूर्त
जीवसंख्या जघन्य	१ जीव एक समये उपजे	प्रतिसमय अनंते उपजे	१ जीव एक समय उपजे	१ जीव एक समय उपजे

१ घाट। २ नियुक्तिमां विषे। ३ बधाथी। ४ धीरज ओछी होवाथी।

गतिभेद	नारकी	तिर्यंच	मनुष्य	देवता
जीवसख्या उत्कृष्ट	श्रेणिके असख्यातमे भाग	अनते उपजे	पल्यके असख्यमे भाग	श्रेणिके असख्यमे भाग
निरतर प्रमाण जघन्य	२ समय निरतर	सर्व अद्धा	२ समय निरतर	२ समय निरतर
„ „ उत्कृष्ट	आवलिके असख्यमे भाग	„	आवलिके असख्यमे भाग	आवलिके असख्यातमे भाग
जीवसख्या जघन्य	२ जीव दो समयामे उपजे	अनते समयसे उपजे	२ जीव दो समयामे उपजे	२ जीव दो समयामे उपजे
„ उत्कृष्ट	श्रेणिके असख्यमे भाग	सर्व अद्धा	पल्यके असख्यमे भाग	श्रेणिके असख्यमे भाग
सातरोववज्जगा	२ असख्य गुणे	०	२ असख्य गुणे	२ असख्य गुणे
निरतरोववज्जगा	१ स्तोक	०	१ स्तोक	१ स्तोक

(२२) भाषाके पुद्गल ५ प्रकारे भेदाय ते यंत्रम् पन्नवणा पद ११

भेद	खं(ख)डा भेद १	प्रतरभेद २	चूर्णि(र्ण)भेद ३	अनुतडिता भेद ४	उत्करिका भेद ५
अर्थ	लोहेके खडवत् भाषाके खड होय	अभ्रकके पुद्गलवत् भाषा बोल्या पछे भेदाय	अन्नके आटेकी तरे(ह) भाषा बोल्या पछे भेदाय	सरोवरकी अत्रेडवत् त्रेड हो कर भेदाय	एरंडकी मटरकी मूग उडदकी फली सूकेसे दाणा उछले
अल्पबहुत्व	५ अनत गुणे	४ अनत गुणे	३ अनत गुणे	२ अनत गुणे	१ स्तोक

भाषास्वरूपयत्र प्रज्ञापना पद ११

आदि—भाषाकी आदि जीवस्युं. २ उत्पत्ति—भाषाकी उत्पत्ति औदारिक १ वैक्रिय २ आहारि(र)क ३ शरीरसें. ३ भाषाका सस्थान—भाषाका सस्थान वज्रका आकार. जैसे वज्र आगे पीछे तो विस्तीर्ण होता है अने मध्य भागमे पतला होता है ऐसा सस्थान भाषाका. कस्मात्? लोकव्यापे तदलोक सरीषा सस्थान है. ४ (स्पर्श)—भाषाके पुद्गल तीव्र प्रयत्नसे बोलनहारके लोकके पट् दिग् चरम अतक चार समयमे स्पर्शे. ५ द्रव्य—भाषा द्रव्यथी अनतप्रदेशी स्कध लेवे. ६ क्षेत्र—भाषा क्षेत्रथी असंख्य प्रदेश अवगाह्या स्कंध ग्रहण करे. ७ काल—भाषा कालथी यथायोग्य अन्यतर स्थिति सर्व प्रकारनी. ८ भाव-भाषा भावथी वर्ण ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ८ एह ग्रहण करे. ९ दिशा—भाषाके पुद्गल पट् ६ दिशाथी लेवे.

१ शाखी ? ।

१० स्थिति—भाषाकी स्थिति जघन्य एक समय, उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त. ११ अंतर—भाषाका अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट वनस्पति काल. १२ ग्रहण—भाषाके पुद्गल काययोगसें ग्रहण करे. १३ व्युत्सर्ग—भाषाकी वर्गणाकूं वचनयोगसे तजे–छोडे. १४ निरतर—भाषाके पुद्गल प्रथम समये लेवे, दूजे समय नवे ग्रहण करे अने पीछले छोडे. एवं प्रकारे तीजे ४।५।६ यावत् अंतर्मुहूर्त ताई लेवे पीछेके छोडे; अंतसमये ग्रहण न करे, पीछले छोडे. इहां पहले समय तो लेवे ही अने चरम समयमे छोडे अने मध्यके असंख्य समयामे ले(वे) वी अने छोडे वी. ए दो बातें एकेक समयमे होवे.

(२३) शरीर पांचका यंत्रं श्रीप्रज्ञापना पद २१ मेथी.

नाम १	०	ओदारिक १	वैक्रिय २	आहारक ३	तैजस ४	कार्मण
स्वामी २	०	मनुष्य १ तिर्यच २	४ गतिना	चोदपूर्वधर मनुष्य	४ गतिना	४ गतिना जीव
संस्थान ३		६ पट्ट	२ मूले सम० १, हुंड २ उत्तर नाना	समचतुरस्र	नाना संस्थान	नाना संस्थान
प्रमाण ४	जघन्य	अंगुलके असंख्यमे भाग	अंगुलके असंख्यमे भाग	देशोन १ हस्त	अंगुलके असंख्यमे भाग	अंगुलके असंख्यमे भाग
	उत्कृष्ट	१००० योजन	१,००,००० योजन	१ हस्त प्रमाण	१४ रज्जु प्रमाण	सर्व लोक प्रमाण
पुद्गल चयना ५		३।४।५।६ दिशासे	६ पट्ट दिशासे	६ पट्ट दिशासे	३।४।५।६ दिशासे	३।४।५।६ दिशासे
परस्पर पांच शरीरका संयोग द्वार ६	औदारिक	०	भजना है	भजना है	नियमा है	नियमा है
	वैक्रिय	भजना है	०	०	,,	,,
	आहारक	नियमा है	०	०	,,	,,
	तेजस कार्मण	भजना है	भजना है	भजना है	०	०
अल्पबहुत्व ७	द्रव्यार्थे	३ असंख्येय गुणा	२ असंख्येय गुणा	१ सर्वेभ्य. स्तोक	४ अनंत गुणा	४ अनंत गुणा
	प्रदेशार्थे	,,	,,	,,	,, ,,	५ ,,

१ मधाथी।

नाम १	०	औदारिक १	वैक्रिय २	आहारक ३	तैजस ४	कार्मण ५
द्रव्यार्थे प्रदेशार्थे उभय	द्रव्यार्थे	३ अस० गुणा	२ अस० गुणा	१ स्तोक	७ अनंत गुणा	७ अनंत गुणा
	प्रदेशार्थे	६ असंख्येय गुणा	५ ,,	४ अनंत गुणा	८ ,,	९ ,,
अवगाहनाकी अल्पबहुत्वम् ८	जघन्य	१ स्तोक	३ ,,	४ असंख्येय गुणा	२ विशेषाधिक	२ विशेषाधिक
	उत्कृष्ट	२ संख्येय गुणा	३ संख्येय गुणा	१ स्तोक	४ असंख्येय	४ असंख्येय गुणा
	जघन्य	१ स्तोक	३ असंख्येय गुणा	४ असंख्येय	२ विशेषाधिक	२ विशेषाधिक
	उत्कृष्ट	६ संख्येय गुणा	७ संख्येय गुणा	५ विशेषाधिक	८ असंख्येय	८ असंख्येय गुणा

योनियंत्र पन्नवणा पद ९ थी

१ संवृत योनि ते ढंकी हुइ; देव, नरक, स्थावरनी. २ विवृत–उघाडी योनि, विकलेंद्रीनी. ३ संवृतविवृत–ढंकी वी उघाडी वी, विकलेंद्री वा गर्भजवत्. ४ सचित्त योनि–जीवप्रदेश संयुक्त, स्थावरादिवत्नी. ५ अचित्त–जीव रहित योनि, देवता नारकीनी. ६ मिश्र योनि–सचित्त अचित्त-रूप, गर्भजनी. ७ शीत योनि–शीत उत्पत्तिस्थान, नारक आदिनी. ८ उष्ण योनि–उष्ण उत्पत्ति-स्थान; नरक, तेजस्काय आदिकनी. ९ शीतोष्ण–उभय उत्पत्तिस्थान; मनुष्य, देव, आदिकनी. १० शखावर्त योनि, स्त्रीरत्नकी; जीव जन्मे नहि. ११ कूर्मोन्नत योनि–कछुवत् ऊंची, तीर्थकर, चक्री, बलदेव (और) वासुदेवनी माता. १२ वंशीपत्रा योनि; पृथग्जननी माता, सामान्य स्त्रीनी.

(२४) ८४ लाख योनिसंख्या

पृथ्वीकाय	७ लाख	छिंद्री	२ लाख
अप्काय	,, ,,	तेइंद्री	२ ,,
तेजस्काय	,, ,,	चौरिंद्री	२ ,,
वायुकाय	,, ,,	देवता	४ ,,
बादर निगोद	,, ,,	नारकी	४ ,,
सूक्ष्म निगोद	,, ,,	तिर्यंच पचेंद्री	४ ,,
प्रत्येक वनस्पति	१० ,,	मनुष्य	१४ ,,

१ काचबानी पेठे।

(२५) कुल १९७५०००००००००० एक कोडाकोडी ९७५० लाख कोड कुल है.

पृथ्वी	१२ लाख कोटि	जलचर	१२॥ लाख कोटि
अप्	७ ,, ,,	स्थलचर	१० ,, ,,
तेउ	३ ,, ,,	खेचर	१२ ,, ,,
वायु	७ ,, ,,	उरग	१० ,, ,,
वनस्पति	२८ ,, ,,	भुजग	९ ,, ,,
बेंद्री	७ ,, ,,	मनुष्य	१२ ,, ,,
तेंद्री	८ ,, ,,	देवता	२६ ,, ,,
चौरिंद्री	,, ,,	नारकी	२५ ,, ,,

अथ संघयणस्वरूपम्

१ वज्रऋषभनाराच—संहनन-अस्थिसंचय, वज्र तो कीली १, ऋषभ-परिवेष्टन २, नाराच-उभय मर्कटबन्ध ३, दोनो हाड आपसमें मर्कटबंधस्थापना, ऋषभ उपरि वेष्टन-स्थापना. वज्र उपरि तीनो हाडकी भेदनेहारी कीली ते स्थापना. काली रेषा वज्र कीली है.

२ ऋषभनाराच—ऋषभनाराचमे उभय मर्कट बध १, नाराच उपरि वेष्टन, कीली नही. स्थापनाऽस.

३ नाराच—मर्कटबंध तो है; अने वेष्टन अने कीली एह दोनो नही. स्थापना.

४ अर्धनाराच—एक पासे कीली अने एक पासे मर्कटबंध ते अर्धनाराच स्थापना.

५ कीलिका—दोनो हाडकी बींधनेहारीनि केवल एक कीली, मर्कटबंध नही ते, कीलिकाकी स्थापना.

६ सेवार्त्त—दोनो हाडका छेहदाही स्पर्शे है, ते सेवार्त्त. छेदवृत्त छेयट्ठ इति नामांतर. स्थापना.

अथ षट् संस्थानस्वरूप यंत्रं स्थानांगात्

१ समचतुरस्र—सम कहीये शास्त्रोक्त रूप, चतुर् कहीये चार, अस्र कहीये शरीरना अवयव है जेहने विषे ते समचतुरस्र; सर्व लक्षण संयुत एक सो आठ अंगुल प्रमाण ऊंचा.

२ न्यग्रोधपरिमंडल—न्यग्रोध-वडवत् मंडल नाभि उपरे. परि कहीये प्रथम संस्थानके लक्षण है; एतावता वडवत् नीचे नाभि ते लक्षण हीन; वड उपरे सम तैसे नाभि उपर सुलक्षणा.

३ सादि—नाभिकी आदिमे एत(ट)ले नाभिसे हेठे लक्षणवान् अने नाभिके उपरि लक्षण रहित ते 'सादि' संस्थान कहीये.

१ एनी ।

४ कुब्ज—हाथ, पग, मस्तक तो लक्षण सहित अने हृदय, पूठ, उदर, कोठा एह लक्षण हीन ते 'कुब्ज' संस्थान.

५ वामन—जिहा हृदय, उदर, पूठ ए सर्व लक्षण सहित अने शेष सर्व अवयव लक्षण हीन ते 'वामन'; कुब्जसे विपरीत.

६ हुंड—जिहा सर्व अवयव लक्षण हीन ते 'हुंड' संस्थान कहीये.

(२६) १४ बोलकी उत्पाद (उत्पात) भगवती (श० १, उ० २, सू० २५).

	जघन्य	उत्कृष्ट
असयत भव्य द्रव्यदेव चरणपरिणाम शुना मिथ्यादृष्टि भव्य वा अभव्य द्रव्ये क्रियाना करणहार, निखिल समाचारी अनुष्ठान युक्त, द्रव्य लिंगधारी पिण समदृष्टीना अर्थ न करणा ते निखिल क्रिया केवलसे	भवनपतिमे उपजे	उपरले ग्रैवेय कमे २१मे देव
अविराधितसंयम. प्रवज्याके कालसे आरभी अभग्नचारित्रपरिणाम प्रमत्त गुणस्थानमे वी चारित्रकी घात नही करी	प्रथम देवलोके	सर्वार्थसिद्धिमे २६
विराधिक सयत उपरलेसे विपरीत अर्थ अने सुकुमालका जो दूजे देवलोके गई सो उत्तर गुण विराधि थी इस वास्ते अने इहा विशिष्टतर सयम विराधनाकी है	भवनपतिमे	प्रथम देवलोक
श्रावक आराधिक जिसने व्रत ग्रहण थूलसे लेकर अखड व्रत पालक श्रावक	प्रथम देवलोके	१२ मे स्वर्ग
विराधक श्रावक उपरिले अर्थसे विपरीत अर्थ जानना	भवनपतिमे	जोतिषीमे
तापस पड्यो हूये पत्रादिके भोगनेहारे बालतपस्वी	"	"
असज्ञी मनोलब्धि रहित अकाम निर्जरावान्	"	व्यतरमे
कदर्पि व्यवहारमे तो चारित्रवत भ्रमूह वदन मुख नेत्र प्रमुख अग मटकावीने ओराकू हसावे ते कदर्पिक	"	प्रथम देव लोके
चरगपरिव्राजक त्रिदडी अथवा चरग-कछोटकाय, परिव्राजक-कपिल मुनिना सतानीया	"	ब्रह्मलोके ५ स्वर्गे
किल्बिषिक व्यवहारे तो चारित्रवान् पिण ज्ञानादिके अवर्ण बोले, जमालिवत्	"	छट्ठे देवलोके
तिर्यंच गाय घोडा आदिकने पिण देशविरति जानना इति वृत्तो	"	८ मे देवलोके
आजीविकामति पाखडिविशेष आजीविका निमित्त करणी करे, गोशालाना शिष्यानी परें	"	१२ मे स्वर्गे
आभियोगिक मत्र यत्रे करी आगलेकू वश करे विशेषार्थ वृत्तौ	"	"
सलिंगी दर्शनव्यापन्न लिंग तो यतिका है, पिण सम्यक्त्वसे भ्रष्ट है, निह्नव इत्यर्थ.	"	२१ मे देवलोक

१ "अह भंते! असजयभवियदव्वदेवाण १ अविराहियसजमाणं २ विराहियसंजमाण ३ अवि

(२७) कालादेशेन सप्रदेशी अप्रदेशी

(कालकी अपेक्षासे सप्रदेशी अप्रदेशी)	आहारक	अणाहारी	भव्य अभव्य	नोभव्य नोअभव्य	सशी	असंशी	नोसंशी नोअसंशी	सलेशी	कृष्णनील कापोत	तेजोलेश्य	पद्मशुक्ल	अलेशी	सम्यग्दृष्टि	मिथ्यादृष्टि	मिश्रदृष्टि	संयत	असंयत	देशधृत्ति	नोसंयत नोअसंयत नोश्रावक	सकषायी	क्रोधकषाय	मानमाया	लोभकषाय	अकषायी
जीवाणं	सप्रदेअ	सअप्र	स	३	३	३	३	सप्र	सअप्र	३	३	३	३	३	६	३	३	३	३	३	सअप्रस	अभंग	अभग	३
नारकाणा	३	६	३	०	३	६	०	३	३	०	०	०	३	३	६	०	३	०	०	३	३	६	६	०
देव-भवनपति १० व्यंतर जोतिषी वैमानिक	३	६	३	०	३	६	०	३	३	३	३	०	३	३	६	०	३	०	०	३	६	६	३	०
पृथ्वी अप् वनस्पति	सअप्रस	सअप्र	सअप्र	०	०	सअप्र	०	सअप्र	सअप्र	६	०	०	०	सअप्र	०	०	सअप्र	०	०	अभग	अभग	अभग	अभग	०
तेउ वायु	सअप्रस	सअप्र	सअप्र	०	०	सअप्र	०	,,	,,	०	०	०	०	,,	०	०	,,	०	०	,,	,,	,,	,,	०
विगलेंद्री ३	३	६	३	०	०	३	०	३	३	०	०	०	६	३	०	०	३	०	०	३	३	३	३	०
तिर्यंच पचेंद्री	३	६	० ३	०	३	३	०	३	३	३	३	०	३	३	६	०	३	३	०	३	३	३	३	०
मनुष्य	३	६	३	०	३	६	३	३	३	३	३	६	३	३	६	३	३	३	०	३	३	३	३	३
सिद्धाना	०	३	०	३	०	०	३	०	०	०	०	३	३	०	०	०	०	०	३	०	०	०	०	३

राहियसंजमासंजमाण ४ विराहियसंजमासंजमाण ५ असन्नीणं ६ तावसाणं ७ कंदप्पियाणं ८ चरग-परिव्वायगाणं ९ किव्विसियाण १० तेरिच्छियाण ११ आजीवियाणं १२ आभिओगियाणं १३ सलिंगीण दंसणवावन्नगाण १४ एएसि णं देवलोगेसु उववज्जमाणाणं कस्स कहिं उववाए पण्णत्ते ? गोयमा ! अस्संजयभवियदव्वदेवाणं जहन्नेणं भवणवासीसु उक्कोसेण उवरिमगेविज्जएसु १, अविराहियसंजमाणं जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे विमाणे २, विराहियसंजमाणं जहन्नेणं

भगवती श० ६, उ० ४, सू० २३९

औधिज्ञानी	मतिश्रुत	अवधि	मनपर्यव	केवलज्ञानी	ओघअज्ञानी	मतिश्रुतअज्ञानी	विभंगज्ञानी	सयोगी	मनवचनयोगी	काययोगी	अयोगी	साकारोपयुक्त	अनाकारोपयुक्त	सवेदी	स्त्रीपुरुषवेदी	नपुंसकवेदी	अवेदी	सशरीरी तैजस कार्मण	औदारिक	वैक्रियशरीरी	आहारकशरीरी	अशरीरी	आहारादि ४ पर्याप्त	भाषामन २ पर्याप्त	आहारअपर्याप्ती	शरीरादि ३ अपर्याप्त	भाषामनअपर्याप्त
३	३	३	३	३	३	३	३	स	३	३	३	अभंग	अभंग	३	३	३	३	स० अप्र	३	३	६	३	अभंग	३	अभंग	अभंग	३
३	३	३	०	०	३	३	३	३	३	३	०	३	३	३	०	३	०	३	०	३	०	०	३	३	६	६	६
३	३	३	०	०	३	३	३	३	३	३	०	३	३	३	३	०	०	३	०	३	०	०	३	३	६	६	६
०	०	०	०	०	अभंग	अभंग	०	अभंग	०	अभंग	०	अभंग	अभंग	अभंग	०	अभंग	०	अभंग	अभंग	०	०	०	अभंग	०	अभंग	अभंग	०
०	०	०	०	०	,,	,,	०	,,	०	,,	०	,,	,,	,,	०	,,	०	,,	,,	०	०	०	,,	०	,,	,,	०
६	६	०	०	०	३	३	०	३	० ३	३	०	३	३	३	०	३	०	३	३	०	०	०	३	३ ०	६	३	३ ०
३	३	३	०	०	३	३	३	३	३	३	०	३	३	३	३	३	०	३	३	३	०	०	३	३ ०	६	३	३
३/३	३/०	३/०	३/०	३/३	३/०	३/०	३/०	३/०	३/०	३/०	६/३	३/३	३/३	३/०	३/०	३/०	३/३	३/०	३/०	३/०	६/०	०/३	३/०	३/०	६/०	६/०	६/०

भवणवासीसु उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे ३, अविराहियसंजमा० २ ण जह० सोहम्मे कप्पे उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे ४, विराहियसंजमास० जहन्नेण भवणवासीसु उक्कोसेण जोतिसिएसु ५, असन्नीणं जहन्नेण भवणवासीसु उक्कोसेण वाणमंतरेसु ६, अवसेसा सव्वे जह० भवणवा०, उक्कोसगं वोच्छामि—तावसाणं जोतिसिएसु, कंदप्पियाण सोहम्मे, चरगपरिव्वायगाण बंभलोए कप्पे, किब्बिसियाणं लंतगे कप्पे, तेरिच्छियाणं सहस्सारे कप्पे, आजीवियाण अच्चुए कप्पे, आभिओगियाण अच्चुए कप्पे, सलिंगीण दंसणवावन्नगाणं उवरिमगेवेज्जएसु ॥ १४ ॥" (सू. २५)

(२८) आहारी अणाहारिक

	आहारिक अणाहारी	भव्य अभव्य	नोभव्य नोअभव्य	सन्नी	असंज्ञी	नोसंज्ञी नोअसंज्ञी	सलेशी कृष्ण नील कापोत	तेजोलेश्य	पद्मलेश्य शुक्ल	अलेशी	सम्यग्दृष्टी	मिश्रदृष्टी	मिथ्यादृष्टी	संयत	असंयत	श्रावक	नोसंयत नोअसंयत नोश्रावक	सकषायी	क्रोध	मान माया	लोभकषाय	अकषायी	सज्ञानी	मतिश्रुतज्ञानी
जीवानां	अभंग	अभग	अणाहारी	३	अभंग	अभग	अभग	३	३	अणाहारी	३	आहारी	अभंग	३	अभग	आहारी	अणाहारी	अभग	अभग	अभंग	अभंग	अभंग	३	३
नारकाणा	३	३	०	३	६	०	३	०	०	०	३	,,	३	०	३	०	०	३	३	६	६	०	३	३
देव-भवनपति व्यंतर जोतिषी वैमानिक	३	३	०	३	६ ६ ० ०	०	३ ३ ० ०	३	३	०	३	,,	३	०	३	०	०	३	६	६	३	०	३	३
एकेंद्री पृथ्वी आदि ५	अभंग	अभग	०	०	अभग	०	अभग	६	०	०	०	०	अभग	०	अभंग	०	०	०	अभग	अभग	अभग	०	०	०
विगलेंद्री	३	३	०	०	३	०	३	०	०	०	६	०	३	०	३	०	०	३	३	३	३	०	६	६
तिर्यंच पचेंद्री	३	३	०	३	३	०	३	३	३	०	३	आहारी	३	०	३	आहारी	०	३	३	३	३	०	३	३
मनुष्याणा	३	३	०	३	६	३	३	३	३	अणाहारी	३	,,	३	३	३	,,	०	३	३	३	३	३	३	३
सिद्धाना	अणाहारी	०	अणाहारी	०	०	अणाहारी	०	०	०	,,	अणाहारी	०	०	०	०	०	अणाहारी	०	०	०	०	अणाहारी	अणाहारी	०

श्रीपन्नवणा पद २८ मे उ. २

अवधिज्ञानी	मनपर्यव	केवलज्ञानी	अज्ञानी मति श्रुत अ ३	विभंगज्ञानी	सयोगी	मनवचनयोगी	काययोगी	अयोगी	साकारोपयुक्त अनाकारोपयुक्त	सवेदी	स्त्रीवेद पुवेद	नपुंसकवेदी	अवेदी	सशरीरी	औदारिकशरीर	वैक्रिय आहारकशरीरी	तैजस कार्मण	अशरीरी	आहार १ शरीर २ आन प्राण ३ इन्द्रिय ४ भाषा मन ५	आहार अपर्याप्ती	शरीर अपर्याप्ती	इन्द्रिय अपर्याप्ती	आनप्राण अपर्याप्ती	भाषामन अपर्याप्ती
३	आहारी	अभग	अभग	३	अभग	३	अभग	अणाहारी	अभग	अभग	३	अभग	अभग	अभग	३	आहारी	अभग	अणाहारी	३	अणाहारी	अभंग	अभंग	अभग	अभंग
३	०	०	३	३	३	३	३	०	३	३	०	३	०	३	०	" ०	३	०	आहारक	"	६	६	६	६
३	०	०	३	३	३	३	३	०	३	३	३	०	०	३	०	" ०	३	०	"	"	६	६	६	६
०	०	०	अभग	०	०	०	अभग	०	अभग	अभग	०	अभग	०	अभग	आहारी	०	अभग	०	"	"	अभग	अभंग	अभंग	अभंग
०	०	०	३	०	३	० ३	३	०	३	३	०	३	०	३	"	०	३	०	"	"	३	३	३	३
आहारी ०	०	०	३	आहारी	३	३	३	०	३	३	३	३	०	३	"	आहार ०	३	०	"	"	३	३	३	३
३	आहारी	३	३	"	३	३	३	अणाहारी	३	३	३	३	३	३	३	आहार	३	०	३	"	६	६	६	६
०	०	अणाहारी	०	०	०	०	०	"	अणाहारी	०	०	०	अणाहारी	०	०	०	०	अणाहारी	०	०	०	०	०	०

(२९) चरम अचरम यंत्र भगवती श० १८, उ० १, सू० ६१६

	१ भाव	आहार २ संज्ञी ७ असंज्ञी ८ सलेशी १० यावत् शुक्ल लेशी १६ मिथ्यादृष्टि १९ मिश्रदृष्टि २० संयत २१ असयत २२ सयता संयत-श्रावक २३ सकषायि २५ यावत् लोभकषायि २९ मतिज्ञानी ३२ यावत् मनःपर्यवज्ञानी ३५ अज्ञानी ४० सयोगी ४१ यावत् कायायोगी ४४ सवेदी ४८ यावत् नपुंसकवेदी ५१ सशरीरी ५३ यावत् कार्मणशरीरी ५८ पांच पर्याप्ती ६४ पाच अपर्याप्ती ६९ ५२	अणाहारी ३ सम्यग्दृष्टि १८ सज्ञानी ३१ साकारोपयुक्त ४६ अनाकारोपयुक्त ४७ ५	भवसिद्धिक ४ १	अभवसिद्धिक ५ १	नोभवसिद्धिक ६ नोअभवसिद्धिक ६ नोसंयत नोअसंयत नोसयतासंयत २४ अशरीरी ५९ ३	नोसंज्ञी (नोसंज्ञी) नोअसंज्ञी ९ अलेशी १७ केवलज्ञानी ३६ अयोगी ४५ ४	अकषायी ३० अवेदी ५२ २
जीवानाम्	चरम	चरम अचरम	अचरम	चरम	अचरम	अचरम	अचरम	अचरम
२४ दण्डके	चरम अचरम	" "	चरम अचरम	चरम अचरम	"	०	चरम	चरम अचरम
सिद्धानाम्	अचरम	०	अचरम	०	०	अचरम	अचरम	अचरम

(३०) पढम अपढम यंत्रम् भगवती श. १८, उ. १, सू० ६१६

भाव १	आहारक २ भव्य २४ अभव्य ५ संज्ञी ७ असंज्ञी ८ सलेशी १० यावत् शुक्ललेशी १६ मिथ्यादृष्टि १९ असयत २२ सकषायी २४ यावत् लोभकषायी २९ अज्ञानी ३७ यावत् विभगज्ञानी ४० सयोगी ४१ यावत् कायायोगी ४४ सवेदी ४८ यावत् नपुंसकवेदी ५१ सशरीरी ५३ औदारिक ५४ वैक्रिय ५५ तैजस आहारक ५६ ५७ कार्मण ५८ पांच पर्याप्ती ६४ पाच अपर्याप्ती ६९	अणाहारी ३ साकारोपयुक्त ४६ अनाकारोपयुक्त ४७	सम्यग्दृष्टि १८ सज्ञानी २३	नोभवसिद्धिया (क) नोअभवसिद्धिक नोसंयत नोअसंयत नोसंयतासंयत २४ अशरीरी ५९	नोसंज्ञी नोअसंज्ञी ९ अलेशी १७ केवलज्ञानी ३६ अयोगी ४५	अकषायी ३० अवेदी ५२	मिश्रदृष्टि २० संयत २१ संयतासंयत २३ मतिज्ञान ३२ यावत् मन पर्यवज्ञानी ३५ आहारक शरीर ५६
	४६	३	२	३	४	२	८

१ आनुं लक्षण भगवती (सू. ६१६)नी निम्नलिखित गाथामां नजरे पडे छे.—
"जो जेण पत्तपुव्वो भावो सो तेण अपढमो होइ।
सेसेसु होइ पढमो अपत्तपुव्वेसु भावेसु ॥"

जीव	अपढम	अपढम	अपढम पढम	पढम अपढम	पढम	पढम	पढम अपढम	पढम अपढम
२५ दंडके	,,	,,	,,	पढम अपढम	०	,,	,,	,,
सिद्धानाम्	पढम	०	पढम	पढम	पढम	,,	पढम	०

जिसकूं एक समय उपज्या हूया है सो 'अप्रदेशी' जानना अने जिसकू द्वि आदि समय अनंत पर्यंत हूये हैं सो 'सप्रदेशी' जानना. इन चारो यन्त्रोमे जिस दंडकमे जो बोल है तिसकी अपेक्षा जानना अपनी विचारसें. अथ प्रथम अप्रथमका लक्षण—जिसने जो भाव पहिले पाम्या सो 'प्रथम,' जिसने द्वि आदि वार पाम्या सो 'अप्रथम'. अथ चरमअचरम लक्षण गाथा—

"जो जं पावहिति पुणो भावं सो तेण अचरिमे होइ (अचरिमो होंति?)।
अचंतविओगो जस्स जेण भावेण सो चरिमो ॥"

"जीवाहारग १–२ भव ३ सण्णी ४ लेसा ५ दिट्ठि ६ य संजय ७ कसाए ८।
णाणे ९ जोगुवओगे १०–११ वेए १२ य सरीर १३ पज्जत्ती १४॥" ए मूल गाथा (पृ० ७२३)॥

(३१) भगवती श० २६, उ० १ (सू० ८२४)

		सम्यक्त्वे १ वाद	मिश्रे २ वाद	मिथ्यात्वे ३ वाद	ओघिके ४ वाद
जीव मनुष्य २ ४६		अलेशी १ सम्यग्दृष्टि २ समुच्चयज्ञानी ३ यावत् केवलज्ञानी ८ नोसंज्ञोपयुक्त ९ अवेदी १० अकषायी ११ अयोगी १२	सम्यग् मिथ्यादृष्टि	कृष्णपक्षी १ मिथ्यादृष्टि २ अज्ञानी ३ मति श्रुत अज्ञानी ४–५ विभंगज्ञानी ६	सलेशी प्रमुख ७ शुक्लपक्षी ८ संज्ञा ४।१२ सवेदी १३ क्रोधादि स्त्री पुरुष नपुंसक १६ सकषायी प्रमुख पांच २१ उपयोग दो २३ सयोगी प्रमुख ४, एवं सर्व बोल २७ हूये
पंचेन्द्री तिर्यंच	३९	सम्यग्दृष्टि १ ज्ञानी २ मति ज्ञानादि ३, एवं बोल ५	,,	कृष्णपक्षी आदि उपरला ६ बोल	सलेशी प्रमुख उपरला २७ बोल जानना
भवनपति व्यंतर	३६	,,	,,	,,	ए २७ माहिथी पद्म १ शुक्ल २ लेश्या नपुंसकवेद ३, ए ३ वरजीने शेष बोल २४
नरक	३४	,,	,,	,,	तेजो १ पद्म २ शुक्ल ३ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २, ए ५ वरजी शेष बोल बावीस २२

६

	सम्यक्त्वे १ वाद		मिश्रे २ वाद	मिथ्यात्वे ३ वाद	औधिके ४ वाद
वैमानिक	३५	सम्यग्दृष्टि १ ज्ञानी २ मति ज्ञानादि ३, एवं बोल ५.	सम्यग्-मिथ्यादृष्टि	कृष्णपक्षी आदि उपरला छ बोल	ए २७ माहिथी कृष्ण आदि ३ लेश्या नपुंसकवेद ४, ए ४ वरजी शेष २३
जोतिष	३३	"	"	"	ए २७ माहिथी कृष्ण आदि ३ लेश्या पद्म ४ शुक्ल लेश्या ५ नपुंसकवेद ६, ए ६ वरजी शेष २१
वाद	०	एक क्रियावादी लाभे १	अज्ञानवादी विनयवादी	अक्रिया १ अज्ञान २ विनय ३ वाद	क्रिया १ अक्रिया २ अज्ञान ३ विनयवादी ४
आयुबंध	मनुष्य तिर्यंच क्रियावादी आयु बांधे एक वेमानिकना नच मनुष्यमे अलेशी १ केवली २ अवेदी ३ अकपायी ४ अयोगी ५ एवं पाच बोलमे आयु न बांधे, देव नारकी क्रियावादी आयु बाधे मनुष्यना		आयु नही बांधे	मनुष्य तिर्यंच आयु चारों गतिका बांधे, देवता, नारकी मनुष्य तिर्यंचना आयु बाधे	क्रियावादी मनुष्य तिर्यंच कृष्ण आदि तीन ३ संक्लिष्ट लेश्यामे आयु न बाधे, शेष बोलमे वर्तता आयु बाधे वेमानिकना शेष ३ समवसरण च्यारों गतिका देवता नारकी क्रियावादी मनुष्य-आयु बाधे, शेष समवसरण मनुष्य तिर्यंचना एकेंद्री विकलेंद्रीमे समवसरण २ अक्रिया १ अज्ञान २ विकलेंद्रीमे सज्ञानी मति श्रुतज्ञानी आयु न बाधे अनेरो एकेंद्रीमे तेजोलेश्यामे आयु न बाधे, शेष बोलमे आयु बाधे मनुष्य, तिर्यंचना, तेउ, वायु, तिर्यंचना आयु बाधे ॥ क्रियावादी १ मिश्रदृष्टी २ शुक्लपक्षी ३ ए निश्चय भव्य, शेषमे भजना। इति प्रथमोद्देशक अनतरोव० १ अनतो गाढा २ अनतरो आहार ३ अनतर पज्जत्तगा ४ पहमे आयु २४ दडके न बाधे बोल जौनसे नही पावे अलेश्यादि १२ सो जान लेने और सर्व प्रथम उद्देशवत् अचरममे अलेशी १ केवली २ अयोगी नही और सर्व उद्देशा प्रथमवत् ज्ञेयं द्वारगाथा—"जीवा १ य लेस्स २ पक्खिय ३ दिट्ठी ४ अन्नाण ५ नाण ६ सन्नाओ ७। वेय ८ कसाए ९ उवओग १० जोग ११ एक्कारस वि ठाणा ॥" (भग० सू० ८१०)

(३२) (गति वगैरेमे ज्ञान अज्ञान, भगवती श० ८, उ० २, सू० ३१९–३२१)

१	जीव ओघे	५ ज्ञान भजना	३ अज्ञान भजना
१५	नारकी भवनपति व्यंतर जोतिषी वैमानिक	३ नियमा	३ भजना[1]
२०	पृथ्वी आदि ५	०	२ नि
२३	विगलेंद्री ३	२ नि	२ नि
२४	तिर्यंच पंचेंद्री	३ भ	३ भ
२५	मनुष्य	५ भ	३ भ
२६	सिद्ध	१ नि	०
	वाटे वहेते पांच गतिना	ज्ञान	अज्ञान
१-२	नरक गति देवगति	३ नि	३ भ
३	तिर्यंच गति	२ नि	२ नि
४	मनुष्यगति	३ भ	२ नि
५	सिद्धगति	१ नि	०
	इन्द्रिय	ज्ञान	अज्ञान
१	सइंद्री	४ भ	३ भ
२	एकेंद्री	०	२ नि
५	बेंद्री, तेंद्री चौरेंद्री ३	२ नि	२ नि
६	पचेंद्री	४ भ	३ भ
७	अनिंद्री	१ नि	०
	काय	ज्ञान	अज्ञान
१	सकाय	५ भ	३ भ
२-६	पृथ्वी आदि ५ काय	०	२ नि
७	त्रसकाय	५ भ	३ भ
८	अकाय	१ नि	०
१	सूक्ष्म	०	२ नि
२	बादर	५ भ	३ भ
३	नोसूक्ष्मनोबादर	१ नि	०
१	जीव पर्याप्ता	५ भ	३ भ
२	पर्याप्ता नारक	३ नि	३ नि
१५	भवनपति व्यंतर जोतिषी वैमानिक पर्याप्ता	३ नि	३ नि
२०	पृथ्वी आदि ५ पर्याप्ता	०	२ नि
२३	विगलेंद्री पर्याप्ता	०	२ नि
२४	पचेंद्री तिर्यंच पर्याप्ता	३ भ	३ भ
२५	मनुष्य पर्याप्ता	५ भ	३ भ
१	अपर्याप्ता जीव	३ भ	३ भ
२	अपर्याप्त नरक	३ नि	३ भ
१३	भवनपति व्यंतर अपर्याप्ता	३ नि	३ भ
१८	पृथ्वीकाय आदि ५ अपर्याप्ता	०	२ नि
२१	बेंद्री, तेंद्री, चौरेंद्री अपर्याप्ता	२ नि	२ नि

१ नारक, भवनपति अने व्यंतरमां त्रण अज्ञाननी भजना ।

२२	तिर्यंच पचेंद्री अपर्याप्ता	२ नि	२ नि	१२	तस्य अलब्धि	४ भ	३ भ
				१३	अज्ञान लब्धि	०	३ भ
२३	मनुष्य अपर्याप्ता	३ भ	२ नि	१४	तस्य अलब्धि	५ भ	०
२५	जोतिषी वैमानिक अपर्याप्ता	३ नि	३ नि	१५	मति श्रुत अज्ञान लब्धि	०	३ भ
२६	नोपर्याप्त-नोअपर्याप्त	१ नि	०	१७	तयो अलब्धिको	५ भ	०
१	नरक भवस्था	३ नि	३ भ	१८	विभंग लब्धि	०	३ नि
२	तिर्यंच भवस्था	३ भ	३ भ	१९ २०	तस्य अलब्धिया	५ भ	२ नि
३	मनुष्य भवस्था	५ भ	३ भ	१	दर्शन लब्धि	५ भ	३ भ
४	देव भवस्था	३ नि	३ भ	२	तस्य अलब्धि	०	०
५	अभवस्था	१ नि	०	३	सम्यग्दर्शन-लब्धि	५ भ	०
१	भव्य	५ भ	३ भ				
२	अभव्य	०	३ भ	४	तस्य अलब्धि	०	३ भ
३	नोभव्य नोअभव्य	१ नि	०	५	मिथ्यादर्शन लब्धि	०	३ भ
१	सज्ञी	४ भ	३ भ	६	तस्य अलब्धि	५ भ	३ भ
२	असज्ञी	२ नि	२ नि	७	सम्यग् मिथ्या दर्शन लब्धि	०	३ भ
३	नोसंज्ञी नोअसज्ञी	१ नि	०	८	तस्य अलब्धि	५ भ	३ भ
१	ज्ञानलब्धि	५ भ	०	१	चारित्र लब्धि	५ भ	०
२	तस्य अलब्धि	०	३ भ	२	तस्य अलब्धि	४ भ	३ भ
४	मतिश्रुतक लब्धि	४ भ	०	३-६	सामायिक आदि ४ चारित्र लब्धि	४ भ	०
६	तयो अलब्धि	१ नि	३ भ				
७	अवधि-लब्धि	४ भ	०	१०	ते अलब्धि	५ भ	३ भ
८	तस्य अलब्धि	४ भ	३ भ	११	यथाख्यात लब्धि	५ भ	०
९	मन पर्यव लब्धि	४ भ	०	१२	तस्य अलब्धि	५ भ	३ भ
१०	तस्य अलब्धि	४ भ	३ भ	१	चरित्राचरित्र लब्धि	३ भ	०
११	केवल-लब्धि	१ नि	०	२	तस्य अलब्धि	५ भ	३ भ

१ सेनी अर्थात् ज्ञानी। २ ते सेनी अर्थात् मतिज्ञानी अने श्रुतज्ञानी। ३ अलब्धिक।

३-७	दान आदि ५ लब्धि	५ भ	३ भ
१०	तस्य अलब्धि	१ नि	०
११	बालवीर्य लब्धि	३ भ	३ भ
१२	तस्य अलब्धि	५ भ	०
१३	पंडितवीर्य लब्धि	५ भ	०
१४	तस्य अलब्धि	४ भ	३ भ
१५	बालपंडितवीर्य लब्धि	३ भ	०
१६	तस्य अलब्धि	५ भ	३ भ
१	इन्द्रिय लब्धि	४ भ	३ भ
२	तस्य अलब्धि	१ नि	०
३	श्रोत्रेन्द्रिय लब्धि	४ भ	३ भ
४	तस्य अलब्धि	१ नि २ भ	२ नि
५-६	चक्षुरिन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय लब्धि	४ भ	३ भ
७-८	तस्य अलब्धि	१ नि २ भ	२ नि
९	जिह्वेन्द्रिय लब्धि	४ भ	३ भ
१०	तस्य अलब्धि	१ नि	२ नि
११	स्पर्शनेन्द्रिय लब्धि	४ भ	३ भ
१२	तस्य अलब्धि	१ नि	०
१	साकार उपयोग	५ भ	३ भ
२-३	मति श्रुत साकार०	४ भ	०
४	अवधि साकार०	४ भ	०
५	मनःपर्यव साकार०	४ भ	०
६	केवल साकार०	१ नि	०
७-८	मति-अज्ञान श्रुत अज्ञान साकार०	०	३ भ

९	विभंग साकार	०	३ नि
१०	अनाकार उपयोग	५ भ	३ भ
११	चक्षुर्दर्शन अनाकार०	४ भ	३ भ
१२	अचक्षुर्दर्शन अनाकार०	४ भ	३ भ
१३	अवधिदर्शन अनाकार०	४ भ	३ भ
१४	केवलदर्शन अनाकार०	१ नि	०
१	सयोगी	५ भ	३ भ
२	मनयोगी	५ भ	३ भ
३	वचनयोगी	५ भ	३ भ
४	काययोगी	५ भ	३ भ
५	अयोगी	१ नि	०
१	सलेश्यी	५ भ	३ भ
६	कृष्ण आदि ५	४ भ	३ भ
७	शुक्ल लेश्या	५ भ	३ भ
८	अलेश्यी	१ नि	०
१	सकषायी	४ भ	३ भ
२-५	क्रोध आदि ४	४ भ	३ भ
६	अकषायी	५ भ	०
१	सवेदी	४ भ	३ भ
२-४	स्त्री पु नपुसक	४ भ	३ भ
५	अवेदी	५ भ	०
१	आहारिय	५ भ	३ भ
२	अनाहारी	४ भ	३ भ

(३३) (द्रव्यादि अपेक्षासे ज्ञानका विषय भग० श० ८, उ० २, सू० ३२२)

जाणे देखे	द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी	भावथी
मति	ओदेशे[1] सर्वद्रव्य	सर्व क्षेत्र	सर्व काळ	सर्व भाव
श्रुत	उपयोगे सर्व	सर्व क्षेत्र	सर्व काळ	सर्व भाव
अवधि	जघन्य-अनंत रूपी द्रव्य अने उत्कृष्ट-सर्व रूपी द्रव्य	जघन्य-अंगुलका असंख्यातमा भाग, उत्कृष्ट-लोक सरीषा असंख्य अलोकखंड	जघन्य-आवलिकानो असंख्यातमो भाग; उत्कृष्ट-असंख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणी	जघन्य-अनंता भाव, उत्कृष्ट-सर्व भावके अनंतमे भाग जाणे देखे
मन.पर्यव	अनंतानंत प्रदेशी स्कंध, एवं उत्कृष्ट पिण	समयक्षेत्र ऊंचा नवसे, ९ योजन नीचा, अधोलोकना छु(क्षु)ल्लक प्रतर	जघन्य-पल्योपमनो असंख्यातमो भाग; एवं उत्कृष्ट पिण	अनंता भाव, सर्व भावने अनतमे भाग
केवळ	सर्व द्रव्यम्	सर्व क्षेत्र	सर्व काळ	सर्व भाव
मति अज्ञान	परिग्रह द्रव्य	परिग्रह	परिग्रह	परिग्रह
श्रुत अज्ञान	"	"	"	"
विभंग	"	"	"	"

स्थितिज्ञान—ज्ञानी दुप्रकारे—(१) सादि-अपर्यवसित, (२) सादि-सपर्यवसित. सादि-सपर्य० जघन्य—अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट—६६ सागर झाझेरा. मति श्रुत जघन्य—अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट—६६ सागर झाझेरा. अवधि जघन्य—१ समय, उत्कृष्ट ६६ सागर झाझेरा. मनःपर्यव जघन्य—१ समय, उत्कृष्ट—देश ऊन पूर्व कोड. केवल सादि अपर्यवसित.

अज्ञानी त्रिधा—(१) अनादि-अपर्यवसित, (२) अनादि-सपर्यवसित, (३) सादि-सपर्यवसित. जघन्य-अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट—अर्धपुद्गल देश ऊन.

मति, श्रुत एवं[2] उपरवत् त्रिधा ज्ञातव्यानि. विभंगज्ञानी जघन्य—१ समय, उत्कृष्ट—३३ सागर देश ऊन पूर्व कोड अधिकम्.

(३४) (अंतरद्वार जीवाभिगम प्रति० ९, उ० २, सू० २६७)

०	अंतर जघन्य	अंतर उत्कृष्ट
ज्ञानी	अंतर्मुहूर्त	देश ऊन अर्ध पुद्गलपरावर्त
मति श्रुत ज्ञानी	"	"
अवधिज्ञानी	"	"
मन:पर्यवज्ञानी	"	"

१ ओघथी, सामान्यथी। २ ए प्रमाणे उपरनी पेठे त्रण प्रकारे जाणवां।

०	अंतर जघन्य	अंतर उत्कृष्ट
केवलज्ञानी	०	०
अज्ञानी	अंतर्मुहूर्त	६६ सागर झाझेरा
मति श्रुत अज्ञानी	"	"
विभंगज्ञानी	"	वनस्पति काळ अनंता

(३५) (अल्पबहुत्वद्वार प्रज्ञापना प० ३, सू० ६८)

ज्ञान अज्ञान	अंल्पबहुत्व	८ की अल्पबहुत्व	पर्यव अल्पबहुत्व	८ का पर्यव अल्प-बहुत्व
मति ज्ञान	३ वि	३ वि	४ अनंत	७ वि
श्रुत ज्ञान	४ वि तु ३	४ वि तुल्य	३ "	५ वि
अवधि	२ असं	२ असं	२ "	३ अनंत गुण
मन पर्यव	१ स्तोक	१ स्तोक	१ स्तोक	१ स्तोक
केवल	५ अनंत	५ अनंत	५ अनंत गुण	८ अनंत
मति अज्ञान	२ अनंत	६-७ अनंत	३ अनंत गुण	६ अनंत
श्रुत अज्ञान	तुल्य २ अनंत	तुल्य ६	२ अनंत	४ अनंत
विभंग ज्ञान	१ स्तोक	४ अस	१ स्तोक	२ अनंत

द्वार गाथा—"जीव १ गति ५ इंदी ७ काय ८ सुहुम्म ३ पजत्त ३ भवत्थ ५ भव-सिद्धिय ३ सन्ना ३ लद्धी ७ उवओग १२ जोगिय ५।१। लेसा ८ कसाय ६ वेदे ५ य आहारे २ नाण गोयरे १७ काले १ अंतर १० अप्पाबहुय ८ पज्जवा ८ चेव दाराइं ॥ २२ ॥"

ज्ञानस्वरूप नन्दी प्रज्ञापना आवश्यकनिर्युक्ति भगवती नन्दीवृत्तिसे लिख्यते—

मतिज्ञानके मुख्य भेद—१ अवग्रह, २ ईहा, ३ अवाय, ४ धारणा

अर्थ अवग्रह आदि चारांका—सामान्यपणे अर्थने ग्रहे ते अवग्रह. यथा कोइ मार्गमें जातां दूरसे कोइ ऊंचीसी वस्तु देखी इम जाणे इह कुछ तो है ते 'अवग्रह' ज्ञेयं । अवग्रहमें जे पदार्थ ग्रह्या है तिसका सद्भूत अर्थ विचारे जो इह कया वस्तु है स्थाणु—ठुंठ है अथवा पुरुष है ऐसी विचारणा करे सो 'ईहा' जाननी. ईहा अनंतर काल पदार्थनो निश्चय करे जो इह तो हाले चाले इस वास्ते पुरुष है, पिण स्थाणु नही ते 'अवाय.' धारणा ते अवाय अनंतर कालें निर्णीत जे अर्थ तेह धरी राखे ते. यथा ओही पुरुष है जो मैं देखा था ते 'धारणा.' धारणाके भेद—१ अवि-च्युतिधारणा, २ वासनाधारणा, ३ स्मृतिधारणा. अर्थ तीनोंका—जो अर्थ धार्या है सो

१-२ ज्ञान अने अज्ञानउ जुदु जुदु । ३ जुओ जीवाभिगम सू० २६७ ।

उपयोगथी क्षणमात्र च्युति-भूले नही ते 'अविच्युतिधारणा' है. स्थिति अंतर्मुहूर्तनी. जे वस्तुनो उपयोग था तेह तो भ्रंस हुया है पणि संस्कार रह गया है पुष्पवासनावत् तेहने 'वासनाधारणा' कहीये. स्थिति संख्यात असंख्यात कालनी. कालांतरे कोइक तादृश अर्थ(ना) दर्शनथी संस्कारने प्रबोधेंकरी ज्ञान जागृत हूया जे में एह पूर्वे दीठा था ऐसी जो प्रतीति ते 'स्मृतिधारणा' ज्ञेयं।

स्थिति अवग्रह आदि ४ की—अवग्रह एक समय वस्तु देख्यां पछे विकल्प उपजे ही सा (?). ईहा अंतर्मुहूर्त विचाररूप होणें ते. अवाय अंतर्मुहूर्त निश्चय करणे करके. धारणा वासना [श्री] संख्य असंख्य काल आयु आश्री. अवग्रहके दो भेद है. दोनोका अर्थ—१ व्यंजनावग्रह. 'व्यंजन' शब्दना तीन अर्थ है. 'व्यंजन' शब्दनी व्युत्पत्ति करीने विचार लेना. श्रोत्रादिक इन्द्रिय अने शब्दादिक अर्थनो जे अव्यक्तपणे-अप्रगटपणे संबंध तेहने 'व्यंजन' कहीये. अथवा व्यंजन शब्दादिक अर्थने पिण कहीये. अथवा व्यंजन श्रोत्रादिक इन्द्रियनें पिण कहीये. एतलें एहना शब्दार्थ नीपना-अप्रगट संबधपणे करी ग्रहीये ते 'व्यंजनावग्रह' कहीये एह व्यंजनावग्रह प्रथम समयथी लेई अंतर्मुहूर्त प्रमाण काल जानना. २ अर्थावग्रह. प्रगटपणे अर्थग्रहण ते 'अर्थावग्रह' कहीये. ते एक समय प्रमाण.

व्यंजनावग्रह चार प्रकारे—१ श्रोत्र इन्द्रिय व्यंजन अवग्रह, २ घ्राण इन्द्रिय व्यंजन अवग्रह, ३ रसना इन्द्रिय व्यजन अवग्रह, स्पर्शन इन्द्रिय व्यंजन अवग्रह.

चार इन्द्रिय प्राप्यकारी कही तेहथें व्यंजनावग्रह होय. वस्तुने पामीने परस्परे अडकीने प्रकाश करे ते 'प्राप्यकारी' कहीये. अथवा विषय वस्तुथी अनुग्रह उपघात पामे ते 'प्राप्यकारी' कहीये. ते नयन वर्जित चार इन्द्रियां जाननी. नयन, मन ते अप्राप्यकारी है, श्रोत्रेन्द्रियव्यंजनावग्रह—श्रोत्रेन्द्रिये अव्यक्तपणे शब्दना पुद्गल प्रथम समयादिकने विषे ग्राहीइ है ते 'श्रोत्रेन्द्रियव्यंजनावग्रह.' इसीतरे घ्राण, रसन, स्पर्शनके साथ अर्थ जोड लेना.

अर्थावग्रह ६ भेदे—१ स्पर्शनेन्द्रियार्थावग्रह, २ रसनेन्द्रियार्थावग्रह, ३ घ्राणेन्द्रियार्थावग्रह, ४ चक्षुरिन्द्रियार्थावग्रह, ५ श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रह, ६ नोइन्द्रियार्थावग्रह. स्पर्शनइन्द्रिये करी प्रगटपणे स्पर्श सित पुद्गलने ग्रहीये ते 'स्पर्शेन्द्रियार्थावग्रह.' एव सर्वत्र जानना. नोइन्द्रिय मन है.

ईहा षट् भेदे—१ स्पर्शेन्द्रियेहा, २ रसनेन्द्रियेहा, ३ घ्राणेन्द्रियेहा, ४ चक्षुरिन्द्रियेहा, ५ श्रोत्रेन्द्रियेहा, ६ नोइन्द्रियेहा. स्पर्शन इन्द्रिये करी गृहीत जे अर्थ तेहनु विचारणा ते 'स्पर्शन-इन्द्रिय-ईहा.' एवं सर्वत्र.

अवाय ६ भेदे—१ स्पर्शनेन्द्रियावाय, २ रसनेन्द्रियावाय, ३ घ्राणेन्द्रियावाय, ४ चक्षुरिन्द्रियावाय, ५ श्रोत्रेन्द्रियावाय, ६ नोइन्द्रियावाय. स्पर्शन इन्द्रिये गृहीत वस्तु विचारी तिसका निश्चय करना ते 'स्पर्शनेन्द्रियावाय.' एवं सर्वत्र ज्ञेयं.

धारणा षट् भेदे—१ स्पर्शनेन्द्रियधारणा, २ रसनेन्द्रियधारणा. ३ घ्राणेन्द्रियधारणा, ४ चक्षुरिन्द्रियधारणा, ५ श्रोत्रेन्द्रियधारणा, ६ नोइन्द्रियधारणा. स्पर्शन इन्द्रिये जे वस्तु ग्रही विचारी निश्चय करी धरी राखनी ते 'स्पर्शनेन्द्रियधारणा'. एव सर्वत्र.

ए छ चोक चौवीस अने चार व्यंजनावग्रह एवं २८ भेद श्रुतनिश्रित मतिज्ञानके है. अने अश्रुतनिश्रित मतिना भेद औत्पत्तिकी आदि ४ बुद्धि सो तिनका विस्तार नन्दीसे ज्ञेय. तथा श्रुतनिश्रित मतिज्ञानके ३३६ भेद है सो लिख्यते—१ बहुग्राही, २ अबहुग्राही, ३ बहुविधग्राही, ४ अबहुविधग्राही, ५ क्षिप्रग्राही, ६ अक्षिप्रग्राही, ७ अनिश्रित, ८ निश्रित, ९ असंदिग्ध, १० संदिग्ध, ११ ध्रुव, १२ अध्रुव. इनका अर्थ—कोइ एक क्षयोपशमना विचित्रपणाथी अवग्रह आदिके करी एक वेला वजाया जो भेरी, शंख प्रमुख तेहना शब्द न्यारा न्यारा जाणे ते 'बहुग्राही' अने एक अव्यक्तपणे तुर्यनी ही ज ध्वनि जाणे ते 'अबहुग्राही' अने जे वली स्त्री प्रमुखनी वजाया मधुर आदि घणा पर्याये करी शंख प्रमुखनी ध्वनि जाणे ते 'बहुविधग्राही'. तेहथी एक विपर्यय जाणे ते 'अबहुविधग्राही'. जे शब्द आदि कह्या ते क्षिप्र–उतावला जाणे ते 'क्षिप्रग्राही.' अने एक वली विमासीने मोडा जाणे ते 'अक्षिप्रग्राही'. एक लिंगे जाणे ते 'निश्रित;' ध्वजा देखी देहरा जाणे. विपर्यय जाणे 'अनिश्रित.' जे संशय विना जाणे ते 'असदिग्ध.' संशय सहित जाणे ते 'सदिग्ध.' अने जे एक वारनो जाण्यो सदा जाणे पिण कालांतरे परना उपदेशनी वांछा न करे ते 'ध्रुव' कहीये. विपर्यय 'अध्रुव.' एह बारे भेदकू पहिले २८ भेदकू गुणीये तो ३३६ मतिज्ञानना भेद होय है.

१ ईहा, २ अपोहा, ३ विमर्शा, ४ मार्गणा, ५ गवेपणा, ६ संज्ञा, ७ स्मृति, ८ मति, ९ प्रज्ञा—मतिके एकार्थ(क) नाम. एह नव मतिके नाम है.

अथ मतिज्ञान नव द्वार करी निरूपण करीये है—

१ संत० (सत्०) छता पद प्ररूपणा—मतिज्ञान किहां किहां लाभे? २ द्रव्यप्रमाण–एक कालसे कितने जीव मतिज्ञानवंत लाभे? ३ क्षेत्र–मतिज्ञानवत कितने क्षेत्रमे है? ४ स्पर्शना—मतिज्ञानवान् कितना क्षेत्र स्पर्शे है? ५ काल—मतिज्ञान कितना काल रहै है? ६ अंतर—मतिनो अंतर. ७ भाग—मतिज्ञानी अन्यज्ञानीयोके कितमे(ने?) भाग? ८ भाव–मतिज्ञान पट् भावमे कौनसे भावे है? ९ अल्पबहुल[1]—मतिज्ञान पूर्वप्रतिपन्नाप्रतिपद्यमान, इनमे घणे कौनसे अने स्तोक कौनसे?

(३६) छतापद द्वार वीसे भेदे यंत्र

सत् पद प्ररूपणा २० द्वारे	मति है या नहीं?	पृथ्वी अप् तेज वायु वनस्पति	नास्ति	जहां तीनो योग एकठेमे ४	अस्ति
चारो गतिमे १	है	त्रसकायमे ३	अस्ति	स्त्री पुरुष नपुसक वेदे ५	अस्ति
एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चौरेंद्रीमे भाये	नहीं	एकांत काय योगे	नास्ति	अनतानुबंधी चौकडीमे	नहीं
पचेंद्रीमे २	अस्ति	एकांत वचने काये	,,		

[1] अल्प।

चारों कषायमे ६	अस्ति
पहिली तीन भाव लेश्यामे	नास्ति
उपरली तीन लेश्यामे ७	अस्ति
सम्यक्त्वमे	,,
मिथ्यात्व ५ मे ८	नास्ति
मति आदि ४ ज्ञानमे	अस्ति
केवलज्ञानमे ९	नास्ति
चक्षु आदि ३ दर्शनमे	अस्ति
केवलदर्शनमे १०	नास्ति
संयत ५ मे ११	अस्ति
साकार अनाकार मे १२	,,
आहारी अनाहारी मे १३	,,
भाषालब्धिवानमे	,,
जिसके भाषाकी लब्धि नही १४	नास्ति
प्रत्येक शरीरीमे	अस्ति
साधारण शरीरीमे १५	नास्ति
पर्याप्तामे	अस्ति
लब्धि अपर्याप्तामे १६	नास्ति
सूक्ष्ममे	,,
बादरमे १७	अस्ति
संज्ञीमे	,,
असंज्ञीमे प्राये १८	नास्ति
भव्यमे	अस्ति
अभव्यमे १९	नास्ति
चरममे	अस्ति
अचरममे २०	नास्ति

इति सत्पद द्वार १

२ द्रव्यप्रमाणद्वार—मतिज्ञानी सदा असंख्याता लाभे इति. ३ क्षेत्रद्वारे—मतिज्ञानी सारे एकठे करे तो लोकके असंख्यातमे भाग व्यापे. ४ स्पर्शनाद्वार—मतिज्ञानी लोकके असंख्यातमे भाग स्पर्शे; क्षेत्र जो एक प्रदेश ते स्पर्शना सात प्रदेशकी होती है. ५ कालद्वार—मतिज्ञानकी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट ६६ सागरोपम झझेरा. उपयोग आश्री मतिज्ञानी स्थिति अंतर्मुहूर्त. ६ अंतरद्वारे—मतिका अंतर, जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट देश ऊन अर्ध पुद्गलपरावर्त. ७ भागद्वार—मतिज्ञानी सर्व ज्ञानी अनंतमे भाग अने सर्व अज्ञानीके अनंतमे भाग. ८ भावद्वार—मतिज्ञान क्षयोपशम भावे है. ९ अल्पबहुत्वद्वार—नवा मतिज्ञान पडि वघनेवाले स्तोक है अने पूर्व पडि वध्या असंख्यात गुणे. इति मतिज्ञान. अलम्.

अथ श्रुतज्ञानस्वरूप लिख्यते—१ अक्षर श्रुत, २ अनक्षर श्रुत, ३ संज्ञी श्रुत, ४ असंज्ञी श्रुत, ५ सम्यक् श्रुत, ६ मिथ्या श्रुत, ७ अनादि श्रुत, ८ अपर्यवसित श्रुत, ९ सादि श्रुत, १० सपर्यवसित श्रुत, ११ गमिक श्रुत, १२ अगमिकश्रुत, १३ अंगप्रविष्ट श्रुत, १४ अनंगप्रविष्ट श्रुत.

अथ इन चौदका अर्थ लिख्यते—१ अक्षर श्रुत. जीवसे कदापि न क्षरे ते 'अक्षर'. तेह अक्षर श्रुत तीन प्रकारका है. संज्ञाक्षर. जाणीये जिस करी ते 'संज्ञा' कहीये; तेहनुं कारण जे अक्षर-पंक्ति तेहने 'संज्ञाक्षर' कहीये. ते ब्राह्मी लिपि आदि करी अष्टादश (१८) भेदे ए द्रव्यश्रुत कहीये. एहथी भावश्रुत होता है. भावश्रुतका कारणने 'द्रव्यश्रुत' कहीये. २ व्यंजनाक्षर. 'व्यंजन' ते अकारादि अक्षरना उच्चारने कहीये. ते अर्थका व्यंजक है—बोधक है. एतले अकारादि अक्षरना उच्चारने 'व्यंजन' कहीए. ते व्यंजन अक्षरश्रुत अनेक प्रकारका है. एक मात्राये उचरीए ते 'ह्रस्व' कहीये. दो मात्राये उचरीये ते 'दीर्घ' कहीये. तीन मात्राए उचरीए ते 'प्लुत' कहीये.

इत्यादिक भेद जैनेन्द्र व्याकरणसे जानना. ए पणि द्रव्यश्रुत कहीये. २ लब्ध्यक्षरं. अक्षर उचरवानी लब्धि अथवा अक्षरार्थ समजावनेकी लब्धि ते 'लब्ध्यक्षर' कहिये. तथा लब्ध्यक्षरश्रुत छ प्रकारे है. स्पर्शनेन्द्रियलब्ध्यक्षर. स्पर्शन इन्द्रिये मृदु, कर्कश आदि स्पर्श पामीने अक्षर जाणे जे अर्क, तूल आदि ऊर्ण, वस्त्र आदिक शब्दार्थने विचारे ते 'स्पर्शनेन्द्रियलब्ध्यक्षर' श्रुत कहीये. एवं पांचे इन्द्रियनी विषयका समझना. एव मनकी वस्तुके अक्षर समझने ते 'नोइन्द्रियलब्ध्यक्षर' श्रुत.

अथ दूजा भेद अनक्षर श्रुत—जिहां स्पष्टपणे अक्षर भासे नही तेहने 'अनक्षर श्रुत' कहीये. ते उच्छ्वास निःश्वास निष्ठीवन काश क्षुत सींटी आदिक अनेक प्रकारे जानना.

अथ संज्ञी श्रुत—जेहने संज्ञा हुइ तेहने 'सज्ञी' कहीये. तेहनो श्रुत ते 'सज्ञी श्रुत' कहीये. ते संज्ञी श्रुत तीन प्रकारना है. तेहना स्वरूप यंत्रात्—

(३७) संज्ञीश्रुतस्वरूपयंत्रम्

दीर्घ कालिकी उपदेशेन सञ्ज्ञी १	जो प्राणीने पूर्वापर अर्थनी दीर्घ विचारणा हुइ पूर्वे इम था, सम्प्रति इम है, आगे एवमस्तु-इम होवेगी ऐसा विचारे तेहने 'दीर्घकालिकी उपदेशेन—उपदेश करी सञ्ज्ञी' कहीए ते गर्भज मनुष्य, तिर्यंच, देव, नारकी, मन पर्याप्तिना धारक जानना इति दीर्घकालिकी
हेतु उपदेशेन सञ्ज्ञी २	जे प्राणी स्वदेह पालनेके अर्थे इष्ट आहार आदिमें प्रवर्ते, अनिष्टथी निवर्ते इतनाही जाणें पिण ओर कछु पूर्वापर अर्थ न जाणे तेहने 'हेतूपदेशेन सञ्ज्ञी कहीये' ते समूर्च्छिम पचेन्द्रिय मनुष्य, तिर्यंच, विकलेन्द्रिय प्राणी जानना
दृष्टिवाद उपदेशेन सञ्ज्ञी ३	दृष्टिवाद० जे प्राणीने सम्यग्दृष्टि हुइ वीतराग भाषित वचन उपरि रुचि हुइ ते 'दृष्टिवादोपदेशे करी सञ्ज्ञी' चोथे गुणस्थानसे प्रारम्भी सब जीव ज्ञेयं

(३८) असंज्ञीश्रुतस्वरूपयंत्रम्

दीर्घ कालिकी उपदेशेन असञ्ज्ञी १	जे प्राणी पूर्वापर विचार न जाणे तिसकू 'दीर्घकालि(की) उपदेशे करी असञ्ज्ञी' कहीये ते संमूर्च्छिम पचेन्द्रिय मनुष्य, तिर्यंच, विकलेन्द्रिय, एकेन्द्रिय जानना.
हेतु उपदेशेन असञ्ज्ञी २	जे प्राणी स्वदेह पालनेके अर्थे इष्ट वस्तु आहार आदिकके वास्ते प्रवर्ती न शके अने अनिष्ट थकी निवर्ती न शके ते स्थावर-नाम-कर्मके उदय करी तेहने 'हितो(हेतू)पदेशे करी असञ्ज्ञी' कहीये
दृष्टिवाद उपदेशेन असञ्ज्ञी ३	जे प्राणीने मिथ्यादृष्टि प्रबल हुइ वीतरागना वचन अनेकांत-स्याद्वादरूप जाण्या नही ते प्रथम गुणस्थानवर्ती जीव जानना ते दृष्टिवाद उपदेशे करी असञ्ज्ञी

अथ पाचमा भेद सम्यक्श्रुतना कहीये है. सम्यक्श्रुत जे श्रीजिनेन्द्र देवने वचन अनुसारे गौतम आदि गणधर रचित जे द्वादश अंग ते 'सम्यक्श्रुत' कहीये. तथा चौदा पूर्व धारीनो रच्यो यावत् दशपूर्वधारीनो रच्यो ते पिण 'सम्यक्श्रुत' जानना. दश पूर्वमे किंचित् न्यून हुइ तेहनो भाष्यो सम्यक्श्रुत हुइ अने नही पिण हुइ, "[३]अभिन्नदसपुव्वि जस्स समसुय तेण पर भयणा" इति वचनात्.

१ द । २ ऊन । ३ अभिन्नदशपूर्वाणि यस्य समश्रुत तेन परं भजना ।

अथ छट्ठा भेद-'मिथ्याश्रुतं'. मिथ्यादृष्टिनो भाष्यो जे भारत आदि वेद ४ प्रमुख जानना. इहां वली एक विचार है. सम्यक्श्रुत जो मिथ्यादृष्टि पढे तो 'मिथ्याश्रुत' कहीए. ते कोइ नयभेद समजे नही, रुचि पिण न हुइ तिवारे अनेकांतकूं एकांत परूपीने विघटा देवे, इस वास्ते 'मिथ्याश्रुत' कहीये. अने जो सम(म्यग्)दृष्टि मिथ्याश्रुत पढे तो ते 'सम्यक् श्रुत' कहीए. ते शास्त्र भणीने पूर्वापर विचारे तिवारे अणमिलता लागे वेदमे पूर्वे तो इम कह्या है जे- "न हिंसेत् (हिंस्यात्) सर्वभूतानि" पीछे फिर ऐसे कह्या है "यज्ञे पशून् हिंसेत्" ऐसा देखीने विचारे जो ए वचन तो परस्पर बाधित है तो धन्य श्रीवीतराग त्रिलोकपूजित जिहनी वाणी अनेकांत-स्याद्वादरूप किहां ही बाधित नही. एह छट्ठा भेद श्रुतना.

सादि श्रुत सातमा द्रव्ये, क्षेत्रे, काले, भावे करी चार प्रकारका है. द्रव्यथी एक पुरुष आश्री श्रुतनी आदि है. जिहां सम्यक्त्व पाइ तहांसे आदि है. क्षेत्रथी पंच भरत, पंच ऐरवतनी अपेक्षा आदि है; प्रथम तीर्थंकरने उपदेशे प्रगट हूया. कालथी अवसर्पिणी कालना त्रीजा आराके अंते, उत्सर्पिणीमे त्रीजे आरेके धुरे उपजे इस अपेक्षा आदि है भावथी. अत्र भाव ते उपयोग कहीए. जद(ब) श्रुतमां उपयोग दीया तिहां आदि कहीये. इति सप्तमं.

(३९)

	द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी	भावथी
सपर्यवसित श्रुतयंत्र ८	एक पुरुष आश्री सम्यक्त्व वमी वा केवल पाम्या तदा अंत श्रुतनो	पंच भरत, पंच ऐरवते जिनशासन विच्छेद आश्री अंत श्रुतनो	अवसर्पिणीमे पचमे आरेके अंते, उत्सर्पिणीमे चौथेमे अंत	उपयोग नही तदा अंतश्रुत ज्ञाननो
अनादि श्रुत ९	घणे पुरुष आश्री अनादि श्रुत जानना	विदेह आश्री अनादि सर्वाद्धा तीर्थ	नोअवसर्पिणी-नोउत्सर्पिणी आश्री	क्षयोपशम भाव आश्री प्रवाह सदा अनादि
अनंत दशमा	सर्व पुरुष आश्री अंत नहीं श्रुतनो	सर्व क्षेत्र आश्री अंत नहीं	नोअवसर्पिणी नोउत्सर्पिणी आश्री अंत नही	क्षयोपशम भाव आश्री अंत नही

गमिक श्रुत एक सदृश सूत्र है, पिण किंचित् विशेष पामीने वार वार उचरे ते 'गमिक श्रुत' कहीए. ते बाहुल्येन दृष्टिवाद जानना. अगमिक श्रुत बारमा. गमिकथी विपरीत ते 'अगमिक' ते आचारांग आदि जानना कालिक श्रुत इति. अंगप्रविष्ट द्वादशांगी जानना. अनंगप्रविष्टके दो भेद-आवश्यक. अवश्य करीये ते 'आवश्यक' ते सामायिक आदि षट् अध्ययन. दूजा भेद आवश्यकातिरिक्तं. ते आवश्यकथी भिन्नना दो भेद-कालिक मे दिवस निशानी प्रथम पश्चिम

१ मोटे भागे।

पोरसीमे पढीये ते 'कालिक'—उत्तराध्ययन आदि, नंदीसे जानना. उत्कालिक—दशवैकालिक प्रमुख जानना. इन १४ मेदमे लौकिक लोकोत्तर भेद है सो समज लेना. एह चौदा भेद पुरा हूये.

अथ श्रुतज्ञान लेनेकी विधि लिख्यते—

(४०)

सुस्सूसइ १	पडिपुच्छइ २	सुणेइ ३	गिण्हइ ४	ईहए ५	अपोहइ ६	धारेइ ७	करेइ ८
शिष्य सिद्धांत लेनेहार होवे तो प्रथम एक चित्तपणे गुरुना मुहथी नीकल्या वचन साभलने वाछे ए प्रथम गुण है	सदेह पडे विनय करी नमन होकर फेरकर पूछे ए दूजा गुण	तथा जे गुरु सदेहना अर्थ कहे ते अछीतरे सावधान होकर सुणे	पीछे जे सदेहनो अर्थ गुरे कह्या ते अर्थ रूडी परे ग्रहण कर रखे	ते अर्थ वळी पूर्वापर विरोध टाळीने हृदयमे विचारना करे	ते अर्थ विचारीने पछी निश्चय करे एह वात इम ही है	पीछे ते अर्थ हियेमे धारी राखे, विस्मृत न हुइ	पछे जे अनुष्ठान जिस विधिसे कह्या है तिस विधिसे करे ए आठमा गुण जानना

(४१) सात प्रकारे शास्त्र सुननेकी विधियंत्रं

मूअ १	हुकार २	वाढकार ३	पडिपुच्छ ४	विमसा ५	पसगपराय ६	परीयण ठिय ७
प्रथम जद शिष्य गुरु कन्हे अर्थ सुणे तद विनय करी शरीर सको ची मोन करे	दूजी वार अर्थ सुणीने मस्तक नमाय कर हुकारा देवे	तीजी वार गाढा प्रगट बोले है भगवन्! ए वात इम ज है, अन्यथा नही	चौथी वार सदेह ऊठे तो प्रश्न पूछे	पाचमी वार ते अर्थ हियेमे विचारे	छठी वार ते अर्थके पार जाय	सातमी वारे गुरुनी परे शिष्य अर्थ कहे

अथ शिष्य प्रते गुरु सिद्धांतना अर्थ किस रीतसे कहे ते वात कहीए है. गाथा—

"सुत्तत्थो खलु पढमो बीओ निज्जुत्तिमीसओ भणिओ ।
तइओ य निरवसेसो एस विही होइ अणुओगो ॥"

सुत्त० पहिलां गुरु सूत्रना अक्षरार्थ मात्र अछीतरे प्रकाशे; तिहा विशेष कांइ न कहइ. किस वास्ते? पहिला विशेष कहतां शिष्यनी बुद्धि मूढ हो जावे, कुछ भी समजे नही. पीछे दूजी वार अर्थ जाण्या पीछे निर्युक्ति सहित सूत्र विशेष वखाणे. ते विशेष रूडी परे जाण्या पीछे वली तीजी वारे शिष्यने निरवशेष ते सूत्र माहिला विशेष अने सूत्रमे जो न कह्या गम्य शेष आदि सगला प्रकाशे. ए सिद्धांतना अनुयोग कहीए अर्थ कहेवानी विधि जाननी. इति श्रुतज्ञानसरूप संक्षेपथी संपूर्ण.

१ सूत्रार्थ खलु प्रथमो द्वितीयो निर्युक्तिमिश्रको भणित । तृतीयश्च निरवशेष एष विधिर्भवत्यनुयोग ॥

अथ छट्ठा भेद-'मिथ्याश्रुतं'. मिथ्यादृष्टिनो भाष्यो जे भारत आदि वेद ४ प्रमुख जानना. इहां वली एक विचार है. सम्यक्श्रुत जो मिथ्यादृष्टि पढे तो 'मिथ्याश्रुत' कहीए. ते कोइ नयभेद समजे नही, रुचि पिण न हुइ तिवारे अनेकांतकूं एकांत परूपीने विघटा देवे, इस वास्ते 'मिथ्याश्रुत' कहीये. अने जो सम(म्यग्)दृष्टि मिथ्याश्रुत पढे तो ते 'सम्यक् श्रुत' कहीए. ते शास्त्र भणीने पूर्वापर विचारे तिवारे अणमिलता लागे वेदमे पूर्वे तो इम कह्या है जे- "न हिंसेत् (हिंस्यात्) सर्वभूतानि" पीछे फिर ऐसे कह्या है "यज्ञे पशून् हिंसेत्" ऐसा देखीने विचारे जो ए वचन तो परस्पर बाधित है तो धन्य श्रीवीतराग त्रिलोकपूजित जिहनी वाणी अनेकांत-स्याद्वादरूप किहां ही बाधित नही. एह छट्ठा भेद श्रुतना.

सादि श्रुत सातमा द्रव्ये, क्षेत्रे, काले, भावे करी चार प्रकारका है. द्रव्यथी एक पुरुष आश्री श्रुतनी आदि है. जिहां सम्यक्त्व पाइ तहांसे आदि है. क्षेत्रथी पंच भरत, पंच ऐरवतनी अपेक्षा आदि है; प्रथम तीर्थंकरने उपदेशे प्रगट हूया. कालथी अवसर्पिणी कालना त्रीजा आराके अंते, उत्सर्पिणीमे त्रीजे आरेके धुरे उपजे इस अपेक्षा आदि है भावथी. अत्र भाव ते उपयोग कहीए. जद(ब) श्रुतमां उपयोग दीया तिहां आदि कहीये. इति सप्तमं.

(३९)

	द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी	भावथी
सपर्यवसित श्रुतयंत्रं ८	एक पुरुष आश्री सम्यक्त्व वमी वा केवल पाम्या तदा अंत श्रुतनो	पच भरत, पंच ऐरवते जिनशासन विच्छेद आश्री अंत श्रुतनो	अवसर्पिणीमे पंचमे आरेके अंते, उत्सर्पिणीमे चौथेमे अंत	उपयोग नही तदा अंतश्रुत ज्ञाननो
अनादि श्रुत ९	घणे पुरुष आश्री अनादि श्रुत जानना	विदेह आश्री अनादि सर्वाद्धा तीर्थ	नोअवसर्पिणी-नोउत्सर्पिणी आश्री	क्षयोपशम भाव आश्री प्रवाह सदा अनादि
अनंत दशमा	सर्वे पुरुष आश्री अंत नही श्रुतनो	सर्वे क्षेत्र आश्री अंत नहीं	नोअवसर्पिणी नोउत्सर्पिणी आश्री अंत नही	क्षयोपशम भाव आश्री अंत नही

गमिक श्रुत एक सदृश सूत्र है, पिण किंचित् विशेष पामीने वार वार उचरे ते 'गमिक श्रुत' कहीए. ते बाहुल्येन दृष्टिवाद जानना. अगमिक श्रुत बारमा. गमिकथी विपरीत ते 'अगमिक' ते आचारांग आदि जानना कालिक श्रुत इति. अंगप्रविष्ट द्वादशांगी जानना. अनंगप्रविष्टके दो भेद-आवश्यक. अवश्य करीये ते 'आवश्यक' ते सामायिक आदि षड् अध्ययन. दूजा भेद आवश्यकातिरिक्तं. ते आवश्यकथी भिन्नना दो भेद-कालिक मे दिवस निशानी [1] प्रथम पश्चिम

[1] मोटे भागे ।

पोरसीमे पढीये ते 'कालिक'–उत्तराध्ययन आदि, नंदीसे जानना. उत्कालिक–दशवैकालिक प्रमुख जानना. इन १४ भेदमे लौकिक लोकोत्तर भेद है सो समज लेना. एह चौदा भेद पुरा हूये.

अथ श्रुतज्ञान लेनेकी विधि लिख्यते—

(४०)

सुस्सूसइ १	पडिपुच्छइ २	सुणेइ ३	गिण्हइ ४	ईहए ५	अपोहइ ६	धारेइ ७	करेइ ८
शिष्य सिद्धात लेनेहार होवे तो प्रथम एक चित्तपणे गुरुना मुहथी नीकल्या वचन साभलने वाछे ए प्रथम गुण है.	सदेह पडे विनय करी नमन होकर फेरकर पूछे ए दूजा गुण	तथा जे गुरु सदेहना अर्थ कहै ते अछीतरे सावधान होकर सुणे	पीछे जे सदेहनो अर्थ गुरे कह्या ते अर्थ रूडी परे ग्रहण कर रखे	ते अर्थ वळी पूर्वापर विरोध टाळीने हद यमे विचारना करे	ते अर्थ विचारीने पछी निश्चय करे एह वात इम ही है	पीछे ते अर्थ हियेमे धारी राखे, विस्मृत न हुइ	पछे जे अनुष्ठान जिस विधिसे कह्या है तिस विधिसे करे ए आठमा गुण जानना

(४१) सात प्रकारे शास्त्र सुननेकी विधियंत्रं

मूअ १	हुकार २	बाढकार ३	पडिपुच्छ ४	विमंसा ५	पसगपराय ६	परीयण ठिय ७
प्रथम जद शिष्य गुरु कन्हे अर्थ सुणे तद विनय करी शरीर सको ची मौन करे	दूजी वार अर्थ सुणीने मस्तक नमाय कर हुकारा देवे	तीजी वार गाढा प्रगट बोले है भगवन्! ए वात इम ज है, अन्यथा नही	चौथी वार सदेह ऊठे तो प्रश्न पूछे	पाचमी वार ते अर्थ हियेमे विचारे	छठी वार ते अर्थके पार जाय	सातमी वारे गुरुनी परे शिष्य अर्थ कहै

अथ शिष्य प्रते गुरु सिद्धांतना अर्थ किस रीतसे कहे ते वात कहीए है. गाथा—

"सुत्तत्थो खलु पढमो बीओ निज्जुत्तिमीसओ भणिओ ।
तइओ य निरवसेसो एस विही होइ अणुओगो ॥"[1]

सुत्त० पहिलां गुरु सूत्रना अक्षरार्थ मात्र अछीतरे प्रकाशे; तिहां विशेष कांइ न कहइ. किस वास्ते? पहिला विशेष कहतां शिष्यनी बुद्धि मूढ हो जावे, कुछ भी समजे नही. पीछे दूजी वार अर्थ जाण्या पीछे निर्युक्ति सहित सूत्र विशेष वखाणे. ते विशेष रूडी परे जाण्या पीछे वली तीजी वारे शिष्यने निरवशेष वे सूत्र माहिला विशेष अने सूत्रमे जो न कह्या गम्य शेष आदि सगला प्रकाशे. ए सिद्धातना अनुयोग कहीए अर्थ कहेवानी विधि जाननी. इति श्रुतज्ञानस्वरूप संक्षेपथी संपूर्ण.

1 सूत्रार्थः खलु प्रथमो द्वितीयो निर्युक्तिमिश्रको भणितः । तृतीयश्च निरवशेष एष विधिर्भवत्यनुयोगः ॥

अथ अवधिज्ञानस्वरूप कथ्यते—अवधिना भेद असंख्य, अनंत है. ते सर्वका सरूप नाही लिख्या जावे है; इस वास्ते चौदे भेदे अवधिज्ञाननउ निक्षेप कहीए स्थापना कहुं हुं (?) अने पंदरवे द्वारे ऋद्धिप्राप्त कहीए लब्धिवंत, तिस वास्ते कितनीक लब्धिना सरूप कहस्युं. अवधिना चौदे द्वारका नाम यंत्रसे जानना—

१ अवधि—अवधिज्ञानना प्रथम द्वारे नाम आदिक भेद कथन करियेंगे. २ क्षेत्रपरिमाण—अवधिज्ञानका क्षेत्रपरिमाण कथना. ३ संस्थान—अवधिज्ञानका संस्थान—आकारविशेष कहना. ४ अनुगामी—अनुगामी एक अवधि लोचननी परे धणीके साथ जावे ते 'अनुगामी' अने जे धणीके साथ न जावे ते 'अननुगामी' तेहना सरूप. ५ अवस्थित—जैसा अवधि उपज्या है तितना ही रहै, वधे घटे नही ते 'अवस्थित'. ६ चल—वधे घटे परिणामविशेषे ते 'चल' अवधि कहीये. ७ तीव्र मंद—कितनाका अवधि चोखा ते 'तीव्र', डोहलारूप ते 'मंद' कहीये. ८ प्रतिपाति—अवधिनो उपजणो विणसनो ते 'प्रतिपाति'. ९ ज्ञान—ज्ञानद्वारे वखाणवो. १० दर्शन–दर्शनद्वारे वखाणवो. ११ विभंग–मिथ्यात्वीका अवधिज्ञान ते 'विभंग.' १२ देश—अवधि देश थकी उपजे अने सर्व थकी उपजे. १३ क्षेत्र–क्षेत्र विषे संबद्ध असंबद्ध विचाले अंतर हूइ ते. १४ गति—गइंदिकाये मतिज्ञानवत् वीस द्वारे. १५ ऋद्धिप्राप्त–लब्धिका सरूप. एह सामान्य प्रकारे द्वारनामार्थकथनम्.

(४२) अथ प्रथम अवधिज्ञानना नामद्वारमे नामादि छ प्रकारे स्थापनासार्थकयंत्रं

नाम अवधि १	स्थापना-अवधि २	द्रव्य अवधि ३	क्षेत्र-अवधि ४	काल-अवधि ५	भव-अवधि ६	भाव अवधि ७
नाम अवधि जीवका अथवा अजीवका 'अवधि' ऐसा नाम देवे ते 'नाम अवधि;' अथवा अवधि ऐसा जो नाम ते 'नाम-अवधि' कहीए	स्थापना अवधि अवधिज्ञानीये जे द्रव्य अथवा क्षेत्र दीठा है तिसका जो आकार अथवा अवधिनो धणी जे पुरुष तेहनो जे आकार स्थापीये ते स्थापना अवधि कहीये	द्रव्य अवधि अवधिज्ञाननो धणी पुरुष जिस अवसरमे असावधान होय तथा उपयोग रहित 'अवधि' शब्द उचरे ते 'द्रव्य अवधि'	जिस क्षेत्रमे रहीने अवधिज्ञाने करी वस्तु देखे ते 'क्षेत्र-अवधि' कहीए	तथा काल-अवधि जिस कालमे अवधि उपजे ते 'काल-अवधि,' अथवा जिस कालमे अवधिका व्याख्यान करे-प्रकाशे ते 'काल अवधि' कहीये	भव अवधि नारकीने भवे अथवा देवताने भवविषये जे अवधि ज्ञान उपजे ते 'भव-अवधि' ज्ञान कहिये	भाव अवधि क्षयोपशम आदि भावे जे अवधिज्ञान उपजे ते 'भाव-अवधि;' अथवा जे द्रव्यनापर्याय तेहने 'भाव' कहिये ते भाव आश्री जे अवधि ते 'भाव-अवधि' इति सत्तार्थ

अथ दूजा क्षेत्रपरिमाणद्वार कहे है—तीन समयका उपनो आहारक सूक्ष्म पनक फूलिननो जीव तेहनो शरीर जितना वडा होवे गहै (है ?) तितना अवधिज्ञानी जघन्य क्षेत्र देखे. हिवै सूक्ष्म पनक जीव कह्या ते कैसा ते कत कहे है. सहस्र योजन प्रमाण शरीर जे मत्स्य हुइ ते मत्स्य मरीने पहिले समय आपणा शरीर नऊं कडाह संहरीने सहस्र योजन प्रमाण प्रतर कहीये. मांडा (मादा) रूप थइ अने बीजे समये ते शरीर नउ प्रतर संहरीने सहस्र योजन प्रमाण सूचीने आकारे हुये अने तीजे समये ते सूचीरूप शरीर संहरीने सूक्ष्म रूप थइने ते मत्स्यनो जीव आपणा शरीर बाहिर जे पनग हूये तिस माहे उपजे ते 'सूक्ष्म पनक' कहीए. जब तीन समयका उपना आहार करे तेहनो शरीर जितना वडा होवे-तितना क्षेत्र अवधिज्ञानी जघन्य जाणे. इति जघन्य अवधिक्षेत्रम्.

अथ अवधिका उत्कृष्ट क्षेत्र कहीये है-श्रीअजितनाथने वारे पंदरे कर्मभूमे उत्कृष्टा घणा मनुष्य हुइ अने अग्निनो आरंभ मनुष्य ज करे तिस वास्ते बादर अग्निना जीव पिण घणा हुइ; ते बादर अने सूक्ष्म अग्निका जीवांकी श्रेणि माडीइ ते श्रेणि इतनी बडी नीपजे लोकमे व्यापी अलोकमे लोक सरीषा असंख्याता खंड व्यापे ते श्रेणि अवधिज्ञानीने शरीरे लगाइने चारो ओर फेरीये तिस श्रेणिने चारो ओर असंख्य रज्जु परमाणु जितना क्षेत्र स्पर्श्या है तितना क्षेत्र उत्कृष्ट परम अवधिज्ञानी देखे. अलोकमे देखने योग्य वस्तु तो नही, पिण शक्ति इतनी है जो कर वस्तु होती तो देखता. इति उत्कृष्ट अवधिक्षेत्रम्.

अथ अवधिज्ञान आश्री क्षेत्रनी वृद्धिये कितना काल वधइ अने कालनी वृद्धिये कितना क्षेत्र वधे ते (४२) यंत्रात्—

	क्षेत्रथी जाणे		ते कालथी कितना जाणे ?
१	अंगुलके असंख्यातमे भाग	१	ते आवलिके असंख्यमे भाग
२	„ संख्यातमे „	२	„ „ संख्यातमे भाग
३	एक अंगुल प्रमाण क्षेत्र	३	एक आवलिका ऊणी
४	पृथक् अंगुल क्षेत्र देखे	४	„ „ पूरी जाणे
५	एक हस्त „ „	५	अंतर्मुहूर्तनी वात जाणे
६	„ कोश „ „	६	एक दिवस ऊणी किंचित्
७	„ योजन „ „	७	पृथक् दिवस ९ ताई
८	२५ „ „ „	८	एक पक्ष किंचित् न्यून

	क्षेत्रथी जाणे		ते कालथी कितना जाणे ?
९	भरतक्षेत्र परिमाण देखे	९	अर्ध मास कालथी
१०	जंबूद्वीप देखे ते	१०	एक मास झाझेरा
११	अढाइ द्वीप परिमाण देखे	११	एक वर्ष कालथी
१२	रुचक द्वीप तेरमा	१२	पृथक् वर्ष
१३	संख्याते द्वीप देखे ते	१३	संख्याता कालकी वात
१४	संख्याते वा असख्य द्वीप	१४	कालथी असंख्य काल

संख्याते योजन परिमाण द्वीप समुद्र असंख्याते देखे; असंख्य योजन परिमाण द्वीप संख्याते देखे.

हिवै द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव एह चारोमे वृद्धि हुइ कौनसेकी वृद्धि हुइ अने कौनसे की न हुइ ते (४४) यंत्रम्—

काल वधे	क्षेत्र वधे	द्रव्य वधे	पर्याय वधे
द्रव्य ,,	क्षेत्र काल भजना	काल भजना	काल भजना
क्षेत्र ,,	द्रव्य वधे	क्षेत्र ,,	क्षेत्र ,,
भाव ,,	भाव ,,	पर्याय वधे	द्रव्य ,,

इस यंत्रका भावार्थ—काल आश्री जिवारे अवधिज्ञान वृद्धि हुइ तदा क्षेत्र, द्रव्य, पर्याय एह तीनो वधे अने क्षेत्रकी वृद्धि हुये कालकी भजना कहनी–वधे वी अने नही वी वधे. किस वास्ते ? क्षेत्र अतिसूक्ष्म है अने काल स्थूल–मोटा कह्या है तिस वास्ते जो घणा क्षेत्र वधे तो काल वधे अने जो थोडा क्षेत्र वधे तो काल कुछ भी नही वधे इति भावः. वली क्षेत्रनी वृद्धि होय तो द्रव्य अने पर्याय निश्चय ही वधे. किस वास्ते ? क्षेत्रथी द्रव्य अतिसूक्ष्म है. एक आकाशप्रदेश क्षेत्रमे अनंता द्रव्य समा रह्या है. अने द्रव्यथी पर्याय अतिसूक्ष्म है. कैसात् ? एक द्रव्यमे अनंती पर्याय पीत रक्त आदि है तिस वास्ते क्षेत्र वधे द्रव्य, पर्याय दोनो वधे. तथा द्रव्य अने पर्यायके वधे क्षेत्र कालके वधनेकी भजना. द्रव्य अने पर्याय सूक्ष्म है अने क्षेत्र काल मोटा है इस वास्ते वधे अने नही पिण वधे. तथा द्रव्य वधे पर्याय निश्चय वधे अने पर्याय वधे द्रव्य वधे वी अने नही पिण वधे.

१ थायी ।

पुरनिवासी दोसी काळीदास साकळचंद तरफथी तेमनां मातुश्री
स्व बाई परसनबाईना स्मरणार्थे

र्गणा१ क्षेत्रवर्गणा२
लवर्गणा३ नावर्गणा४
दारीकअयोग्यवर्गणा५
उदारिकयोग्यवर्गणा६
उभया२योग्यवर्गणा७
वैक्रिययोग्यवर्गणा८
उभया२योग्यवर्गणा९
आहारकयोग्यवर्गणा१०
उभयाअयोग्यवर्गणा११
तेजसयोग्यवर्गणा १२
उभय अयोग्यवर्गणा१३
भाषायोग्यवर्गणा १४
उभया२योग्यवर्गणा १५
आनप्राणयोग्यवर्गणा१६
उभयअयोग्यवर्गणा१७
मनयोग्यवर्गणा १८
उभया२योग्यवर्गणा १९
कर्मयोग्यवर्गणा२०
ध्रुववर्गणा २१
योग्यध्रुववर्गणा२२
अयोग्यध्रुववर्गणा२३
अध्रुववर्गणा २४
शून्यतरवर्गणा२५
अशून्यतरवर्गणा२६
ध्रुवानतरवर्गणा२७
तनुवर्गणा२८ मिश्रस्कंध२९
अचित्तमहास्कंध३०॥

अथवर्गणास्वरूप इहलोकसर्वअलोक
लगउफलेकरीनस्या है तेउफल किमरहे।
तिकहीयेहै उफलकी न्यारीन्यारीवर्गणाहै
वर्गणाशब्दे सरीषारद्रव्यनाथोकडाकहीए
तेवर्गणा द्रव्य१क्षेत्र२काल३भाव४ए४प्रकारन
कारेहै तेकिम एकपरमाणुएकला इमजि
तनापरमाणुयाहैतेहनी एकवर्गणाजाननी
दोदोपरमाणुमिलरहेहैतेहनी दूजीवर्गणा
इमतीनतीननीतीजी एमच्यारनी इमसंख्या
तेपरमाणुये असंखपरमाणुये अनंतपर
माणुयेतेहनी न्यारी२वर्गणाजाननी इमद्रव्य
वर्गणाअनंती होयहै इतिद्रव्यवर्गणा१ अथ
क्षेत्राश्रीजेपरमाणुया अथवामोटाद्रव्य१
के आकाशप्रदेशेरह्या तेसर्वनी एकवर्गणा
एमदोप्रदेशेरह्यानी दूजीवर्गणा इमतालगे
लेनाजालगअसंखप्रदेशव्यापेतेहनी न्यारी२
वर्गणा क्षेत्राश्री असंख्याती हुइहै२ तथाका
लाश्रीतेएकपरमाणु दोपरमाणुएवतीनचा
रसंख्याते असंख्याते अनंतेपरमाणुएकठेमि
लरहेहै इनमे जितन्याकी एकसमयकीस्थि
तिहै तिनसर्वकीएकवर्गणा एकजदोसमय
रहैतेहनी दूजीवर्गणा इम असंखसमयस्थि
तिलग असंख्यातीवर्गणाजानलेनी३ तथाभा
वाश्री जेद्विजपरमाणुया कितनेककाला कित
नाधौला कितनानीला कितनापीला इमव
र्णगंधरसस्पर्शकरीजे परमाणुन्यारा२ हुए
तेसर्वनी न्यारी२ अनंतीवर्गणाजाननी४ एव४व
र्गणा तथा कितनाक उफलस्कंध थोडापरमाणु
अनेबादरपरिणामहै तेउदारिकशरीरनेअ
योग्यहै तिसवास्ते उदारिकअयोग्यवर्गणा५
कहीये तिसथी अधिकसरउफलस्कंध अरु
रकशरीरनेपरिणमावायोग्यहै ते उदारीकयो
ग्यवर्गणा६ तेहथी अधिकउफलमयस्कंध।
सूक्ष्मपरणामीहै तेउदारिकनेयोग्यनही अ
नेवैक्रियाश्री थोडापरमाणुहै अनेबादरप
रिणमहै तिसवास्तेवैक्रियकेकामनही आ
वेइसवास्ते उभया२योग्यवर्गणाकहीये ७ एव
कर्मयोग्यवर्गणातांइ तीनतीनवर्गणाजाननी
एक अयोग्य२ दूजीयोग्य३ तीजी उभया२योग्य
इअर्थउदारिकवत एववर्गणा२०होतीहै अ
थ२१मी ध्रुववर्गणानास्वरूपकहेवाछाश्री

ॐ

जैनाचार्य श्री ... कृत नवतत्त्वसंग्रहनी

हिवे पीछे कालथी क्षेत्र सूक्ष्म कह्या ते कितरमे भाग सूक्ष्म है ते वात कहीये है. प्रथम तो काल सूक्ष्म. एक चुटकी वजातां असंख्य समय वीते. तेह थकी क्षेत्र असंख्यात गुणा सूक्ष्म. एक अंगुल मात्र क्षेत्रमे जितने आकाशप्रदेश है ते समय समय एकेक काढतां असंख्याती अवसर्पिणी वीते. क्षेत्रथी द्रव्य सूक्ष्म अनंत गुणा. एकेक प्रदेशमे अनंते द्रव्य है. ते द्रव्यथी पर्याय सूक्ष्म अनंत गुणी. एकेक द्रव्यमे अनंती है.

अथ हिवे जदा पहिला अवधिज्ञान उपजे तदा पहिलां कौनसा द्रव्य देखे ते वात कहीये है—ते पुरुष आदिकने जद पहिलां अवधिज्ञान उपजे ते पहिला तैजस शरीर योग्य जे द्रव्य अने भाषा योग्य जे द्रव्य ते दोनोके विचाले जे अयोग्य द्रव्य है, ते द्रव्य कैसा है? कुछ भारी है, कुछ हलका है ते 'गुरुलघु' कहीये अने जे भारी पिण न हुइ अने हलका पिण न हुइ ते 'अगुरुलघु' कहीये. जघन्य अवधिज्ञानना धणी गुरुलघु, अगुरुलघु ए दोनोही देखे. एक कोइ तैजस शरीरके समीप है ते गुरुलघु है अने जे भाषाद्रव्यके समीप है ते अगुरुलघु है. पीछे जे जघन्य अवधि कह्या तिसके स्वरूपके वास्ते वर्गणाका स्वरूप लिख्यते—

(१) द्रव्यवर्गणा, (२) क्षेत्रवर्गणा, (३) कालवर्गणा, (४) भाववर्गणा, (५) औदारिक अयोग्य वर्गणा, (६) औदारिक योग्य वर्गणा, (७) उभय अयोग्य वर्गणा, (८) वैक्रिय योग्य वर्गणा, (९) उभय अयोग्य वर्गणा, (१०) आहारक योग्य वर्गणा, (११) उभय अयोग्य वर्गणा, (१२) तैजस योग्य वर्गणा, (१३) उभय अयोग्य वर्गणा, (१४) भाषा योग्य वर्गणा, (१५) उभय अयोग्य वर्गणा, (१६) आनप्राण योग्य वर्गणा, (१७) उभय अयोग्य वर्गणा, (१८) मन योग्य वर्गणा, (१९) उभय अयोग्य वर्गणा, (२०) कर्म योग्य वर्गणा, (२१) ध्रुव वर्गणा, (२२) योग्य ध्रुव वर्गणा, (२३) अयोग्य ध्रुववर्गणा, (२४) अध्रुववर्गणा, (२५) शून्यतरवर्गणा, (२६) अशून्यतरवर्गणा, (२७) ध्रुवानंतरवर्गणा, (२८) तनुवर्गणा, (२९) मिश्र स्कंध, (३०) अचित्त महास्कंध.

अथ वर्गणा स्वरूप—इह लोक सर्व अलोक लग पुद्गले करी भर्या है. ते पुद्गल किम किम है ते कहीये है. पुद्गलकी न्यारी न्यारी वर्गणा है. 'वर्गणा' शब्दे सरीषा सरीषा द्रव्यना थोकडा कहीए. ते वर्गणा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावथी चार प्रकारे है. ते किम? एक परमाणु एकला इम जितना परमाणुया है तेहनी एक वर्गणा जाननी. दो दो परमाणु मिल रहे है तेहनी दूजी वर्गणा. इम तीन तीनकी तीजी. एवं चार चारनी. इम संख्याते परमाणुये, असंख्य परमाणुये, अनंत परमाणुये तेहनी न्यारी न्यारी वर्गणा जाननी. इम द्रव्यवर्गणा अनंती होय है. इति द्रव्यवर्गणा. अथ क्षेत्र आश्री जे परमाणुया अथवा मोटा द्रव्य एके आकाशप्रदेशे रह्या ते सर्वनी एक वर्गणा. एम दो प्रदेशे रह्यानी दूजी वर्गणा. इम ता लगे लेना जा लग असंख्य प्रदेश व्यापे. तेहनी न्यारी न्यारी वर्गणा क्षेत्र आश्री असंख्याती हुइ है. तथा काल आश्री ते एक परमाणु, दो परमाणु एवं तीन, चार, संख्याते, असंख्याते, अनंते परमाणु एकठे

मिले रहे है. इनमे जितन्याकी एक समयकी स्थिति है तिन सर्वकी एक वर्गणा. एकत्र दो समय रहै तेहनी दूजी वर्गणा. इम असंख्य समयस्थिति लग असंख्याती वर्गणा जान लेनी. तथा भाव आश्री तेहि ज परमाणुया कितनेक काला, कितना ही धवला, कितना नीला, कितना पीला इम वर्ण, गंध, रस, स्पर्श करी जे परमाणु न्यारा न्यारा हुइ ते सर्वनी न्यारी न्यारी अनंती वर्गणा जाननी. एवं ४ वर्गणा. तथा कितनाक पुद्गलस्कंध थोडा परमाणु अने बादर परिणामे है ते औदारिक शरीरने अयोग्य है तिस वास्ते 'औदारिक अयोग्य वर्गणा' ५ कहीये. तिसथी अधिकतर पुद्गलस्कंध औदारिक शरीरने परिणमावा योग्य है ते 'औदारिक योग्य वर्गणा.' ६ तेहथी अधिक पुद्गलमय स्कंध सूक्ष्म परिणामी है ते औदारिकने योग्य नही अने वैक्रिय आश्री थोडा परमाणु है अने बादर परिणाम है तिस वास्ते वैक्रियके काम नही आवे; इस वास्ते 'उभय अयोग्य वर्गणा' ७ कहीये. एवं कर्म योग्य वर्गणा तांइ तीन तीन वर्गणा जाननीः—एक अयोग्य, दूजी योग्य, तीजी उभय अयोग्य. अर्थ औदारिकवत्. एवं वर्गणा २० होती है. अथ २१ मी ध्रुववर्गणाना स्वरूप—कर्मवर्गणाथी अधिक पुद्गलमय एकोत्तर वृद्धिइं अनंत परमाणुरूप ध्रुववर्गणा है. इह वर्गणा चउदा रज्वात्मक लोकमे सदैव पामीये, इस वास्ते 'ध्रुव वर्गणा' २१ कहीये. पिण एह एकोत्तर वृद्धिये वधती अनंती जाननी. पीछे औदारिकादि वर्गणा जगमे सदैव लाभे; तिस वास्ते तिनका नाम 'योग्य ध्रुववर्गणा' २२ कहीये. अने ए २१ मी ध्रुववर्गणा अतिसूक्ष्म परिणाम बहुद्रव्यमय भणी औदारिकादिने योग्य नही, तिस वास्ते इसकीही संज्ञा 'अयोग्य ध्रुववर्गणा' २३ है. ते ध्रुववर्गणाथी अधिक पुद्गलमय वली एक अध्रुववर्गणा है. ते पुद्गलद्रव्य चउदे रज्वात्मक लोकमे कदे पामीये कदे नहि पामीये, इस वास्ते इसका 'अध्रुववर्गणा' २४ नाम. एह पिण एकोत्तर वृद्धि वाधती अनंती जाननी. एह पिण औदारिकादिकने योग्य नही, सूक्ष्म अने बहुद्रव्यत्वात्. तिसथी अधिक पुद्गलमय 'शून्यतर वर्गणा' है. शून्यतर क्या कहीये ? एक परमाणु, दो परमाणु, तीन परमाणु इम एकेक परमाणु करी वर्गणा वधे तां लगे जां लगे अनंता परमाणु मिले पिण ए वर्गणा वधतां वीचमे एकोत्तर वृद्धिनी हाण पडे अने वली पांच सात परमाणु लगे एकोत्तर वृद्धि वधे अने वीचमे वली एकोत्तर वृद्धिनी हाण पडे इम एकोत्तर वृद्धि आश्री वीचमे शून्य पडे; इस वास्ते 'शून्यतर वर्गणा.' २५ एह पिण अनंती जाननी. तथा तिसथी अधिक पुद्गलमय अशून्यतर वर्गणा है. ते वर्गणामे एकोत्तर वृद्धि आश्री वीचमे शून्य न पडे; इस वास्ते 'अशून्यतर वर्गणा' २६ ऐसा नाम. एह पिण औदारिकादिने योग्य नही. तेहथी अधिक पुद्गलमय चार प्रकारे 'ध्रुवानंतर वर्गणा' है. इस जगतमे सदैव लाभे, तिस वास्ते ध्रुव अने आरभ्या पीछे एकोत्तर वृद्धिका अंतर न पडे, इस वास्ते अनंतर दोनो, मिली 'ध्रुवानंतर' नाम. चार भेद मोटा. एकोत्तर वृद्धिये अंतर पडे पहिली. एक फेर एकोत्तर वृद्धि अनंत लग वधीने फेर मोटा अंतर ए दूजी. एवं चार जान लेनी. २७ ध्रुवानंतरथी अधिक पुद्गलमय एकोत्तर वृद्धिये वधती चार 'तनु

१ क्वचित् । २ घणां द्रव्यमय होवाथी ।

वर्गणा' है. ते पिण ध्रुवानंतर वर्गणावत् बीच बीच अंतर पडनेसे चार प्रकारे जाननी. ते औदारिक आदि पांच शरीरने योग्य तो नही पिण अगले पुद्गलके विछडनेसे अने नवे पुद्गलके मिलनेसे घटती वधती शरीरने योग्यता अभिमुख हुइ; तिस वास्ते ते 'तनु वर्गणा' २८ नाम. ध्रुवानंतर वर्गणावत् चार भेद जानने. तेहथी अधिक पुद्गलमय एक मिश्र स्कंध है. एह स्कंध घणा सूक्ष्म है अने कुछक बादर परिणामे है. इन दोनो परिणामके वास्ते 'मिश्र स्कंध' नाम. तेहथी अधिक पुद्गलमय 'अचित्त महास्कंध' है ते घणा पुद्गल एकठा मिली ढिग रूप होता है. ते 'अचित्त महास्कंध' विस्रसा परिणामे करी केवलिसमुद्घातवनी परे चउदे रज्वात्मक लोक व्यापे अने चार समयमे पीछे फिर कर स्वस्थानमे आवे. इम सर्व समय आठ जानने. एह स्कंध कदे हूये अने कदे नही बी होय. पुद्गल तो सर्व अचित्त ही है, तो इसका नाम 'अचित्त स्कंध' कयु कह्या इति प्रश्न. अथ उत्तरम्–केवली जद समुद्घात करे तदा जीवना प्रदेशे करी मिश्र जे कर्मना पुद्गल तिण करी सर्व लोक व्यापे ते 'सचित्त कर्म पुद्गल' कहीये. तिसके टालने वास्ते 'अचित्त' शब्द कीधा. इति संक्षेप करके वर्गणा स्वरूपम्.

इण औदारिक आदि द्रव्यमे कौनसा गुरुलघु है अने कौनसा अगुरुलघु है ए वात कहीये है. औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस ए चार द्रव्य अने तैजस द्रव्यके नजीक जे द्रव्य है (ते) सर्व द्रव्य 'गुरुलघु' है, बादर परिणाम करके; अने कार्मण, मनोद्रव्य, भाषाद्रव्य, आनप्राणद्रव्य अने भाषाद्रव्यके समीपका द्रव्य ते सर्व सूक्ष्म परिणाम करके 'अगुरुलघु' कहीये. जघन्य अवधिके विषयके ए गुरुलघु अने अगुरुलघु द्रव्य जाने देखे.

हिवै द्रव्यकी वृद्धि हूया क्षेत्र, काल कितना वधे ए वात कहीये है. (४५) यंत्रसे इसका स्वरूप—

द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी
मनोद्रव्य देखते	लोकका सख्यातमा भाग	पल्योपमका सख्यातमा भाग
कर्मद्रव्य ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
ध्रुवानंतर वर्गणा, शून्यतर वर्गणा आदि देखे	चौद रज्वात्मक लोक देखे	पल्योपम किंचित् न्यून देखे
तैजस, कार्मण शरीर तैजस योग्य भाषायोग्य वर्गणा देखे	असख्य द्वीप, समुद्र देखे	असंख्य काल देखे

अथ परमावधि ज्ञानना धणी उत्कृष्टा कौनसा सूक्ष्म द्रव्य देखे ते वात कहीये है– क्षेत्रके एक प्रदेशे रह्या परमाणु द्व्यणुक आदिक द्रव्य परमावधिनो धणी देखे. अने कार्मण शरीर देखे. कार्मण शरीर असंख्याते प्रदेश नियमा अवगाहवे है. उत्कृष्ट अवधिनो धणी जितना अगुरुलघु द्रव्य जगमे है ते सर्व देखे. जो तैजस शरीर अवधिनो धणी देखे तो कालथी नव भव लगे देखे, ते नव भव असख्य काल प्रमाणके जानने.

हिवै परमावधिनो धणी कितना क्षेत्र जाणे अने कितना काल जाणे ए बात कहीये है. (४६) यंत्रम्—

द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी	भावथी
सूक्ष्म, बादर सर्व रूपी द्रव्य देखे	सर्व लोक अग्निके सर्व जीवाकी सूची प्रमाण अलोकमे देखे	असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल देखे	एकेक द्रव्य प्रते संख्याता पर्याय देखे परमावधि

एह अवधि मनुष्य आश्री कह्या. हिवै तिर्यंच आश्री अवधिज्ञान कहीये है. पंचेन्द्रिय तिर्यंच अवधिज्ञाने करी औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस ए सर्व द्रव्य देखे अने इसके मापेका क्षेत्र, काल, भाव आपे विचारणा कर लेनी. एह मनुष्य तिर्यंचने क्षयोपशमक अवधिज्ञान कह्या.

(४७) हिवै भवप्रत्यय नारकी देवताना अवधिमे प्रथम नारकीना अवधि क्षेत्र यंत्र लिख्यते—

विषय	रत्नप्रभा	शर्करापभा	वालुकाप्रभा	पंकप्रभा	धूमप्रभा	तमप्रभा	तमतमप्रभा
जघन्य	३॥ गाउ	३ गाउ	२॥ गाउ	२ गाउ	१॥ गाउ	१ गाउ	॥ गाउ
उत्कृष्ट	४ ,,	३॥ ,,	३ ,,	२॥ ,,	२ ,,	१॥ ,,	१ ,,

असुर–जघन्य २५ योजन, उत्कृष्ट असंख्य द्वीप समुद्र. नव निकायव्यंतर–जघन्य २५ योजन, उत्कृष्ट संख्याते द्वीप. जोतिषी–जघन्य संख्याते द्वीप, उत्कृष्ट संख्यतर द्वीप.

सौधर्म ईशान	३-४ स्वर्ग	५-६ स्वर्ग	७-८ स्वर्ग	९-१२ स्वर्ग	६ ग्रैवेयक	३ ग्रैवेयक	५ अनुत्तर
रत्नप्रभाका नीचला चरम अंत	दूजीका नीचला चरम अत	त्रीजीका	चौथीका	पांचमीका चरम अंत	छठीका	सातमीका चरम अत	किंचित् न्यून लोक सर्व

'सौधर्म' देवलोकथी नव ग्रैवेयक पर्यंत जघन्य अंगुलके असंख्यमे भाग देखे. पूर्व भव अवधि अपेक्षा सर्व विमानवासी ऊंचा तो अपनी ध्वज तांई देखे अने तिरछा असंख्य द्वीप, समुद्र देखे. असंख्यातके असंख्य भेद है.

(४८) हिवै आयु आश्री अवधिज्ञान कितना होवे है ते यंत्रात् ज्ञेयं.

अर्ध सागरथी ओछी आयुवाला	संख्याते योजन प्रमाण देखे उत्कृष्ट
पूरी अर्ध सागरनी आयुवाला देवता	असंख्य ,, ,, ,,
अर्ध सागरसे उपरात जिसकी आयु है ते	,, ,, ,, ,,

(४९)

०	जघन्य अवधि	उत्कृष्ट अवधि	मध्यम अवधि	अभ्यंतर	बाह्य	देश अवधि	सर्व अवधि
देव नरक	०	०	अस्ति	अस्ति	०	अस्ति	०
तिर्यंच	अस्ति	०	,,	०	अस्ति	,,	०
मनुष्य	,,	अस्ति	,,	अस्ति	,,	,,	अस्ति

(५०)

०	अनुगामी	अननुगामी	वर्धमान	हीयमान	प्रतिपाति	अप्रति पाति	अव-स्थित	अनव-स्थित
देव नरक	अस्ति	०	०	०	०	अस्ति	अस्ति	०
मनुष्य	,,	अस्ति	अस्ति	अस्ति	अस्ति	,,	,,	अस्ति
तिर्यंच	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,

ए यंत्र दोनो प्रसंगात्. तथा उत्कृष्टा अवधिज्ञान दो प्रकारे है-एक प्रतिपाति, दूजा अप्रतिपाति. जो उत्कृष्टा चौद रज्ज्वात्मक लोक लगे व्यापे पिण अगाडी अलोकमे एक प्रदेश तक (भी) व्यापणेकी शक्ति नही ता लग अवधिज्ञान 'प्रतिपाति' कहीये; अने जे अवधि अलोकमे एके प्रदेशे व्यापे ते 'अप्रतिपाति.' इति क्षेत्रप्रमाण द्वार द्वितीय.

हिवै तीजा संस्थान द्वार—जघन्य अवधिज्ञानका संस्थान पाणीके बिंदुवत् गोल है. अने उत्कृष्ट अवधिज्ञान वर्तुल आकारे ज हुइ, पिण कुछक लांबे आकारे हुइ. कस्मात्? शरीरके चारों ओर अग्निके जीवांकी सूची फेरणे करी उत्कृष्ट अवधिका क्षेत्र कह्या है. अने शरीरका कोठा तो वर्तुल नही किन्तु कुछक लांबा है, इस वास्ते उत्कृष्ट अवधिज्ञानका सस्थान वर्तुल अने कुछक लांबा है. मध्यम अवधिज्ञानका सस्थान विचित्र प्रकारना है. ते यंत्रसे जानना. किंचित् संस्थान ज्ञानका.

(५१) (नारक आदिका अवधिका सस्थान)

नारकीनो अवधि	भवनपति	मनुष्य तिर्यंच	व्यंतर	जोतिषी	१२ देवलोक	९ ग्रैवेयक	५ अनुत्तर
त्रापाने आकारे जिस करके नदीना पाणी तरीये ते 'त्रापु' कहिये तद्वत् सस्थाने	धान्य भरणेका ठेका तेहने सस्थाने	नाना प्रकारना सस्थान असख्य भेदे	पडहा वीचमे तो मोटा अने दोनो पासे सम तेहने सस्थाने	झालर ते डोरूयजतर तेहने सस्थाने	मृदंगने आकारे एक पासे चोडा, दूजे पासे साकडा	फूलनी चंगेरी वत्	बालिकानो चोल जे बाल-कने माथे उपर पिहरणी परे शरीरे पहेरे तद्वत्

हिवै परमावधिनो धणी कितना क्षेत्र जाणे अने कितना काल जाणे ए बात कहीये है. (४६) यंत्रम्—

द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी	भावथी
सूक्ष्म, बादर सर्व रूपी द्रव्य देखे	सर्व लोक अग्निके सर्व जीवाकी सूची प्रमाण अलोकमे देखे	असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल देखे	एकेक द्रव्य प्रते संख्याता पर्याय देखे परमावधि

एह अवधि मनुष्य आश्री कह्या. हिवै तिर्यंच आश्री अवधिज्ञान कहीये है. पंचेन्द्रिय तिर्यंच अवधिज्ञाने करी औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस ए सर्व द्रव्य देखे अने इसके मापेका क्षेत्र, काल, भाव आपे विचारणा कर लेनी. एह मनुष्य तिर्यंचने क्षयोपशमक अवधिज्ञान कह्या.

(४७) हिवै भवप्रत्यय नारकी देवताना अवधिमे प्रथम नारकीना अवधि क्षेत्र यंत्र लिख्यते—

विषय	रत्नप्रभा	शर्करामभा	वालुकाप्रभा	पंकप्रभा	धूमप्रभा	तमप्रभा	तमतमप्रभा
जघन्य	३॥ गाउ	३ गाउ	२॥ गाउ	२ गाउ	१॥ गाउ	१ गाउ	॥ गाउ
उत्कृष्ट	४ ,,	३॥ ,,	३ ,,	२॥ ,,	२ ,,	१॥ ,,	१ ,,

असुर–जघन्य २५ योजन, उत्कृष्ट असंख्य द्वीप समुद्र. नव निकायव्यंतर–जघन्य २५ योजन, उत्कृष्ट सख्याते द्वीप. जोतिषी–जघन्य संख्याते द्वीप, उत्कृष्ट संख्यत्तर द्वीप.

सौधर्म ईशान	३-४ स्वर्ग	५-६ स्वर्ग	७-८ स्वर्ग	९-१२ स्वर्ग	६ ग्रैवेयक	३ ग्रैवेयक	५ अनुत्तर
रत्नप्रभाका नीचला चरम अंत	दूजीका नीचला चरम अंत	त्रीजीका	चौथीका	पांचमीका चरम अंत	छठीका	सातमीका चरम अंत	किंचित् न्यून लोक सर्व

'सौधर्म' देवलोकथी नव ग्रैवेयक पर्यंत जघन्य अंगुलके असंख्यमे भाग देखे. पूर्व भव अवधि अपेक्षा सर्व विमानवासी ऊंचा तो अपनी ध्वज ताई देखे अने तिरछा असंख्य द्वीप, समुद्र देखे. असंख्यातके असंख्य भेद है.

(४८) हिवै आयु आश्री अवधिज्ञान कितना होवे है ते यंत्रात् ज्ञेयं.

अर्ध सागरथी ओछी आयुवाला	संख्याते योजन प्रमाण देखे उत्कृष्ट
पूरी अर्ध सागरनी आयुवाला देवता	असंख्य ,, ,, ,,
अर्ध सागरसे उपरांत जिसकी आयु है ते	,, ,, ,, ,,

(४९)

०	जघन्य अवधि	उत्कृष्ट अवधि	मध्यम अवधि	अभ्यतर	बाह्य	देश अवधि	सर्व अवधि
देव नरक	०	०	अस्ति	अस्ति	०	अस्ति	०
तिर्यंच	अस्ति	०	,,	०	अस्ति	,,	०
मनुष्य	,,	अस्ति	,,	अस्ति	,,	,,	अस्ति

(५०)

०	अनुगामी	अननुगामी	वर्धमान	हीयमान	प्रतिपाति	अप्रति पाति	अव- स्थित	अनव- स्थित
देव नरक	अस्ति	०	०	०	०	अस्ति	अस्ति	०
मनुष्य	,,	अस्ति	अस्ति	अस्ति	अस्ति	,,	,,	अस्ति
तिर्यंच	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,

ए यंत्र दोनो प्रसगात्. तथा उत्कृष्टा अवधिज्ञान दो प्रकारे है—एक प्रतिपाति, दूजा अप्रतिपाति. जो उत्कृष्टा चौद रज्वात्मक लोक लगे व्यापे पिण अगाडी अलोकमे एक प्रदेश तक (भी) व्यापणेकी शक्ति नही ता लग अवधिज्ञान 'प्रतिपाति' कहीये; अने जे अवधि अलोकमे एके प्रदेशे व्यापे ते 'अप्रतिपाति.' इति क्षेत्रप्रमाण द्वार द्वितीय.

हिवै तीजा संस्थान द्वार—जघन्य अवधिज्ञानका संस्थान पाणीके बिंदुवत् गोल है. अने उत्कृष्ट अवधिज्ञान वर्तुल आकारे ज हुइ, पिण कुछक लाबे आकारे हुइ. कसात्? शरीरके चारों ओर अग्निके जीवाकी सूची फेरणे करी उत्कृष्ट अवधिका क्षेत्र कह्या है. अने शरीरका कोठा तो वर्तुल नही किन्तु कुछक लाबा है, इस वास्ते उत्कृष्ट अवधिज्ञानका संस्थान वर्तुल अने कुछक लांबा है. मध्यम अवधिज्ञानका सस्थान विचित्र प्रकारना है. ते यत्रसे जानना. किंचित् संस्थान ज्ञानका.

(५१) (नारक आदिका अवधिका संस्थान)

नारकीनो अवधि	भवनपति	मनुष्य तिर्यंच	व्यतर	जोतिपी	१२ देवलोक	९ ग्रैवेयक	५ अनुत्तर
आपाने आकारे जिस करके नदीना पाणी तरीये ते 'त्रापु' कहिये तद्वत् सस्थाने	धान्य भरणेका ठेका तेहने सस्थाने	नाना प्रकारना संस्थान असख्य भेदे	पडहा बीचमे तो मोटा अने दोनो पासे सम तेहने सस्थाने	झालर ते डौरूयजतर तेहने सस्थाने	मृदगने आकारे एक पासे चौडा, दूजे पासे साकडा	फूलनी चंगेरी- वत्	बालिकानो चोल जे बाल- कने माथे उपर पिहरणनी परे शरीरे पहेरे तद्वत्

भवनपति व्यंतरनो अवधिज्ञान ऊंचा घणा अने और देवताके नीचा घणा तथा नारकी, जोतिषीने तिरछा घणा अने मनुष्य, तिर्यंचने ऊंचा वी हुई अने नीचा वी होवे अने थोडा वी होवे अने घणा वी होवे; तिस वास्ते विचित्र कह्या. इति संस्थानद्वार ३.

हिवै चौथा अनुगामीद्वार. अवधिज्ञान दो प्रकारे है. एक अनुगामिक १ अननुगामी २. जिस पुरुषकूं अवधिज्ञान उपना ते पुरुषके साथ ही अवधिज्ञान चाले, अलग न रहे; जिम हस्तगत दीवा जिहां जाय तिहां साथ ही आवे तिम अवधिज्ञान पुरुषके साथ ही आवे ते 'अनुगामिक'; अने जे अवधि पुरुषको जौनसे क्षेत्रे उपना है ते अवधिज्ञान तिस ही ज क्षेत्रे रहै, पुरुष साथ अन्यत्र जगे न जाय जिम साकले बांध्या दीवा जिहां है तिहां ही रहै तिम ते अवधिज्ञान जिस क्षेत्रे उपना तिहां ही प्रकाश करे, पुरुष चले साथ न चले अने तेही पुरुष जदि फिरकर तिस ही क्षेत्रमे आवे तदा अवधिज्ञान फेर होवे ते 'अननुगामिक' अवधिज्ञान कहीये. हिवे तेहना स्वरूप लिखीये है—

अनुगामी १ अननुगामी २ मिश्र ३ मिश्र कया कहीए? जे अवधिज्ञान उपना एक पासेका तो तिहां ही रहै अने दूजे पासेका पुरुषके साथ चाले ते 'मिश्र' अवधिज्ञान कहीये. फिरकर तिस ही क्षेत्रमे आवे तो चारो ओर फेर देखने लगे है. एह अवधि मनुष्य, तिर्यचने होता है. ए अनुगामी द्वार ४. (५२) हिवे अवस्थित द्वार पांचमा कहीये है.—

स्थिति	क्षेत्र आश्री स्थिति १	उपयोग आश्री स्थिति २	गुण आश्री स्थिति ३	पर्याय आश्री स्थिति ४	लब्धि आश्री स्थिति ५
अवधिज्ञानकी पाच प्रकारे	३३ सागरोपम अनुत्तर विमानके देवता आश्री	अंतर्मुहूर्त उपरात एक द्रव्यमे उपयोग नही रहै है	आठ समयसे उपरात गुणसे उपयोग नही रहै है	पर्याय सात समय प्रमाण उपयोग रहै	लब्धि आश्री ६६ सागर साधिक

हिवै चल द्वार ६—जे अवधिज्ञान वधे वी अने घटे वी ते 'चल' अवधिज्ञान कहीये. ते छ प्रकारे वधे अने छ प्रकारे हान होय ते.

(५३) यंत्रसे स्वरूप हान अने वृद्धिका जानना—

संख्या	अनत भाग १	असख्य भाग २	सख्यात भाग ३	संख्यात गुण ४	असख्य गुण ५	अनंत गुण
अधिक	असत् १०० कल्पना ९९	१०० ९८	१०० ९०	१०० १०	१०० २	१०० १
हीन	असत् ९९ कल्पना १००	९८ १००	९० १००	१० १००	२ १००	१ १००

(५४) हिवै ए छ प्रकारमे अवधिज्ञाननी वृद्धि हान कितने प्रकारे है ते यंत्रमे सरूप लिख्या—

सख्या	क्षेत्र आश्री हान वृद्धि	काल आश्री हान वृद्धि	द्रव्य आश्री हान वृद्धि	पर्याय आश्री हान वृद्धि
हान ६ प्रकारे, वृद्धि ६ प्रकारे	असख्य भाग हानि वृद्धि, असंख्य गुण हानि वृद्धि, संख्यात भाग हा० वृ०, संख्यात गुण हा० वृ० ४	अस० भाग हा० वृ० असं० गुण हा० वृ० सं० भाग हा० वृ० सं० गुण हा० वृ० ४	अनत भाग हा० वृ० अनंत गुणा हा० वृ० २ द्रव्य घणा वधे घटे असात् २	पंट् प्रकारे हान वृद्धि छ प्रकारका सरूप यन्त्रसे जानना

इति छठा चल द्वार संपूर्णम् ।

हिवै ७ मा तीव्र मंद द्वार कहीये है—कितएक अवधिज्ञान फाडारूप हुइ थोडासा दीसे अने बीचमे वली न दीसे, थोडेसे अंतरमे फेर दीसे. स्थापना ∴. इम फाडा रूप जानना. जिम जालीमे दीवेका तेज पडे छिद्रमे तो तेज है अने ओर जगे नही ते तेज फाडा फाडा रूप दीसे तिम जे अवधिज्ञाने करी किहा दीसे अने किहा नही दीसे, लगत मार प्रकाश न हुइ ते 'फाडारूप' अवधिज्ञान कहाता है. ते अवधिज्ञानना फाडा कितना होवे ते वात कहीये है—

एक जीवने अवधिज्ञानका फाडा संख्याता अने असंख्याता हुइ पिण ते जीव जदा एक फाडा देखे तदा सर्व ही फाडा देखे. जिस वास्ते जीवके उपयोग एक ज होय है. एक वार दो उपयोग न हुइ, तिस वास्ते सर्व फाडयामे एक वार एकठा ही उपयोग जानना. हिवै ते फाडा तीन प्रकारना है—कितनाक तो अनुगामिक १, कितनाक अननुगामिक २, कितनाक मिश्र ३. तीनाका अर्थ उपरवत्. तथा ते फाडा वली तीन प्रकारे हैं–एक प्रतिपाति है १, कितनेक अप्रतिपाति २, कितनेक मिश्र ३. हिवै जे अवधि उपजीने फाडारूप ते कितनाक काल रहीने विणसे ते फाडा 'प्रतिपाति' कहीये १; कितनाक न विणसे ते 'अप्रतिपाति' २; अने जे कितनेक फाडे प्रतिपाति अने अप्रतिपाति ते 'मिश्र' ३. ए अवधि मनुष्य, तिर्यंचने हुइ पिण देव, नरकने नही. अनुगामी अप्रतिपाति फाडारूप अवधिज्ञान 'तीव्र' चोखे परिणामे करी उपजे ते फाडा 'तीव्र' कहीये है. अने अननुगामी प्रतिपाति फाडारूप अवधि मंद परिणामे करी उपजे है, तिस वास्ते 'मद' कहीये है. इति तीव्र मद द्वार ७.

अथ प्रतिपाति द्वार—अवधिज्ञानका एक समयमे उपजणा अने विणसना कहीए है. जे अवधि जीवके एके दिशे उपजे ते 'बाह्य' अवधिज्ञान कहीये. अथवा जे जीवके सर्व फा(पा)से फाडारूप अवधि हुइ ते 'बाह्य' अवधिज्ञान कहीये. ते बाह्य अवधिका उपजणा अने विणसना अने दोनो द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आश्री एक समयमे हुइ ते किम द्रव्य आश्री ते बाह्य

अवधि एक समयेसे उपजणा वी विणसना वी अने दोनो वात पिण हुइ है. दावानलने दृष्टांते करी जिम दवानल एक पासे बूझे अने दूजे पासे वधे तिम कितनाक अवधिज्ञान एक पासे नवा उपजे अने दूजे पासे आगला अवधि विणसे, इस वास्ते एक समयमे कदे दो वात पिण होय है. तथा कितनाक अवधिज्ञान जीवके शरीरके थकी सर्व पासे प्रकाश करे ते शरीर विचाले फाडा कुछ वी नही होय ते 'अभ्यंतर' अवधि कहीये. जिम दीवानी कांति दीवाथी अलग नही है, चारो ओर प्रकाश करे तिम अवधि पिण ऐसा हूये ते 'अभ्यंतर' अवधिज्ञाननो उत्पाद अने विनाश ए दो वाते एक समयमे न होवे, एके समयमे एक ज वात हूइ. जिम दीवा उपजे एक समय अने विणसनेका अन्य समय तिम अभ्यंतर अवधिके एक समय एक ही वात होय. हिवे अवधिज्ञाने करी जदा एक द्रव्य देखे तदा पर्याय कितना देखे ए वात कहीये है—जदा एक द्रव्य परमाणु प्रमुख अवधि करी देखे तदा द्रव्यना पर्याय संख्याता देखे अने असंख्याता देखे; जघन्य तो चार पर्याय–रूप, रस, गंध, स्पर्श ए चार देखे. एह आठमा उत्पाद प्रतिपातद्वार संपूर्णम्.

(५५) हिवे ज्ञान दर्शन विभंग एह तीन द्वार कहे है, ते यंत्रम्—

ज्ञान १	दर्शन २	विभंग ३
जिस अवधिज्ञाने करी विशेष जाणे ते 'साकार ज्ञान' कहीए.	सामान्य जाणे, पिण विशेष न जाणे ते 'अनाकार दर्शन' कहीए	समदृष्टिका तो ज्ञान कहीए अने मिथ्यात्वीके ते 'विभंगज्ञान' कहीए.
स्वामी-समदृष्टि मिथ्यादृष्टि	समदृष्टि मिथ्यादृष्टि	मिथ्यादृष्टि

भवनपतिसे लेकर नव ग्रैवेयक पर्यंत ते सर्व देवताना अवधिज्ञान अने विभंग ज्ञान क्षेत्र, काल आश्री दोनो सरीखा जानना. द्रव्य, पर्याय आश्री विशेष कुछ है. चोखे ज्ञान विना विशेष न जाणे ते समदृष्टिके चोखा है अने 'अनुत्तर' विमानवासी देवताने अवधिज्ञान होय है पिण विभंग नही. ते पांच 'अनुत्तर' विमानवासी देवताके जे अवधिज्ञान हुइ ते क्षेत्र, काल आश्री असंख्य विषय करके असंख्याता जानना; अने द्रव्य, पर्याय विषय आश्री ते ज्ञान अनंता कहीए. ए ज्ञान, दर्शन, विभंगरूप तीन द्वार वखाणेया. इति द्वारम् ९।१०।११.

अथ १२ मा 'देश' द्वार लिख्यते—नारकी, देवता अने तीर्थंकर[पति]नो ज्ञानथी अबाह्य हुइ एहने शरीरसुं संबंध प्रदीपनी परे सर्व दिशे प्रकाशक इनका अवधिज्ञान जानना. एतले नारकी, देवता, तीर्थंकर ए अवधि करी सर्व दिशे देखे; तथा शेष तिर्यंच, मनुष्य देशथी पी देखे अने सर्वथी वी देखे. तथा नारकी, देव, तीर्थंकर एहने अवधिज्ञान निश्चय होय; औरोंके भजना जाननी. ए बारमा देशद्वार.

अथ क्षेत्रने मेले अवधिज्ञानका संख्यात असंख्यातपणा कथ्यते—जे अवधि जीवना शरीरसुं संबद्ध हुइ दीवानी कांतिनी परे अलग न हुइ ते 'संबध अवधिज्ञान' कहीए; अने जे

१ गहेवाय छे।

अवधि शरीरथी अलग होय ते अवधि 'असंबंध' कहीए. ते असंबंध अवधिका धणी दूरसे तो देखे पिण नंवजीकसे न देखे. ते जीव अने अवधिज्ञानका क्षेत्रके विचाले अंतर पडे इति भावः.

हिवे जे सबद्ध अवधिज्ञान होय तेह नउ क्षेत्र आश्री संख्याता अने असंख्याता योजन प्रमाण विषय है तिम जे असंबद्ध अवधिज्ञान होवे तिसका क्षेत्र आश्री इम हीज विषय जाननी, परंतु ते धणीके अने अवधिके क्षेत्रके विचाले अंतर पडे ते (५६) यंत्रसे—

असबद्ध अवधि ४	संख्यात योजन	संख्यात योजन	असंख्य योजन	असंख्य योजन
अतर ४	सख्यात योजन अतर	असख्य योजन अंतर	संख्येय „	„ „

एह असंबध अवधिके ४ भंग है अने जे संबद्ध अवधि हूइ ते कितनाक तो लोकसंबंधे लोकान्ते जाय लागे पिण अलोकमे नही गया अने जो अलोक संबंध हूइ तो अलोकमे लोक सरीखा खंड असंख्याता व्यापे. इति १३ मा क्षेत्रद्वार संपूर्णम्.

हिवे गतिद्वार १४ मा. ते गति आदिक वीस द्वारे यथासंभवे मतिज्ञानवत् विचारणा इति. हिवे अवधि लब्धिसे अवधिज्ञान होय है. प्रसंगात् शेष लब्धिका स्वरूप लिख्यते—
१ आमोसहि—जिनके शरीरके स्पर्शे सर्व रोग जाये. २ विप्पोसहि—विड्प्रसवण अर्थात् वडीनीति लघुनीति ही औषधि है. ३ खेलोसहि—श्लेष्म जिनका औषधि है. ४ जल्लोसहि—जिनकी मैयल ही औषधि है. ५ सव्वोसहि—शरीरका अवयव सर्व औषधिरूप है. ६ संभिन्नसोउ—एक इन्द्रिये करी सर्व इन्द्रियांनी विषये जाणे. ७ ओहि—सर्व रूपी द्रव्य जिस करी जाणे ते अवधि. ८ उज्जुमइ—अढाइ अंगुल ऊणा मनुष्यक्षेत्रमे मनके भाव जाणे. ९ विउलमइ—संपूर्ण मनुष्यक्षेत्रमे मनके भाव जाणे. १० चारण—विद्यासे विद्याचारण, तपसे जंघाचारण आकाशमे उडे. ११ आसीविस—शाप देणे की शक्ति ते 'आशीविष' लब्धि. १२ केवली—केवलज्ञान, केवललब्धि. १३ गणहर—गणधरपणा पामे ते गणधरलब्धि. १४ पुव्वधर—पूर्वांणा ज्ञान होना ते 'पूर्व' लब्धि. १५ अरिहंत—त्रैलोक्यना पूजनीक ते 'तीर्थंकर' लब्धि. १६ चक्कवट्टी—चक्रवर्तिपणा पामे ते 'चक्रवर्ति' लब्धि. १७ बलदेव—बलदेवपणा पावणा ते 'बलदेव' लब्धि. १८ वासुदेव—वासुदेवपणा पावणा ते 'वासुदेव' लब्धि. १९ खीर-महु-सप्पिरासव—खीर-चक्रवर्तीना भोजन, महु-मिश्री दूध, सप्पि-घृत ऐसा मीठा वचन. २० कोठबुद्धि—जैसे कोठेमे बीज विणसे नही तैसे सूत्रार्थ विणसे नही. २१ पयाणुसारी—एक पदके पठनेसे अनेक पद आवे. २२ बीयबुद्धि—एक पदके पढनेसे अनेक तरे के अर्थ जाणे. २३ तेयग—जिणे तपविशेषे करी तेजोलेश्या उपजे. २४ आहारग—चवदेपूर्वधर आहारक शरीर करे (जब) शंका पडे. २५ सीयलेसाय—शीतलेश्या उपजे तपविशेषे करी. २६ वेयव्वदेह—घणे रूप करवानी शक्ति २७ अक्खीणमहाणसी—आहार जां लगे आप न जीमे तां लगे ओर जीमे तो खूटे नही. २८ पुलाय—चक्रवर्ती आदिकनी सैन्या चूर्ण करनेकी शक्ति.

१ पासेमी। २ पुरीष। ३ मूत्र। ४ मेल। ५ पूर्वोनु।

अर्हत, चक्री, वासुदेव, बलदेव, संभिन्नश्रोत, चारण, पूर्वधर, गणधर, पुलाक, आहारक (ए) दश लब्धियां भव्यस्त्रीने नही होती है. शेष १८ हुवै तथा ए अने केवली, ऋजुमति, विपुलमति एवं तेरह लब्धियां अभव्य पुरुषने न हुवै, शेष पंदर हुवै. तथा अभव्य स्त्रीयांने पिण १३ ए अने मधुक्षीरासव लब्धि एवं चौद नही हुवै, शेष १४ हुवै. ए पंदरे द्वारे कही अवधिज्ञान वखाण्या.

मनःपर्यवज्ञानको दो भेद—ऋजुमति १ विपुलमति २. केवलज्ञानका एक भेद है. एह पांच ज्ञानका स्वरूप लेशमात्र लिख्या, विशेष नंदीमे.

(५७) अथ 'उपमा' प्रमाण लिख्यते—असंख्याताका मापे आठ.

<table>
<tr><td>१</td><td>पल्योपम
स्व
रू
प</td><td>कूवा योजन १ लांवा चौडा तिसकी परिधि ३ योजन साधिक इह योजन प्रमाणागुलसे है तिसकू वादर पृथ्वीके शरीर तुल्य रोमखंडसे भरिये ठास कर जिसे (अग्निसे) जले नही, जलसे वहे नही, चक्रीसैन्याके उपर चलनेसे दवे नही, तिसमेसुं सौ सौ वर्ष गये एकेक खड काढीये जव [1]रीता होवे सर्व कूवा तद एक पल्योपम कहीये</td></tr>
<tr><td>२</td><td>सा
ग
र</td><td>दस कोडाकोडी कूये खाली होइ तद एक सागरोपम होय.</td></tr>
<tr><td>३</td><td>सूची
अंगुल</td><td>पल्योपमके छेद जितने होइ उतने ठिकाणे पल्योपमके समय लिखके आपसमे गुणाकार कीजे जो छेहदे आवे सो सूची अंगुलके प्रदेशाकी गिणती. तिसके छेद ६५५३६।१६ छेद</td></tr>
<tr><td>४</td><td>प्रतर
अंगुल</td><td><table><tr><td>पल्य</td><td>समय १६</td><td>छेद ४</td><td>१६</td><td>१६</td><td>१६</td><td>१६</td><td>सूची अंगुल ६५५३६ प्रदेश</td></tr></table>सूची अंगुलका वर्ग सो प्रतर अंगुल ४२९४९६७२९६, छेद ३२</td></tr>
<tr><td>५</td><td>घन
अगुल</td><td>प्रतर अंगुल ४२९४९६७२९६ कूं सूची अगुल ६५५३६ थी गुण्या घन अंगुल होय २८१४७४९७६७१०६५६, तिसके छेद ४८</td></tr>
<tr><td>६</td><td>लोकाकाश-
श्रेणि</td><td>पल्यके छेद जितने होइ तिनका असख्यमा भाग लीजे तितने ठिकाने पर घन अंगुलके प्रदेश रखकर आपसमे गुणाकार कीजे जो छेहदे आवे सो लोकाकाशके श्रेणी एकके प्रदेश होइ ७९२२८१६२५१-४२६४३३७५९३५४३९५०३३६, छेद ९६<table><tr><td>पल्य</td><td>छेद</td><td>असख्य भाग</td><td>घन अगुल</td><td>छेद</td><td>छेद</td><td>लोकाकाश-श्रेणि</td></tr><tr><td>सम१६</td><td>४</td><td>२</td><td>२८१४७२७६७१०६५६</td><td>४८</td><td>४८</td><td>छेद ९६</td></tr></table></td></tr>
<tr><td>७</td><td>लोक-
प्रतर</td><td>लोकश्रेणिका वर्ग कीजे सो लोकप्रतर तिसके छेद १९२.</td></tr>
<tr><td>८</td><td>लोक
घन</td><td>१९२ छेद प्रतरके है. तिनकू श्रेणि छेद ९६ सु गुणाकार कर्या लोकका घन होय तिसके छेद २८८ अंक सर्व असत् कल्पना जानने</td></tr>
</table>

[1] खाली।

अथ प्रकारांतरसुं श्रेणि करनेकी आम्नाय—जघन्य प्रतर असंख्यातकूं दुगणा करे, उस पर पल्योपमकी वर्गशलाकाकूं भाग दीजे. जो हाथ आवे उसकूं घनांगुलकी वर्गशलाकामे भेल दीजें सो लोकाकाशकी श्रेणिकी वर्गशलाका हूई. इसकी असत् कल्पनाका (५८) यत्रसे स्वरूप जानना—

जघन्य प्रतर असंख्य	दूणा	पल्यकी वर्गशलाका	भाग देतें हाथ लगे	घनांगुल वर्गशलाका	मेला कीये	छठ्ठा वर्ग
१	२	२	१	५	६	७९२२८१६२५१४२६४३३७-५९३५४३९५०३३६

(५९) श्रीअनुयोगद्वार(सू० १४६)से संख्य असंख्य अनंत स्वरूपं

संख्यात	०	जघन्य	मध्यम	उत्कृष्ट
अ	परित्त	,,	,,	,,
स ख्या	युक्त	,,	,,	,,
त	असंख्य	,,	,,	,,
अ	परित्त	,,	,,	,,
नं	युक्त	,,	,,	,,
त	अनंत	,,	,,	,,

एकका वर्ग भी एक तथा घन भी एक गुणाकार एके से जिस राशिकू कीजीये सो जौं की त्यौं रहै तथा एककूं भाग जिस राशिकूं दीजीये सो बी जौं की त्यौं रहे. तिस कारणसे एका गिणतीमे नही. दूयेसे गिणती. सो दूया 'जघन्य संख्याता' कहीये, इसथी आगे ३।४।५ यावत् उत्कृष्ट संख्यातेमेसु एक ऊणा होइ तहा ताइ सर्व 'मध्यम संख्याता' जानना. अब उत्कृष्ट संख्याता लिखीने है 'विस्तरात्[1]—

सरसो १; यवमे ८, अंगुलमे ६४, हाथमे १५३६, दंडमे ६१४४, कोशमे १२२८८-०००, सूची-योजनमे ४९१५२०००, प्रतर-योजनमे २४१५९१९१०४००००००, घन-योजनमे ११८७४७२५५७९९८०८००००००००००.

विष्कंभ एक लाख योजन, गंभीरपणा १०००, परिधि ३१६२२७ योजन झझेरी वेदका ८ योजन. शिखा २८७४८ योजनकी.
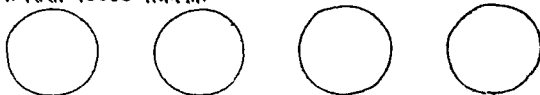
१ अनवस्थित पाला. २ शलाका पाला. ३ प्रतिशलाका पाला. ४ महाशलाका पाला.

[1] विस्तारथी।

अथ पाला १ तिसके योजन योजन प्रमाण खंड करणेकी आम्नाय लिख्यते—इहा पाला एक योजन, लक्ष विष्कंभ जंबूद्वीप समान, जिसका भूमिमे अवगाढपणा १००० योजन तिस पालेकी तीन कांड तीनमे प्रथम कांड १००० योजनके अवगाढपणेका, दूजा कांड ८ योजनको जाडपणेका, तीजा कांड २८७४८ योजनकी सिखा, तिसका मूलमे विष्कंभ तथा परिधि जंबूद्वीप समान, उपरि जाके सिखा बंधे तिहा सरसोका दाणा १ उसके उपरि दाणा दूजा नव हरे (रहे?).

(६०) इन तीन कांडका घन खंड यंत्रम्—

१ संख्या	२ काड	विष्कंभ	अवगाढ	घनयोजन प्रमाण खंड
१	प्रथम काड भूमिमे	एक लाख योजन मूल	१००० योजन	७९०५६९४१५० योजन १॥। कोस ६॥ हाथ १००० गुण्या कर्या ७९०५६९४१५०४३९ योजन १ कोस १६२५ धनुष घनयोजनके खड हूये
२	दूजा कांड भूमिसे उपरि वेदका ताइ	,,	८ योजन	७९०५६९४१५० योजन १॥। कोस ६२॥ हाथ ८ गुणा कर्या ६३२४५५५३२०३ योजन २ कोस १२५ धनुप इतने घनयोजन प्रमाण खड हूये
३	काड तीजा वेदका से उपरि सिखा ताइ	,,	२८७४८ योजन	२७७७७११६१६ योजन परिधिका छट्ठा बाटा तिसका वर्ग होइ इसकूं सिखासूं २८७४८ गुणा कर्या घनयोजन प्रमाण खंड ७९८५३६५३५३६७६८

अथ इन तीनो कांडाके घन योजन मिलाइये तदा अक चवदे होय ८७८२२५९३२४०४१० ए समस्त पालेके घनयोजन हूये. एक घनयोजनमे ११८७४७२५५७९९८०८०००,०००, ००० सरसों तिस थकी गुणाकार कीजे तब अंक अडतीस आवे. तितने १ पालेमे सरसुं जानने. अंक अग्रे–१०४२८६९१९४४५२१४५५२२८९७५८४१२८ ००००००००० अंक.

अनवस्थित पालेकूं असत्कल्पनाथी कोइ उठावै दाणा १ द्वीपमे, दाणा १ समुद्रमे इस तरे जंबूद्वीप आदिकमे प्रक्षेपे करी ठाली होवे तदा एक दाणा अनवस्थितका तो नही ओर दाणा १ शलाका पालामे प्रक्षेपिये. अब जेहां ताइ दाणे द्वीप समुद्रामे गये है तिण सर्व ही द्वीप समुद्रां प्रमाण पाला कल्पीये. तिणथी आगेके द्वीप समुद्रामे एकेक दाणा प्रक्षेपिये जदा रीता होय तदा १ दाणा शलाकामे फेर प्रक्षेपिये. ऐसेही अनवस्थित पालेके भरणे अने रिक्त करनेसे एकेक दाणे करी शलाका भरीये. अने जिहां छेहडला दाणा गया है तितने द्वीप समुद्रां प्रमाण अनवस्थित पाला भरीये; भरके उठाइये नही, किन्तु शलाका पाला उठाइये. उठा करके ते अनवस्थित पल्याक ते क्षेत्रथी आगे एक एक दाणा अनुक्रमे द्वीप समुद्रने विषे प्रक्षेपीये. जदा तिसका अत आवे तदा प्रतिशलाका पालेमे प्रथम प्रतिशलाका प्रक्षेपी पछै

१ ज्यां सुधी। २ खाली।

वली अनवस्थित पाला उठाके जिस जगे शलाका पाला पूरा हूया था ते क्षेत्रथी आगे द्वीप समुद्रामे एकेक सरसों अनुक्रमे प्रक्षेपीये पछे वली शलाका पालामे एक दाणा प्रक्षेपीये. इसी तरे वली अनवस्थित पाला भरणे अने रीता करणेसे शलाका भरीये. तदा अनवस्थित अने शलाका ए दोनो भर्या हुंता; पछे शलाका पाला उठाइने पूर्वोक्त प्रकारे आगले द्वीप समुद्रामे प्रक्षेपीये. पछे वली एक दाणा प्रतिशलाका पालामे प्रक्षेपीये. एवं अनवस्थित पालेके भरणे रीते करणेसे शलाका पाला भरीये अने शलाकाके भरणे रीते करणेसे प्रतिशलाका भरीये. जदा प्रतिशलाका १ शलाका २ अनवस्थित ३ एवं तीनो पाले भरे होइ तदा प्रतिशलाका पाला उठाइने तिमज आगले द्वीप समुद्रामे प्रक्षेपीये. जिहा पूरा होय तदा १ दाणा महाशलाका पालेमे प्रक्षेपीये. फेर शलाका पाला उठाइने तिमज आगे संचारीने प्रतिशलाका पल्यमे वली एक सरसव प्रक्षेपीये. पछे अनवस्थित उठाइने तिम ज शलाका पालानी समाप्तिना क्षेत्र आगे द्वीप समुद्रामे प्रक्षेपी तदा शलाका पल्यमे वली एक दाणा प्रक्षेपीये. एवं अनवस्थित पाला उठावणे अने प्रक्षेपणे करी शलाका पल्य भरणा तथा शलाका पल्यने उपाडवे प्रक्षेपवे करी प्रतिशलाका पाला भरणा. तथा प्रतिशलाका पालाने उपाडने प्रक्षेपवे करी महाशलाका पल्य भरणा. इम करता जदा चारो ही पल्य भर्या हुइ और अनवस्थितादि चारो पालोंके जितने दाणे द्वीप समुद्रांमे प्रक्षेप करे है वे भी सर्व जन चारो पालोमे मेलिए तदा उत्कृष्ट संख्यातेसे एक सरसव अधिक होय है. तिस एक सरसों सहित कीया 'जघन्य परित्त असंख्याता' होय. इस जघन्य परित्त असख्यकूं अन्योन्य अभ्यास कीजे तिसमेसु दोय दोय निकासिये तहा ताइ 'मध्यम परित्त असख्याते' होय. तिसमे एक मेलीये तव 'उत्कृष्ट परित्त असंख्याता' होय. तिसमे एक और मिले तब 'जघन्य युक्त असंख्य' होय.

अन्योन्य अभ्यासकी आम्नाय—यथा ५ का अन्योन्य अभ्यास करणा है. प्रथम ५ कूं विपे २ दीजे स्थापना-११११११. एकेकके उपरि वै ५।५ पांच पाच दीजे.

स्थापना—$\frac{५५५५५}{११११११}$ अब उपरिकी पक्तिके अंकाकू आपसमे गुणाकार कीजे.

स्थापना—	५	५	५	५	५
	१	१	१	१	१
	५	२५	१२५	६२५	३१२५

छेहला गुणाकार करते जे राशि आवे सो उत्पन्न राशि जाननी. इस तरे अन्योन्य अभ्यासकी रीति जाननी.

जघन्य युक्त असंख्य प्रमाण एक आवलिके समय है. तिसका अन्योन्य अभ्यास करे तो अने दोय निकासिये तो तहा ताइ 'मध्यम युक्त असख्याते' कहीये.

तिसमे एक भेले 'उत्कृष्ट युक्त असंख्याते' होय. उत्कृष्ट युक्त असंख्यातेमे एक मेलीये तन 'जघन्य असंख्यात असंख्याते' होय. इसका अन्योन्य अभ्यास कीजे. तिणमेसु दोय निकासिये तहां ताइ 'मध्यम असंख्यात असंख्याते' होय. उसमे एक भेले तन 'उत्कृष्ट असंख्यात असंख्याते' होते है. [1]मत्यंतरे च—

अनेरा आचार्य वली 'उत्कृष्ट असंख्यात असंख्यातानो स्वरूप इम कहे है यथा जघन्य असंख्यात असंख्यातानी राशिनो वर्ग करीये, पछे ते वर्गित राशिना वली वर्ग करीये, पछे वली वर्गराशिना वर्ग करीये. इम तीन वार करके तिसमे दस वोल असंख्यातांके भेलीये. ते कौनसे ? (१) लोकाकाशना प्रदेश, (२) धर्मास्तिकायना प्रदेश, (३) अधर्मास्तिकायना प्रदेश, (४) एक जीवना प्रदेश, (५) सूक्ष्म वादर अनंतकाय वनस्पतिना औदारिक शरीर, (६) अनंतकायना शरीर वर्जीने शेष पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, प्रत्येक वनस्पतिकाय अने त्रसकाय इन सनके शरीर, (७) स्थितिबंधना कारणभूत अध्यवसाय ते पिण असंख्याता, (८) अनुभागवंधके अध्यवसाय, (९) योगच्छेद प्रतिभाग, (१०) उत्सर्पिणी अवसर्पिणीरूप कालना समय. एवं १० वोल पूर्वोक्त त्रिवर्गित राशिमे प्रक्षेपके फेर सर्व राशि तीन वार वर्ग करीये; जे राशि हूये तिसमेसुं एक काढ्या 'उत्कृष्ट असंख्यात असंख्याता' होय.

(६१) मध्यम असंख्यात असंख्यातमे जे पदार्थ है तिनका यंत्रम्—

द्रव्यथी १	वादर पर्याप्त तेजस्कायसे लगाय के सर्व निगोदके शरीरपर्यंत ए सर्व मध्यम असख्यात असख्याते
क्षेत्रथी २	सूक्ष्म अपर्याप्त जीवके तीसरे [2]समेकी अवगाहना जितने क्षेत्रमे होवे तहासे लगाय परम अवधिज्ञानका क्षेत्र ए मध्यम असख्यात असख्याते जानने इहां प्रदेशा आश्री जानना.
कालथी ३	सूक्ष्म उद्धार पल्योपमके समयथी लगाय ४ स्थावर वनस्पति विनाकी कायस्थितिके समय ए सर्व मध्यम असंख्य असख्य जानने
भावथी ४	सूक्ष्म निगोदके जीवके योगस्थानसू लगाय के सञ्ज्ञी पर्याप्तके अनुभाग बंधके अध्यवसायके स्थानक ए सर्व मध्यम असख्यात असख्याते इति नव वोल असख्याताके जानने

उत्कृष्ट असंख्यात असख्यातमे एक मेलीये तन 'जघन्य परित्त अनता' होय. तिसका पूर्ववत् अन्योन्य अभ्यास कीजे. तिसमेसुं दोय निकासिये तहा ताइ 'मध्यम अपरित्त अनंता' होय. तिसमे एक मेलीये तब 'उत्कृष्ट परित्त अनंता' होय. उत्कृष्ट परित्त अनंतेमे एक मेलीये तन 'जघन्य युक्त अनंता' होय. अभव्य जीव इतने है. तिसका पूर्ववत् अन्योन्य अभ्यास कीजे. तिसमेसु दोय निकासिये वहां ताइ 'मध्यम युक्त अनंता' होय. तिसमे एक मेलिये तन 'उत्कृष्ट युक्त अनता' होय. तिसमे एक मेले 'जघन्य अनत अनंत' होय. इसथी आगे सर्व 'मध्यम अनत अनता' जानना. उत्कृष्ट अनंत अनंता नही.

अनेरा आचार्य वली इम वखाणे है—जघन्य अनंत अनंता पूर्वली परे तीन वार

1 मतातर प्रमाणे तो । 2 समयनी ।

वर्ग करी पीछे ए छ बोल अनंता प्रक्षेपीये. तद्यथा—(१) सर्व सिद्ध, (२) सर्व सूक्ष्म बादर निगोदना जीव, (३) सर्व वनस्पतिना जीव, (४) तीनो कालके समय, (५) सर्व पुद्गल, (६) सर्व लोकालोकाकाश प्रदेश. एव बोल छ प्रक्षेपी सर्व राशिकूं त्रिवर्ग करीये. जो राशि हुई तो पिण उत्कृष्ट अनंत अनंता न हूवे. तिवारे पछी केवलज्ञान दर्शनना पर्याय प्रक्षेपीये. इम कर्या उत्कृष्ट अनंत अनंता नीपजे. इस उपरांत और वस्तु नही. एणी परे एकेक आचार्यना मतने विषे कह्या. अने श्रीसूत्रना अभिप्रायथी जो उत्कृष्ट अनत अनता नही. तत्त्व केवली जाणे. इति अनुयोगद्वार(सू. १४६)वृत्तिवाक्यप्रमाणात् अत्र लिखिता अस्माभिः ।

(६२) मध्यम अनंत अनंतेमे जो जो पदार्थ है तिनका यंत्रम्

द्रव्यथी १	सम्यक्त्वके प्रतिपातिसे लगायके सर्व जीव तथा दोप्रदेशी स्कधसे लेकर सर्व पुद्गल मध्यम अनत अनतेमे जानने
क्षेत्रथी २	आहारक शरीरके विखरे थके जितने स्कध होय तिनकू 'मुकेलगा' कहीये सो अनत स्कध है तिणोने जितना क्षेत्र स्पर्शा तिससु लगायके सर्व आकाशके प्रदेश ए सर्व मध्यम अनत अनते जानने
कालथी ३	अर्ध पुद्गलपरावर्तथी लगायके तीनो कालके समय ए सर्व मध्यम अनत अनते जानने
भावथी ४	सूक्ष्म अपर्याप्त निगोद जीवके जघन्य अज्ञानके पर्याय तिणसे लगायके केवलज्ञानके पर्याय ए सर्व मध्यम अनत अनते जानने

अथ जबूद्वीपके उपरि सरसूं शिखा चढे तिसकी आम्नाय लिख्यते गोमट्ट(म्मट)सारात्[२]

दोहा—धान तीन है सुकओ, बादरनीका जोइ ।
नौ ९ दस १० ग्यारह ११ भाग, इह जो परिधिका होइ ॥ १ ॥
वेधक कहीये पुजको, तासो करि गुणकार ।
परिधि छठे भाग कृति, घन फल कह्यौ निहार ॥ २ ॥

(६३) स्वरूपयन्त्र

सुक धान गेहु आदि	बादर धान चणा आदि	नीका धान सरसो आदि
वेध १	वेध १	वेध १
परिधि ९	परिधि १०	
२ ३ ए घन फल ४	२ ७ ए धनफल ९	३ १३ ए घनफल ३६

१ अनुयोगद्वारनी वृत्तिना वाक्यना आधारे अहीं अमे लखेल छे। २ गोम्मटसार नामना दिगंबरीय ग्रंथमांथी ।

(६४) वर्गके छेदांका स्वरूप निरूपक यंत्रम्—

वर्ग	प्रथम	दूजा	तीजा
अक	४	१६	२५६
छेद	२	४	८
स्थापना	स्थापना	स्थापना	स्थापना
०	२,१	८,४,२	१२८,६४,३२,१६,८,४,२

अथ लोकोत्तर गिणती लिख्यते—

चौपाइ—लोकोत्तर गिणती सिद्धांत, जासौ संख असंख अनंत ।
ताके भेद दोइ मन मानि, छेद गिणतओ वरग प्रमानि ॥ १ ॥
छेद राशिका आधा आधा, जन लग अंतमे एक ही लाधा ।
राशिकूं आपही सौ गुणाकार, 'वरग' कहे इह बुद्धिविचार ॥ २ ॥

दोहा—धारा तीन ही जानीये, वरगधार घनधार ।
होइ घनघनाधार इम, पंडित कहे विचार ॥ १ ॥

(६५) अथ इन तीनो धारका जो प्रयोजन है सो यंत्रं गोमट्ट(म्मट)सारात्

वर्गशलाका १	वर्गधारा ४	छेदशलाका २
२	१६	४
३	२५६	८
४	६५५३६	१६
५	४२९४९६७२९६	३२
६	१८४४६७४४०७३७०९५५१६१६	६४
७	३९ अक आवे	१२८
८	७८ ,, ,,	२५६
सख्याते	सख्याते वर्ग जाइये तव जघन्य परित्त असख्याते आवे	सख्याते
,,	संख्याते वर्ग जाइये तव जघन्य युक्त असख्याते आवे	,,
असख्याते	असख्याते वर्ग जाइये तव जघन्य असख्य असख्याते आवे	असख्याते
,,	असख्याते वर्ग जाइये तव सूक्ष्म अद्धापल्योपमके समय होय	,,
,,	असख्य वर्ग जाइये तव सूची अगुलके प्रदेश	,,
,,	१ विंरीयार वर्ग कीजे तव प्रतर अंगुलके प्रदेश	,,
,,	असख्य वर्ग जाइये तव जघन्य परित्त अनंत होय	,,

१ वार ।

असंख्याते	असंख्य वर्ग जाइये तव जघन्य युक्त अनंत आवे	असंख्यात
"	अनत वर्ग जाइये तव जघन्य अनत अनते आवे	अनत
अनत	अनंत वर्ग जाइये तव जीवास्तिकाय	"
"	अनते वर्ग जाइये तव पुद्गलास्तिकाय	"
"	अनते वर्ग जाइये तव अद्धा-काल	"
"	अनते वर्ग जाइये तव सर्व आकाश श्रेणिके प्रदेश	"
"	१ विरिया वर्ग कीजे तव सर्व आकाश प्रतरके प्रदेश	"
"	अनते वर्ग जाइये तव धर्मास्तिकायके पर्याय	"
"	अनत वर्ग जाइये तव १ जीवके पर्याय	"
"	अनते वर्ग जाइये तव जघन्य अज्ञानके पर्याय	"
"	अनत वर्ग जाइये तव क्षायिक सम्यक्त्वके पर्याय	"
"	वर्ग अनते जाइये तव केवलज्ञान(के) पर्याय	"

वर्गशलाका	घनधारा	छेदशलाका
१	८	३
२	६४	६
३	४०९६	१२
४	१६७७७२१६	२४
५	२८१४७४९७६७१०६५६	४८
६	७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ गर्भज मनुष्य	९६
७	५८ अंक	१९२
८	११६ अक	३८४
असख्य	असंख्य वर्ग जाइये तव घनांगुलके प्रदेश आवे	असख्य
"	असख्य वर्ग जाइये तव लोकाकाश श्रेणिके प्रदेश आवे	"
"	१ विरिया वर्ग कीजे तव लोकाकाश प्रतर प्रदेश आवे	"

वर्गशलाका	घनाघन धारा	छेदशलाका
१	५१२	९
२	२६२१४४	१८
३	६८७१९४७६७३६	३६
४	२२ अक	७२
५	४१ "	१४४
६	८२ "	२८८
७	१६४ "	५७६

८	२२७	१०५२
असंख्य	असंख्य वर्ग जाइये तव लोकाकाश प्रदेश आवे	असंख्य
,,	,, ,, ,, ,, तेउकायके सर्व जीव राशि	,,
,,	,, ,, ,, ,, तेउकायकी कायस्थिति समय	,,
,,	१ विरिया वर्ग कीने तव परम अवधिज्ञानका क्षेत्र आवे	,,
,,	असंख्य वर्ग जाइये तव स्थितिबंधके अध्यवसाय	,,
,,	,, ,, ,, ,, अनुभागबंधके ,,	,,
,,	,, ,, ,, ,, निगोदके शरीर औदारिक	,,
,,	,, ,, ,, ,, निगोदकी कायस्थिति	,,

दोहा—च्यारि ४ आठ ८ ओ पांचसे, बारह ५१२ आदि कहंत ।
धारा तीनो जाणिये, आगे वर्ग अनंत ॥ १ ॥
चौपइ—कृत धारामे वर्ग विचार, ताके घन लइये घनधार ।
घनाघन धारामे तस वृंद, इम भाषे सवही जिनचंद ॥ १ ॥
दोइ २ तीन ३ अरु नौ ९ है छेद, आदि तिहुं धारा इम भेद ।
आगे दुगुण दुगुण सब ठाम, वरग कृति घन वृन्दो नाम ॥ २ ॥
दूने कृतिमे तिगुने घणा, नौ गुण छेद घनाघन तणा ।
इक इक धारा तीन प्रकार, गुण १ पुनि भाग २ अयसि ३ निहार ॥ ३ ॥
छेद जोग है इस गुणकार, तस विजोग है भागाहार ।
निजसम थल थापीजे रास, अन्नो अन्नताको अभ्यास ॥ ४ ॥
दोहा—पहिले विरलन देय पुनि, तासौं है उत्पन्न ।
विरलन जाहि विपे(खे)रीये, देय उपरजो दिन्न ॥
चौपइ—विरलन राशि करो गुणाकार, देय छेद सौ बुद्धिविचार ।
जो आवे सो छेद प्रमाण, उत्पन्न राशि इह विद्यमान ॥ १ ॥

विरलन राशि स्थापना—४ । १ १ १ १. देय राशि स्थापना–४ ४ ४ ४ देय राशिके
१ १ १ १
छेद २ सें देय राशिकूं गुण्या लब्ध ८ छेद. इतने उत्पन्न राशिके २५६ छेद होय.

दोहा—अर्ध अर्ध जो छेदको, कीजे सो कृति रास ।
अपने छेद समान ही, वर्ग होय अभ्यास ॥ १ ॥

राशि १६, छेद ४, चौथे ठिकाणे उत्पन्न राशि १८४४६७४४०७३७०९५५१६१६.

(६६) अथ इन्द्रियस्वरूपयंत्रम् प्रज्ञापना १५ मे पदे

<table>
<tr><td rowspan="4">द्रव्य इन्द्रिय</td><td>निर्वर्तन इन्द्रिय</td><td>अभ्यन्तर इन्द्रिय १</td><td>५ इन्द्रियाका सस्थान कदब पुष्प आदिका कहा है अगुलके असंख्य भाग.</td></tr>
<tr><td>आकार</td><td>बाह्य इन्द्रिय २</td><td>८ इन्द्रिय कर्ण २, नेत्र २, नासिका २, जिह्वा १, स्पर्श १, इनका संस्थान नाना प्रकारे</td></tr>
<tr><td rowspan="2">उपकरण</td><td>बाह्य इन्द्रिय १</td><td>खड्ग धारा समान स्वच्छतर पुद्गल समूह रूप जैसे खड्गधाराके सार पुद्गल काम करे है तैसे इन्द्रियाके सारता तिनके व्याघातसे अधा, बहिरा आदि होता है</td></tr>
<tr><td>अभ्यतर २</td><td>अभ्यंतर उपकरण शक्तिरूप जानने.</td></tr>
<tr><td rowspan="2">भाव इन्द्रिय</td><td>लब्धि १</td><td colspan="2">श्रोत्रेन्द्रिय आदि विषय सर्व आत्माके प्रदेशामे तदावरणीय कर्मका क्षयोपशम</td></tr>
<tr><td>उपयोग २</td><td colspan="2">स्व स्व विषयमे लब्धिरूप इन्द्रियाके अनुसारे आत्माका व्यापार ते 'उपयोग इन्द्रिय' कहीये इति नन्दीवृत्तौ[1]</td></tr>
</table>

(६७) श्रीप्रज्ञापना पद १५ से इन्द्रिययत्रम्

इन्द्रिय	जघन्य आदि	श्रोत्रेन्द्रिय	चक्षु	घ्राण	रसनेन्द्रिय	स्पर्शन
सस्थान	०	कदंब पुष्पका	मसूर चद्र	अतिमुक्त	छु (खु) रप्प	नाना संस्थान
जाडपणा	०	अगुल असंख्य भाग	→ ए	व	म्	→
विस्तार	०	,,	एवम्	एवम्	पृथक् अगुल	शरीरप्रमाण
स्कध	०	अनंत प्रदेश	→ ए	व	म्	→
अवगाहन	असख्य प्रदेश	→	ए	व	म्	→
अल्पबहुत्वम्	अवगाहना	२ संख्येय गुणा	१ स्तोक	३ सख्य	४ असंख्य	५ सख्यस्वरूप टीकामे
	प्रदेश	७ सख्येय	६ अनत	८ सख्येय	९ असख्येय	१० सख्येय
	कर्कश गुरु	२ अनत	१ स्तोक	३ अनत	४ अनत	५ अनत
	मृदु लघु	९ अनत गुणे	१० अनत गुणे	८ अनत गुणे	७ अनत गुणे	६ अनत गुणे
स्पृष्ट	०	स्पृष्ट	अस्पृष्ट	स्पृष्ट	स्पृष्ट	स्पृष्ट
प्रविष्ट	०	प्रविष्ट	अप्रविष्ट	प्रविष्ट	प्रविष्ट	प्रविष्ट
विषये	जघन्य	अंगुल असख्य	→ ए	व	म्	→
	उत्कृष्ट	१२ योजन	लाख योजन झझेरी	नव योजन	नव योजन	नव योजन

१ नन्दीसूत्रनी वृत्तिमां।

(६८) अथ इन्द्रियांकी उत्कृष्ट विषय

श्रोत्रेन्द्रिय	१२ योजन	८०० धनुष्य				
चक्षु	लक्ष ,,	५९०८ ,,	२९५४ धनुष्य			
घ्राण	९ ,,	४०० ,,	२०० ,,	१०० धनुष्य		
रसना	९ ,,	५१२	२५६ ,,	१२८ ,,	६४ ध.	
स्पर्शन	९ ,,	६४००	३२०० ,,	१६०० ,,	८०० ध.	४०० ध.
०	श्रोत्रेन्द्रिय सन्नी	पचेन्द्रिय असंज्ञी	चौरेंद्री	तीनेंद्री	बेइंद्री	एकेंद्री

(६९) अथ श्वासोच्छ्वासस्वरूपयंत्रम्

आणमंति	ध्यानमे जो ऊंचा सास (श्वास) लेवे सो 'आणमंति' कहीये
पाणमंति	ध्यानमे जो नीचा सास लेवे सो 'पाणमंति' कहीये.
उसास	ध्यान विना जो ऊंचा सास लेवे सो 'उसास' (उच्छ्वास).
निसास	ध्यान विना जो नीचा सास लेवे सो 'नि श्वास' कहीये.

(७०) (द्रव्यप्राणादि)

भावप्राण ४	द्रव्यप्राण १०	भावप्राण ४	द्रव्यप्राण १०
ज्ञानप्राण १	ज्ञानप्राणसे ५ इन्द्रिय-प्राण उत्पत्ति ५	सुखप्राण ३	सुखप्राणसे श्वासोच्छ्-वास प्राण १
वीर्यप्राण २	वीर्यप्राणसे मनबल, वचन, काया	जीवितव्यप्राण ४ सर्व ४ हूये	जीवितव्यप्राणसे आयु प्राण, एवं १०

(७१) *आठ आत्मा भगवती श० १२, उ० १० (सू० ४६७)

	द्रव्यात्मा	कषायात्मा	योगात्मा	उपयोगात्मा	ज्ञानात्मा	दर्शनात्मा	चारित्रात्मा	वीर्यात्मा
द्रव्यात्मा १	०	नियमा	नि	नि	नि	नि	नि	नि
कषायात्मा २	भजना	०	भ	भ	भ	भ	भ	भ
योगात्मा ३	भ	नि	०	भ	भ	भ	भ	भ
उपयोगात्मा ४	नि	नि	नि	०	नि	नि	नि	नि
ज्ञानात्मा ५	भ	भ	भ	भ	०	भ	नि	भ
दर्शनात्मा ६	नि	नि	नि	नि	नि	०	नि	नि
चारित्रात्मा ७	भ	भ	भ	भ	भ	भ	०	भ
वीर्यात्मा ८	भ	नि	नि	भ	भ	भ	नि	०

*अल्पबहुत्व—"सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, नाणायाओ अणंतगुणाओ, कसायाओ अणंत०,

(७२) भगवती श० १२, उ० ९ (सू० ४६१–४६६), पंच देव

पंच देव-नाम	गुण	आगति नरकथी	तिर्यंच गति	मनुष्य गति	देवगति	स्थिति	रूप विकुर्वे	काल करी कहां जावे	संतिष्ठन काय स्थिति	अंतर	अल्पबहुत्व	अवगाहना
भव्य-द्रव्य देव १	तिर्यंच, मनुष्य, देवता होणे वाला	सातो नरकका आवे	युगल वर्जी शेष सर्व आवे	युगल वर्जी शेष सर्व माहे-थी आवे	सर्वार्थसिद्धि वर्जी २५ देवलोकादि सर्व देव	ज० अंत मुहूर्त; उ० तीन पल्योपम	ज० १,२,३ उ० असंख्य	४ जातके देवतामे ऐक सिन्	ज० अंत मुहूर्त, उ० तीन पल्योपम	ज० दश हजार वर्ष, अंत मुहूर्त अधिक, उ० वनस्पति-काल	४ असंख्यात गुणा	ज० अंगुलके असंख्य भाग, उ० हजार योजनकी
नरदेव २	चक्रवर्ती	प्रथम नरकथी आवे	नही	०	सर्व देवतानो आव्यो	ज० सातसो वर्ष, उ० चार लक्ष पूर्वनी	ज० १।२।३; उ० असंख्य	भोग न त्यागे तो नरकमे	ज० ७०० वर्ष, उ० ८४ लक्ष पूर्व	ज० १ सागर झझेरा, उ० देश ऊन अर्ध पुद्गल	१ सर्व स्तोक	ज० ७ धनुष्यकी; उ० ५०० धनुष्यकी
धर्म-देव ३	साधु	पहिली पाच नरकथी आवे	तेज, वायु युगल वर्जी शेष आवे	युगल वर्जीने शेष सर्व आवे	वैमानिक प्रमुख सर्व ४ देवथी आवे	ज० अंत मुहूर्त, उ० देश ऊन पूर्व कोटि	"	वैमानिकमे तथा मोक्षे	ज० १ समय; उ० देश ऊन पूर्व कोटि	ज० पृथक् पल्योपम; उ० देश ऊन अर्ध पुद्गल	३ संख्यात-गुणा	ज० १ हाथ झझेरी; उ० ५०० धनुष्य
देवाधिदेव ४	तीर्थंकर	पहिली तीन नरकथी आवे	०	०	वैमानिकथी	ज० ७२ वर्ष, उ० ८४ लक्ष पूर्वनी	शक्ति तो है, परतु विकुर्वे नही	मुक्तिमे जावे	ज० ७२ वर्ष; उ० ८४ लक्ष पूर्व	०	२ संख्यात गुणा	ज० ७ हस्तकी उ० ५०० धनुष्यकी
भावदेव ५	चार प्रकारना देवता	०	एकेंद्री ५, विगलेंद्री ३ वर्जी शेष आवे	समूच्छिम मनुष्य वर्जी शेष सर्व-थी आवे	०	ज० दस हजार वर्ष, उ० ३३ सागरोपम	ज० १,२; उ० असंख्य	पृथ्वी अप् वनस्पति गर्भज तिर्यंच ३; मनुष्यमे	ज० दस हजार वर्ष; उ० ३३ सागरोपम	५०० धनुष्यकी ज० अंत मुहूर्त; उ० वनस्पति-काल	५ असंख्यात गुणा	ज० १ हस्तकी उ० ७ हाथ; उत्तर वैक्रिय लाख योजन

जोगायाओ नि०, वीरियायाओ वि उवयोगदवियदसणायाओ तिन्नि वि तुल्लाओ वि०"—भगवती सू० ४६७।

१ एकमां।

(७३) (पुद्गलपरावर्तन) भगवती श॰ १२, उ॰ ४ (सू॰ ४४८)

पुद्गलपरावर्तन ७	औदारिक १	वैक्रिय २	तैजस पुद्गल ३	कार्मण ४	मनपुद्गल ५	वचनपुद्गल ६	आनप्राण ७
स्तोक काल सर्वमे किस का?	३ अनंत	७ अनंत	२ अनंत	१ स्तोक	५ अनंत गुणा	६ अनंत	४ अनत
थोडा पुद्गल कौनसा [कस्य] अने बहुता कौनसा?	५ अनंत गुणा	१ स्तोक	६ अनंत गुणा	७ अनंत	३ अनंत	२ अनंत	४ अनंत

(७४) अथ पर्याप्तियंत्रम्

प्रारंभकालयंत्रम्						सर्व पर्याप्तिका	समाप्तिकालयंत्रम्						
प्रथम समय १	२ समय	३ समय	४ समय	५ समय	६ समय	समुच्चयकाल	स्वामी	१ स्तोक	२ असंख्य	३ विशेष अधिक	४ विशेष	५ विशेष	६ विशेष
आहार	आहार	आहार	आहार	आहार	आहार	समय	संज्ञी पंचेन्द्रिय	आहार	शरीर	इन्द्रिय	श्वासोच्छ्वास	भाषा	मन
	शरीर	शरीर	शरीर	शरीर	शरीर	अंतर्मुहूर्त	विकलेन्द्रिय	,,	,,	,,	,,	,,	
		इन्द्रिय	इन्द्रिय	इन्द्रिय	इन्द्रिय	,,	एकेन्द्रिय	,,	,,	,,	,,		
			सासो	सासो	सासो	,,	लब्धिअपर्याप्त	,,	,,	,,			
				भाषा	भाषा	०	०	०	०				
					मन	०	०	०					

[1]निश्चयनयमतेन सर्व पर्याप्ति एक साथ प्रारंभे पिण व्यवहार नय मते एक समयांतर. आहार पर्याप्तिने एक समय लगे अने अन्य सर्वने अंतर्मुहूर्त कालम् पृथक् पृथक्.

१ निश्चय नयना अभिप्राय अनुसार।

(७५) (पर्याप्ति अपर्याप्ति षट्क)

द्वार	भेद	पर्याप्ति षट् ६		अपर्याप्ति षट् ६	
०	०	प्रारभ— सर्वे पर्याप्ति साथ माडे	समाप्ति— अनुक्रमसे पूरी करे	प्रारभ— सर्वे एक साथ माडे	समाप्ति— अनुक्रमसे पूरी करे
	लब्धि अपर्याप्त	०	०	४ साथ माडे	३ पूरी करे
एकेन्द्रिय	पर्याप्ता	४ साथ माडे	४ अनुक्रमे पूरी करे	०	०
बेइंद्री, तेइंद्री, चौरिंद्री, असंज्ञी पचेंद्री	लब्धि अपर्याप्त	०	०	५ साथ माडे	४ अनुक्रमे पूरी करे
	लब्धि पर्याप्त	५ साथ माडे	३।४।५ अनुक्रमे पूरी करे	०	०
गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यंच पंचेंद्री	करण अपर्याप्त	६ साथ माडे	" " "	०	०
	करण पर्याप्त	" " "	६ अनुक्रमे पूरी करे	०	०
नैरयिक १ देवता	करण अपर्याप्त	" " "	५ अनुक्रमे पूरी करे	०	०
	करण पर्याप्त	" " "	६ पूरी करे	०	०

(७६) पर्याप्तिके सर्व कालकी अल्पबहुत्व

आहार पर्याप्ति १	शरीर पर्याप्ति २	इन्द्रिय पर्याप्ति ३	श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति ४	भाषा पर्याप्ति ५	मन पर्याप्ति ६
१ स्तोक	२ असख्य	३ विशेष अधिक	४ विशेष	०	०
" "	" "	" "	" "	०	०
" "	" "	" "	४ वि काल करे	५ वि काल करे	०
" "	" "	" "	" " " " "	" " " "	०
" "	" "	" "	४ वि	५ विशेष	६ किञ्चित् न्यून
" "	" "	" "	" "	" "	६ विशेष अधिक
" "	" "	" "	" "	" "	६ अधूरी ते किञ्चित् न्यून
" "	" "	" "	" "	" "	६ तुल्यम्

(७३) (पुद्गलपरावर्तन) भगवती श० १२, उ० ४ (सू० ४४८)

पुद्गलपरावर्तन ७	औदारिक १	वैक्रिय २	तैजस पुद्गल ३	कार्मण ४	मनपुद्गल ५	वचनपुद्गल ६	आनप्राण ७
स्तोक काल सर्वमे किस का?	३ अनंत	७ अनंत	२ अनंत	१ स्तोक	५ अनंत गुणा	६ अनंत	४ अनंत
थोडा पुद्गल कौनसा [कस्य] अने वहुता कौनसा?	५ अनंत गुणा	१ स्तोक	६ अनत गुणा	७ अनंत	३ अनंत	२ अनंत	४ अनत

(७४) अथ पर्याप्तियंत्रम्

प्रारभकालयंत्रम्						सर्व पर्याप्तिका	समाप्तिकालयंत्रम्						
प्रथम समय १	२ समय	३ समय	४ समय	५ समय	६ समय	समुच्चय-काल	स्वामी	१ स्तोक	२ असंख्य	३ विशेष अधिक	४ विशेष	५ विशेष	६ विशेष
आहार	आहार	आहार	आहार	आहार	आहार	समय	सञ्ज्ञी पंचेन्द्रिय	आहार	शरीर	इन्द्रिय	श्वासोच्छ्वास	भाषा	मन
	शरीर	शरीर	शरीर	शरीर	शरीर	अंतर्मुहूर्त	विकलेन्द्रिय	"	"	"	"	"	
		इन्द्रिय	इन्द्रिय	इन्द्रिय	इन्द्रिय	"	एकेन्द्रिय	"	"	"	"		
			सासो	सासो	सासो	"	लब्धि अपर्य	"	"	"			
				भाषा	भाषा	०	०	०	०				
					मन	०	०	०					

[1]निश्चयनयमतेन सर्व पर्याप्ति एक साथ प्रारभे पिण व्यवहार नय मते एक समयांतर. आहार पर्याप्तिने एक समय लगे अने अन्य सर्वने अंतर्मुहूर्त कालम् पृथक् पृथक्.

१ निश्चय नयना अभिप्राय अनुसार।

(७५) (पर्याप्ति अपर्याप्ति यन्त्र)

द्वार	भेद	पर्याप्ति यन्त्र ६		अपर्याप्ति यन्त्र ६	
०	०	प्रारंभ— सर्व पर्याप्ति साथ मांडे	समाप्ति— अनुक्रमसे पूरी करे	प्रारंभ— सर्व एक साथ मांडे	समाप्ति— अनुक्रमसे पूरी करे
	लब्धि अपर्याप्त	०	०	४ साथ मांडे	३ पूरी करे
एकेन्द्रिय	पर्याप्ता	४ साथ मांडे	४ अनुक्रमे पूरी करे	०	०
बेइंद्री, तेइंद्री, चौरिंद्री, असंज्ञी पचेंद्री	लब्धि अपर्याप्त	०	०	५ साथ मांडे	४ अनुक्रमे पूरी करे
	लब्धि पर्याप्त	५ साथ मांडे	३।४।५ अनुक्रमे पूरी करे	०	०
गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यंच पंचेंद्री	करण अपर्याप्त	६ साथ मांडे	,, ,, ,,	०	०
	करण पर्याप्त	,, ,, ,,	६ अनुक्रमे पूरी करे	०	०
नैरयिक १ देवता	करण अपर्याप्त	,, ,, ,,	५ अनुक्रमे पूरी करे	०	०
	करण पर्याप्त	,, ,, ,,	६ पूरी करे	०	०

(७६) पर्याप्तिके सर्व कालकी अल्पबहुत्व

आहार पर्याप्ति १	शरीर पर्याप्ति २	इन्द्रिय पर्याप्ति ३	श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति ४	भाषा पर्याप्ति ५	मन पर्याप्ति ६
१ स्तोक	२ असंख्य	३ विशेष अधिक	४ विशेष	०	०
,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	०	०
,, ,,	,, ,,	,, ,,	४ वि काल करे	५ वि काल करे	०
,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,	०
,, ,,	,, ,,	,, ,,	४ वि	५ विशेष	६ किञ्चित् न्यून
,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	६ विशेष अधिक
,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	६ अधूरी ते किञ्चित् न्यून
,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	६ तुल्यम्

(७७) श्रीप्रज्ञापना पद २८ मेथी पर्याप्ति स्वरूपयंत्रमिदम्

पर्याप्ति ६	आहार १	शरीर २	इन्द्रिय ३	श्वासोच्छ्वास ४	भाषा ५	मन ६
अपर्याप्ति	अपर्याप्त	अपर्याप्त	अपर्याप्त	अपर्याप्त	अपर्याप्त	अपर्याप्त
आहारक अनाहारी	नियमात् अनाहारी	आहारी अनाहारी	आहारी अनाहारी	आहारी अनाहारी	आहारी अनाहारी	आहारी अनाहारी

(७८) आहारयंत्र पन्नवणा पद २८

द्वार	भेद	स्वामी	संख्या
भेद तीन ३	सचित्त १	तिर्यंच १ मनुष्य २	१
	अचित्त २	देव १, नरक, २, तिर्यंच ३, मनुष्य ४	२
	मिश्र ३	तिर्यंच १, मनुष्य २	३
भेद तीन ३	ओज १	अपर्याप्त अवस्थामे १	४
	रोम २	रोम पर्याप्त २	५
	कवल ३	बेंद्री, तेइन्द्री, चौरेंद्री, तिर्यंच पचेंद्री, मनुष्य	६
भेद दो २	आभोगनिवृत्तित.	रोमआहारी कवल आहारी	७
	अनाभोगनिवृत्तित.	ओज आहारी, रोम आहारी	८
भेद दो २	मनोज्ञ	देवता आदिक	९
	अमनोज्ञ	नरक आदिक	१०

अथ १४ गुणस्थान स्वरूप लिख्यते—(१) मिथ्यात्व गुणस्थान, (२) सासादन गु., (३) मिश्र गु., (४) अविरति सम्यग्दृष्टि गु., (५) देशविरति गु., (६) प्रमत्त संयत गु., (७) अप्रमत्त संयत गु., (८) निवर्त्य बादर (अपूर्वकरण?) गु., (९) अनिवर्त्त बादर (अनिवृत्ति?) गु., (१०) सूक्ष्म संपराय गु., (११) उपशांतमोह गु., (१२) क्षीणमोह गु., (१३) सयोगी केवली गु., (१४) अयोगी (केवली) गु. इति नाम.

अथ लक्षण—प्रथम गुणस्थानका लक्षण—कुदेव माने; कुदेवके लक्षण—यथा विषयी होवे, पुण्य प्रकृति भोग ले, राग द्वेष सहित होवे तेहने देव माने १. कुगुरु—चारित्र धर्म रहित जे अन्यलिंगी तथा स्वलिंगी गुणभ्रष्ट, परिग्रहना लोभी, अभिनिवेशकी(शी), पांचे महाव्रते

रहित तेहने गुरु माने. धर्म—यथार्थ आत्मपरिणति केवलिभाषित अनेकांत–स्याद्वादरूप जिम है तिम न माने, अपनी कल्पनासे सद्दहणा करे, पूर्व पुरुषाका मत भ्रंश करे, सूत्र अर्थ विपरीत कहै, नय प्रमाण न समजे, एकांत वस्तु प्ररूपे, कदाग्रह छोडे नही ते. मिथ्यात्वमोहनीयके उदये सत्पदार्थ मिथ्या भासे जैसे धतुरा पीये हूये पुरुषकू श्वेत वस्तु पीत भान होवे तथा जैसे ज्वरके जोरसे भोजनकी रुचि नही होती है तैसे मिथ्यात्वके उदय करी सत् पदार्थ जूठा जाने है ते प्रथम गुणस्थानके लक्षण.

जैसे पुरुषने खीर खंड खाके वम्या, पिण किंचित् पूर्वला स्वाद वेदे है तैसे उपशमसम्यक्त्व वमतां पूर्व सम्यक्त्वका स्वाद वेदे है. इति द्वितीय.

जैसे 'नालिकेर' द्वीपका मनुष्यका अन्नके उपरि राग नही, अने द्वेष भी नही तिनोने कदे अन्न देख्या नही इस वास्ते. ऐसे जैन धर्म उपरि राग भी नही द्वेष भी नही ते मिश्र गुणस्थानका लक्षण जानना. इति तृतीय.

अठारें दूषण रहित सो देव, पांच महाव्रतधारी शुद्ध प्ररूपक सो गुरु, धर्म केवलिभाषित स्याद्वादरूप. चौकडी दूजीके उदये अविरति है इति चतुर्थ.

१२ (?) अनुव्रत पाले, ११ पडिमा आराधे, ७ कुव्यसन, २२ अभक्ष्य टाले, ३२ अनंतकाय वर्जे, उभय काले सामायिक, प्रतिक्रमणा करे, अष्टमी, चौदस, अमावास्या, पूर्णमासी, कल्याणक तिथि इनमे पोषध करे ओर तिथिमे नही अने इकवीस गुण धारक ए (पांचमाका) लक्षण.

छठा—सतरे भेदे संयम पाळे, पाच महाव्रत पाले, ५ समिति, ३ गुप्ति पाले, चारित्रिया, संतोषी, परहित वास्ते सिद्धान्तका उपदेश देवे, व्यवहारमे कले (रहे?) कर चौदा उपगरणधारी परतु प्रमादी है. एह लक्षण छठेकों.

सातमे—संज्वलन कषायना मदपणाथी नष्ट हुया है प्रमाद जेहना, मौन सहित, मोहके उपशमावनेकू अथवा क्षय करनेकू प्रधान ध्यान साधनेका आरभ करे, मुख्य तो धर्मध्यान हुइ, अंशमात्र रूपातीत शुक्ल ध्यान पिण होवे है, षडावश्यक कर्तव्यसे रहित, ध्यानारूढत्वात्[१].

अष्टमा—क्षपक श्रेणिके लक्षण—आसन अकंप, नासिकाने अग्रे नेत्रयुगल निवेशी कछुक उघाड्या है नेत्र ऐसा होके संकल्प विकल्परूप जे वायुराजा तेहथी अलग कीना है चित्त, संसार छेदनेका उत्साह कीधा है ऐसा योगीन्द्र शुक्ल ध्यान ध्यावा योग्य होता है पीछे पूरक ध्यान, कुंभक ध्यान, स्थिर ध्यान ए तीनो शुक्लके अतरमे वमे है. इति अष्टम लक्षण.

नवमे गुणस्थानके नव भाग करके प्रकृति क्षय करे. इति नवमा.

दसमे सूक्ष्म लोभ सज्वलन रह्या और सर्व मोहका उपशम तथा क्षय कीया.

सर्वथा मोहके उपशम होणे करके उपशांतमोह गुणस्थान कहीये है. ११ मा.

सर्वथा मोहके क्षय होणे ते क्षीणमोह गुणस्थान कह्या. १२ मा.

---

१ ध्यानमां आरूढ होवाथी।

च्यार घातीया कर्म क्षय किया, केवल ज्ञान, केवल दर्शन, यथाख्यात चारित्र, अनंत वीर्य इन करके विराजमान, योग सहित इति सयोगी.

मन, वचन, काया योग रूंधीने पांच ह्रस्व अक्षर प्रमाण काल पीछे मोक्ष.

(७९) आगे गुणस्थान पर नाना प्रकारके १६२ द्वार है तिनका स्वरूप यंत्रसे—

		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
१	जीव भेद १४	१४	७	१	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२	योग १५	१३	१३	१०	१३	११	१३	११	९	९	९	९	९	७	०
३	उपयोग १२	५	५	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	२	२

जीवभेदमे दूजे गुणस्थानमे बादर एकेंद्रीका भेद १ अपर्याप्त कह्या है सो इस कारण—ते एकेंद्रीमे सास्वादन सम्यक्त्व है अने सूत्रे न कही तिसका समाधान—एकेंद्रीमे सास्वादन कोइक कालमे होइ है, बहुलताइ करके नही होती, इस कारण ते सूत्रमे विवक्षा नही करी. अने कर्मग्रंथमे कोइ कालकी विवक्षा करके कह्या है. इस वास्ते विरोध नही. एह समाधान भगवतीकी वृत्तिमे कह्या है. दूजे गुणस्थानमे अपर्याप्तका भेद है ते करण अपर्याप्ता जानने, लब्धि अपर्याप्ता तो काल करे है. अने दूजे गुणस्थाने अपर्याप्ता काल नही करे. तथा योगद्वारमे पांचमे छट्ठे गुणस्थानमे औदारिकमिश्र योग कर्मग्रंथे न मान्यो, किस कारण? ते तिहा वैक्रिय आहारककी प्रधानता करके तिनो ही का मिश्र मान्या; अन्यथा तो १२ तथा १४ योग जानने, परंतु गुणस्थानद्वार तो कर्मग्रंथकी अपेक्षा है; तिस वास्ते कर्मग्रंथकी अपेक्षा ही ते सर्वत्र उदाहरण जानना. तथा उपयोगद्वारमे पहिले १, दूजे गुणस्थाने ५ उपयोग कहे है सो तीन अज्ञान, चक्षु, अचक्षु दोइ दर्शन; एवं ५ उपयोग जानने. दूजे गुणस्थानमे ज्ञान मलिन है, मिथ्यात्वके अभिमुख है अवश्य मिथ्यात्वमे जायगा, तिस कारण ते अज्ञान ही कह्या; अन्यथा तो तीन ज्ञान, तीन दर्शन जानने. अवधिदर्शन अवधिज्ञान विना न विवक्ष्यो. इस कारण ते ५ उपयोग कहे; अन्यथा तो प्रथम गुणस्थाने ३ अज्ञान, ३ दर्शन जानने तथा तीजे गुणस्थानमे ज्ञान अंशकी विवक्षा ते तीन ज्ञान, तीन दर्शन है; अने अज्ञान अंशकी विवक्षा करे तीन अज्ञान, तीन दर्शन जानने.

४	द्रव्य लेश्या ६	६	६	६	६	६	६	३	१	१	१	१	१	१	०
५	भाव लेश्या ६	६	६	६	६	३	३	३	१	१	१	१	१	१	०

भावलेश्या तीन—कृष्ण, नील, कापोत; एह तीन लेश्या वर्तता सम्यक्त्व न पडिवज्जे अने सम्यक्त्व आया पीछे तो तीनो भावलेश्या होइ है इति भगवतीवृत्तौ अने तीन अप्रशस्त भावलेश्यामे देशवृत्ती (विरति?) सर्ववृत्ती (विरति?) नही होइ.

१ पाने

६	मूल हेतु ४	४	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	१	१	०
७	उत्तर हेतु ५७	५५	५०	४३	४६	३९	२६	२४	२२	१६	१०	९	९	७	०
०	मिथ्यात्व ५	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	अविरत १२	१२	१२	१२	१२	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	कषाय २५	२५	२५	२१	२१	१७	१३	१३	१३	७	१	०	०	०	०
०	योग १५	१३	१३	१०	१३	११	१३	११	९	९	९	९	९	७	०
८	अल्प बहुत्व	अनत गुणा १४	असं १०	असं ११	असं १२	असं ९	स ८	सं ७	वि ३ ५	वि ३ ४	वि ३ ३	थोवा १	स २	स ६	अनत गुणा १३
९	मूल भाव ५	३	३	३	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	२
१०	उत्तर भाव ५३	३४	३२	३३ ३२	३६ ३५	३४ ३५	३४ ३३	३० ३१	२७ २८	२८ २९ २७	२३ २२ २१	२१ २०	२० १९	१३	१२
०	उपशम २	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	०	०	०
०	क्षायिक ९	०	०	०	१	१	१	१	१	११२	११२	२	२	९	९
०	क्षयोपशम १८	१०	१०	११	१२ १३	१४ १३	१४ १५	१४ १५	१३ १४	१२ १३	१२ १३	१२ १३	१२ १३	०	०
	औदयिक १२	२१	२०	२० १९	१९	१७	१५	१२	१०	१०	४	३	३	३	२
०	परिणामी ३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१

मूल भाव ५, तद्यथा—(१) औपशमिक, (२) क्षायिक, (३) क्षायोपशमिक, (४) औदयिक, (५) पारिणामिक. उत्तर भेद ५७—औपशमिकके दो भेद-(१) उपशमसम्यक्त्व, (२)

उपशमचारित्र, एवं दो; क्षायिक भाव ९ भेदे-(१) केवलज्ञान, (२) केवलदर्शन, (३) क्षायिक सम्यक्त्व, (४) क्षायिक चारित्र, (५) दानान्तराय, (६) लाभान्तराय, (७) भोगान्तराय, (८) उपभोगान्तराय, (९) वीर्यान्तराय एवं ५ क्षय करी, एवं ९; क्षयोपशमके १८ भेद—(१) मति, (२) श्रुत, (३) अवधि, (४) मनःपर्यव, (५-७) तीन अज्ञान, (८-१०) तीन दर्शन केवल विना, (११-१५) पांच अन्तरायका क्षयोपशम, (१६) देशविरति (१७) सर्वविरति, (१८) क्षयोपशमसम्यक्त्व, एवं १८; औदयिकके २१ भेद—गति ४, कषाय ४, वेद ३, लेश्या ६, मिथ्यात्व १, एवं १८, (१९) अज्ञान, (२०) अविरति, (२१) असिद्धपणउ, एवं सर्व २१; परिणामिकके ३-(१) जीव, (२) भव्य, (३) अभव्य, एवं ३; एवं सर्व ५३. नवमे गुणस्थानमे उपशमचारित्र अने क्षायिकचारित्र जो कहे है सो तीसरी चौकडीके क्षय तथा उपशमकी अपेक्षा है; उपशम क्षपक श्रेणि आश्री; अन्यथा तो चारित्र क्षयोपशमभावे है. तेरमे १४ मे एक जीव परिणामिक भाव जानना.

११	समुद्घात ७	५	५	२	५	५	६	१ । ५	१	१	१	१	०	१	०

सातमे गुणस्थानमे ५ समुद्घात कही है ते पूर्व अपेक्षा करके जाननी. सातमे (१) वेदनीय, (२) कषाय, (३) वैक्रिय, (४) आहारक ए चार समुद्घात करता तो नही, पिण वैक्रिय, आहारक शरीर विना समुद्घातके होते नही. इस वास्ते ५; एक होवे तो मारणान्तिक समुद्घात जाणवी. इति अलं विस्तरेण[1].

१२	ध्यान पाया १६	८	८	८	१२	१२	७	४	५	१ प्रथम	१	१	१	१ दूजा	२

छठे गुणस्थानमे ७ पाये कहे है सोइ आर्तध्यानका प्रथम पाया नही ते. यथा सेवे भोगे है जे कामभोग तिनका वियोग न वंछै. तत्त्वं[2] बहुश्रुतात् गम्यम् ।

१३	दण्डक २४	२४	२२	१६	१६	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१४	वेद स्त्री आदि	३	३	३	३	३	३	३	३	३	०	०	०	०	०
१५	चारित्र ७	१	१	१	१	१	३	३	२	२	१	१	१	१	१
१६	योनि लक्ष ८४	८४	५६	२६	२६	१८	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
१७	कुल १९७५-0000,000,000	१९७ ५०	११६॥ १८७	११६॥	११६॥	६५॥	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
१८	आश्रव भेद ४२	४१	४१	४१	४०	४० ३९	३२ २७				७	१	१	१	०

छठे गुणस्थानमे बत्तीस भेद आश्रवके है, तद्यथा—(१) पारिग्रहिकी क्रिया, (२) मिथ्यादर्शनप्रत्यया, (३) अप्रत्याख्यानक्रिया, (४) सामंतोपनिपातिकी क्रिया, (५) ईर्याप-

१ विस्तारथी सर्यु । २ तत्त्व बहुश्रुतथी जाणवु । ३ असंयम, देशविरति अने सामायिक आदि ५ चारित्र ।

धिकी क्रिया, (६) प्राणातिपात, (७) मृषावाद, (८) अदत्तादान, (९) मैथुन, (१०) परिग्रहः एवं दश नास्ति अने सत्तावीसमे पांच इन्द्रिय टली.

१९	संवर भेद ५७	०	०	०	१२	१२	५७	५७	५७	५७	४५	४५	४५	३०	३०

ए सर्व संवरना भेद स्वधिया विचारितव्यं–सर्वगुणस्थान उपर विचार लेना.

२०	ध्रुवबंधी ४७	४७	४६	३९	३९	३५	३१	३१	३१ २०	२९ १८	१८	१४	०	०	०	०

ध्रुवबंधी प्रकृति ४७ लिख्यते—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, कषाय १६, भय १, जुगुप्सा १, मिथ्यात्व १, तैजस १, कार्मण १, वर्ण १, गंध १, रस १, स्पर्श १, निर्माण १, अगुरुलघु १, उपघात १, अंतराय ५, एवं ४७. जां लगे एहना बंध है तां लगे अवश्यमेव बंध होइ है; इस वास्ते इनका नाम 'ध्रुवबंधी' कहीये. दूजे गुणस्थानमे एक मिथ्यात्व टली. तीजे गुणस्थानमे अनंतानुबंधी ४, निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला १, स्त्यानर्द्धि १ एवं सात टली. त्रीजेवत् चोथे. पांचमे अप्रत्याख्यान ४ नही. छठे प्रत्याख्यानावरण चार नही. एवं सातमे तथा आठमेके प्रथम भागमे तो सातमेवत्; दूजे भागमे निद्रा १, प्रचला १, ए, दो टली, त्रीजे भागमे तैजस १, कार्मण १, वर्ण १, गध १, रस १, स्पर्श १, निर्माण १, अगुरुलघु १, उपघात १, एवं ९ टली. चोथे भागमे भय १, जुगुप्सा १, एवं २ टली, १८ का बंध. एवं नवमे दसमे ४ टली. संज्वलनका चौक, पांच ज्ञान, चार दर्शन, पांच अंतराय, एवं १४ का बंध; आगे नास्ति[3].

२१	अध्रुवबंधी ७३	७०	५५	३५	३८	३२	३२	२८	२७ ४	४ ३	३	१	१	१	०

अध्रुवबंधी प्रकृति ७३ है.—हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, वेद ३, आयु ४, गति ४, जाति ५, औदारिक १, वैक्रिय १, आहारक १ इन तीनोहीके अंगोपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, आनुपूर्वी ४, विहायोगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, तीर्थंकर १, त्रसदशक १०, स्थावरदशक १०, गोत्र २; एवं सर्व ७३. अर्थ—कारण तो मिथ्यात्व आदि बंधनेका है अने ए ७३ प्रकृतिका बंध होय भी अने नही भी होय; इस वास्ते इनका नाम 'अध्रुवबंधी' कहीये. प्रथम गुणस्थानमे तीन टले—आहारक १, आहारक-अंगोपांग १, तीर्थंकर १; एव ३. दूजे गुणस्थाने १५ टली—नपुंसक वेद १, नरकत्रिक ३, जाति ४, पंचेन्द्रिय विना, छेहला संहनन १, छेहला संस्थान १, आतपनाम १, थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १, एवं १५ टली. तीजेमे २० टली—स्त्रीवेद १, आयु ३, तिर्यंच गति १, तिर्यंच

१ पोतानी मति प्रमाणे। २ त्रीजानी पेठे। ३ नथी।

आनुपूर्वी १, मध्यके ४ संहनन, मध्यके ४ संस्थान, उद्योत १, अशुभ चाल १, दुर्भग नाम १, दुःस्वर १, अनादेय १, नीच गोत्र १, एवं २० टली. चोथेमे तीन वधी–मनुष्य-आयु १, देव-आयु १, जिन-नाम १. पांचमे ६ टली—मनुष्यत्रिक ३, औदारिक १, औदारिक अंगोपांग १, प्रथम संहनन, एवं ६ टली. छठे पांचमे वत्. सातमे आहारक तदुपांग २ वधी, ६ टली—असातावेदनीय १, शोक १, अरति १, अस्थिर नाम १, अशुभ १, अयश १; एवं ६. आठमेके दो भाग. प्रथम भागमे एक देव-आयु टली. दूजे भागमे चारका बंध—साता-वेदनीय १, पुरुषवेद १, यशकीर्ति १, ऊंच गोत्र १, एवं ४ का बंध, शेष २२ टली. नवमेके प्रथम भागे ४, दूजे भागमे १ पुरुषवेद टला, तीनका बंध. दशमेऽपि[१] एवं ३ का बंध. आगले तीन गुणस्थानमे एक सातावेदनीयका बंध. १४ मा अबंधक जानना.

२२	ध्रुव उदयी २७	२७	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	१२	०

ध्रुव उदयी प्रकृति २७ है, ते यथा—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ५, चक्षु आदि ४, मिथ्यात्व १, तैजस १, कार्मण १, वर्ण १, गंध १, रस १, स्पर्श १, निर्माण १, अगुरु-लघु १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, अंतराय ५, एवं २७. एह प्रकृति जां लगे उदय है तां लगे अवश्य उदय है, अतर न पडे; इस कारणसे इनका नाम 'ध्रुव उदयी' कहीये. दूजेमे मिथ्यात्वमोहनीय टली. एव यावत् १२ मे गुणस्थान ताई २६ का उदय. तेरमे १४ टली—पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय, एवं १४. चौदमे ध्रुव उदयी कोइ प्रकृति नही है.

२३	अध्रुव उदयी ९७	९०	८५	७४	७८	६१	५५	५०	४६	४०	३४	३३	३१ २९	३०	१२ ९

अध्रुव उदयी ९५ प्रकृति है, तद्यथा—निद्रा ५, वेदनीय २, मोहकी २७ मिथ्यात्व विना, आयु ४, गति ४, जाति ५, शरीर ३, अंगोपांग ३, संहनन ६, संस्थान ६, आनुपूर्वी ४, विहायोगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, तीर्थंकर १, उपघात १, त्रसादि ८, स्थिर १, शुभ १, ए दो विना आठ, स्थावर ८, अस्थिर १, अशुभ १, ए दो विना गोत्र २; एवं सर्व ९५. कदेक उदय हुइ, कदेक उदय नही होय; इस वास्ते 'अध्रुव उदयी' कहीये. पहिलेमे ५ नही—सम्यक्त्वमोह १, मिश्रमोह १, आहारक शरीर १, तदुपांग १, जिननाम १; एवं ५ नही. दूजेमे ५ नही—नरक-आनुपूर्वी १, आतप १, सूक्ष्म नाम १, साधारण १, अपर्याप्त १; एवं ५ नही. तीजेमे १२ टली—अनंतानुबंधी ४, तीन आनुपूर्वी, च्यार जात, स्थावर नाम १, एवं १२ टली; अने एक मिश्र मोहनीय वधी. चौथेमे चार आनु-पूर्वी, सम्यक्त्वमोहनीय १, एवं ५ वधी, अने एक मिश्र मोहनीय टली. पांचमेमे १७ टली—

१ दशमामां पण आ प्रमाणे।

अप्रत्याख्यान ४, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्रिय शरीर १, तदुपांग १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, तिर्यंच-आनुपूर्वी १, मनुष्य आनुपूर्वी १; एव १७ नही. छठेमे आठ टली—प्रत्याख्यानावरण ४, तिर्यंच आयु १, तिर्यंच गति १, उद्द्योत १, नीच गोत्र १, एवं ८ टली; अने दोय वधी—आहारक १, तदुपांग १. सातमे पांच टली—निद्रा ३, आहारक १, तदुपांग १; एव ५ टली. आठमे ४ टली—सम्यक्त्वमोहनीय १, छेहला तीन संहनन ३; एवं ४ टली. नवमे ६ टली—हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, भय १, जुगुप्सा १; एव ६ टली. दशमे ६ टली—वेद ३, लोभ विना संज्वलनकी ३; एवं ६ टली. ग्यारमे एक संज्वलनका लोभ टला. बारमे संहनन २ टले. अने द्विचरम स(म)य दोय निद्रा टली. तेरमे एक जिननाम वध्या. चौदमे १८ टली, १२ रही तिन बारांका नाम—साता वा असाता १, मनुष्यगति १, पंचेन्द्रिय जाति १, सुभग १, त्रसनाम १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, यश १, तीर्थकर १, मनुष्य आयु १, उंच गोत्र १; एवं १२ है. छेहले समय एक वेदनीय १, उंच गोत्र १; एवं २ टली. तीर्थकरकी अपेक्षा एह १२. तथा ९ का उदये.

२४	ध्रुव सत्ता १३०	१२०	१३०	१३०	१३०	१२०	१३०	१३०	१३० १२५	१२० ९२	१३० ९१	१३०	९०	७४	७४ ७

ध्रुव सत्ता १३० है, तद्यथा—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, सम्यक्त्वमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, ए दो विना २६ मोहकी, तिर्यंच गति १, जाति ५, वैक्रिय १, आहारक विना शरीर ३, औदारिक अगोपांग १, पांच बंधन–(१) औदारिक बंधन, (२) तैजस बधन, (३) कार्मण बधन, (४) औदारिक तैजस कार्मण बंधन, (५) तैजस कार्मण बंधन, एवं ५, इम पांच ही संघातन, संहनन ६, संस्थान ६, वर्ण आदि २०, तिर्यंच-आनुपूर्वी १, विहायोगति २, प्रत्येक ७ तीर्थंकर विना, त्रस आदि १०, स्थावर आदि १०, नीच गोत्र १, अंतराय ५, एवं १३०.१३० बंधना मध्ये पांच बंधन टले है ते लिख्यते—वैक्रिय बंधन १, आहारक बंधन १, वैक्रिय तैजस कार्मण बंधन १, आहारक तैजस कार्मण बंधन १, औदारिक आहारक तैजस कार्मणबंधन १; एवं ५ बधने टले. एव संघातन ५. ध्रुव सत्ताका अर्थ—जां लगे ए प्रकृतिकी सत्ता कही है तां लगे सदाइ लामे; इस वास्ते 'ध्रुव सत्ता' कहीये. सातमे गुणस्थान ताइ १३० की सत्ता. आठमे क्षपक उपशम श्रेणिकी अपेक्षा दो प्रकारकी सत्ता जाननी—१३० की सत्ता उपशम सम्यक्त्वकी अपेक्षा ग्यारमे ताइ जाननी; अने क्षपककी अपेक्षा आठमे पांच टली, तद्यथा—अनंतानुबंधी ४, मिथ्यात्वमोहनीय १, एवं ५ टली. नवमे ३२ टली—निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला १, स्त्यानर्द्धि १, मोहकी १९ संज्वलनके माया, लोभ विना, तिर्यंच गति १, पंचेन्द्रिय विना जाति ४, तिर्यंच आनुपूर्वी १, आतप १, उद्द्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १; एवं ३२ टली. नवमेके नव भाग करके ३२ टालनी, यथा—प्रथम भागमे तो आठमे गुणस्थानवत्. दूजे भागमे १४ टली—तिर्यंचद्विक

२, जाति ४, थीणत्रिक ३, उद्योत १, आतप १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १; एवं १४ टली; तीजे भागे ८ टली—दो चौकडी; चोथे भागे नपुंसकवेद १; पांचमे भागे स्त्रीवेद १; छठे भागे हास्य आदि ६; सातमे भागे पुरुषवेद १; आठमे भागे संज्वलन क्रोध १; नवमे भागे संज्वलन मान १; एवं सर्व भागोमे २२ टली. दशमे गुणस्थाने एक संज्वलननी माया टली. बारमे संज्वलन लोभ टला. तेरमे १६ टली—निद्रा १, प्रचला १, ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५; एवं १६ टली. चौदमे ७४ की सत्ता तो तेरमेवत्. छेहले समय सातकी सत्ता—त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, सुभग १, पंचेन्द्रिय १, साता वा असाता १, एवं ७ रही. मुक्तौ[1] गमने सर्व प्रकृतिका व्यवच्छेद मंतव्यं.

२५	अध्रुव सत्ता २८	२८	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८ ३३	२८ २१	२८ २१	२८	२१	२१	२१ ५

अध्रुव सत्ता २८ प्रकृति लिख्यते—सम्यक्त्वमोह १, मिश्रमोह १, आयु ४, तीन गति तिर्यच विना, वैक्रिय शरीर १, तदुपांग १, आहारक शरीर १, तदुपांग १, बंधन ५, संघातन ५, इनका स्वरूप ध्रुव सत्तामे लिख्या है, तिर्यच विना तीन आनुपूर्वी, तीर्थंकर १, उंच गोत्र १; एवं २८. अध्रुव सत्ताका अर्थ—सदा सत्तामे न लामे, इस वास्ते 'अध्रुव सत्ता'. दूजेमे एक तीर्थंकर नाम टला. एवं त्रीजे. चौथेथी मांडी ११ मे ताइ २८ की सत्ता, तीर्थंकर नाम एक मिला. आठमे गुणस्थाने क्षपक श्रेणि अपेक्षा २३ की, सत्ता; ५ टली—सम्यक्त्व-मोहनीय १, मिश्रमोह १ मनुष्य विना आयु ३; एवं ५. नवमे २ टली—नरकगति १, नरक आनुपूर्वी १, दशमे, बारमे, तेरमे, चौदमे २१ तो नवमेवत्, अने पांचवी सत्ता छेहले समय—मनुष्यत्रिक १, उंच गोत्र १, तीर्थंकर १. एवं ५ की सत्ता जाननी.

२६	सर्वघाती २०	२०	१९	१२	१२	८	४	४	४ २	२	२	०	०	०	०

सर्वघाती २०—केवलज्ञानावरणीय १; केनलदर्शनावरणीय १, निद्रा ५, कषाय १२ संज्वलन विना, मिथ्यात्वमोहनीय १; एवं सर्व २०. सर्वघात्तीका अर्थ—आत्माका सर्वथा गुण हणे है, इस वास्ते 'सर्वघातिक' नाम. दूजे मिथ्यात्वमोहनीय टले. तीजे, चोथे अनंतानु-बंधी ४, निद्रा ३; एवं ७ टली. पांचमे अप्रत्याख्यान ४ टली. छठे, सातमे तीजी चौकडी टली. आठमे सातमेवत्. आगे दो रही—केवलज्ञानावरणीय १, अने केवलदर्शनावरणीय १. एह द्वार बंध अपेक्षा है.

२७	देशघाती २५	२५	२४	२३	२३	२३	२३	२१	२१	१७	१२	०	०	०	०

[1] मोक्षे जतां तो बधी प्रकृतिनो उच्छेद मानवो ।

देशघाती २५—मति आदि ज्ञानावरणीय ४, तीन दर्शनावरणीय केवल विना, संज्वलन ४, हास्य आदि ६, वेद ३, अतराय ५; एवं २५. अर्थ—देश थकी आत्माना गुण हणे, नं तु सर्वथा. दूजे नपुसकवेद टला. तीजेसे लेइ छठे ताइ स्त्रीवेद टल्या. सातमे अरति १, शोक १ टले. एनं आठमे, नवमेमे हास्य १, रति १. भय १, जुगुप्सा १; एनं ४ टली. दशमे संज्वलनका चौक ४, पुरुषवेद १; एवं ५ टली. आगे वंध नही.

२८	अघाती ७५	७२	५८	३९	४२	३६	३६	३४	३३	३	३	१	१	१	०

अघाती ७५ है—वेदनीय २, आयु ४, नामकी ६७, गोत्र २; एवं ७५. अर्थ—ज्ञान, दर्शन, चारित्र इनकूं न हणे; इस वास्ते 'अघाती' कहीये. पहिलेमे आहारकद्विक २, जिननाम १; एव तीन नही. दूजे १४ टली—छेवट्ठ (सेवार्त) सहनन १, हुडक संस्थान १, एकेन्द्रिय जाति १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १, आतप १, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३; एव १४. तीजेमे १९ टली—दुभग १, दुःस्वर १, अनादेय १, संहनन ४ मध्यके, संस्थान ४ मध्यके, अप्रशस्त विहायोगति १, तिर्यंच गति १, तिर्यंच-आनुपूर्वी १, आयु ३ नरक विना, उद्योत १, नीच गोत्र १; एवं १९. चौथे ३ मिले—मनुष्य-आयु १, देव-आयु १, जिननाम १; एव ३. पाचमे ६ टली—प्रथम सहनन १, औदारिक १, तदुपांग १, मनुष्यगति १, मनुष्य-आयु १, मनुष्य-आनुपूर्वी १, एव ६. एव पांचमेवत् छठे. सातमे ४ टली—असाता १, अस्थिर १, अशुभ १, अयश १; एनं ४ टली. आहारक १, तदुपांग १, मिले. आठमें एक देव-आयु टली. नवमे ३० टली, अने ३ रही तेहनां नाम—सातावेदनीय १, यश १, उंच गोत्र १, एव दशमे, ११ मे, १२ मे, १३ मे एका सातावध.

२९	पुण्य भेद ४२	३९	३८	३४	३७	३१	३१	३३	३२	३	३	१	१	१	०

पुण्यप्रकृति ४२—सातावेदनीय १, नरक विना आयु ३, मनुष्य-देव-गति २, पंचेन्द्रिय जाति १, शरीर ५, अगोपाग ३, प्रथम संहनन १, प्रथम संस्थान १, शुभ वर्ण आदि ४, मनुष्य-देव-आनुपूर्वी २, शुभ चाल १, उपघात विना प्रत्येक ७, त्रस दशक १०, उंच गोत्र; एवं ४२. सुखदायक अने शुभ है, इस वास्ते 'पुण्यप्रकृति' कहीये. पहिलेमे ३ टली—आहारकद्विक २, तीर्थंकर नाम १; एवं ३. दूजे एक आतापनाम टला. तीजे चार टली—तीन आयु ३, उद्योत १; एवं ४. चोथे तीन मिली—मनुष्य-देव-आयु २, जिननाम १. पाचमे ६ टली—मनुष्यत्रिक ३, प्रथम सहनन १, औदारिक १, तदुपांग १; एव ६. एवं छठे, सातमे आहारक १, तदुपाग १; एव दो मिली. आठमें एक देव-आयु टली. नवमें २९ टली;

१ नहि के सघी रीते। २ एकलो।

तीन रही—साता १, यश १, उंच गोत्र १. एवं दशमे. आगे एक सातावेदनीयका बंध. चौदमे गुणस्थानमे बंधका व्यवच्छेद है.

३०	पापप्रकृति ८२	८२	६७	४४	४४	४०	३६	३०	२८	२३	१४	०	०	०	०

पापप्रकृति ८२—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, असाता १, मोहकी २६, नरक-आयु १, नरक-तिर्यंच-गति २, जाति एकेन्द्रिय आदि ४, संहनन ५, संस्थान ५, अशुभ वर्ण आदि ४, नरक-तिर्यंच-आनुपूर्वी २, अशुभ चाल १, उपघात (आदि) स्थावर दशक १०, नीच गोत्र १, अंतराय ५; एवं ८२. अर्थ—दुःख भोगवे अथवा आत्माना आनंदरस शोषे ते 'पाप.' दूजेमे १५ टली—मिथ्यात्व १, हुंडक संस्थान १, छेवट्ठ संहनन १, नपुसक वेद १, जाति ४, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १, नरकत्रिक ३; एवं १५. तीजे २३ टली—अनंतानुबंधी ४, स्त्यानर्धित्रिक ३, दुभग १, दुःस्वर १, अनादेय १, संहनन ४ मध्यके, संस्थान ४ मध्यके, अशुभ चाल १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, तिर्यच-गति १, तिर्यच-आनुपूर्वी १; एवं २३. एवं चौथे पिण. पांचमे दूजी चौकडी ४ टली. छठे तीजी चौकडी ४ टली. सातमे ६ टली—अस्थिर १, अशुभ १, असाता १, अयश १, अरति १, शोक १; एवं ६. आठमे २ टली—निद्रा १, प्रचला १. नवमे ५ टली—वर्णचतुष्क ४, उपघात १. दशमे ९ टली—हास्य १, रति १, भय १, जुगुप्सा १, संज्वलनचतुष्क ४, पुरुषवेद १; एवं ९. ग्यारमे १४ टली—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५; एवं १४ टली, बंध नही.

३१	परावर्तिनी ९१	८९	७४	४७	४९	३९	३५	३१	३१	८	३	१	१	१	०

परावर्तिनी ९१—निद्रा ५, वेदनीय २, कषाय १६, हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, वेद ३, आयु ४, गति ४, जाति ५, औदारिक, वैक्रिय, आहारक शरीर ३, अंगोपाग ३, संहनन ६, संस्थान ६, आनुपूर्वी ४, विहायोगति २, आतप १, उद्योत १, त्रस १०, स्थावर १०, गोत्र २; एव ९१. अर्थ—'परावर्तिनी' ते कहीये जे अनेरी प्रकृतिनो बंध, उदय निवारीने अपना बंध, उदय दिखावे [ते परावर्तिनी] यतः (पंचसंग्रहे बन्धव्यद्वारे गा. ४२)—

"[1]विणिवारिय जा गच्छइ बंध उदयं व अण्णपगईए ।
सा हु परियत्तमाणी अणिवार(रे)ति अपरियत्ता[ए] ॥"

पहिलेमे २ टली—आहारक द्विक २. दूजेमे १५ टली—नरकत्रिक ३, जाति ४ पंचेन्द्रिय विना, छेवट्ठ सहनन १, हुडक संस्थान १, नपुसकवेद १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १, आतप १; एवं १५ नही. तीजेमे २७ टली—अनतानुबंधी ४, स्त्यानर्धित्रिक ३, तिर्यचत्रिक ३, देव-मनुष्य-आयु २, स्त्रीवेद १, दुभग १, दुःस्वर १, अनादेय १, संहनन ४ मध्यके, संस्थान ४ मध्यके, दुर्गमन १, नीच गोत्र १, उद्योत १; एव २७ टली. चोथेमे २ मिली—देव-आयु १, मनुष्य-आयु १. पांचमे १० टली—दूजी चौकडी ४, प्रथम

१ छाया—विनिवार्य या गच्छति बन्धमुदयं वाऽन्यप्रकृतेः ।
सा खलु परावर्तमाना अनिवारयन्ती अपरावर्तमाना ॥

संहनन १, औदारिकद्विक २, मनुष्यत्रिक ३; एवं १०. छठे ४ टली—तीजी चौकडी ४. सातमे ६ टली—अस्थिर १, अशुभ १, असाता १, अयश १, अरति १, शोक १; एवं ६ टली; आहारकद्विक २ मिले. आठमे एक देव-आयु टली. नवमे २२ टली, ८ रही (ता)का नाम—संज्वलनचतुष्क ४, पुरुषवेद १, साता १, यश १, उंच गोत्र १; एवं ८ रही. दशमे ५ टली, ३ रही (ता)का नाम—साता १, यश १, उंच गोत्र १; एवं ३ रही. ग्यारमे, बारमे, तेरमे एक सातावेदनीयका बंध मंतव्यम्—

३२	अपरावर्ति २९	२८	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	१४	१४	०	०	०	०

अपरावर्ति २९ लिख्यते—ज्ञानावरणीय ५, चक्षु आदि ४, भय १, जुगुप्सा १, मिथ्यात्व १, तैजस १, कार्मण १, वर्ण आदि ४, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, निर्माण १, उपघात १, अतराय ५; एवं २९. जे परनो बंध, उदय निवार्या विना आपणा बंध, उदय दिखलावे ते 'अपरावर्तिनी.' पहिलेमे एक तीर्थंकरनाम टल्या. दूजे तथा तीजे एक मिथ्यात्व टली. चौथेसे लेइ ८ मे ताई १ तीर्थंकरनाम मिल्या. नवमे तथा दशमे १४ टली, १४ रही—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५; एवं १४ रही. आगे बंध नही. इति एवं बंध अधिकार. अथ उदय अधिकार जानना—

३३	क्षेत्रविपाकी ४	४	३	०	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

क्षेत्रविपाकी चार—आनुपूर्वी ४. जिस क्षेत्रमे जावे तिहां वाट वहता उदय होइ ते 'क्षेत्रविपाकी,' "पुव्वी उदय वंके" इति वचनात्. आनुपूर्वी वक्रगतिमे उदय होइ.

३४	भवविपाकी ४	४	४	४	४	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१

भवविपाकी आयु ४—जिस भवमे उदय होइ तिहां ही रस देवे, नै तु भवांतरे इति.

३४	जीवविपाकी ७८	७५	७२	६४	६४	५५	४९	४६	४५	३९	३२	३२ ३०	३२ ३०	१७	११

जीवविपाकी ७८—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहे २८, गति ४, जाति ५, विहायोगति २, उच्छ्वास १, तीर्थंकर १, त्रस आदि त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग आदि ४, स्थावर १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, दुर्भग आदि ४, गोत्र २, अतराय ५; एव ७८. जीवने रस देवे पिण शरीर आदि पुद्गलने रस न देवे, तैसात् 'जीवविपाकी' नाम. पहिले ३ टली—सम्यक्त्वमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, जिननाम १. दूजे ३ टली—सूक्ष्मनाम १, अपर्याप्त १, मिथ्यात्वमोहनीय १; एवं ३. तीजे ९ टली—अनंतानुबंधी ४, एकेंद्री १, बेइंद्री १, तेंद्री १, चौरिंद्री १, स्थावर १; एव ९ मिश्रमोहनीय मिली. चौथे एक मिश्रमोहनीय टली, सम्यक्त्वमोहनीय मिली—पांचमे ९ टली—दूजी चौकडी ४, गति २,

१ मानवो। २ नहि के अन्य भवमां। ३ तेथी।

दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एवं ९. छठे ६ टली—तीजी चौकडी ४, तिर्यंच गति १, नीच गोत्र १; एवं ६ टली. सातमे ३ निद्रा टली. आठमे एक सम्यक्त्वमोहनीय टली. नवमे हास्य आदि ६ टली. दशमे ३ वेद, लोभ विना तीन संज्वलनकी; एवं ६ टली, ११ मे सज्वलनका लोभ टला. बारमे ३२ तो ग्यारमेवत्. अंतके द्विसमयेमे दो निद्रा टली. तेरमे १४ टली—ज्ञाना० ५, दर्शना० ४, अंतराय ५; एवं १४; तीर्थंकरनाम मिल्या. चौदमे ६ टली—एक तो वेदनीय साता वा असाता १, विहायोगति २, सुस्वर १, दुःस्वर १, उच्छ्वास १; एवं ६ टली; ११ रही—साता वा असाता १, मनुष्यगति १, पंचेन्द्रिय १, सुभग १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, यश १, तीर्थंकर १, उंच गोत्र; एवं ११.

३५	पुद्गलविपाकी ३६	३४	३२	३२	३२	३०	३०	३१	२६	२६	२६	२६	२४	२४	१०

पुद्गलविपाकी ३६—शरीर ५, अंगोपांग ३, संहनन ६, संस्थान ६, वर्ण आदि ४, पराघात १, आतप १, उद्द्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, प्रत्येक १, साधारण १, स्थिर १, शुभ १, अस्थिर १, अशुभ १; एवं ३६. पहिले २ टली—आहारकद्विक २. दूजे २ टली—आतप १, साधारण १. एवं तीजे, चौथे. पांचमे वैक्रियद्विक २. छठे १ टली—आहारक १; अने आहारकद्विक २ मिले. सातमे २ टली—आहारकद्विक २. आठमे ३ टली—अंतके ३ संहनन. एवं ११ मे ताइ. १२ मे २ टली—दूजा, तीजा संहनन. एवं तेरमे बारमेवत्. (अर्थ)—पुद्गलने रस देवे पिण जीवने नही.

३६	ज्ञानावरणीयके बंधस्थान	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०	०	०
३७	ज्ञानावरणीयके उदयस्थान १	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०
३८	ज्ञानावरणीयके सत्तास्थान १	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०

ज्ञानावरणीय कर्मना बंधस्थान १, पाच प्रकृतिना, एवं उदयस्थान १, सत्तास्थान १ पांच रूप.

३९	दर्शनावरणीयके बंधस्थान ३	९	९	६	६	६	६	६	६ ४	४	४	०	०	०	०

नवनो बंधस्थान प्रथम. दूजे गुणस्थानमे १. छका बंधस्थान तीजासे लेकर आठमे गुणस्थानके प्रथम भागसे होइ है छके बंधमे ३ टली—निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला १, स्त्यानर्धि १; एवं ३ टली. चारनो बंधस्थान अपूर्वकरणके दूजे भागथी लेकर दशमे ताइ है. चारके बंधस्थानमे २ प्रकृति टली—निद्रा १, प्रचला १. एव दर्शनावरणीयके बंधस्थान ९।६।४.

४०	दर्शनउदयस्थान २	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	० ०	० ०

चारका उदयस्थान होवे तो चक्षु आदि ४. जो पांचका उदयस्थान होवे तो तिहां निद्रा एक कोइ जिसका जिस गुणस्थानमे उदय है सो प्रक्षेपीये तो पांचका उदयस्थान.

४१	दर्शनसत्ता स्थान ३	९	९	९	९	९	९	९	९ ६	९ ६	९ ६	९ ६	६ ४	० ०	० ०

मिथ्यात्वसे लेकर उपशान्तमोह लगे नवकी सत्तानो एक स्थान. उपशमश्रेणि अपेक्षा अने क्षपकश्रेणि आश्री नवमे गुणस्थानके प्रथम भाग लगे नवनी सत्ता. नवमेके दूजे भागथी प्रारभी बारमेके छेहले दो समय लगे स्त्यानर्धि त्रिक क्षये ६ नी सत्तास्थान. बारमेके छेहले समय दो निद्रा क्षये ४ का सत्तास्थान ज्ञातव्यम्.

४२	वेदनीयके बंधस्थान १	साता वा अ साता	ए व	ए व	ए व	ए व	ए व	सा ता	ए वं	ए व	ए वं	ए वं	ए व	ए व	० ०

वेदनीयका बंधस्थान १—साता वा असाता. आपसमे विपर्य(यय) है. इस वास्ते बंधस्थान १ जानना.

४३	वेदनीयका उदयस्थान १	साता वा अ साता	ए वं	ए व	ए व	ए वं	ए व	ए व	ए वं	ए व	ए व	ए व	ए व	ए व	ए व

वेदनीयका उदयस्थान १—साता वा असाता. दोनो(का) समकालमे उदय नही, इस वास्ते एक स्थान.

४४	वेदनीयके सत्तास्थान २	१ वा १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १

वेदनीयके सत्तास्थान २ साता वा असाता. जो साता क्षय कीनी होइ तो असाताकी सत्ता; असाता क्षय करी होइ तो साताकी सत्ता; इस वास्ते दो सत्तास्थान ज्ञेयम्.

४५	मोहके बंध-स्थान १०	२२	२१	१७	१७	१३	९	९	९	५ ४ ३ २ १	०	०	०	०	०

मोहनीयके दश बंधस्थान; तत्र २२ नो बंध किम्? २८ माहेथी ६ काटे—सम्यक्त्व-मोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, वेद २, हास्ययुगल २ अथवा अरतियुगल २; इनमे (से) एक युगल लीजे; एवं ६ टली. २१ के बंधे मिथ्यात्व १ टली. १७ ने बंधे प्रथम चौंकडी ४ टली. १३ ने बंधे दूजे चौकडी ४ टली. ९ ने बंधस्थाने तीजी चौकडी ४ टली. ५ ने बंधे ४ टली—हास्य १, रति १, भय १, जुगुप्सा १; एवं ४. नवमेके पहिले भागे ५ बांधे; दूजे भागमे पुरुषवेद टला; तीजे भागे संज्वलनक्रोध टला; चौथे भागे संज्वलनमान टला; पांचमे भागे माया टली.

४६	मोहके उदय-स्थान ९	७ ८ ९ १०	७ ८ ९	७ ८ ९	६ ७ ८ १०	५ ६ ७ ८	४ ५ ६ ७	४ ५ ६ ७	४ ५ ६	२ १ १ १ १	१	०	०	०	०

उदयस्थानमे पश्चानुपूर्वी समजना. दसमे एक संज्वलन लोभनो उदय. एवं एक स्थान. नवमे संज्वलना एक कोइ उदय; एवं १. जो चार जगे एकेकका अंक लिख्या सो चार तरे(ह) उदय—क्रोध १ वा मान १ वा माया १ वा लोभ १. दोके उदयमे एक कोइ वेद घालीये तो २. अपूर्वकरणे हास्य १, रति १, घाले ४ का उदय. भय प्रक्षेपे ५ का उदय; जुगुप्सा प्रक्षेपे ६ का उदय, सातमे तथा छठे प्रत्याख्यानीया कोइ एक घाले सातका उदय; पांचमे अप्रत्याख्यानीया कोइ एक घाले ८ नो उदय; अविरति मिश्र गुणस्थाने अनंतानुबंधी एक कोइ घाले ९ नो उदय. मिथ्यात्वगुणस्थाने एक मिथ्यात्व घाले १० का उदय. एवं उदय-स्थान नव.

अथ सुगमताके वास्ते फिर लिखीये है—मिथ्यात्वगुणस्थानमे चार उदयस्थान. प्रथम सातका उदय—मिथ्यात्व १, कोइ अप्रत्याख्यान चारोंमें १, कोइ प्रत्याख्यान १, कोइ संज्व-लन १. कोइ किस वास्ते? एक चौकडीना क्रोध आदि वेदातां सघलाइ क्रोध वेदे क्रोध, एवं मान आदि वेदे मान; जातके सदृशपणे करी तीन वेद माहे एक कोइ वेद १, हास्य १, रति १ वा शोक १, अरति १ इनमे एक युगल लीजे; एवं ७. आठके उदयमे भय वा जुगुप्सा; अथवा अनंतानुबधी चारमे(से) एक इन तीनो माहेथी एक, सात पूर्वली; एवं ८. नवके उदयमे अनंतानुबंधी १, भय १ लीजे; अथवा अनंतानुबंधी १ जुगुप्सा १ लीजे; अथवा भय १, जुगुप्सा १ लीजे; एव ९. दशमे तीनो—अनतानुबधी १, भय १, जुगुप्सा १; ए तीनो सातमे घाले. दूजेमे सातका उदयमे चारों चौकडीका सजातीया एकेक; एवं ४; हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, इनमेसुं एक जुगल २, एक कोइ वेद १; एवं ७. आठमे भय १ वा जुगुप्सा १ घाले ८. भय १, जुगुप्सा १ दोनो घाले ९. एवं मिश्रे जानना. ६ नो उदय उपशमसम्यक्त्व वा क्षायिक सम्यक्त्वना धणीने है.
१, संज्वलन १, इनमेसु एकेक सजातीया ३, एक कोइ वेद १

भय १ वा जुगुप्सा १ वा सम्यक्त्वमोहनीय १ घाले ७. सम्यक्त्वमोह १, भय १ वा सम्यक्त्वमोह १, जुगुप्सा १ वा भय १, जुगुप्सा १ घाले ८; तीनो घाले ९. पांचमे गुणस्थाने प्रत्याख्यान १, संज्वलन १, एक कोइ वेद १, एक कोइ युगल २; एवं ५. भय १ वा जुगुप्सा १ वा सम्यक्त्वमोह १ घाले ६; भय १, वा जुगुप्सा १ वा भय १ सम्यक्त्वमोह १ वा जुगुप्सा १ सम्यक्त्वमोह १ घाले ७; तीनो घाले ८. छठे गुणस्थानमे संज्वलन १, एक कोइ वेद १, एक कोइ युगल २; एवं ४. क्षायिक तथा उपशमसम्यक्त्वना धणीने ४ का उदय; भय १, जुगुप्सा १ सम्यक्त्वमोहनीय पीछली तरे घालीये तो ५।६।७ का उदय होवे. छठे गुणस्थानवत् सातमा. आठमे नवमेका पहिले लिखाही है.

४७	मोहके सत्ता स्थान १५	२८ २७ २६	२८	२८ २७ २४	२८ २४ २३ २२ २१	२८ २४ २३ २२ २१	२८ २४ २३ २२ २१	२८ २४ २३ २२ २१	२८ २४ २१ १	२८।२४ २१।१३ १२।११ ५।४।३।२ १	२८ २४ २१ १	२८ २४ २१	०	०	०

मोहनीयके सत्तास्थान १५. सर्व सत्ता २८. सम्यक्त्नमोहनीय रहित २७, मिश्र रहित २६. ए छव्वीसनी सत्ता अभव्यने हुइ है. तथा २८ मे चार अनंतानुबंधी क्षये २४ नी सत्ता, मिथ्यात्व क्षये २३ नी सत्ता, मिश्रमोह क्षये २२ नी सत्ता, सम्यकत्वमोहनीय क्षये २१ नी सत्ता, दूजी, तीजी चौकडी क्षये १३ नी सत्ता, नपुसकवेद क्षये १२ नी सत्ता, स्त्रीवेद क्षये ११ नी सत्ता, हास्य आदि ६ क्षये ५ नी सत्ता, पुरुषवेद क्षये ४ नी सत्ता, सज्वलनक्रोध क्षये ३, मान क्षये २, माया क्षये १; एवं १५ सत्तास्थान गुणस्थान पर सुगम है.

४८	आयुना बंध स्थान १	१	१	०	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०
४९	उदयस्थान १	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
५०	सत्तास्थान १	१ घा २	१ घा २	ए व	ए व	ए व	ए घ	ए वं	ए व	ए व	ए घ	ए व	१	१	१

जहां ताइ पर भवनो आयु बाध्या नही तहां ताइ जौनसे आयुका उदय है तिसही की एक सत्ता १; पर भवना आयु वाध्या पीछे दोकी सत्ता. नरकआयु बांध्या छे तो भी ग्यारमा गुणस्थान आ जावे है; इस वास्ते चार आयुमे एक कोइकी सत्ता है.

५१	नामकर्मके बंध स्थान ८	२३।२५ २६।२८ २९।३०	२८ २९ ३०	२८ २९	२९ २८ ३०	२८ २९	२८ २९	२८ २९ ३० ३१	२८ २९ ३० ३१	१	१	०	०	०	०

नामकर्मके बंधस्थान ८. तिर्यंच-गति योग्य सामान्ये पांच बंधस्थान ते कौनसे? २३। २५।२६।२९।३०, ए पांच बंधस्थान, प्रथम एकेन्द्रिय योग्य तीन बंध स्थान २३।२५।२६. प्रथम तेवीस कहे छै—तिर्यच-गति १, तिर्यच-आनुपूर्वी १, एकेन्द्रिय जाति १, औदारिक १, तैजस १, कार्मण १, हुंड संस्थान १, वर्ण आदि ४, अगुरुलघु १, उपघात १, स्थावर १, सूक्ष्म १ वा बादर १ एकतरं, अपर्याप्त १, प्रत्येक साधारण १ एकतरं १, अस्थिर १, अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, निर्माण १; एवं २३ एकेन्द्रिय अपर्याप्त माहे जाणे(ने)-वाला मिथ्यात्वी हुइ ते बांधे. एहीमे पराघात १, उच्छ्वास १ सहित कीजे तो २५ होइ है. अपर्याप्ताकी जगे पर्याप्ता जानना. ए २५ का बंध जे मिथ्यात्वी पर्याप्त एकेन्द्रियमे जाणे-हारा बांधे; परं इतना विशेष स्थिर १ वा अस्थिर १, शुभ वा अशुभ, यश वा अपयश, इनमेसुं तीन कोइ ले लेनी. अथ २६ का बंध तेरां तो पहली तेवीसकी लेनी अने परघात १, उच्छ्वास १, आतप १ वा उद्योत १, बादर १, स्थावर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १ वा अस्थिर १, शुभ वा अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश वा यश १, निर्माण १; एवं २६. जो मिथ्यात्वी एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त माहे जाणेवाला है ते बांधे. हिवे बेइंद्रीने बंधस्थान तीन—२५।२९।३०. प्रथम २५—तिर्यच-गति १, तिर्यच-आनुपूर्वी १, बेइंद्री जाति १, उदीरी (औदारिक[1]) १, तैजस १, कार्मण १, हुंड संस्थान १, सेवार्त संहनन १, औदारिक अंगोपांग १, वर्ण आदि ४, अगुरुलघु १, उपघात १, त्रस १, बादर १, अपर्याप्त १, प्रत्येक १, अस्थिर १, अशुभ १ दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, निर्माण १; एवं २५. जे मिथ्यात्वी अपर्याप्त बेइंद्रीमे जाणेवाला है ते बाधे. २५ मे चार घाले २९. पराघात १, उच्छ्वास १, अशुभ चाल १, दुःस्वर १; एवं ४ घाले २५ मे २९ होइ. अने अपर्याप्तने ठामे पर्याप्त जानना अने स्थिर वा अस्थिर एक १, शुभ वा अशुभ एक १, यश वा अयश १; एवं २९. जे मिथ्यात्वी बेइंद्री पर्याप्ता माहे जाणेवाला है ते बांधे. तीसके बंधमे एक उद्योतनाम घाले ३०. एह पण उपर-वत् बेइंद्रीमे जाणेवाला बाधे. एव तेइंद्री, चौरिंद्री; नेवर[2] जाति न्यारी न्यारी कहनी. हिवे तिर्यंच पंचेंद्रीने तीन बंधस्थान—२५।२९।३०. पचीसका बंध बेइंद्रीवत्; विशेष जातिका. २९ का बंध—तिर्यच-गति १, तिर्यच-आनुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय जाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, छ संहननमे एक कोइ १, संस्थानमे छमे एक कोइ १, वर्ण आदि ४, अगुरु-लघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त, अप्रशस्त गतिमे एकतर १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर वा अस्थिर १, शुभ वा अशुभ १, सुभग वा दुर्भग १, सुस्वर वा दुःस्वर १, आदेय अनादेय एकतर १, यश वा अयश १, निर्माण १; एवं २९; जे मिथ्यात्वी पर्याप्त तिर्यच पंचेन्द्रियमे जाणेवाला बांधे अने जो २९ का सास्वादनमे बांधे तो हुंड, छेवट्ठ वर्जीने पांचा माहे एक कोइ लेना. ३० के बंधमे एक उद्योत नाम प्रक्षेपे ३०; जे मिथ्यात्वी तिर्यच पचेन्द्रिय पर्याप्तमे जाणेवाला बाधे. हिवै मनुष्यने तीन बंधस्थान—२५।२९।

१ येनाथी एक। २ विशेष।

३०. प्रथम पचीसने नंध वेइंद्रीने कह्या तीम जानना. मिथ्यात्वी मनुष्य अपर्याप्तमे जाणेवाला याधे; नवरं मनुष्य-गति १, मनुष्य-आनुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय जाति १. एकहनी(?) २९ का वंघ तीन प्रकारे है—एक तो मिथ्यात्वगुणस्थान आश्री, दूजा सास्वादन आश्री, तीजा मिश्र अविरति आश्री. मिथ्यात्व, सास्वादनमे २९ का नंध वेइंद्रीवत् जानना. मिश्र अविरतिका २९ वंध लिखीये है—मनुष्य-गति १, मनुष्य-आनुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय जाति १, औदारिक-द्विक २, तैजस १, कार्मण १, समचतुरस्र संस्थान १, वज्रऋषभनाराच संहनन १, वर्ण आदि ४, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त विहायोगति १, त्रस १, वादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर वा अस्थिर १, शुभ वा अशुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १ यश वा अयश १, निर्माण १; एवं २९. ए २९ मनुष्यगति योग्य तीर्थंकरनाम प्रक्षेपे ३०. एवं ४ मनुष्य पर्याप्ताने है. हिवै देवगति प्रयोग चार वधस्थान—२८।२९।३०।३१. देव-गति १, देव-आनुपूर्वी १, पचेन्द्रिय जाति १, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथम सस्थान १, वर्ण आदि चार ४, अगुरुलघु १, पराघात १, उपघात १, उच्छ्वास १, शुभ चाल १, त्रस १, वादर १, प्रत्येक १, पर्याप्त १, स्थिर वा अस्थिर १, शुभ वा अशुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, यश वा अयश १, निर्माण १; एव २८. एह २८ नो वध पहिलेसे छठे ताइ है. देवगतिके जाणेवाले आश्री तथा कोइ एक भंग अपेक्षा ७ मे, ८ मे गुणस्थाने है. एक तीर्थंकरनाम प्रक्षेपे २९ का नध देवगति योग्य चौथेसे आठमे ताइ ७।८ मे भग अपेक्षा तीर्थंकर रहित कीजे. आहारकद्विक २ मिले ३०. ते यथा—देव-गति १, देव-आनु-पूर्वी १, पंचेन्द्रिय १, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथम संस्थान १, वर्ण आदि ४, अगुरुलघु १, पराघात १, उपघात १, उच्छ्वास १, शुभ चाल १, त्रस १, नादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, यश १, निर्माण १; एवं ३०. सातमे, आठमे देवगति योग्य नाधे. तीर्थंकर नाम प्रक्षेपे ३१. सातमे, आठमे देवगति योग्य एक वाधे तो यशकीर्ति नवमे, दशमे तथा आठमे कोइ भागमे. इति नामकर्मस(णः) वन्धस्थानानि अष्टौ समाप्तानि.[1]

५२	नामकर्मके उद-यस्थान १२	२१।२४ २५।२६ २७।२८ २९ ३० ३१	२१।२४ २५।२६ २९।३० ३१	२९ ३० ३१	२१।२५ २६।२७ २८।२९ ३०।३१	२५।२७ २८।२९ ३०।३१	२५ २७ २८ २९ ३०	२९ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	२० २६ २८ ३०	२१ २७ २९ ३१	८ ९

नामकर्मके उदयस्थान १२. ते यथा—२०।२१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। ८।९; एव १२. प्रथम एकेन्द्रियने उदयस्थान पाच—ते कौनसे? २१।२४।२५।२६।२७. प्रथम २१ उदय कहीये है. नामकर्मकी ध्रुवोदयी १२—तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १,

[1] आ प्रमाणे नामकर्मना आठ बंधस्थानो समाप्त थयां

अस्थिर १, स्थिर १, शुभ १, अशुभ १, वर्ण आदि ४, निर्माण १; एवं १२; तिर्यंच-गति १, तिर्यंच-आनुपूर्वी १, स्थावर १, एकेन्द्रिय जाति १, सूक्ष्म १, बादर १, पर्याप्त वा अपर्याप्त १, दुर्भग १, अनादेय १, यश वा अयश १, एवं ९. बारां उपरली एवं २१ प्रकृति. एकेन्द्रिय विग्रहगतिमे होय तदा २१ का उदय होइ. हिवे शरीर कीधे २४ का उदय होइ ते किम? औदारिक शरीर १, हुंड संस्थान १, उपघात १, प्रत्येक वा साधारण १, ए चार प्रक्षेपे, तिर्यगानुपूर्वी १ काढे २४ का उदय एकेन्द्रिये शरीरपर्याप्ति पूरी कीधा पीछे. २४ मे पराघात प्रक्षेपे २५ का उदय. बादर वायुकाय वैक्रिय करतां शरीरपर्याप्ति पूरी हुइ. एही २५ का उदय औदारिकने ठामे वैक्रिय घालीये. पचवीसमे उच्छ्वास घाले २६ होइ अथवा शरीरपर्याप्ति पूरी हुइ जो कर उच्छ्वासनो उदय नही हुइ तो उच्छ्वास काढीने आतप तथा उद्योत एक लीजे; एवं २६. जौनसी छव्वीसमे उच्छ्वास है तिन छव्वीसमे आतप तथा उद्योत एक प्रक्षेपे २७. अथ बेइंद्रीने उदयस्थान ६, ते यथा—२१।२६।२८।२९।३०।३१. प्रथम २१ का उदय, बारां तो ध्रुवोदयी १२ नामकर्मकी अने तिर्यंच-गति १, तिर्यंच-आनुपूर्वी १, बेइंद्री जाति १, त्रसनाम १, बादर १, पर्याप्त वा अपर्याप्त १, दुर्भग १, अनादेय १, यश वा अयश १, एवं सर्व २१. बेइंद्री वक्रगति करे तद २१ का उदय. अथ शरीर कीधे २६ का उदय—औदारिक शरीर १, तदुपांग १, हुंड संस्थान १, सेवार्त संहनन १, उपघात १, प्रत्येक १. एवं ६ प्रक्षेपे २१ मे अने तिर्यगानुपूर्वी १ काढे २६ रही. इन २६ मे अशुभ चाल १, पराघात १ ए २ घाले २८. इनमे उच्छ्वास १ घाले २९ [जो कर उच्छ्वासनो उदय न हूया हो तो उद्योत घाले २९ तथा शरीरपर्याप्ति हूइ है] तथा उच्छ्वासवाली २९ मे दुःस्वर तथा सुस्वर घाले ३० श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति पूरी हुइ अने स्वरनो उदय नहीं हूया तो उद्योत घाले ३० होइ. २९ मे सुस्वर १, उद्योत १, अथवा दुःस्वर १, उद्योत १ घाले ३१ होय. एवं तेंद्रीने ६ स्थान, एवं चौरिंद्रीने; नवरं जाति आपापणी लेनी. अथ पंचेन्द्रिय तिर्यंचने उदयस्थान ६, ते यथा—२१।२६।२८।२९।३०।३१; एवं ६. बारां तो ध्रुवोदयी १२ पीछेकी अने तिर्यंच-गति १, तिर्यगानुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय १, त्रसनाम १, बादर १, पर्याप्त वा अपर्याप्त १, सुभग वा दुर्भग १, आदेय वा अनादेय १, यश वा अयश १, बारां पीछली; एवं २१. तिर्यंच विग्रहगतिमे होइ तद २१ (का) उदय. शरीर कर्या २१ माहेथी आनुपूर्वी १ काढी औदारिकद्विक २, षट् संस्थानमेसुं एक कोइ संस्थान १, छ संहननमे एक कोइ संहनन १. उपघात १, प्रत्येक १, ए ६ घाले २६ होइ. हिवै शरीर पर्याप्त हूओ तदा पराघात १, प्रशस्त १, अप्रशस्त १ ए दोनोमे एक १ घाले २८ होइ. हिवै २८ मे उच्छ्वास घाले २९ अथवा शरीरपर्याप्ति पूरी हूइ अने उच्छ्वासनो उदय न हूया होइ तो उद्योत १ घाले २९. अने २९ मे स्वर घाले ३०; उद्योत घाले ३१. हिवै तिर्यंच पचेन्द्रिय वैक्रिय करतां उदयस्थान ५, ते यथा—२५।२७।२८।२९।३०. प्रथम २५ का

वर्णन—तिर्यचने २१ कही है ते माहेथी एक आनुपूर्वी काढे २० रही अने वैक्रियद्विक २, प्रथम संस्थान १, उपघात १, प्रत्येक १, ए ५ प्रक्षेपे २५. हिवै शरीरपर्याप्ति पूरी हूये प्रशस्त गति १, पराघात १ ए २ प्रक्षेपे २७. उच्छ्वास १ घाले २८. अथवा शरीरपर्याप्ति पूरी है अने उच्छ्वासनो उदय नही हूया तो उद्योत घाले २८. भाषापर्याप्ति पूरी हूये उच्छ्वास सहित २८, सुस्वर घाले २९; अथवा उच्छ्वासनी पर्याप्ति (पूरी) हूइ अने स्वरनो उदय न हूया तो उद्योत १ घाले २९, सुस्वर घाले पिण २९, उद्योत घाले ३० होय है. अथ सामान्ये मनुष्यने उदयस्थान ५, ते यथा—२१।२६।२८।२९।३०. हिवै २१।२६।२८ तीनो तिर्यंच पचेन्द्रियवत्; नवरं मनुष्य-गति १, मनुष्य-आनुपूर्वी १ ए २ कहनी. हिवै २९ का उदय उद्योत सहित होवे. उच्छ्वास १, सुस्वर तथा दुःस्वर ए २ अठावीसमे घाले ३०. तथा २९ होइ इहां उद्योत वैक्रिय तथा आहारककी अपेक्षा है; अन्यथा तो नही हिवै मनुष्य वैक्रिय करे तदा उदयस्थान ५ है, ते यथा—२५।२७।२८।२९।३०. प्रथम २५ कहु—मनुष्यगति १, पचेन्द्रिय जाति १, वैक्रियद्विक २, प्रथम संस्थान १, उपघात १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, सुभग वा दुर्भग १, आदेय तथा (वा ?) अनादेय १, यश वा अयश १, एवं १३; अने बारा ध्रुवोदयी, एव २५. देशवृती(विरति) अने संयतने वैक्रिय करतां सर्व प्रकृति प्रशस्त जाननी. शरीरपर्याप्ति थये पराघात १, प्रशस्त चाल १, ए २ घाले २७; उच्छ्वास १ घाले २८. अथवा संयत उत्तर वैक्रिय करता शरीरपर्याप्ति कीधा जो उच्छ्वासनो उदय नही हूया तो उद्योत १ घाले २८. भाषापर्याप्ति पूरी कीधे उच्छ्वास १, सुस्वर १ ए २ सत्तावीसमे घाले २९. संयतने जो स्वरनो उदय नही तो उद्योत घाले २९. सुस्वर सहित २९, उद्योत १ घाले ३०. हिवै आहारकशरीर करतां साधुने उदयस्थान ५, ते यथा—२५।२७।२८।२९। ३०. प्रथम २५ नो कहु. पां(पी)छे मनुष्यगते २१ कही ते माहेथी आनुपूर्वी १ काढी पाच घाले—आहारकद्विक २, प्रथम संस्थान १, उपघात १, प्रत्येक १, ए ५ प्रक्षेपे २५, पिण इहां दुर्भग, अनादेय, अयश नही; प्रशस्त तीनो जानने. शरीरपर्याप्ति कीधा पराघात १, प्रशस्त खगति १, ए २ घाले २७; उच्छ्वास घाले २८; अथवा उच्छ्वासना उदय नही तो उद्योत १ घाले २८. भाषापर्याप्ति हुया उच्छ्वास सहित २८, सुस्वर सहित २९, अथवा उच्छ्वासपर्याप्ति हुइ है अने स्वरनो उदय नही तो उद्योत घाले २९. स्वर सहित जो २९ तो उद्योत घाले ३०. हिवै केवलीने १० उदयस्थान, ते यथा—२०।२१।२६।२७।२८।२९।३०।३१। ९।८. प्रथम २० का कहु—मनुष्यगति १, पचेन्द्रिय जाति १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग १, आदेय १, यश १, एवं ८; अने बारां १२ ध्रुवोदयी, एवं २०. इह उदय अतीर्थकर केवली समुद्घात करता त्रीजे, चौथे, पांचमे समय केवल कार्मण काययोगे वर्ततां एह उदयस्थान होता है. तीर्थंकरनाम प्रक्षेपे २१. तथा वीसमे औदारिकद्विक २, छ सस्थानेमे एक कोइक सस्थान १, प्रथम संहनन १, उपघात १, प्रत्येक १; एवं ६ प्रक्षेपे २६. अतीर्थकर केवली दूजे, छठे, सातमे समय औदारिक मिश्र योगे वर्तता हूइ तद २६ का उदय हूइ,

सो तीर्थंकरनाम सहित २७, तीर्थंकर केवली औदारिक मिश्र योगे वर्तता ए भंग होइ तथा २६ मे पराघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त वा अप्रशस्त खगति १, सुखर तथा (वा) दुःखर १, ए चार प्रक्षेपे ३० होइ है. अतीर्थंकर केवली सयोगी पहिले आठमे समये औदारिक काययोगे वर्तता उदय जानना. ३० मे तीर्थंकरनाम प्रक्षेपे ३१. ए सयोगी केवली तीर्थंकर औदारिक योगे वर्तता हुइ. सयोगी केवली वचनयोग रूंधे तदा ३० का उदय. उच्छ्वास रूंधे तद २९ का उदय. हिवे सामान्य केवलीने पाछे ३० का उदय कह्या है तेमेसूं वचनयोग रूंधे २९, उच्छ्वास रूंधे २८. हिवे ९ का उदय कहीये है—मनुष्यगति १, पंचेन्द्रिय १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग १, आदेय १, यश १, तीर्थंकर १; एवं ९. चौदमेके छेहले समय तीर्थंकरने ए उदयस्थान; सामान्य केवलीने तीर्थंकरनाम रहित ८ का उदय. हिवे देवताने उदयस्थान ६, ते ए—२१।२५।२७।२८।२९।३०. देव-गति १, देव-आनुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग तथा दुर्भग १, आदेय तथा अनादेय १, यश वा अयश १, ए नव अने बारां ध्रुवोदयी; एवं २१. ए विग्रहगतिमे २१ का उदय.

अथ अपर्याप्तपणे शरीर करतां वैक्रियद्विक २, उपघात १, प्रत्येक १, समचतुरस्र संस्थान १, ए ५ प्रक्षेपे, देव-आनुपूर्वी काढे २५ का उदय. शरीरपर्याप्ति पूरी हुयां पराघात १, प्रशस्त गति १, ए २ घाले २७. इन २७ मे उच्छ्वास घाले २८. जो कर उच्छ्वासनो उदय नही तो उद्द्योत घाले २८. भाषापर्याप्ति पूरी हुया स्वर घाले २९. जोकर स्वरनो उद्द्योत नही हूया तो उद्द्योत घाले २९. देवताने दुःस्वरनो उदय नही है. उत्तर वैक्रिय करतां देवताके उद्द्योत लाभे, २८ मे स्वर सहित २९, उद्द्योत घाले ३०. हिवे नारकीने उदयस्थान ५, ते यथा—२१।२५।२७।२८।२९. नरक-गति १, नरक-आनुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एवं ९; अने बारां ध्रुवोदयी, एवं २१. अपर्याप्तपणे शरीरपर्या(प्ति) करतां वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय अंगोपांग १, हुंड संस्थान १, उपघात १, प्रत्येक १, ए ५ प्रक्षेपे, नरक-आनुपूर्वी १ काढे २५. पराघात १, अप्रशस्त खगति १ घाले २७, उच्छ्वास घाले २८. भाषापर्याप्ति पूरी हुया दुःस्वर घाले २९. गुणस्थान पर एकेन्द्रिय आदि देइ विचार लेना. एह उदय अधिकार गहन है सो भूल चूक सप्ततिसूत्रसे शुद्ध कर लेना. मेरी समजमे जितना आया है सोइ तितना ही लिख्या है. शुद्ध अशुद्ध शोध लेना.

५३	नामकर्मके सत्तास्थान १२	९२।८९ ८८।८६ ८०।७८	९२ ८८	९० ८८	९३ ९२ ८९ ८८	९३ ९२ ८९ ८८	९३ ९२ ८९ ८८	९३ ९२ ८९ ८८	९३ ९२ ८९ ८८	९३ ८९ ८० ७६	९२ ८८ ७९ ७५	९३ ९२ ८९ ८८	९३ ९२ ८९ ८८	८० ७९ ७६ ७५	८० ७९ ७६ ७५ ९।८

नामकर्मके सत्तास्थान १२, ते ए—९३।९२।८९।८८।८६।८०।७९।७८।७६।७५। ९।८; एव १२. सर्व सत्ता तो ९३. तीर्थंकर टले ९२, तथा ९३ माहेथी आहारक शरीर १

आहारक अंगोपांग १, आहारक संघातन १, आहारक बंधन १, ए ४ रहित कीयां ८९ की सत्ता. तीर्थंकर टले ८८. नरक गति १, नरक-आनुपूर्वी १, ए २ टले ८६. देव-गति १, देव-आनुपूर्वी १, वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय अंगोपांग १, वैक्रिय संघातन १, वैक्रिय बंधन १; एवं ६ टले ८०. नरकगति योग्य ८० मे ६ घालीये ८६ कीजे—नरक-गति १, नरक-आनुपूर्वी, वैक्रिय चतुष्क ४, एवं ८६ नी सत्ता; अथवा ८० मे ६ घाले—देव-गति १, देव-आनुपूर्वी १, वैक्रिय ४; एव ६ घाले ८६ देवगति योग्य जाननी. तथा ८० मे मनुष्य गति १, मनुष्य-आनुपूर्वी १, ए २ टले ७८ नी सत्ता. ए पूर्वोक्त सात ठाम संसारी जीवने न हूइ, पिण [क्षपक श्रेणे नही] क्षपक श्रेणे ए सत्ता जाणवी. ९३ माहेथी १३ रहित कीजे, ते—नरकद्विक २, तिर्यचद्विक २, एकेन्द्रिय आदि चार जाति ४, स्थावर १, आतप १, उद्द्योत १, सूक्ष्म १, साधारण १; एवं १३ टली ८० ए सत्ता क्षपक श्रेणे. तीर्थंकर टाले ७९. ८९ मे तेरा एही टले ७६ की सत्ता. क्षपके ८८ माहेथी तेरे टले ७५ की सत्ता क्षपकने. हिवै नवनी सत्ता—मनुष्यगति १, पचेन्द्रिय १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग १, आदेय १, यश १, तीर्थंकर १; एव ९. अयोगी गुणस्थानके छेहले समय तीर्थंकरने ए सत्ता; सामान्य केवलीने तीर्थंकरनाम विना ८ नी सत्ता. गुणस्थान उपर सुगम है.

५४	गोत्रका बंध-स्थान २	उ वा नी	उ वा नी	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	०	०	०	०
५५	गो० उदयस्थान १	,,	→	ए	व	म्	,,	,,	,,	,,	,,	उ	उ	उ	उं
	गो० सत्तास्थान २	उ १ नी १	—	—	—	→	ए	व	म्	—	—	—	—	→	११ २१
५७	अंतरायका बंध स्थान १	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०	०	०
५८	अ० उदयस्थान १	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०
५९	अ० सत्तास्थान १	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०
६०	ज्ञानावरणीय भंग २	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१प	१ दू	१ दू	०	०

ज्ञानावरणीयके भंग २. बंध ५ का उदय ५, सत्ता पाच; १ बंध नही, उदय ५, सत्ता ५; एव २ भंग.

६१	दर्शनावरणीयके भंग ११	१ २ एव २	१ २	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	३ ८	३ ४ ५ ६	५ ६ ७	५ ६ ७	८ ९	१० ११	० ० ० ०	० ० ० ०

अंकसंख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	०
बंध	९	९	६	६	४	४	४	०	०	०	०	०
उदय	४	५	४	५	४	५	४	४	५	४	४	०
सत्ता	९	९	९	९	९	९	६	६	९	६	४	०

एह उपरले यंत्रमे दर्शनावरणीयके ११ भंग हैं, सोइ विचार लेना सुगम है.

६२	वेदनीयके भंग गुणस्थान उपर ८	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	५ ६ ७।८

अंक	भंगरचना अंक	१	२	३	४	५	६	७	८
०	बंध	असाता	असाता	साता	साता	०	०	०	०
०	उदय	,,	साता	असाता	,,	असाता	साता	असाता	साता
०	सत्ता	असाता साता	⟶	ए	व	म्	⟶	,,	,,

एह वेदनीयका यंत्र अयोगीके द्विचरम समये पाचमा ६ भंग चरम समये साता क्षय ७ मा असाता क्षय ८ मा.

देवताना यंत्र ५

अंक	१	२	३	४	५
बंध	०	म	ति	०	०
उदय	दे	दे	दे	दे	दे
सत्ता	दे	दे म	दे ति	दे म	दे ति

तिर्यंच-यंत्र ९

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	दे	म	ति	न	०	०	०	०
ति	ति	ति	ति	ति	ति	ति	ति	ति
ति	ति दे	ति म	ति ति	ति न	ति दे	ति म	ति ति	ति न

मनुष्य-यंत्र ९

६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०	दे	म	ति	न	०	०	०	०
म	म	म	म	म	म	म	म	म
म	म दे	म म	म ति	म न	म दे	म म	म ति	म न

नरक-यंत्र ५

२४	२५	२६	२७	२८
०	म	ति	०	०
न	न	न	न	न
न	न म	न ति	न म	न ति

६३	आयुके भंग २८	२८	१।२ ३।४ ५।६ ७।८ ९।११ १२।१३ १४।१५ १६।१७ १८।२० २१।२२ २३।२४ २५।२६ २७।२८ एव २६, दो नही १०।१९	२ ३ ७ ८ ९ १० १६ १७ १८ १९ २५ २६ एवं १२ नहीं, शेष १६ है	३ ८ ९ १० १७ १८ २९ २६ एव ८ नहीं, शेष २० है	७ ११ १२ १३ १४ १५ १६ २० २१ २२ २३ एव १२ है	६ ७ ११ १२ १३ १४ एव ६ है	६ ७ ११ १२ १३ १४ एव ६ भंग है	६ ११ ए २	६ ११ ए २	६ ११ ए २	६ १ ए २	६ एह १	६ एक	६ एक है

गोत्रके सात भंग है—सो पहिला तेजस्काय वायुकायमे; दूजा मिथ्यात्व सास्वादनमे; तीजा मिथ्यात्व सास्वादनमे; चौथा १मे, २मे, ३मे, ४मे, ५मे; पाचमा भंग एकसे दस तक गुणस्थानोमे, छठा उपशमथी अयोगी द्विचरम समय; ७ मा अयोगीके अत समयमे कहो. अथ सुगमताके वास्ते यंत्र लिख्यते—

अकसख्या	१	२	३	४	५	६	७
बंध	नीच	नीच	नीच	उच	उच	०	०
उदय	,,	,,	उच	,,	,,	उच	उंच
सत्ता	,,	नीच उच	नीच उंच	नीच उच	नीच उच	नीच उव	,,

६४	गोत्रके भग	१ २,३ ४,५	२,३ ४,५	४ ५	४ ५	४ ५	५	५	५	५	५	६	६	६	६ ७
६५	अतराभंग	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	अंत १	अंतका १	०	०
६६	एक जीव रज्जु स्पर्श	१४ रज्जु	१२ रज्जु	८ रज्जु	८ रज्जु	६ रज्जु	७ रज्जु देश ऊन	→	ए	घ	म्		→	१४	७ रज्जु देश ऊन

दूजे गुणस्थानवाला बारां रज्जु स्पर्शे तिसकी युक्ति लिख्यते—'स्वयभूरमण' समुद्रके पश्चिमका मत्स्य सास्वादनवाला मरीने सातमी नरककी पृथ्वीमे अथवा घनोदधिमे समश्रेणि जाइने पीछे तिरछा पूर्वक् जावे साढे तीन रज्जु, पीछे कूणेमे जावे अढाइ रज्जु, एव १२ रज्जु होइ घनोदधिमे वा पृथ्वीमे उपजे. तथा चोक्त पञ्चसङ्ग्रहे (द्वितीये बन्धकद्वारे गा० ३२)—गाथा—

"[1]छट्टाए (छट्ठीणं ?) नेरइउ(ओ) सासणभावेण एइ तिरिमणु[लो]ए ।
लोगतनिक्खुडेसु जतते (तिन्नि) सासणगुणट्ठा(त्था) ॥"

१ छाया—षष्ठ्या नैरयिक सास्वादनभावेन एति तिर्यग्मनुष्ये(षु) ।
लोकान्तनिष्कुटेषु यान्त्य ये सास्वादनगुणस्था ॥

इस गाथासे जैसें १२ रज्जु स्पर्शे तैसें विचार लेना. मैने पंचसंग्रहका अर्थ नही देखा; अपनी विचारसे लिखा है. विचारसे लिखना यथायोग्य होय अने नही भी होइ, इस वास्ते पंडितें शुद्ध विचारके जैसें होय तैसें लिख देना, मेरे लिखनेका कुछ प्रयोजन नही समजना; अर्थमे जैसा लिखा होइ सो लिख देना.

त्रीजे चोथे गुणस्थानवाला ८ रज्जु स्पर्शे तिसकी युक्ति (पंचसङ्ग्रहका द्वितीय बन्धकद्वारकी) इस (२१ मी) गाथासे समज लेनाः—

गाथा—"[1]सहमारंतियदेवा णारयणेहेण जंति तइयभुवं ।
निज्जंति अच्चुय जा अच्चुयदेवेण इयरसुरा ॥"

बारमे देवलोकका देवता मिश्रवाला वा चौथे गुणस्थानवाला नारकीके नेह कही चौथी नरककी पृथ्वी लगे जाये. तीन रज्जु तो नीचेके हूये अने ५ रज्जु बारमा देवलोक है; एवं ८ रज्जु. त्रीजी नरक तो सारी अने चौथीके नरकावास ताइं एवं ३ रज्जु; आगे पंचसंग्रहके अर्थ मुजब लिख देना. मेरी समजमें आया तैसे लिख्या है. श्रावक बारमे देवलोकके कूणेमे उपजे, त्रसनाडीके अभ्यंतर तिस आश्री ६ रज्जु. सर्वत्र पंचसंग्रहसे शंका दूर कर लेनी.

६७	सञ्ज्ञी असञ्ज्ञी द्वार	स अस	स असं	स	सं	सं	सं	स	सं	स	स	सं	सं	०	०
६८	शाश्वते गुणस्थान	शा	अशा	अशा	शा	शा	शा	शा	अशा	अशा	अशा	अशा	अशा	शा	अशा

सातमा गुणस्थान जैन मतके शास्त्रमे किहां ही अशाश्वत नही कह्या. अने जो कोइ कहै है सो इ भूल है, उक्तं पंचसंग्रहे (द्वितीये बन्धकद्वारे गा० ६)—

"[2]मिच्छा अविरयदेसा पमत्त अपमत्तया सजोगी य ।
सव्वद्धं" इति वचनात् अशाश्वता नही है. इति अल विस्तरे(ण).

६९	जघन्य स्थिति द्वार	अंतर्मुहूर्त	१ समय	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	१ समय	→	प	च	मू	→	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
७०	उत्कृष्ट स्थिति द्वार	अणा अप १ अणा। स २ सा सा देश ऊन अर्ध पुद्गल	६ आवलिका	"	३३ सागर झझेरी एक	देश ऊन पूर्व कोड	अंतर्मुहूर्त	→	प	च	मू		→	देश ऊन पूर्व कोड	"

१ सहस्रारान्तिकदेवा नारकस्नेहेन यान्ति तृतीयभुवम् ।
नीयन्तेऽच्युत यावत् अच्युतदेवेनेतरसुराः ॥

२ मिथ्याविरतदेशाः प्रमत्ताप्रमत्तकौ सयोगी च । सर्वाद्धम्

इहां छठे गुणस्थानकी उत्कृष्ट स्थिति अंतर्मुहूर्तकी कही है, सो प्रमत्त गुणस्थान अंतर्मुहूर्त ही रहै है. अने जे श्रीभगवतीजीमे प्रमत्त संयतिके कालकी पूछा करी है तिहां गुणस्थान आश्री नही है. तिहां तो प्रमत्तका सर्व काल एकठा कर्या देश ऊन कोड पूर्व कह्या है. पणि छठे गुणस्थानकी स्थिति नही कही, छठे गुणस्थानककी स्थिति अंतर्मुहूर्तकी कही है. उक्तं पंचसंग्रहे (गा० ७८)—

गाथा—"[1]समया अंतमहु(मुहू) पमत्त अ(म)पमत्तयं भयंति मुणी।
देसूणा पुव्वकोडीओ (देसूणपुव्वकोडिं) अण्णोणं चिट्ठेहिं (चिट्ठंति) भयंता ॥"

अर्थ—समयसे लेइ अंतर्मुहूर्त ताइं प्रमत्त अप्रमत्तपणा भजे-सेवे मुनि देश ऊन पूर्व कोड आपसमे दोनो ही गुणस्थानमे रहै, [2]एतावता छठे सातमे दोनोहीमे देश ऊन पूर्व कोड रहै, परतु एकले छठे अथवा एकले सातमे देश ऊन पूर्व कोड नही रहै. इति [3]गाथार्थः. शंका होय तो भगवतीजीकी टीकामे कह्या है सो देख लेना. अने मूल पाठमे देश ऊन पूर्व कोडकी कही है सो प्रमत्तका सर्व काल लेकर कही है. परतु छठे गुण आश्री स्थिति भगवतीजीमे नही कही तथा सातमे गुणस्थानकी स्थिति जघन्य एक समयकी कही है. अने श्रीभगवतीजीमे सर्व अप्रमत्तके काल आश्री जघन्य तो अतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट देश ऊन पूर्व कोडकी. तिसका न्याय चूर्णिकारे ऐसा कह्या है—सातमे गुणस्थानसे लेइ कर उपशातमोह लगे सर्व गुणस्थान अप्रमत्त कहीये. तिन सर्वका काल जघन्य एकठा करीये ते जघन्य अप्रमत्तका काल लाभे. इस अपेक्षा जघन्य स्थिति है, पिण सातमेकी अपेक्षा नही. तथा टीकाकारने मते अप्रमत्त गुणस्थानवाला अंतर्मुहूर्त पहिला काल न करे, इस वास्ते अंतर्मुहूर्तकी स्थिति है. आगे तत्त्व [4]केवली विदंति, सूत्राशय गभीर है.

७१	प्रमाण द्वार	अनते	पल्योपमके असख्य भागे	प	व	म्	सख्यात	——	—>	प	व	म्	——	——	—>
७२	लोकस्य (द)र्शन द्वार	सर्व लोक	लोकके असख्यातमे भाग	—	—	—>	प	व	म्	—	—	—	—>	सर्व लोक	दूजे घव

१ समयादन्तर्मुहूर्तं प्रमत्ततामप्रमत्ततां भजन्ति मुनय ।
देशोनपूर्वकोटिमन्योन्य तिष्ठन्ति भजमाना ॥

२ एटला पूरतु। ३ गाथानो अर्थ। ४ सर्वज्ञ जाणे छे।

७३	मार्गणा द्वार गुणस्थानका आवे	२।३।४ ५।६	४।५ ६	१।४ ५।६	१।२ ५।६ ७।८ ९।१०।११	१ ४ ६	७	१।४ ५।६ ८	७ ९	१० ८	११ ९	१०	१०	१२	१३
७४	गुणस्थानमे जावे	३।४। ५।७	१	१ ४	१।२ ३।५ ७	१।२ ३।४ ७	१।२ ३।४ ५।७	४ ६ ८	७ ९ ४	८ १० ४	९ ११।१२ ४	१० ४	१३	१४	मोक्षमे

पहिले गुणस्थानकी गत(ति) मार्गणामे ३।४।५।७; एह गति तो सादि मिथ्यात्वी आश्री है; अने जिस जीवने पहिलाही मिथ्यात्व गुण० छोड्या है तिसकी गत ४।५।७ मे होइ, औरमे नही.

७५	परिषह द्वार २२	०	०	०	०	०	२२	२२	२२	२२	१४	१४	१४	११	११
७६	आत्मद्वार ८	६ ज्ञान चारित्र विना	६ ज्ञान चारित्र विना	७ चारित्र विना	७	७	८	८	८	८	८	७	७	७	६

दूजे तथा त्रीजे गुणस्थानमे ज्ञान अज्ञानकी चर्चा उपयोग द्वारसे समज लेनी.

७७	आहारी १	आहारी है	१ है	—	—	—	→	ए	व	मू	—	—	—	→	० नही
७८	अनाहारी १	१ है	,,	१ नही	१ है	१ नही	—	→	ए	व	मू	—	→	१ है	१ है
७९	शरीरद्वार ५	४	४	३	४	४	५	५	३	३	३	३	३	३	३
८०	नियंठाद्वार २६	०	०	०	०	०	४	३	१	१	१	१ नि	१ नि	१ स्ना	१ स्ना

सातमे गुणस्थान अलब्धोपजीवी है, एतले लब्धि न फोरवे, [1]अप्रमत्तत्वात्.

८१	संयतद्वार ५	०	०	०	०	०	३	३	२	२	१	१	१	१	१
८२	सम्यक्त्व-द्वार ५	०	सास्वादन	०	४	४	४	४	२	२	२	२	१	१	१
८३	वेदद्वार ३	३	३	३	३	३	३	३	३	३ तथा नही	उपक्षी	उपशम	क्षय	क्षय	क्षय
८४	संज्ञाद्वार ४	४	४	४	४	४	४ तथा नो संज्ञा	नो	नो	नो	नो	नो	नो	नो	नो

[1] अप्रमत्तपणु होवाथी।

८५	गति ४ मे जावे	४	३ नरक विना	०	मनुष्य देव	देव	——	→	ए	वम्	—	→	०	०	मोक्ष
८६	भंग सन्निपातके ६	१ त्रिक छठो	१ एवम्	१ एवम्	तीन भंग	→	ए	वम्	→	३	३	४	२	१	१
८७	भापक अभापक २	२	२	१ भा	२	१	१	१	१	१	१	१	१	२	१ अभापक
८८	पढम अपढम	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	पढम	एधम्	एवम्
८९	चरम अचरम	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	चरम	चरम	चरम
९०	भव्य अभव्य	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
९१	आयुबंध करे	४	३	०	२	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०
९२	परिणामकी हान वृद्धि ६ स्थान	६ स्थान	——	→	ए	व	म्	——	→	तुल्य	ए	व	म्	→	०

बंधी बंधति बंधिस्सति १, बंधी बंधति न बंधिस्सति २, बंधी न बंधति बंधिस्सति ३, बंधी न बंधति न बंधिस्सति ४;[1] ए चार भंग सर्व कर्म आश्री सर्व गुणस्थानमे विचार लेना.

९३	५ कर्म आश्री भंग चारमे	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	३	४	४	४
९४	वेदनीय आश्री	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	४
९५	मोह आश्री भंग	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	३ ४	३	४	४	४
९६	आयु आश्री भंग	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	३ ४	१ २ ३ ४	१ ३ ४	१ ३ ४	१ ३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	४	४	४
९७	स्वलिंग, अन्यलिंग, गृहिलिंग, ३ द्रव्ये	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

१ जुओ भगवती (श० ८, उ० ८, सू० ३४१)।

९८	संघयण ६	६	६	६	६	६	६	६	३	३	३	३	१	१	१
९९	संस्थान ६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
१००	ईरियावहिया भंग ८	३,७ ८	३ ७	३ ७	३ ७	३ ७	३ ७	३ ७	३ ७	३ ७	३ ७	१ ५	२	२	४
१०१	सराग वीत-राग २	सराग	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स उ प शा	वी	वी	वी
१०२	दृष्टिद्वार ३	मि	स	मि श्रि	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स
१०३	पर्याप्त अपर्याप्त २	२	२	१	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१०४	प्रत्याख्यानी अप्रत्याख्यानी २	अप्र	अप्र	अ प्र	अ प्र	प्र अ प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र
१०५	सूक्ष्म बादर २	२	बादर	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१०६	त्रस स्थावर २	त्र० स्था०	त्र० स्था०	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र
१०७	गति कोन सीमे ?	४	४	४	४	म ति	म	म	म	म	म	म	म	म	म
१०८	परत अपरत ससारी	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१

प्रथम गुणस्थानमे परत संसार हो जावे है, मेघकुमारके हाथीके भववत् ज्ञेयं.

१०९	गुणस्थानमे काल करे	काल करे	करे	करे नहीं	क	क	क	क	क	क	क	क	न	न	क
११०	परभव साथ जाये	जाये	जाये	न	जाये	न	न	न	न	न	न	न	न	न	न
१११	इन्द्रियद्वार ५	१।२।३।४।५	१।२।३ ४।५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०
११२	गति जाये देवलोक	२१	१२	०	१२	१२	२१	२६	०	०	०	०	०	०	०

११३	अवगाहना द्वार	जघन्य अंगुलके असंख्यातमे भाग, उत्कृष्ट–हजार योजन झझेरी	ए	व	म्	एवम्	ज–१ हाथ झझेरी, उ ५०० धनुष्य	एवम्	ज–२ हाथ उ–५०० धनुष्य	→		एव	म्	→	
११४	द्रव्यप्रमाण संख्याद्वार	अनंते	असंख्याते	एवम्	एवम्	एवम्	पृथक् हजार क्रोड								
११५	काल स्थिति छता	सर्वाद्धा	ज–१ समय, उ–पल्यके असंख्यातमे भाग	एवम्	सर्वाद्धा	सर्वाद्धा	सर्वाद्धा	सर्वाद्धा	ज–१ समय, उ अंत मुंहूर्त	एवम्	एवम्	एवम्	७। ८ समय	सर्वाद्धा	अंत-मुंहूर्त ७ समय
११६	निरंतर गुणस्थानमे आवे	पल्योपमके असंख्यातमे भाग ताइ	एवम्	एवम्	आवलिका के असंख्यातमे भाग ताइ	एवम्	८ समय	→			ए	वम्	→		
११७	एक जीव आश्री अंतरा	ज–अंतर्मुहूर्त, उ–६६ सागर झझेरा	ज–अंत मुंहूर्त, उ अर्ध पुद्गल देश ऊन	→			ए	व	म्	→				०	०
११८	घणा जीव आश्री अंतर	नही	ज–१ समय, उ–पल्यका असंख्य भाग	एवम्	नही	नही	नही	नही	उपशम श्रेणि पृथक् वर्ष क्षपके ६ मास	एवम्	एवम्	पृथक् वर्ष	६ मास	नही	६ मास
११९	उतरे चडे	चडे	उतरे	२	२	२	२	२	२	२	२	उतरे	चडे	चडे	चडे

१२०	चडत पडत गति	दूहर गति	पाणी नीधी २	हलका उलंघिका	४	३ हलका विना	३ दूहर विना	ए	व	म्	४	पाणी नी उलं	हलका	हलका	०
१२१	सिद्ध जीव केते गुणस्थान स्पर्शे ?	नियमा	भजना	भ	नि	भ	नि	नि	नि	नि	नि	भ	नि	नि	नि
१२२	सस्पर्शे गुणस्थान सामान्येन	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२	१३	१४
१२३	नियमा संस्पर्शे	१	३	३	२	३	४	३	५	६	७	८	८	९	१०
१२४	भजना स्पर्शे	१०	८	८	९	८	७	८	६	५	४	३	४	४	४
१२५	भव केते करे ?	अनंते	अनंते	अनते	असंख्याते	असंख्याते	७ ८	७ ८	३	३	३	२	१	१	१
१२६	विरहद्वार	नहीं	ज-१ समय, उ-अंतर्मुहूर्त	एवम्	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं	ज-१ समय, उ पृथक्त्व वर्ष वा ६ मास	एवम्	एवम्	ज-१ समय, उ-पृथक्त्व वर्ष	ज १ स उ-६ मास	नहीं	ज-१ समय उ-६ मास
१२७	वीर्य ३	बाल्यवीर्य	बाल	बाल	बाल	बाल पंडित	पं	पं	पं	प	पं	पं	पं	पं	०
१२८	समोहिया असमोहिया २	२	२	असमो	२	२	२	१	१	१	१	१	१	२	१
१२९	विग्रहगति ऋजुगति २	२	२	०	२	२	२	२	२	२	२	२	०	०	ऋजु
१३०	तीर्थमे अतीर्थमे	अतीर्थ	एवम्	एवम्	२	ती	२	२	२	२	२	ती	२	२	२
१३१	लिंग स्त्री आदि तीन	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
१३२	प्राण १०	४।६।७।८।९।१०	४।६।७।८।९।१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	५	१

१३३	आहारदिग् ६ ना	३।४।५।६	३।४।५।६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	०
१३४	ओज रोम कवल आहार ३	३	३	२	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
१३५	सचित्त अचित्त मिश्र आहार ३	३	३	३	३	३	३	३	१ अचित्त	पवम्	पवम्	१	१	१	०
१३६	समवसरण ४	३	३	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१३७	जघन्य स्थिति बांधे ८ कर्मकी	आयु जघन्य	०	०	०	०	०	०	०	मोहजघ	५ कर्म	वेदनीय	वेदनीय	वेदनीय	०
१३८	मध्यम बंध आठ कर्म	८	८	७	८	८	८	७	७	६	०	०	०	०	०
१३९	उत्कृष्ट बंध ८ कर्म आश्री	८	०	०	०	०	०	आयु	०	०	०	०	०	०	०
१४०	मूल कर्मका बंध	७ ८	७ ८	७	७ ८	७ ८	७ ८	७ ८	७	७	६	१	१	१	०
१४१	मूल उदय	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	७	७	४	४
१४२	मूल उदीरणा	७ ८	७ ८	८	७ ८	७ ८	७ ८	६	६	६	६ ५	५	५ २	२	०
१४३	मूल सत्ता	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	७	४	४

त्रीजे गुणस्थानमे ८ कर्मकी उदीरणा इस वास्ते कही है, उदीरणा ८ कर्मकी तब ताइ होइ है जब ताइ एक आवलिका प्रमाण उदय काल प्रकृतिका रह्या होइ अने जिवारे आवलिके माहे प्रवेश करे तिवारे उदीरणा नही होय अने तीजा गुणस्थान आवलि प्रमाण आयु शेप रहेसे पहेलेही आवे है; आवलि प्रमाण आयु शेप रहै तीजा गुणस्थान ही आवे है, इस वास्ते ८ की उदीरणा सत्यं. ऐसे ही दशमे गुणस्थानमे मोहकी उदीरणा टली आवलिमे प्रवेश करे. ऐसेही १२ मे ५ की तथा २ वेदनीय उपर इह संज्ञा न जाननी. इति अलं विस्तरेण.

१४४	उत्तर प्रकृतिका १२० बंध	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९ ५८	५८ ५६ २६	२२ १८	१७	१	१	१	०

पहिलेमे तीन टली—आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एवं ३. दूजेमे १६ टली—मिथ्यात्व १, हुंड संस्थान १, नपुंसकवेद १, सेवार्त संहनन १, एकेन्द्रिय १, स्थावर १, आतप १, सूक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १. विकल ३, नरकत्रिक ३; एवं १६. त्रीजे २७ टली—अनंतानुबंधी ४, स्त्यानर्धित्रिक ३, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, संस्थान चार मध्यके, संहनन चार मध्यके, दुर्गमन १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, तिर्यंचत्रिक ३, उद्द्योत १, मनुष्य-आयु १, देव आयु १; एवं २७. चौथेमे तीन मिली—तीर्थंकर १, मनुष्य देव-आयु २; एवं ३. पांचमे १० टली—अप्रत्याख्यान ४, प्रथम संहनन १, औदारिकद्विक २, मनुष्यत्रिक ३; एवं १०. छठे ४ टली—प्रत्याख्यान ४. सातमे ६ टली—अस्थिर १, अशुभ १, असाता १, अयश १, अरति १, शोक १; एवं ६. दो मिली—आहारकद्विक २ अने जो आयु १ टले तो ५८. आठमेके प्रथम भागमे एवं ५८, दूजे भागमे निद्रा २ दो टले ५६, तीजे भागमे ३० टली—तीर्थंकर १, निर्माण १, सद्गमन १, पंचेन्द्रिय १, तैजस १, कार्मण १, आहारकद्विक २, समचतुरस्र १, वैक्रियद्विक २, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १; एवं ३०. नवमेके प्रथम भागमे ४ टली—हास्य १, रति १, भय १, जुगुप्सा १; एवं ४; नवमेके दूजे भागमे पुरुषवेद १, संज्वलनत्रिक ३; एवं ४. दसमे एक संज्वलननो लोभ टल्यो. ग्यारमेमे १६ टली—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५, यश १, उंच गोत्र १; एवं १६. आगे १ साता बांधे. १४ मे नही.

१४५	उत्तर प्रकृतिना उदय १२२	११७	१११	१००	१०४	८७	८१	७६	७२	६६	६०	५९	५७ ५५	४२	१२

पहिले ५ टली—आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; मिश्र मोहनीय १, सम्यक्त्व-मोहनीय १; एवं ५ टली. दूजे ६ टली—मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १; एवं ५, नरक-आनुपूर्वी १; एवं ६ टली. तीजेमे १२ टली—अनंतानुबंधी ४, एकेन्द्रिय आदि जाति ४, स्थावर १, आनुपूर्वी ३; एवं १२. अने चौथे मिश्र मोह १ टली अने ५ मिली—आनुपूर्वी ४, सम्यक्त्व-मोह १, पांचमे १७ टली—अप्रत्याख्यान ४, वैक्रियद्विक २, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, मनुष्य आनुपूर्वी १, तिर्यगानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एवं १७. छठे ८ टली—प्रत्याख्यान ४, तिर्यंच-आयु १, तिर्यंच गति १, उद्द्योत १, नीच गोत्र १; एवं ८ टली अने आहारकद्विक मिले. सातमे ५ टली—स्त्यानर्द्धित्रिक

रकद्विक २; एवं ५. आठमे ४ टली–सम्यक्त्वमोहनीय १, अंतके संहनन ३; एवं ४. नवमे ६ टली–हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, भय १, जुगुप्सा १; एव ६. दसमे ६ टली–वेद ३, सज्वलनना क्रोध १, मान १, माया १; एवं ६. ग्यारमे संज्वलना लोभ टल्या. वारमे २ संहनन टले; द्विचरम समय निद्रा १, प्रचला १ टली. तेरमे १४ टली–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अतराय ५; एवं १४ टली; तीर्थकरनाम मिला १. चौदमे ३० टली–असाता वा साता १, वज्रऋषभनाराच १, निर्माण १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, सुस्वर १, दुःस्वर १, प्रशस्त खगति १, अप्रशस्त खगति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, प्रत्येक १; एवं ३०. चौदमे १२ रही तिनका नाम—साता वा असाता १, मनुष्यगति १, पंचेंद्री १, सुभग १, त्रस १, वादर १, पर्याप्त १, आदेय १, यश १, तीर्थंकर १, मनुष्य-आयु १, उंच गोत्र; ए १४.

१४६	उत्तर प्रकृतिका उदीरणा १२२	११७	१११	१००	१०४	९७	८१	७३	६९	६३	५७	५६	५४ / ५२	३९	०

पहिलेसे छठे ताइ उदयवत् उदीरणा. सातमेसे तेरमे ताइ तीन टली–वेदनीय २, मनुष्य-आयु १, और सर्व उदयवत् उदीरणा जाननी. चौदमे उदीरणा नास्ति इत्यलम् ।

१४७	उत्तर प्रकृति सत्ता १४८														
१४८	आकर्ष गुणस्थान कितनी विरीया आवे ?[1]	ज १, उ पृथक्सय, घणे भवे ज २, उ असंख्य	ज उ १ घणे भवे आश्री ज २, उ ५ वार	ज १, उ पृथक्सय, घणे भव ज २, उ असंख्य	प व मू	प व मू	ज १ उ संख्याती वार	प व मू	ज १ उ ४ घणे ज २ उ ९	पव	मू	ज १, उ ४, घणे ज २, उ ५ वार	प क वार	प क घार	प क धार
१४९	कर्मनिर्जरा	०	असंख्य गुणी	——	—	→	प	व	मू	——	—	——	—	——	→
१५०	हीयमान वर्धमान २ अवस्थित	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३		वर्ध	वर्ध अवस्थि	वर्धमान
१५१	स्थानक	असंख्य लोक प्रमाण	——	—→	प	व	मू	—	→	अंतर्मुहूर्त सम प्रमाण	प व मू	१	१	१	१

१ नथी । २ आ कोष्टक तेमज तेना स्पष्टीकरण माटे मूल प्रतिमा जग्या रखायेली छे, परंतु तेनो उपयोग ग्रंथकारे कर्यो नथी ।

१५२	श्रेणि उपशम क्षपक	०	०	०	०	०	०	०	२	२	२	१ उपशम	१ क्षपक	१	१
१५३	कल्प ५	०	०	०	०	०	५	५	४	४	४	४	४	४	४
१५४	चवके दंडके जावे	२४	२१	०	१६	१	१	१	१	१	१	१	०	०	मोक्षमे

१५५	पर्याप्ति ६	४ ६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१ वा ६
१५६	अनुव्रत १२	०	०	०	०	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१५७	महाव्रत ५	०	०	०	०	०	५	५	५	५	५	५	५	५	५
१५८	सम्यक्त्व-सामायिक १, श्रुतसामायिक २, देशव्रतीसामायिक ३ सर्वव्रतीसामायिक ४	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	१ १ १ २	१ १ १ ३	१ १ १ ३	१ १ १ २	१ १ १ ३	१ १ १ ३	१ १ १ ३	१ १ १ ३	१ १ १ ३	१ १ १ २	१ १ १ ३
१५९	मोहना बंध भग २१	२२ ने बंधे भंग ६	२१ ने बंधे भंग ४	१७ ने बंधे भंग २	१७ ने बंधे भंग २	१३ ने बंधे भंग २	९ ने बंधे भंग २	९ ने बंधे भंग २	९ ने बंधे भंग २	५ ने १, ४ ने १, ३ ने १, २ ने १, १ ने बंधे १	०	०	०	०	०

बावीसको बंधस्थाने पीछै लिख्या है । अथ भंगस्वरूप—हास्य रति वा अरति शोक २ ए दो भंग पुरुषवेद साथ, एव २ स्त्रीवेद साथ; एवं २ भंग नपुंसकवेद संघाते; एवं २२ ने बंधे भंग ६. इकीसेके बंधे भंग ४—अरति शोक पुरुषवेद १, हास्य रति पुरुषवेदसे बंधे २; एव पुरुषवेद काढीने स्त्रीवेदसुं दो भंग करणा; एवं ४. नपुसकवेदका बंध सास्वादने नही. १७ ने बधे भंग २–हास्य रति पुरुषवेद १, अरति शोक पुरुषवेद २; एवं २; स्त्रीका बंध नही. तेराके बंधमे ए ही दो भग जानने. छठे गुणस्थानमे ९ के बंधमे ए ही दो भंग; एव ९ के बंधमे, आगे पिण ए ही दो भग अने नवमेमे ५ ने बंधे एक भंग १,४ ने बंधे १ भंग, ३ ने बंधे भग १, २ ने बंधे भंग १, अने १ ने बंधे भग १. यद्यपि सातमे आठमे गुणस्थानमे अरति १ शोकका बंध नही है तथापि भंगनी अपेक्षा सप्ततिसूत्रमे बंध कह्या है इति अलम्—

१६०	मोहके उदय-भग ९९०	२४ ७२ ७२ २४	२४ ४८ २४	२४ ४८ २४	२४ ७२ ७२ २४	२४ ७२ ७२ २४	२४ ७२ ७२ २४	२४ ४८ २४	१२ ४	१	०	०	०	०	०

उदयभंग रचना. प्रथम गुणस्थानमे २२ ने बंधे सात आदि ७।८।९।१० उदयस्थान ४; इनका स्वरूप पीछे उदयस्थानमे लिख्या है सो जान लेना. इहां सातने उदयमे भंग २४ ते किम? हास्य रति पुरुषवेद १ अरति शोक पुरुषवेद २; एवं दो २; ए ही दो स्त्रीवेदसुं २; ए ही दो नपुंसकवेदसुं, २; एव ६ हुये; ए ही ६ क्रोधसुं; एवं ६ मानसु; एवं ६ मायासे, एव ६ लोभसे; एवं सर्व २४ हुये. हिवे आठने उदय तीन चौवीसी ३ ते किम? अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, मिथ्यात्व १, संज्वलन १, एक कोइ वेद १, हास्य १, रति १; अथवा एहने ठामे अरति शोक इणमे भय घाले एतले आठने उदय एक चौवीसी; इम भय काढी जुगुप्सा घाले आठमे दूजी चौवीसी; जुगुप्सा काढी अनंतानुबंधीयासुं तीजी चौवीसी; एव ८ ने उदय ७२ भंग. हिवे नवने उदय तीन चौवीसी ते किम? सातमे भय जुगुप्सा घाले ९. ए नवने उदय भय जुगुप्सा संघाते पीछे कह्या ते छ विकल्प क्रोध, मान, माया, लोभसे एक चौवीसी १; अथवा जुगुप्सा काढे भय, अनंतानुबंधीसुं नवने उदय दूजी चौवीसी २, अथवा भय काढी जुगुप्सा, अनंतानुबंधीयासुं तीजी चउवीसी ३; एवं भंग ७२. हिवै सातमे भय, जुगुप्सा, अनंतानुबंधी १ घाले १० ने उदय एक चौवीसी. पुरुषवेद आदिकसु. हिवै २१ ने बंधे सात आदि ७।८।९ लगे तीन उदयना ठाम. सातनो उदय अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, ए चार (?) ए कोइ एक कोइ वेद १, हास्य रति १, अरति शोक ए दोनोमे एक कोइ; एव ७. एही पाछला छ विकल्प क्रोध १, मान १, माया १ लोभसुं एक चउवीसी १; सातमे भय घाले आठनो उदय, भय संघाते एक चौवीसी १; भय काढी जुगुप्सासु एक चौवीसी; एवं भंग ४८. सातमे भय, जुगुप्सा समकाले घाले नवनो उदय. नवने उदय एक चौवीसी. ए सास्वादन गुणस्थानमे जाणवा. प्रथम सत्तराने बंधे मिश्र गुणस्थानमे तीन उदयना ठाम; तिहां चौवीसी चार ते किम? अप्रत्याख्यान १, प्रत्यख्यान १, सज्वलन १, एक कोइ वेद १, कोइ एक जुगल मिश्र; एवं ७ नो उदय. ध्रुव पाछला ६ विकल्प, क्रोध १, मान १, माया १, लोभसुं छ गुणा एतले एक चौवीसी. सातमे भय घाले एतले आठने उदय पीछली परे एक चौवीसी १; भय काढी जुगुप्सासे आठने उदय दूजी चौवीसी २; सात मध्ये भय, जुगुप्सा समकाले घाले नवने उदय पाछली तरे एक चौवीसी १; एव मिश्र गुणस्थाने ४ चउवीसी. हवै अविरतिने ६।७।८।९ ए चार उदयठाम उपशम अथवा क्षायिक सम्यक्त्वना धणीने ए ६ ना उदय हुये अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, सञ्ज्वलन १, एक कोइ वेद १, एक कोइ युगल २, एव ६ ने उदय एक चउवीसी. ए छ मांहे भय घाले सातने उदय एक चउवीसी १; भय काढी जुगुप्सासे सातने उदय दूजी चउवीसी २; जुगुप्सा काढी वेदक सम्यक्त्वसु सातने उदय त्रीजी चौवीसी ३; अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, संज्वलन १, वेद १, युगल ६; ए छ माहे भय, जुगुप्सा घाले एतले आठने उदय एक चौवीसी १; जुगुप्सा काढी भय, वेदक, सम्यक्त्वसुं आठने उदय दूजी चउवीसी २; भय काढी जुगुप्सा वेदकसु आठने उदय तीजी चौवीसी ३, अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, सञ्ज्वलन १, वेद १, युगल २,

अजीव द्रव्य	द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी	भावथी	गुणथी
काल ४	अनंता	मनुष्यलोक-प्रमाण	,, ,,	वर्ण आदि ५ नही	वर्तन(ना) गुण कालस्य
पुद्गलास्तिकाय ५	अनत	लोकप्रमाण	,, ,,	वर्ण, गध, रस, स्पर्श है	ग्रहणलक्षण

(८१) अनुयोगद्वार(सू० ७४,८०–८९)से पुद्गलयंत्रम्

	आनुपूर्वा १	अनानुपूर्वी २	अवक्तव्य ३
सत्पदप्ररूपणा	नियमात् अस्ति	अस्ति	अस्ति
द्रव्यपरिमाण	अनते	अनंते	अनते
क्षेत्र	सख्य भाग १, असख्य भाग २ घणे, संख्ये घणे, असंख्ये सर्व लोक	असंख्यमे भाग लोकके	असंख्यमे
स्पर्शना	क्षेत्रवत् पाच बोल जानने, वर स्पर्शना कहनी	असंख्यमे भाग	असंख्यमे भाग
काल	एक द्रव्य आश्री असंख्य काल, नाना आश्री सर्वाद्धा	→ एवम्	→
अंतर	एक द्रव्य आश्री अनत काल, नाना आश्री सर्वाद्धा	एक० असंख्य, नाना सर्वाद्धा	एक अनंत काल; नाना सर्वाद्धा
भाग	शेष द्रव्यके घणे असंख्य भाग अधिक	शेष द्रव्य० असख्य भाग हीन घणे	→
भाव	सादि पारिणामिक भावे है	→ एवम्	→
अल्पबहुत्व द्रव्यार्थे	४ असंख्येय गुण	२ विशेष अधिक	१ स्तोक
,, प्रदेशार्थे	५ अनंत गुणे	अप्रदेशा स्तोक २	विशेष अधिक ३
स्वरूप	त्रिप्रदेशी ४।५।६।७।८।९ यावत् अनंत	परमाणु	द्विप्रदेशी

जिस स्कंधमे आदि, अत पाइये, मध्य पाइये सो 'स्कंध आनुपूर्वी' कहीये १. जिस स्कंधमे तीन बोलमेसु कोइ बी न पाइये सो 'अनानुपूर्वी' कहीये. जिस स्कधमे आदि, अंत पाइये पिण मध्य न पाइये सो 'अवक्तव्य' कहीये.

अथ अग्रे लोकस्वरूप व्यवहार नयके मतसे लिखिये है; निश्चयमे तो अनियत प्रमाण है.

(८२) लोकके प्रतर और प्रदेश

४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
४							अ	ना	दि	अ	न	त	श्रे	य							४
४																					४
४																					४
२	अ	ना	दि	स	प	र्य	व	सि	त	२	२		ना	दि	अ	प	र्य	व	सि	त	२
२										२	२										२
१				ह					४			४					श्र				१
१				ह्र					४			४					ग्र				१
३				ल्ट			४	०					०	८			ल्ली				३
३				ह्			४							८			थ				३
२				ऊ		२									१०		ग				२
२						२									१०						२
२						२									१०						२
३							४	०					०	८							३
१			ह						४			४						श्र			१
१			ह			ह्र			४			४			ग्र			ग्र			१
२			ऊ			ते				२	२				ल्ली			ल्ली			२
२			ल्ट			ह				२	२				ग्र			श्र			२
१			ह्			ह्र			४			४			ग			ग			१
१			ऊ			ल्ट			४			४			ग्रै			ग			१
४						ह्र		२					६		श्र						४
४				ह				२					६								४
३				ह			४							८			ग्र				३
३				ह्			४							८			ल्ली				३
२				ल्ट		२									१०		श्र				२
२				ह्र		२									१०		ग				२
२						२									१०		ग				२
२						२									१०						२
१					४											१२					१
१					४											१२					१
४				२													१४				४
४				२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१४				४
४																					४
४																					४
४																					४
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४

सातमी नरकके आकाशके तले अर्थात् नीचे दोय प्रतर आपसमे सदृश अने सात राज (रज्जु)-के लबे चौडे है तिसके ऊपर एक प्रदेश हीन दोय प्रतर है. तिनके ऊपर एक प्रदेश हीन चार प्रतर सरीपे है तिनके ऊपर एक प्रदेश हीन दोय प्रतर सरीपे है, तिन के ऊपर एक प्रदेश हीन दो प्रतर है. ऐसे ही १ प्रदेश हीन फेर दोय प्रतर है. एक प्रदेश हीन फेर दोय प्रतर है एवं सर्व १४ प्रतर चढेसे बारा प्रदेशकी हान होइ, इसी तरे चवदे प्रतर चढे फेर बारा प्रदेश घटे. ऐसा सात रज्जु ताइ चवदे प्रतर चढे बारे घटालेने अने ऊर्ध्व लोकमे सात प्रदेश चढ चारकी हान जाननी चारकी आदिमे वृद्धि उपर हान जाणनी अने जे दूजी तरफ दो आदिकके अंक लिखे है सो प्रतरके प्रदेशाकी सख्याके कृतयुग्म अने द्वापरयुग्म ज्ञेयं इति अलम्

(८३)

लोकश्रेणि			अलोकश्रेणि		
	०	ऊर्ध्वी	तिरछी	तिरछी	ऊर्ध्वी
सख्य, असख्य, अनत	द्रव्यार्थे	असंख्य	असख्य	अनंत	अनत
सख्य असंख्य, अनत	प्रदेशार्थे		"	"	"
युग्म ४	द्रव्यार्थे	सख्य, असख्य	कृतयुग्म	कृतयुग्म	कृतयुग्म
" "	प्रदेशार्थे	कृतयुग्म	४	४।३।२।१	४।३।२।१
चतुर्भगी	श्रेणि अपेक्षा	४ २ सादि सात	सादि सात	अण अप अण स ३ सा अप ३	अण अप अण स स अप स सप ४

(८७) श्रीभगवती दशमे शते प्रथम उद्देशके दस दिग् स्वरूपयत्रम्

०	इन्द्रा पूर्व दिग्	आग्नि कूण	यमा दक्षिण	नैऋत्य कूण	वरुणा पश्चिम	वायव्य कूण	सोमा उत्तर	ईशान कूण	तमा अधो	विमला ऊर्ध्व दिग
उद्भव उत्पत्ति	रुचकसे	———	———	——→	ए	व	म	———	———	——→
सस्थान	जूया	मुक्तावल	जूया	मुक्ता०	जूया	मुक्ता०	जूया	मुक्ता०	गोस्तन	गोस्तन
लोक देश	एक दशमे	बहु	१	बहु	१	बहु	१	बहु	१	१
आयाम लबी	३॥ रज्जु ३॥ " ॥	——→	ए	व	म	३ रज्जु ३॥ " ॥ "	३॥ रज्जु ३॥ " ॥ "	३॥ रज्जु ३॥ " ॥ "	७ झझेरी	प्रदेश ऊन सात राज
द्रव्यार्थे	सर्व स्तोक १	१	१	१	१	१	१	१	१	१
प्रदेशार्थे	असख्य गुणी	असख्य ४	असख्य ५	असख्य ४	असख्य ५	असंख्य ४	असख्य ५	असंख्य ४	विशेष ३	असख्य २

(८४) लोकका स्वरूप
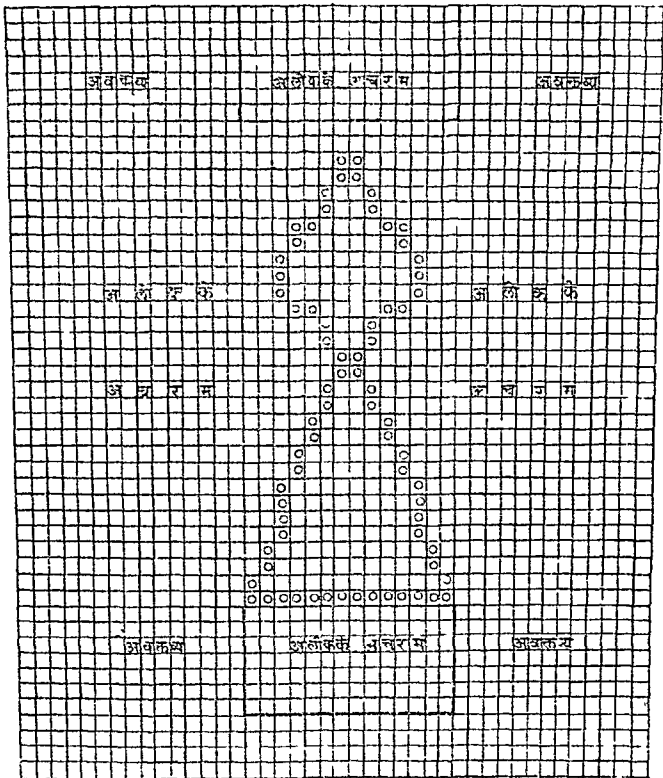
अथ लोकस्वरूप विचार मुख २ भूमि १४ विश्लेष कीने १२ रहे एव १४ प्रदेशके चढे बारा प्रदेशकी हान होय है उदाहरण यथा-आदिमे चौदा प्रदेश है अने अतमे २ प्रदेश है सो चौदाका नाम 'भूमि' है अने दोका नाम 'मुख' है सो मुख २ चढे पार्श्वी पार

१२ रहे इसका नाम 'विष्कंभ' है इस कारण ते चवदें प्रदेशके चढे ते बारा घटे अने ऊर्ध्व लोकमे मुख २, भूमि १०, विष्कंभ ८ रहे. एवं ७ प्रदेश चढे ४ की वृद्धि अने ऊपर हाणा. एवं सर्वत्र ज्ञेयम् कोइ कहे है जो एकेक प्रदेश लोक घट्या है, सो अशुद्ध है किस वास्ते? अलोककी ऊंची श्रेणिमे तीन युग्म कहे है श्री भगवतीजीमे– कृतयुग्म, द्वापरयुग्म, त्र्योज, एवं ३. अने जो प्रदेश प्रदेशकी हान वृद्ध माने चारो ही युग्म हो जावे है, इस वास्ते द्वे द्वे चार द्वे द्वे द्वेके चढनेसे एकेक प्रदेशकी हान होती है. एवं सर्वत्र ज्ञेयम्

अथ श्रीपन्नवणाजीमे १० मे पदे १२ बोलकी अल्पबहुत्व लिख्यते–सर्वसे थोडा लोकका एकेक अचरम खंड १, लोकके चरम खंड असंख्य गुणे, तेभ्यः अलोकके चरम खंड विशेषाधिक ३, तेभ्यः लोकालोकके चरमाचरम खंड विशेषाधिक ४, तेभ्यः लोकके चरम प्रदेश असंख्यात गुणे ५, तेभ्यः अलोकके चरम प्रदेश विशेषाधिक ६, तेभ्यः लोकके अचरम प्रदेश असंख्य गुणे ७, तेभ्यः अलोकके अचरम प्रदेश अनंत गुणे ८, तेभ्यः लोक अलोकके चरमाचरम प्रदेश विशेषाधिक ९, तेभ्यः सर्व द्रव्य विशेषाधिक १०, ते किम? जीव, पुद्गल, काल अनंते अनते है, इस वास्ते,तेभ्यः सर्व प्रदेश अनंत गुणे १७ (?), अवक्तव्य प्रदेश मिले लोक स्वरूपम जो पीले रग करे है चार खंड तिस थकी सर्व पर्याय अनंत गुणी ? प्रति प्रदेशे अनंती है; एव १२. इह स्वरूप १०।११ मे बोलका केवली जाणे पिण बुद्धि समजमे आया तैसे लिख्या है, आगे जो बहुश्रुत कहे सो सत्य; सूत्राशय अति गंभीर है
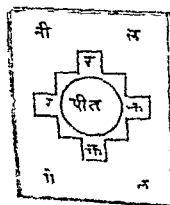
अथ चरमाचरम स्वरूप लिख्यते—गोल अने पीला तो लोकका अचरम खड है अने जे लाल रंग के आठ खंड है तिनकू लोकके 'निखुड' कहीये है तिनकू ही लोकके 'चरम खंड' कहीये है. तिनके ऊपर बारो खड नीले 'अलोकके चरम खड' कहीये है. तिन बारां खडसे परे जो अलोक है सो सर्व अलोकका एक अचरम खंड है इन चारोके प्रदेशाकू 'चरम तथा अचरम' कहीये है एतावता चरम खडाके सर्व 'चरम प्रदेश' अचरम खडके 'अचरम प्रदेश' जानने. असत् कल्पना करके आठ अने बारा खड लोकालोकके कहे है परमार्थथी असंख्य निखुड जानने अने ए जो निखुड है सो (?) . . .

१ हाथी।

श्रेणि सर्व नही है तिसका यथा स्वरूपकी स्थापना—

ऐसा स्वरूप है ए वात श्रीअनुयोगद्वारे है अने सम भी है इति अलम्.

हिवै पुद्गलके छव्वीस भग्याकी स्थापना पन्नवणाजीको (श्रीमलयगिरि सूरिकृत) टीकासे है ते यथा-परमाणु-पुद्गलमे १ भग पावे तीजा अवक्तव्य, इद (य) च-स्थापना दोप्रदेशीमे भग २ पावे चरम एक, अवक्तव्य एक, इद च स्थापना त्रि-प्रदेशीमे भग ४ पावे १।३।९।११ स्थापना चारप्रदेशीमे भग सात १।३।९ १०।११।१२।२३। ए स्थापना पाचप्रदेशीमे ११ भग स्थापना १।३।७।९।१०।११।१२।१३।२३।२४।२५ छ प्रदेशीमे १५ भग लाभे ते १।३।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५।२३।२४। २५।२६ एव १५ इद चस्थापना सात प्रदेशी स्कधमे १७ भग पावे इद च स्थापना आठ प्रदेशीमे १८ इद च स्थापना एवं नवथी अनतप्रदेशी पर्यत ज्ञेयम्

(८५) श्रीप्रज्ञापना दशमे पदात् यत्र

०	द्रव्यार्थे ज्ञेय		प्रदेशार्थे	
०	अचरम	चरमाणि	अचरम प्रदेश	चरम प्रदेश
लोक	सर्व स्तोक १	असंख्य गुणे २	असंख्य गुणे ७	असंख्य गुणे ८
अलोक	सर्व स्तोक १	विशेषाधिक ३	अनन्त गुणे ८	विशेषाधिक ६
तदुभय	विशेषाधिक ४		विशेषाधिक ९	

(८६) श्रीभगवतीके सोलहमे शते ८ मे उद्देशे

०	द्रव्यार्थे	प्रदेशार्थे
चार दिशा चरमांत	असंख्येय गुणे २	संख्येय गुणे ५
अधो चरमांत	सर्व स्तोक १	संख्येय गुणे ४
ऊर्ध्व ,,	,, ,, ,,	असंख्येय गुणे ३
०	०	०

जैसें क्षुल्लक प्रतरका स्वरूप है तैसी स्थापना, जैसा एह प्रतर है ऐसा ही इसके ऊपर दूजा प्रतर है इन दोनोंका नाम 'क्षुल्लक प्रतर' है. इनके मध्यके आठ प्रदेशाकी 'रुचक' सज्ञा है. इनसे १० दिशा.
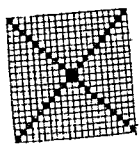
(८) श्री भगवत्या १०मे शते प्रथम उद्देशे, ११मे शते दसमे उद्देशे, षोडशमे शते ८मे उद्देशे

जीव अजीव द्रव्यम्	देश प्रदेश	चार दिग्	चार विदिग्	ऊर्ध्व दिग्	अधो दिग्	अधो लोक	तिर्यग् लोक	ऊर्ध्व लोक	लोकना ४प्रदेशमे	दिग् चरमान्त ४	ऊर्ध्व लोक चरमात	अधोलोक चरमात	बीस बोल-दिशा १०, लोक ३, प्रदेश १, चरमात ६ एवं सर्व २०
जीव	०	अनत	०	०	०	अनत	अनत	अनत	०	०	०	०	७ बोलमे अनते, १३ बोलमे शून्य
एकेन्द्रिय	देश	३।३	——	——	——→	ए	व	म्	——	——	——	——→	१० बोलमे घणे एकेन्द्रियांके घणे देश ३३
,,	प्रदेश	,,	३३	३३	३३	३२	३३	३३	३३	३२	३२	३३	२० बोलमे भग ३।३
बेद्री, तेइन्द्री, चौरिंद्री, पचेंद्री	देश	,,	११ १३ ३३	११ १३ ३३	११ १३ ३३	,,	,,	,,	११ १० ३३	११ १३ ३३	११ ०० ३३	११ ०० ३३	७ बोलमे ३०, १० बोलमे ११।१३।३३, बोल ३मे ११।१२
बे ते, चौ, प.	प्रदेश	,,	०० १३ ३३	०० १३ ३३	०० १३ ३३	,,	,,	,,	०० १३ ३३	०० १३ ३१	०० १३ ३३	०० १३ ३१	७ बोलमे ३३, बोल १३ मे १३।३३
अनिन्द्रिय	देश	,,	११ १० ३३	११ १३ ३३	११ १३ ३३	,,	,,	,,	१० ०० ३३	०० १३ ३३	३३	११ ०० १०	८मे ३३ बोल, ६मे ११।१३।३३, ४ मे १३।३३, दोमे ११।१३
,,	प्रदेश	,,	०० १३ ३३	०० १३ ३३	०० १३ ३३	,,	,,	,,	११ १३ ३३	०० १३ ३३	,,	०० १३ ३३	८मे ३३ बोल, ११मे १३।३३, १मे ११।१३।३३
अजीव	रूपी	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	२० मे चार
,,	अरूपी	७	७	७	६ कालविना	७	७	६	६ ७	६	६	६	१३ बोलमे ७, सात बोलमे ६

जिहां ११ लिखे हैं तिहा प्रथम एकानो एक जीव परला एका देशके ठिकाणे एक देश अने प्रदेशके ठिकाणे एक प्रदेश. तीनका अक है जहां तिहा बहुवचन जानना. इति अल्पम्

(१०) भगवती शने १२मे, उद्देशक १०मे पुद्गलभग

१	सद्भाव						१
२	असद्भाव						२
३	स						३
४	〃	अस					१२
५	〃	स					१३
६	अस	〃					२३
७	〃	〃	अस				१२२
८	स	अस	स				११२
९	〃	स	〃				१३३
१०	〃	〃	〃				११३
११	〃	अस	〃				२३३
१२	अस	स	अस				२२३
१३	स	अस	स				१२३
१४	〃	〃	〃	अस			११२२
१५	〃	स	〃	स			११३३
१६	अस	〃	अस	〃			२२३३
१७	स	〃	〃	〃			१२३३
१८	〃	अस	स	अस			१२२३
१९	〃	〃	〃	स			११२३
२०	〃	〃	〃	अस	स		१२२३३
२१	〃	स	अस	स	〃		११२३३
२२	〃	अस	स	अस	〃		११२२३
२३	〃	〃	〃	स	अस	स	११२२३३

(११) भगवती शने ८ उद्देशे १०मे पुद्गलके भग ८

१	द्रव्य	○
२	द्रव्यदेश	
३	दव्वाइ	○ ○
४	द्रव्यदेसा	
५	दव्व च दव्वदेसे	○
६	दव्वच देसा	○
७	दव्वाइ च दव्वदेसे य	○ ○
८	दव्वाइ च दव्वदेसा य	○ ○

भगवती ५मे शते उद्देशे ७मे भग ९

१	देसेण	देस फुसइ	
२	〃	देस	
३	〃	सव्व	
४	देसेहि	देस	
५	〃	देसे	
६	〃	सव्व	
७	सव्वेण	देस	
८	〃	देसे	
९	〃	सव्व	

(१२) भगवती शतक ५मे उद्देशे ७ स्पर्शनायन्त्रम्

			१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	परमाणु-पुद्गल	परमाणु स्पर्शे	०	०	०	०	०	०	०	०	〃
२	〃 〃	द्विप्रदेशा स्कध	०	०	०	०	०	०	७	०	〃
३	〃 〃	त्रिप्र स्पर्शे	०	०	०	०	०	०	〃	८	〃
४	द्विप्रदेशी स्कध	पर स्पर्शे	०	०	३	०	०	०	०	०	〃
५	〃 〃	द्विप्रदे 〃	〃	०	〃	०	०	०	७	०	〃
६	〃 〃	तिप्रदे 〃	〃	〃	〃	०	०	०	〃	८	〃
७	तिप्रदेशी 〃	पर 〃	०	०	〃	०	०	६	०	०	〃
८	〃	द्विप्र 〃	१		〃	४	०	〃	७	०	〃
९	〃 〃	तिप्रदेशीकू	〃	२	〃	〃	५	〃	〃	८	〃

द्रव्य देस करके ८ भागे है सो परमाणुमे २ पावे – १।२, द्विप्रदेशीमे भग ५ पावे–१–५, त्रिप्रदेशीमे ५ भग पावे–१–७, चार प्रदेशीमे भग ८ पावे–१–८, एव पाचसे लेकर अनत–

प्रदेशीपर्यंत एही ८ भंग है.

(९२) श्रीभगवतीके (श. २५, उ २) मे ५ संस्थानस्वरूप तथा देशयन्त्रस्थापना

संस्थान	सूची		प्रतर		घन		जुम्मे	
प्रदेश	ओज प्रदेश १।३।५	युग्म २।४।६	ओज १।३।५	युग्म २।४।६	ओज १।३।५	युग्म २।४।६	जुम्मे	० ० ०
परिमंडल	० ०	० ०	० ०	२० प्रदेश	० ०	४ प्रदेश	४ कृतयुग्म	० ० ०
वृत्त	० ०	० ०	५	१२ ११	७	३२	१।३।४	० ० ०
त्र्यस्र	० ०	० ०	३	६ १	३५	४	२।३।४	० ० ०
चतुरस्र	० ०	० ०	९	४	२७	८	१।३।४	० ० ०
आयतन	३	२	१५	६ १	४५	१२	१।२।३।४	० ० ० ०

ऋजुगति में एक समय पर भव जातां लागे, अनाहारिक नास्ति. एक वक्रमें दो समय लागे; प्रथम समय अनाहारिक, दूजे समये आहार लेवे. द्विवक्रमे तीन समय लागे; प्रथम दो समय अनाहारी, तीजे समये आहार लेवे. तीन वक्रमें चार समय लागे, प्रथम तीन समय अनाहारी, चौथे समय आहार लेवे. चार वंकामें पांच समय लागे, प्रथम चार समय अनाहारी, पांच मे समये आहार लेवे. श्रीभगवतीजी (ह.) मे तो तीन समय अनाहारिक कह्या है तो चार समय कैसें हूये तिसका उत्तर—श्रीभगवतीजीमे बहुलताइकी विवक्षा करके तीन समय कहे है. अल्पताकी विवक्षा नही करी, कदे कदे इक चार समय अनाहारिक होता है. कोइ कहे जो पाच समयकी गति न मानीये तो क्या काम अटके है तिसका उत्तर—प्रथम तो पूर्वाचार्योने पाच समयकी गति मानी है, श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण आदि देइ सर्व वृत्तिकारोने मानी है, इस वास्ते सत्य है. तथा सातमी नारकीके स्थावरनाडीके कूणेवाला जीव मरीने 'ब्रह्मदेव' लोककी स्थावर नाडीके कूणे मे उपजणहार पाच समयकी विग्रह विना उपज नही सकता, एह विचार सूक्ष्म बुद्धिसे विचार लेना. इस विना काम अटके है. इसकी साख भगवतीकी वृत्तिमे तथा पन्नवणाकी वृत्तिमे वा (बृहत्)संघयणी (गा. ३२५–३२६)मे है.

(८९) श्रीभगवती शते १३मे चतुर्थ उद्देशके प्रदेशांकी परस्परस्पर्शनायंत्रम्[1]

०	धर्मास्तिकायके	अधर्मास्तिकायके	आकाशास्ति कायके	जीवके	पुद्गलके	कालके
धर्मास्तिकायका एक प्रदेश	३।४।५।६ प्रदेश स्पर्शे	४।५।६।७	७	अनते	अनते	अनंते
अधर्मास्तिकायका ,, ,,	४।५।६।७	३।४।५।६	,,	,,	,,	,,
आकाशास्तिकायका ,, ,,	१।२।३।४।५।६।७	१।२।३।४।५।६।७	६	,,	,,	,,
जीवका ,, ,,	४।५।६।७	४।५।६।७	७	,,	,,	,,
परमाणुपुद्गल	४।५।६।७	४।५।६।७	,,	,,	,,	,,

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	पुद्गलपद ज्ञेयम्
४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	जघन्य पद
७	१२	१७	२२	२७	३२	३७	४२	४७	५२	उत्कृष्ट ,,

चूर्णिकारे नयमते करी एक अवग्रही प्रदेशना दोय गिन्या है अने टीकाकारे दोय परमाणु करी व्याख्यान कर्या है. इति रहस्य पुद्गलकी स्पर्शनामे. परमाणु जघन्य ४ प्रदेश धर्म अधर्मके स्पर्शे, तिनका स्वरूप पीछे लिख्या ही है, अने दोय प्रदेशी आदिक स्कधनी जघन्य

[1] प्रथकारे १२४ मा पृष्ठनी पछी आनी योजना करी छे, परंतु छपावती वेळा ए पृष्ठमा समावेश नहि थइ शकवाथी आ यन्त्र अहीं आपेल छे

स्पर्शनामे दो दो प्रदेश वधा लेने अने उत्कृष्टी स्पर्शनामे पांच पांच प्रदेशानी सर्वत्र वृद्धि जान लेनी. इति अलं विस्तरेण.

(९४) भगवती श० २५, उ० ४ (सू० ७४०) परमाणु द्विप्रदेशादि १३ बोलाकी

अल्पबहुत्वयंत्रम्

द्रव्य-यंत्रम् १	परमाणु १	द्विप्रदेशी २	त्रिप्रदेशी ३	४प्रदेशी ४ स्कंध	५प्रदेशी ५ स्कंध	६प्रदेशी ६ स्कंध	७ प्रदेशी ७	८प्रदेशी ८	९ प्रदेशी ९	१० प्रदेशी १०	संख्यात प्रदेशी ११	असंख्यात प्रदेशी १२	अनत प्रदेशी १३
द्रव्यार्थे	११ वि	१० वि	९ वि	८ वि	७ वि	६ वि	५ वि	४ वि	३ वि	२ अनंत गुणा	१२ संख्यात गुणा	१३ असंख्य गुणा	१ स्तोक
प्रदेशार्थे	२ अनत गुणा	३ वि	४ वि	५ वि	६ वि	७ वि	८ वि	९ वि	१० वि	११ त्रि	१२ वि	१३ असख्य गुणा	१ स्तोक

क्षेत्र-यंत्रम् २	एक प्रदेशावगाढा १	२ प्र गा २२	३ प्र. गा ४३	४प्रदेशावगाढा ४	५प्रदेशावगाढा ५	६ प्र. गा. ६	७ प्र गा ७	८ प्र. गा ८	९ प्र गा ९	१० प्र गा. १०	संख्यात प्र गा. ११	असंख्य प्रदेशावगाढा १
द्रव्यार्थे	१० वि	९ वि	८ वि	७ त्रि	६ वि	५ वि	४ वि	३ वि	२ वि	१ सर्वसे स्तोक	११ संख्येय गुणा	१२ असं गुण
प्रदेशार्थे	१ स्तो	२ वि	३ वि	४ वि	५ वि	६ वि	७ वि	८ वि	९ वि	१० वि	११ संख्यात	१ असं

एक समय स्थितिक आदि १२ बोलका यंत्रना क्षेत्रवत् निर्विशेष ॥ भावयंत्र ए काला आदि यावत् अनंत गुण १२ बोल. वर्णना ५, गंध २, रस ५, शीत स्पर्श १ स्पर्श २, स्निग्ध ३, रु(रू)क्ष ४, एवं १६ बोलमेथे एकेक बोलना तेरां तेरा बोल करवे यन्त्रवत् जान लेना.

(९५)

कर्कश १ मृदु २ गुरु ३ लघु ४	एक गुण कर्कश आदि	द्विगुण २	त्रिगुण ३	४ गुण ४	५ गुण ५	६ गुण ६	७ गुण ७	८ गुण ८	९ गुण ९	१० गुण १०	संख्येय गुण ११	असंख गुण
द्रव्यार्थे	१ स्तोक	२ वि	३ वि	४ वि	५ वि	६ वि	७ वि	८ वि	९ वि	१० सं	११ अस	१२ अस
प्रदेशार्थे	१ स्तोक	२ वि	३ वि	४ वि	५ वि	६ वि	७ वि	९ वि	१० वि	११ बहु	१२ बहु	१ ब

(९६) भगवती शतक २५, उ. ४ सू. ७४१

द्रव्य	परमाणु १	सख्यातप्रदेशी २	असंख्यातप्रदेशी ३	अनंतप्रदेशी ४
द्रव्यार्थे	२ अनत गुणा	३ सख्यात गुण	४ संख्येय गुण	१ स्तोक
प्रदेशार्थे	,, ,, ,,	,, सख्येय ,,	,, असख्येय ,,	,, ,,
द्रव्यार्थे	३ ,,	४ सख्यात ,,	६ असख्यात	,, ,,
प्रदेशार्थे	०	५ ,, ,,	७ ,,	अनत २

क्षेत्रयत्र	एकप्रदेशावगाढा १	सख्यातप्रदेशावगाढा २	असंख्यप्रदेशावगाढा ३
द्रव्यार्थे	१ स्तोक	२ सख्येय गुणा	३ असख्येय गुणा
प्रदेशार्थे	,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
द्रव्यार्थे	,, ,,	,, ,, ,,	४ ,, ,,
प्रदेशार्थे	०	३ ,, ,,	५ ,, ,,

क्षेत्रयत्रवत् कालयंत्र कालयंत्रमे एक समय स्थिति आदि कहनी.

भाव एक गुण कर्कश आदि ४	१ गुण	सख्येय गुण	असख्येय गुण	अनंत गुण
द्रव्यार्थे	,, स्तोक	२ सख्येय	३ असख्येय	४ अनत
प्रदेशार्थे	,, ,,	,, असंख्येय	,, ,,	,, ,,
द्रव्यार्थे	,, ,,	,, [अ]सख्येय	४ ,,	६ ,,
प्रदेशार्थे	०	३ ,,	५ ,,	७ ,,

सोले बोलना यंत्र परमाणु आदिवत् जान लेना द्रव्यवत्.

(९७) परमाणु आदि अनंतप्रदेशी स्कंध चल अचल स्थिति भगवती (श० २५, उ० ४, सू. ७४४)

	जघन्य स्थिति	उत्कृष्ट स्थिति
चल (सेज) एकवचने	१ समय	आवलिके असख्यातमे भाग
अचल (निरेज) ,,	,, ,,	असंख्याता काल

चल बहुवचने अचल बहुवचने सर्वाद्धा.

(९८) अंतरयंत्रं भग० सू. ७४४

		परमाणु-पुद्गल जघन्य		परमाणु-पुद्गल उत्कृष्ट	द्विप्रदेश आदि-अनंत प्रदेश पर्यंत जघन्य	द्विप्रदेश आदि-अनंत प्रदेश पर्यंत उत्कृष्ट
चल एकवचने	स्वस्थाने		१ समय	असंख्य काल	१ समय	असंख्यात काल
	परस्थाने		,, ,,	,, ,,	,, ,,	अनंत ,,
अचल एकवचने	स्वस्थान		,, ,,	आवलि असंख्य भाग	,, ,,	आवलि असंख्य भाग
	परस्थान		,, ,,	असंख्य काल	,, ,,	अनंत काल
बहुवचने	चल		नास्ति अंतर	नत्थि	नत्थि	नत्थि
	अचल		,, ,,	नास्ति अंतर सर्वत्र		
अंतर समुच्चये	१ समय		असंख्य काल	असंख्य काल	१ समय	उत्कृष्ट असंख्य काल

(९९) कालमान स्थितिमान यंत्रम् भग० श. २५, उ. ४ (सू. ७४४)

		परमाणु जघन्य	परमाणु उत्कृष्ट	द्विप्रदेशादि-अनंत प्रदेशी पर्यन्त जघन्य	द्विप्रदेशादि-अनंत प्रदेशी पर्यन्त उत्कृष्ट
एकवचने	देशैज	०	०	१ समय	आवलिके असंख्यमें भाग
	सर्वैज	१ समय	आवलिके असंख्यसे भाग	,, ,,	,, ,, ,,
	निरेज	,, ,,	असंख्य काल	,, ,,	असंख्य काल
बहुवचने	देशैज	०	सर्वाद्धा		सर्वाद्धा

(१००) अंतर मानका यंत्र (भग० सू. ७४४)

		परमाणु जघन्य	परमाणु उत्कृष्ट	द्विप्रदेशादि-अनंत प्रदेशी (पर्यन्त) जघन्य	द्विप्रदेशादि-अनंत प्रदेशी (पर्यन्त) उत्कृष्ट
देशैज	स्वस्थाने	०	०	१ समय	असंख्य काल
	परस्थाने	०	०	,, ,,	अनंत ,,
सर्वैज	स्वस्थाने	१ समय	असंख्य काल	,, ,,	असंख्य ,,
	परस्थाने	,, ,,	,, ,,	,, ,,	अनंत ,,
			सर्वाद्धा		सर्वाद्धा

१ परमाणुपुद्गलो तेमज द्विप्रदेशादि स्कंधो सर्व अंशे सदा काल कंपे तेमज सदा काल निष्कंप रहे ।

(१०१) भगवती (श. २५, उ. ४, सू. ७४४, पृ. ८८५)

	०	परमाणु १	संख्यात प्रदेश २	असंख्य प्रदेश ३	अनत प्रदेश ४
द्रव्यार्थ	देशैजा	०	७ असंख्य	८ असख्य	३ अनत
	सर्वैजा	६ असंख्य	५ ,,	४ अनंत (? अस)	१ स्तोक
	निरेजा	९ ,,	१० ,,	११ असंख्य	२ अनंत गुणा
प्रदेशार्थ	देशैज	०	६ ,,	७ ,,	३ ,,
	सर्वैज	०	५ ,,	४ ,,	१ स्तोक
	निरेज	०	८ ,,	९ ,,	२ अनंत
द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ	देशैज	०	१२ ,,	१४ ,,	५ ,,
	सर्वैज	११ असंख्य	९ ,,	७ अनत	१ स्तोक
	निरेज	१६ ,,	१७ सख्यात	१९ असंख्य	३ अनत
	देशैज	०	१३ ,,	१५ ,,	६ ,,
	सर्वैज	०	१० ,,	८ ,,	२ ,,
	निरेज	०	१८ ,,	२० ,,	४ ,,

(१०२) परमाणुपुद्गल सैज निरेज (अल्पबहुत्व) भग० श. २५, उ. ४ (सू. ७४४)

अल्पबहुत्व	परमाणु यावत् असख्य-प्रदेशी स्कध	अनंतप्रदेशी स्कंध
चला	१ स्तोक	१ स्तोक (१)
अचला	२ असख्य गुण	२ अनत गुणा (१)

(१०३) अल्पबहुत्व

	अल्पबहुत्व	परमाणु	सख्यातप्रदेशी	असंख्यातप्रदेशी	अनतप्रदेशी
द्रव्यार्थे	सैजा	३ अनंत गुण	४ असंख्य गुणा	५ असख्यात	२ अनंत गुण
	निरेजा	६ असख्य	७ सख्य ,,	८ ,,	१ स्तोक
प्रदेशार्थे	सैजा	अप्रदेश०	३ असख्य ,,	४ ,,	२ अनत गुणा
	निरेजा		५ ,,	६ ,,	१ स्तोक
द्रव्यार्थे	सैजा	५ अनत	६ ,,	८ ,,	३ अनंत
	निरेजा	१० असख्य	११ ,,	१३ ,,	१ स्तोक
प्रदेशार्थे	सैजा	०	७ ,,	९ ,,	४ अनत
	निरेजा	०	१२ ,,	१४ ,,	२ ,,

१ आ संबधी उल्लेख विचारणीय जणाय छे ।

(१०४)

परमाणु संख्येय प्रदेश असंख्येय प्रदेश अनंत प्रदेशी से(सि)या चल निरेया अचल अल्पबहुत्व.

परिणाम	जीव	मूर्त्त	सप्रदेश	एक	अक्षेत्री	किरिया	नित्य	कारण	कर्ता	सर्वगत
२ भेद	१	१	५	३	४ (५?)	२	४	५	१	१
जीव, पुद्गल परि-णामी	जीव १ एक जीव १	मूर्त्तवंत पुद्गल १	धर्म, अधर्म, आकाश, जीव, पुद्गल	धर्म, अधर्म, आकाश	धर्म, अधर्म, पुद्गल, जीव, काल	जीव १, पुद्गल २, ए क्रिया वंत	धर्म, अधर्म, काल, आकाश ए ४ नित्य	धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल	एक जीव कर्ता	आकाश १
४ अपरि णाम	अजीव ५	अमूर्त ५	अप्र देशी १	अनेक ३	क्षेत्री १	अकि-रिया ४	अनित्य २	अकारण १	अकर्ता ५	असर्व गत ५
धर्म, अधर्म, आकाश, काल ए, ४ अपरि-णामी	धर्म, अधर्म, आका श, काल, पुद्गल	धर्म, अधर्म, आकाश, काल, जीव ए ५	काल-द्रव्य १	पुद्गल १, काल २, जीव ३, ए अनेक	एक आकाश द्रव्य	धर्म, अधर्म, आकाश, काल ए ४	जीव १, पुद्गल पर्याय २; विभाव अपेक्षया	जीव एक अकारण	धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल	धर्म, अधर्म, जीव, काल, पुद्गल

"[1]परिणाम १ जीव २ मुत्ता ३, सपएसा ४ एग ५ खित्त ६ किरिया ७ य।
निच ८ कारण ९ कत्ता १०, सव्वगय ११ इयर हि यपएसा ॥ १ ॥
दुन्नि २ य एगं १ एगं १, पंच ५ ति ३ पंच ५ ति ३ पंच ५ दुन्नि २ चउरो ४ य।
पच ५ य एगं १ एगं १, दस १० एय उत्तरगुणं २ च ४ ॥ २ ॥
पण ५ पण ५ इग १ य तिन्नि ३ य, एग १ चउरो ४ दुन्नि २ एक १ पण ५ पणगं ५।
परिणामेयरभेया, बोद्धव्वा सुद्धबुद्धिहिं ॥ ३ ॥"

(१०५) भगवती (श. २५, उ. ४)

युग्म	धर्म	अधर्म	आकाश	जीव	पुद्गल	काल
द्रव्यार्थे	१	१	१	४	४।३ २।१	४
प्रदेशार्थे	४	४	४	,,	४	०
प्रदेशावगाढ	,,	,,	,,	,,	,,	०
समयस्थिति	,,	,,	,,	,,	,,	०

[1] परिणामजीवमूर्ता सप्रदेशा एकक्षेत्रक्रियाश्च। नित्य कारण कर्ता, सर्वगत इतरे हि चाप्रदेशा ॥ १ ॥
द्वे च एक एक पञ्च त्रि पञ्च त्रि, पञ्च द्वे चत्वारि च। पञ्च च एक एक दश एते उत्तरगुणाश्च ॥ २ ॥
पञ्च पञ्च एक त्रीणि च एक चत्वारि द्वे एक पञ्च पञ्च च। परिणामेतरभेदा बोद्धव्या शुद्धबुद्धिभिः ॥ ३ ॥

युग्म		धर्म	अधर्म	आकाश	जीव	पुद्गल	काल
अल्पब	द्रव्यार्थे	१	१	१	३ अनत गुण	५ अनंत गुण	७ अनंत गुण
हुत्व	प्रदेशार्थे	२ असख्य	२ असख्य	८ अनत	४ असंख्य	६ असख्य	०

(१०६)

१	धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय ३	द्रव्यार्थ	स्तोक
२	धर्मास्तिकाय, अधर्मास्ति काय २	पपस (प्रदेश)	असख्य
३	जीवास्तिकाय १	द्रव्यार्थ	अनत
४	,, ,,	पपस	असख्य
५	पुद्गलास्तिकाय ,,	द्रव्यार्थ	अनत
६	,, ,,	पपस	असंख्य
७	काल	द्रव्यार्थ	अनंत
८	आकाशास्तिकाय १	प्रदेश	,,

अथ कालकी अल्पबहुत्व ६२ बोला

(१) सर्वसें स्तोक समयनो काल, (२) आवलिनो काल असंख्य गुण, (३) जघन्य अंतर्मुहूर्त १ समय अधिक, (४) जघन्य आयुबंधकाल संख्येय गुण, (५) उत्कृष्ट आयुबंधकाल संख्येय गुण, (६) जघन्य अपर्याप्ती एकेन्द्रिय न संख्येय, (७) उत्कृष्ट अपर्याप्त एकेन्द्रियनो विशेष, (८) पर्याप्त एकेन्द्रियनो जघन्य काल विशेष, (९) पर्याप्त निगोद उत्कृष्ट विशेष अधिक, (१०) उत्कृष्ट त्रसकायविरह सं०, (११) जघन्य अपर्याप्त बेइंद्रीनो विशेष०, (१२) उत्कृष्ट अपर्याप्त बेइंद्रीनो विशेष०, (१३) जघन्य पर्याप्त बेइंद्रीनो विशेष०, (१४) जघन्य तेइंद्री अपर्याप्त काल विशेष०, (१५) उत्कृष्ट अपर्याप्त तेइंद्रीनो विशेष०, (१६) जघन्य पर्याप्त तेइंद्रीनो विशेष०, (१७) उत्कृष्ट पर्याप्त चौरिंद्रीनो विशेष०, (१८) उत्कृष्ट अपर्याप्त चौरिंद्री विशेष०, (१९) जघन्य पर्याप्त चौरिंद्री विशेष०, (२०) जघन्य अपर्याप्त पचेंद्रीनो विशेष०, (२१) उत्कृष्ट अपर्याप्त पचेंद्रीनो विशेष०, (२२) जघन्य पर्याप्त पचेंद्रीनो विशेष०, (२३) उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त काल सख्येय, (२४) मुहूर्तनो काल समय १ अधिक विशेष, (२५) अहोरात्रनो काल संख्येय गुण, (२६) उत्कृष्ट तेउकायनी स्थिति सं०, (२७) पक्षनो काल संख्येय गुण, (२८) मासनो काल सख्येय गुण, (२९) तेइंद्रीनी उत्कृष्ट स्थिति विशेष०, (३०) ऋतुनो काल विशेष०, (३१) आयन वा चौरिंद्री उत्कृष्ट स्थिति सं०, (३२) वर्षनो काल सख्येय गुण, (३३) युगनो काल संख्येय

गुण, (३४) बेइंद्री उत्कृष्ट स्थिति संख्येय, (३५) वायुकाय उत्कृष्ट स्थिति संख्येय, (३६) अप्काय उत्कृष्ट स्थिति संख्येय, (३७) वनस्पति उत्कृष्ट या देव, नरक जघन्य वि०, (३८) पृथ्वीकाय उत्कृष्ट स्थिति संख्येय, (३९) उद्धार पल्यनो असंख्य भाग संख्येय, (४०) उद्धार पल्यनो काल असंख्य गुण, (४१) उद्धार सागरनो काल संख्येय, (४२) जघन्य अद्धा पल्यका असंख्य भाग असंख्येय, (४३) उत्कृष्ट अद्धा पल्यका असंख्य भाग असंख्य, (४४) अद्धा पल्यनो काल असंख्य गुण, (४५) उत्कृष्ट मनुष्यनी कायस्थिति संख्येय, (४६) अद्धासागरनो काल संख्येय, (४७) उत्कृष्ट देव-नारक-स्थिति संख्येय, (४८) अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल सं०, (४९) क्षेत्र पल्यनो काल असंख्य गुण, (५०) क्षेत्रसागरनो काल संख्येय गुण, (५१) तेउनी उत्कृष्ट कायस्थिति असंख्य, (५२) वायुनी उत्कृष्ट कायस्थिति विशेष०, (५३) अप्नी उत्कृष्ट कायस्थिति विशेष०, (५४) पृथ्वीनी उत्कृष्ट कायस्थिति विशेष०, (५५) कार्मण पुद्गलपरावर्तन अनंत गुण, (५६) तैजस पुद्गल परावर्तन अनंत गुण, (५७) औदारिक पुद्गल परावर्तन अनंत, (५८) श्वासोच्छ्वास पुद्गल परावर्तन अनंत, (५९) वैक्रिय पुद्गलपरावर्तन अनंत गुण, (६०) वनस्पतिनी उत्कृष्ट कायस्थिति असंख्य, (६१) अतीत अद्धा अनंत गुण, (६२) अनागत अद्धा विशेष अधिक.

(१०७) द्रव्य ६; गुण चार २ एकेकना नित्य है

धर्म	अरूपी १	अचेतन २	अक्रिया ३	गतिसहाय ४
अधर्म	,, ,,	,, ,,	,, ,,	स्थितिस्वभाव ,,
आकाश	,, ,,	,, ,,	,, ,,	अवगाहदान ,,
काल	,, ,,	,, ,,	,, ,,	वर्तमान व जीर्ण ,,
पुद्गल	रूपी ,,	,, ,,	सक्रिय ,,	पूरण गलन ,,
जीव	अनंत ज्ञान ,,	अनंत दर्शन ,,	अनंत चारित्र ,,	अनंत वीर्य ,,

(१०८) पर्याय षड् द्रव्यना चार चार

धर्म १	स्कंध नित्य	देश अनित्य	प्रदेश अनित्य	अगुरुलघु
अधर्म २	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,,
आकाश ३	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,,
काल ४	अतीत	अनागत	वर्तमान	,,
पुद्गल	वर्ण	गन्ध	रस	स्पर्श
जीव	गुरु	लघु	अगुरुलघु	अव्याबाध

पुद्गलका वर्ण आदि, धर्म अगुरुलघु पर्याय.

(१०९) पुद्गलयंत्रं भगवती (श० २०, उ. ४)

	वर्ण	गन्ध	रस	स्पर्श	संस्थान	भंग
परमाणु	५	२	५	४	१	२००
२ प्रदेश	१५	३	१५	९	२	
३ ,,	४५	५	४१	२५	३	
४ ,,	९०	६	९०	३६	४	
५ ,,	१४१	,,	१४१	,,	५	
६ ,,	१८६	,,	१८६	६	,,	
७ ,,	२१६	,,	२१६	,,	,,	
८ ,,	२३१	,,	२३१	,,	,,	
९ ,,	२३६	,,	२३६	,,	,,	
१० ,,	२३७	,,	२३७	,,	,,	
२० ,,	,,	,,	,,	,,	६	

(११०) भगवती शते ८ उद्देशे १ मे पुद्गलयंत्र

पुद्गल	प्रयोगपरिणत	मीसा (मिश्र)	विस्रसा
अल्पबहुत्व	१ स्तोक	२ अनंत गुणा	३ अनंत गुणा

जीवे ग्रह्या 'प्रयोग,' सा जीवने तज्या परिणामांतरे परिणम्या नही ते 'मीसा,' स्वभावे परिणम्या अभ्रवत् ते 'विस्रसा;' एवम् ३.

नरक ७, भवनपति १०, व्यंतर ८, ज्योतिषी ५, देवलोक २६, सूक्ष्म ५, स्थावर बादर ५, बेइंद्री १, तेइंद्री १, चौरिंद्री १, असञ्ज्ञी पचेंद्री ५, सञ्ज्ञी पंचेंद्री तिर्यंच ५, असञ्ज्ञी मनुष्य १, संज्ञी मनुष्य १, एवं सर्व ८१, ए प्रथम दंडक. इनकू अपर्याप्तसे गुण्या ८१, पर्याप्त अपर्याप्त १६१, शरीरसे गुण्या ४९१, जीवेंद्रीसे गुण्या ७१३, शरीरेंद्रीसे गुण्या २१७५. १६१ कू पाच वर्ण, पांच गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, पाच संस्थानसे गुण्या ४०२५, ४९१. कू इन पचीससे गुण्या ११६३१ (१२२७५?), ७१३ कू इन वर्ण आदि २५ से गुण्या १७८२५, २१७५ कू इन २५ से गुण्या ५१५२३ (५४३७५?).

इति आत्मारामसकलता(ना?)यां अजीवतत्त्व द्वितीयं संपूर्ण ॥

अर्हं नमः ॥ अथ 'पुण्य' तत्त्व लिख्यते—

नव प्रकारे बांधे पुण्य, ४२ प्रकारे भोगवे. सातावेदनीय १, देव २, मनुष्य ३ तिर्यचना आयु ४, देवगति ५, मनुष्यगति ६, पंचेन्द्रिय ७, औदारीक ८, वैक्रिय ९, आहारक १०, तैजस ११, कार्मण शरीर १२, तीन अंगोपांग १५, वज्रऋषभनाराच संहनन १६, समचतुरस्र संस्थान १७, शुभ वर्ण १८, गंध १९, रस २०, स्पर्श २१, देव-आनुपूर्वी २२, मनुष्य-आनुपूर्वी २३, प्रशस्त खगति २४, पराघात २५, उच्छ्वास २६, आतप २७, उद्योत २८, अगुरुलघु २९, तीर्थंकर ३०, निर्माण ३१, त्रस ३२, बादर ३३, पर्याप्त ३४, प्रत्येक ३५, स्थिर ३६, शुभ ३७, सौभाग्य (सुभग) ३८, सुस्वर ३९, आदेय ४०, यशकीर्ति ४१, उच्च गोत्र ४२; ए प्रकारे पुण्य भोगवे.

अथ उत्कृष्ट पुण्य प्रकृतिवान् तीर्थंकर महाराजका समवसरणस्वरूप लिख्यते—

"[१]मुणि वेमाणिया देवि साहुणि ठंति अग्गिकोणंमि ।
जोइसिय भवण विंतर देवीओ हुंति नेरईए ॥ १ ॥
भवणवणजोइदेवा वायव्वे कप्पवासिणो अमरा ।
नरनारीओ ईसाणे पुव्वाइसु पविसिउं ठंति ॥ २ ॥

द्वादश परिषत् नाम—

"उसभस्स तिन्नि गाऊ बत्तीस धनुणि वद्धमाणस्स ।
सेसजिणाण असोगो देहाउ दुवालसगुणो य ॥ १ ॥
किंकिल्लि कुसुमवुट्ठी दिव्वज्झुणि चामरासणाइं ।
भामंडल य छत्त भेरी जिणिंद (? जयंति) जिणपाडिहेराइं ॥ २ ॥
दप्पण भद्दासण वद्धमाण वरकलस मच्छ सिरिवच्छा ।
सत्थिय नंदावत्तो विविहा अट्ठ मंगल्ला ॥ ३ ॥

समवसरण अढाइ कोस धरतीसे ऊंचा जानना अग्गरे । मध्यमे मणीपीठको [के] उपरि आसन चार है. तीन चारो ही सिंहासनाके उपरि अशोक वृक्ष छाया करता है. पूर्वके सिंहासन उपर तीर्थंकर त्रैलोक्यपूज्य परम देव विराजमान होय है. अने अन्य सिंहासन तीन उपरि भगवान् सरीपे(खे) तीन रूप व्यंतर देवता बनाय कर स्थापन करते है. सो भगवान्की अतिशय करी भगवान् सदृश दिखलाइ देते हे. ऐसा मालूम होवे है जानो एह भगवान् ही

१ मुनयो वैमानिका देव्य साध्व्यस्तिष्ठन्ति अग्निकोणे । ज्योतिष्कभवन(पति)व्यन्तरदेव्या भवन्ति नैऋत्ये ॥
भवनवनज्योतिर्देवा वायव्ये कल्पवासिनोऽमरा । नरनार्य ईशाने पूर्वादिषु प्रविश्य तिष्ठन्ति ॥
ऋषभस्य त्रीणि गव्यूतानि द्वात्रिंशद् धनूंषि वर्धमानस्य । शेषजिनानामशोको देहाद् द्वादशगुणश्च ॥
कङ्केल्लिः कुसुमवृष्टिर्दिव्यध्वनिश्चामरासनानि । भामण्डलं च छत्रं भेरी जिनेन्द्र ! जिनप्रातिहार्याणि ॥
दर्पणो भद्रासनं वर्धमानो वरकलशो मत्स्यः श्रीवत्सः । स्वस्तिको नन्द्यावर्तो विविधानि खलु मङ्गलानि ॥

१

अनुसंधान माटे जुओ पृ ६७

२
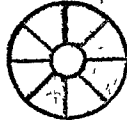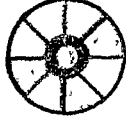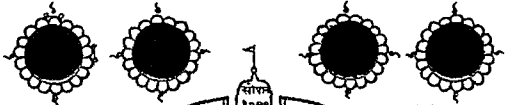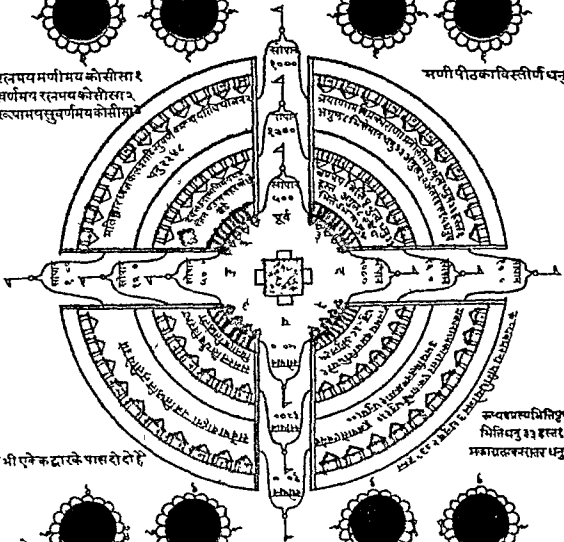
अनुसंधान माटे जुओ पृ १२६

उपदेश देते है. हे नाथ! मेरी एह प्रार्थना है जो सचमुच आपका समवसरण देखू भक्ति संयुक्त पदपंकज स्पर्शू मस्तकेन. (१११) (चक्री आदि संबंधी माहिती)

चक्री-नाम	पिता नाम	माता नाम	कुमार-काल	मंडलिक काल	विजय वेला	पट्ट-खंड-राज्य	दीक्षा काल	पूर्व-जन्म नाम	पूर्व जन्म नगरी	आगति आया	गति गया	आयु	अवगाह	नगरी नाम
१ भरत	ऋषभदेव	सुमंगला	पूर्व ७७ लाख	वर्ष १०००	६० हजार वर्ष	पूर्व ६ लाख	पूर्व १ लाख	पीठनी	पुंडरीकिणी	सर्वार्थसिद्ध	मोक्ष	पूर्व ८४ लक्ष	५०० धनु	विनीता
२ सगर	सुमति राजा	यशवती	पूर्व ५०० सहस्र	वर्ष ५० हजार	३० हजार वर्ष	वर्ष ७० लाख	पूर्व १ लाख	विजय राजा	पृथ्वीपुर	विजय विमान	,,	पूर्व ७२ लक्ष	४५० धनु	अयोध्या
३ मघवा	समुद्र विजय	सुंभद्रा	वर्ष २७ लाख ५० हजार	वर्ष ५ हजार	१० हजार वर्ष	वर्ष ३ लाख ९० हजार	३ लाख	शिशिभ[3] राट्ट	पुंडरीकिणी	ग्रैवेयक	देवलोक ३	वर्ष ५ लाख	४२ धनु	श्रावस्ती
४ सनत्कुमार	अश्वसेन राट्ट	सहदेवी	वर्ष ५० हजार	,,	१ हजार वर्ष	वर्ष ९० हजार	वर्ष १० हजार	मेरु[4] राजा	महापुरी[5]	महेन्द्र ४	,,	वर्ष ३ लाख	४१ धनु	हस्तिनापुर
५ शांतिनाथ	विश्वसेन राट्ट	अचिरा	वर्ष २५ हजार	वर्ष २५ हजार	वर्ष ८००	वर्ष २४२००	वर्ष २५ हजार	मेघरथ राजा	पुंडरीकिणी	सर्वार्थसिद्ध	मोक्ष	वर्ष १ लाख	४० धनु	गजपुर
६ कुंथुनाथ	सूरसेन राट्ट	श्री राणी	२३७५० वर्ष	वर्ष २३७५०	वर्ष ६००	वर्ष २३१५०	वर्ष २३१५०	सिंहरथ[6] राजा	सुंसीमा	,,	,,	वर्ष ९५ सहस्र	३५ धनु	,,
७ अरनाथ	सुदर्शन	देवी राणी	वर्ष २१ हजार	वर्ष २१ हजार	वर्ष ५००	वर्ष २०६००	वर्ष २१ हजार	धनपति राट्ट	क्षेमपुरी[8]	अपराजित	,,	वर्ष ८४ सहस्र	३० धनु	,,
८ सुभूम	कार्तिवीर्य	तारा राणी	वर्ष ५ हजार	वर्ष ५ हजार	,,	वर्ष ४९५००	दीक्षा नही	केनाम राजा	धंनपुरी[10]	जयत विमान	७ मी नरक	वर्ष ६० सहस्र	२८ धनु	,,
९ महापद्म	पद्मोत्तर राजा	ज (ज्वा) ला देवी	वर्ष ५००	वर्ष ५००	वर्ष ३००	वर्ष १८७००	वर्ष १० हजार	वितद्रु[11] राजा	चीतशोका[12]	ब्रह्मदेव	मोक्ष	वर्ष ३० सहस्र	२० धनु	वाराणसी

१ मस्तक वडे।

२-१२ आ तेमज बीजा पण केटलाक नामो त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रथी जुदां पडे छे ते विचारणीय छे।

१० हरिषेण	महाहरि	मोरा राणी	वर्ष ३२५	वर्ष ३२५	वर्ष १५०	वर्ष ३२५०	वर्ष ३५०	महेन्द्र राष्ट्र	विजयपुर	महेन्द्र ४	,,	वर्ष १० सहस्र	१५ धनु	कंपिलपुर
११ जय	विजय राजा	विप्रा राणी	वर्ष ३०००	वर्ष ३०००	वर्ष १००	वर्ष १९००	वर्ष ३००	अमित राष्ट्र	राजपुर	ब्रह्मलोक	,,	वर्ष ३ सहस्र	१२ धनु	राजगृह
१२ ब्रह्मदत्त	ब्रह्मभूत राजा	चूलणी	वर्ष २८	वर्ष ५६	वर्ष १६	वर्ष ६००	दीक्षा नहीं	संभूतजी	काशी	महाशुक्र	७ मी नरक	वर्ष ७००	७ धनु	कंपिलपुर

९ वासुदेव	त्रिपृष्ठ	द्विपृष्ठ	स्वयंभू	पुरुषोत्तम	पुरुष सिंह	पुरुषपुंडरीक	दत्त	नारायण लक्ष्मण	कृष्ण
पूर्व भव नाम	विश्वभूति	पर्वत	धनदत्त	समुद्रदत्त	सेवाल	मित्र	ललितमित्र	पुनर्वसु	गंगदत्त
पूर्व भव आचार्य	संभूति	सुभद्र	सुदर्शन	शीतल	श्रेयास	कृष्ण	गंगदत्त	सागर-समित	द्रुमसेन
निदान नगर	मथुरा	प्रोतवृद्ध (?)	श्रावस्ती	पोतनपुर	राजगृह	काकदी	कौशांबी	मिथिला	हस्तिनापुर
पिता नाम	प्रजापति	ब्रह्मा	सौम्य	रुद्र	शिव	महाशिर	अग्निशिख	दशरथ	वसुदेव
माता नाम	मृगावती	उमा	पृथ्वी	सीता	अमृता	लक्ष्मी	शेषमति	कैकेयी सुमित्रा	देवकी
अवगाहना-धनु	८०	७०	६०	५०	४५	२९	२६	१६	१०
गति-नरक	सातमी	छठी	छठी	छठी	पाचमी	छठी	छठी	चौथी	त्रीजी
आयु-वर्ष	८४ लक्ष	७२ लक्ष	६० लक्ष	३० लक्ष	१० लक्ष	६५ सहस्र	५६ हजार	१२ सहस्र	१ सहस्र

९ प्रतिवासुदेव	अश्वग्रीव	[मे]तारक	मेरक	मधुकैसव (टभ)	निसुंभ	बल	प्रह्लाद	रावण	जरासिंध

९ बलदेव	अचल	विजय	भद्र	सुप्रभ	सुदर्शन	आनद	नंदन	पद्म रामचंद्र	राम बलभद्र
पूर्व भव नाम	विश्वनदी	स(सु)बधु	सागरदत्त	ललित	वराह	धर्म	सेन	अपराजित	ललितांग

माता नाम	भद्रा	सुभद्रा	सुप्रभा	सुदर्शना	विजया	वैजयती	जयंती	अपरा-जिता	रोहिणी
गति	मोक्ष	——	——>	ए	व	म्	——	——>	ब्रह्मलोक
आयु	८५ लक्ष वर्ष	७५ लक्ष वर्ष	६५ लक्ष वर्ष		१७ लक्ष वर्ष	८५ हजार वर्ष	६५ हजार वर्ष	१५ हजार वर्ष	१२ सो वर्ष
तीर्थंकरके वारे	श्रेयास	वासु-पूज्य	विमल नाथ	अनत नाथ	धर्मनाथ	१८।१९ के अतरे	१८।१९ के अतरे	२०।२१ के अतरे	नेमि-नाथ
वर्ण	सुवर्ण	——	——	——>	ए	व	म्	——	——>

इति नवतत्त्वसंग्रहे पुण्यतत्त्वं तृतीया(य) संपूर्णम्.
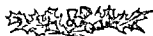
अथ 'पाप'तत्त्व लिख्यते—प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, पैशुन्य १४, परापवाद १५, रतिअरति १६, मायामृषा १७, मिथ्यादर्शनशल्य १८ इनसे पापका बंध होइ.

८२ प्रकारे पाप भोगवे—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, असातावेदनीय १, मोहनीय २६, नरक-आयु १, नरक-तिर्यंच गति २, जाति ४, संहनन ५, संस्थान ५, अशुभ वर्ण आदि ४, नरक-तिर्यंच-आनुपूर्वी २, अशुभ विहायोगति १, उपघात १, स्थावरदशक १०, नीच गोत्र १, अतराय ५, एवं सर्व ८२ प्रकारे भोगवे.

इति नवतत्त्वसंग्रहे पापतत्त्वं चतुर्थ सम्पूर्णम्.
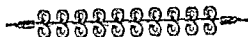
अथ 'आश्रव'तत्त्व लिख्यते—

२५ क्रियाओ—(१) काइया—कायाव्यापार करी नीपनी ते 'कायिकी'. (२) अहिगरणीया—जिस करी जीव नरक आदिकनो अधिकारी होय ते 'अधिकरण', ते भूंडा अनुष्ठान अथवा खड्ग आदि तिहा उपनी ते 'अधिकारणिकी'. (३) पाउसिया—मत्सरभावे नीपनी ते 'प्राद्वेषिकी'. (४) परियावणिया—आपकूं अथवा परकूं परितापना करता 'पारितापनिकी. (५) पाणाइवातिया—अपणा अथवा परना प्राण हरता 'प्राणातिपात' क्रिया. (६) आरंभिया—जीवने वा जीनना कलेवरने तथा पीठीमय जीनना आकारने अथवा वस्त्र आदिकने आरभता-मर्दता 'आरभिकी'. ७ परिग्गहिया—जीवका अने अजीवका परिग्रह

करता 'पारिग्रहिकी'. ८ मायावत्तिया—माया तेह ज प्रत्यय–कारण है कर्मबंधनो ते 'मायाप्रत्ययिकी'. ९ मिच्छादंसणवत्तिया—हीन प्रमाणसे वा अधिक माने ते 'मिथ्या-दर्शनप्रत्ययिकी'. १० अपच्चक्खाण—जीवना अथवा अजीव मद्य आदिनो प्रत्याख्यान नही ते. (११) दिट्ठिया—देखने जाना अथवा देखना तेहथी जे पाप ते 'दृष्टिजा'. (१२) पुट्ठिया—पूंजने करी अथवा स्पर्शेवें करी जे कर्म ते 'स्पृष्टिजा'. (१३) पाडुच्चिया—बाह्य वस्तु आश्री उपजे ते 'प्रातीत्यकी'. (१४) सामंतोवणिया–समंतात्–चौ फेरे उपनिपात–लोकांका मिलना तिहां जे उपनी ते 'सामंतोपनिपातिकी'. सांढ आदि रथ आदि लोक देखीने प्रशंसे तिम तिम धणी हर्षे ते धणीने 'सामंतोपनिपातिकी' क्रिया लागे. (१५) सहत्थिया—आपणे हस्तसे उपनी ते 'स्वाहस्तिकी'. (१६) निसत्थिया—नाखणे से सेडलादिसे नीपनी ते 'नैसृष्टिकी'. (१७) आणवणिया—पापनो आदेश देवो ते 'आज्ञापनिकी' अथवा वस्तु मंग-चावणी. (१८) वियारणिया—जीवने वेदारतां वा दलालने जीव आदि वेचवानां अथवा पुरुषने विप्रतारता 'वैदारिणी', 'वैचारणिकी', 'वैतारणिकी' ए ३ पर्याय. (१९) अणाभो-गवत्तिया—अज्ञानना कारण थकी उपनी ते 'अनाभोगप्रत्ययिकी'. (२०) अणवकंखव-त्तिया—अपणे शरीर आदिने ते निमित्त है जिसका ते 'अनवकांक्षाप्रत्ययिकी'. एतावता कुकर्म करता हुया परभवसे डरे नही. (२१) पेज्जवत्तिया—रागसे उपनी माया लोभरूप ('प्रेमप्रत्ययिकी'). (२२) दोसवत्तिया—द्वेषथी उपनी क्रोध, मानरूप ('द्वेषप्रत्ययिकी'). (२३) पओगकिरिया—काया आदिकना व्यापारथी नीपनी ते 'प्रयोग'क्रिया. (२४) समु-दाणकिरिया—अष्ट कर्मनो ग्रहवो ते 'समुदान'क्रिया. (२५) ईरियावहिया—योग निमित्त है जेहनो ते ('ईर्यापथिकी'); कायाना योग थकी बंध पडे.

हेतु सत्तावन कर्मग्रन्थात्—मिथ्यात्व ५, अव्रत १२, कषाय २५, योग १५, एवं सर्व ५७ हेतु. इनका गुणस्थान उपर स्वरूप गुणस्थानद्वारसे जान लेना. और विशेष आश्रव त्रिभंगीसे जानना.

श्रीस्थानांग (१० मे) स्थाने दस भेदे असंवर—(१) श्रोत्रेन्द्रिय-असंवर, (२) चक्षु-रिन्द्रिय-असंवर, (३) घ्राणेन्द्रिय-असंवर, (४) रसनेन्द्रिय-असंवर, (५) स्पर्शनेन्द्रिय-असंवर, (६) मन असंवर, (७) वचन-असंवर, (८) काय-असंवर, (९) भंडोवगरण-असंवर, (१०) सूची कुसग्ग-असंवर; एवं ए दस आश्रवके भेद है. तथा आश्रवके ४२ भेद—इन्द्रिय ५, कषाय ४, अव्रत ५, योग ३, क्रिया २५; एवं ४२. इति आश्रवतत्त्वं पंचमं सम्पूर्णम्.

अथ 'संवर' तत्त्व स्वरूप लिख्यते—

पांच चरित्र, षट् निर्ग्रन्थ. प्रथम षट्निर्ग्रंथस्वरूप—(१) पुलाक, (२) बकुश, (३) प्रतिसेवना(कुशील), (४) कषायकुशील, (५) निर्ग्रंथ अने (६) स्नातक. पुलाकके ५ भेद—

१ कर्मम-यमी। २ भाण्डोपकरण।

ज्ञानपुलाक (अर्थात्) ज्ञानका विराधक १, एवं दर्शनपुलाक २, एवं चारित्रपुलाक ३, विना कारण अन्य लिंग करे ते लिंगपुलाक ४, मन करी अकल्पनिक सेवे ते यथा सूक्ष्मपुलाक ५. लब्धिपुलाकका स्वरूप वृत्तिसे जानना. बकुशके ५ भेद—साधुकूं करणे योग्य नही शरीर, उपकरणकी विभूषा ते करे जानके ते आभोगबकुश १, अनजाने दोष अनाभोगबकुश २, छाने दोष लगावे ते संवृतबकुश ३, प्रगट दोष लगावे ते असंवृतबकुश ४, आख, मुख मांजे ते यथासूक्ष्मबकुश. ५. प्रतिसेवना कुशीलके ५ भेद—सेवना-सम्यक् आराधना, तिसका प्रतिपक्ष प्रतिसेवना; एतावता ज्ञान आदि आराधे नही. ज्ञान नही आराधे ते ज्ञानप्रतिसेवना १; एवं दर्शन २, चारित्र ३, लिंग ४; जो तपस्या करे वांछा सहित ते यथासूक्ष्मप्रतिसेवना ५. कषायकुशीलके ५ भेद—जो ज्ञान, दर्शन, लिंग, कषाय क्रोध आदि करी प्रजु(युं)जे सो ज्ञान १, दर्शन २, लिंग ३ कुशील; कषायके परिणाम चारित्रमे प्रवर्तावे ते चारित्रकुशील ४, मन करी क्रोध आदि सेवे ते यथासूक्ष्मकषायकुशील ५. उपशातमोह तथा क्षीणमोहके अतर्मुहूर्त कालके प्रथम समय वर्त्तमान ते प्रथम समय निर्ग्रन्थ १, शेष समयमे अप्रथम समय निर्ग्रन्थ २; एवं निर्ग्रन्थ कालके चरम समयमे वर्तमान ते चरम समय निर्ग्रन्थ ३, शेष समयमे अचरम समय निर्ग्रन्थ ४, सामान्य प्रकारे सर्व काल यथासूक्ष्मनिर्ग्रन्थ ५. इति परिभाषाकी सज्ञा. स्नातकके ५ भेद—अच्छवी अव्यवी, अव्यथक इति. अन्ये आचार्या छवि-चांमडी योगनिरोधकाले नही इति अच्छवि; एक आचार्य ऐसे कहै है. क्षपी सखेद व्यापार ते जिनके नही ते अक्षपी; एक आचार्य ऐसे कहै है—घातिकर्म चार क्षपाय है फेर क्षपावणे नही इस वास्ते 'अक्षपी' कहीये १, अशबल अतिचारपंकाभावात्. शुद्ध चारित्र २, विगतघातिकर्म अकर्मांश ३, शुद्धज्ञानदर्शनधर केवलधारी ४, अर्हन् जिन केवली ए चौथा भेदमे है. इति वृत्तौ. कर्म न बांधे ते 'अपरिश्रावी' ५, योगनिरोधकाले. अथ अग्रे ३६ द्वार यंत्रसे जानने—

गाथा भगवती (श. २५, उ. ६)मे सर्वद्वारसंग्रह—

"पण्णवण १ वेय २ रागे ३, कप्प ४ चरित्त ५ पडिसेवणा ६ णाणे ७ ॥
तित्थे ८ लिंग ९ सरीरे १०, खित्त (खेत्ते) ११ काल १२ गई १३ संजम १४ निकासे १५ ॥ १ ॥
जोगु १६ वओग १७ कसाए १८, लेसा १९ परिणाम २० बंध २१ वेए २२ य ।
कम्मोदीरण २३ उवसंप(जहण्ण) २४ सण्णा २५ य आहारे २६ ॥ २ ॥
भव २७ आगरिसे २८ कालंतरे २९-३० य समुग्घाय ३१ खेत्त ३२ फुसणा ३३ य ।
भावे ३४ परिमाणे ३५ खलु (चिय) अप्पाबहुयं नियंठाणं ३६ ॥ ३ ॥"

---

१ अतिचाररूप कादवना अभावथी ।

२ प्रज्ञापनवेदरागा कल्पचारित्रप्रतिषेवणाज्ञानानि । तीर्थलिङ्गशरीराणि क्षेत्रकालगतिसंयमनिकर्षाः ॥ १ ॥
योगोपयोगकषाया लेश्यापरिणामबन्धवेदाश्च । कर्मोदीरणोपसम्पद्धानसञ्ज्ञाश्चाहार ॥ २ ॥
भव आकर्ष कालान्तरे च समुद्घातक्षेत्रस्पर्शनाश्च । भाव परिणाम खलु अल्पबहुत्व निर्ग्रन्थानाम् ॥ ३ ॥

करता 'पारिग्रहिकी'. ८ मायावत्तिया—माया तेह ज प्रत्यय-कारण है कर्मबंधनो ते 'मायाप्रत्ययिकी'. ९ मिच्छादंसणवत्तिया—हीन प्रमाणसे वा अधिक माने ते 'मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी'. १० अपच्चक्खाण—जीवना अथवा अजीव मद्य आदिनो प्रत्याख्यान नही ते. (११) दिट्ठिया—देखने जाना अथवा देखना तेहथी जे पाप ते 'दृष्टिजा'. (१२) पुट्ठिया—पूंजने करी अथवा स्पर्शेवें करी जे कर्म ते 'स्पृष्टिजा'. (१३) पाडुच्चिया—बाह्य वस्तु आश्री उपजे ते 'प्रातीत्यकी'. (१४) सामंतोवणिया-समंतात्—चौ फेरे उपनिपात-लोकांका मिलना तिहां जे उपनी ते 'सामंतोपनिपातिकी'. सांढ आदि रथ आदि लोक देखीने प्रशंसे तिम तिम धणी हर्षे ते धणीने 'सामंतोपनिपातिकी' क्रिया लागे. (१५) सहत्थिया—आपणे हस्तसे उपनी ते 'स्वाहस्तिकी'. (१६) निसत्थिया—नाखणे से सेडलादिसे नीपनी ते 'नैसृष्टिकी'. (१७) आणवणिया—पापनो आदेश देवो ते 'आज्ञापनिकी' अथवा वस्तु मंगावणी. (१८) वियारणिया—जीवने वेदारतां वा दलालने जीव आदि वेचवानां अथवा पुरुषने विप्रतारता 'वैदारिणी', 'वैचारणिकी', 'वैतारणिकी' ए ३ पर्याय. (१९) अणाभोगवत्तिया—अज्ञानना कारण थकी उपनी ते 'अनाभोगप्रत्ययिकी'. (२०) अणवकखवत्तिया—अपणे शरीर आदिने ते निमित्त है जिसका ते 'अनवकांक्षाप्रत्ययिकी'. एतावता कुकर्म करता हुया परभवसे डरे नही. (२१) पेज्जवत्तिया—रागसे उपनी माया लोभरूप ('प्रेमप्रत्ययिकी'). (२२) दोसवत्तिया—द्वेषथी उपनी क्रोध, मानरूप ('द्वेषप्रत्ययिकी'). (२३) पओगकिरिया—काया आदिकना व्यापारथी नीपनी ते 'प्रयोग'क्रिया. (२४) समुदाणकिरिया—अष्ट कर्मनो ग्रहवो ते 'समुदान'क्रिया. (२५) ईरियावहिया—योग निमित्त है जेहनो ते ('ईर्यापथिकी'); कायाना योग थकी वध पडे.

हेतु सत्तावन कर्मग्रन्थात्—मिथ्यात्व ५, अव्रत १२, कषाय २५, योग १५, एवं सर्व ५७ हेतु. इनका गुणस्थान उपर स्वरूप गुणस्थानद्वारसे जान लेना. और विशेष आश्रव त्रिभंगीसे जानना.

श्रीस्थानांग (१० मे) स्थाने दस भेदे असंवर—(१) श्रोत्रेन्द्रिय-असंवर, (२) चक्षुरिन्द्रिय-असंवर, (३) घ्राणेन्द्रिय-असंवर, (४) रसनेन्द्रिय-असंवर, (५) स्पर्शनेन्द्रिय-असंवर, (६) मन असंवर, (७) वचन-असंवर, (८) काय-असंवर, (९) भंडोवगरण-असंवर, (१०) सूची कुसग्ग असंवर; एवं ए दस आश्रवके भेद है. तथा आश्रवके ४२ भेद—इन्द्रिय ५, कषाय ४, अव्रत ५, योग ३, क्रिया २५; एवं ४२. इति आश्रवतत्त्वं पंचमं सम्पूर्णम्.

अथ 'संवर' तत्त्व स्वरूप लिख्यते—

पाच चरित्र, षट् निर्ग्रन्थ. प्रथम षट्निर्ग्रंथस्वरूप—(१) पुलाक, (२) बकुश, (३) प्रतिसेवना(कुशील), (४) कषायकुशील, (५) निर्ग्रंथ अने (६) स्नातक. पुलाकके ५ भेद—

१ कर्मम यवी। २ भाण्डोपकरण।

ज्ञानपुलाक (अर्थात्) ज्ञानका विराधक १, एवं दर्शनपुलाक २, एवं चारित्रपुलाक ३, विना कारण अन्य लिंग करे ते लिंगपुलाक ४, मन करी अकल्पनिक सेवे ते यथा सूक्ष्मपुलाक ५. लब्धिपुलाकका स्वरूप वृत्तिसे जानना. बकुशके ५ भेद—साधुकू करणे योग्य नही शरीर, उपकरणकी विभूषा ते करे जानके ते आभोगबकुश १, अनजाने दोष अनाभोगबकुश २, छाने दोष लगावे ते सवृतबकुश ३, प्रगट दोष लगावे ते असंवृतबकुश ४, आंख, मुख माजे ते यथासूक्ष्मबकुश. ५. प्रतिसेवना कुशीलके ५ भेद—सेवना-सम्यक् आराधना, तिसका प्रतिपक्ष प्रतिसेवना; एतावता ज्ञान आदि आराधे नही. ज्ञान नही आराधे ते ज्ञानप्रतिसेवना १; एव दर्शन २, चारित्र ३, लिंग ४; जो तपस्या करे वांछा सहित ते यथासूक्ष्मप्रतिसेवना ५. कषायकुशीलके ५ भेद—जो ज्ञान, दर्शन, लिंग, कषाय क्रोध आदि करी प्रजु(यु)जे सो ज्ञान १, दर्शन २, लिंग ३ कुशील; कषायके परिणाम चारित्रमे प्रवर्तावे ते चारित्रकुशील ४, मन करी क्रोध आदि सेवे ते यथासूक्ष्मकषायकुशील ५. उपशातमोह तथा क्षीणमोहके अतर्मुहूर्त कालके प्रथम समय वर्त्तमान ते प्रथम समय निर्ग्रन्थ १, शेष समयमे अप्रथम समय निर्ग्रन्थ २; एवं निर्ग्रन्थ कालके चरम समयमे वर्तमान ते चरम समय निर्ग्रन्थ ३, शेष समयमे अचरम समय निर्ग्रन्थ ४, सामान्य प्रकारे सर्व काल यथासूक्ष्मनिर्ग्रन्थ ५. इति परिभाषाकी सज्ञा. स्नातकके ५ भेद—अच्छवी अत्थवी, अव्वथक इति. अन्ये आचार्या छवि-चांमडी योगनिरोधकाले नही इति अच्छवि; एक आचार्य ऐसे कहै है. क्षपी सखेद व्यापार ते जिनके नही ते अक्षपी; एक आचार्य ऐसे कहै है—घातिकर्म चार क्षपाय है फेर क्षपावणे नही इस वास्ते 'अक्षपी' कहीये १, अशबल अतिचारपकाभावात्[1]. शुद्ध चारित्र २, विगतघातिकर्म अकर्मांश ३, शुद्धज्ञानदर्शनधर केवलधारी ४, अर्हन् जिन केवली ए चौथा भेदमे है. इति वृत्तौ. कर्म न वाधे ते 'अपरिश्रावी' ५, योगनिरोधकाले. अथ अग्रे ३६ द्वार यंत्रसे जानने—

गाथा भगवती (श. २५, उ. ६)मे सर्वद्वारसंग्रह—

"[2]पंण्णवण १ वेय २ रागे ३, कप्प ४ चरित्त ५ पडिसेवणा ६ णाणे ७ ॥
तित्थे ८ लिंग ९ सरीरे १०, खित्त (खेत्ते) ११ काल १२ गई १३ सजम १४ निकासे १५ ॥ १ ॥

जोगु १६ वओग १७ कसाए १८, लेसा १९ परिणाम २० बंध २१ वेए २२ य ।
कम्मोदीरण २३ उवसंप(जहण्ण) २४ सण्णा २५ य आहारे २६ ॥ २ ॥
भव २७ आगरिसे २८ कालतरे २९-३० य समुग्घाय ३१ खेत्त ३२ फुसणा ३३ य ।
भावे ३४ परिमाणे ३५ खलु (चिय) अप्पाबहुय नियठाणं ३६ ॥ ३ ॥"

---

१ अतिचाररूप कादवना अभावथी ।

२ प्रज्ञापनवेदरागा कल्पचारित्रप्रतिषेवणाज्ञानानि । तीर्थलिङ्गशरीराणि क्षेत्रकालगतिसंयमनिकर्षा ॥ १ ॥
योगोपयोगकषाया लेश्यापरिणामबन्धवेदाश्च । कर्मोदीरणोपसम्पद्धानसञ्ज्ञाश्चाहार ॥ २ ॥
भव आकर्ष कालान्तरे च समुद्घातक्षेत्रस्पर्शनाश्च । भाव परिणाम खलु अल्पबहुत्व निर्ग्रन्थानाम् ॥ ३ ॥

(११२) अथ ३६ द्वारे यंत्रमे वर्णन करीये है—

१ प्रज्ञापन	१ पुलाक	२ बकुश	३ प्रतिसेवना	४ कषाय-कुशील	निर्ग्रन्थ	स्नातक
२ वेद	पुरुष, नपुंसक, कृत्रिम पिण जन्मनपुंसक नही इति वृत्तौ	स्त्री, पुरुष, नपुंसक कृत्रिम	बकुशवत्	बकुशवत् अथवा क्षीणवेद उपशांतवेद[1] भवेत्	उपशांतवेद, क्षीणवेद	क्षीण वेद
३ राग	सरागी	सरागी	सरागी	सरागी	उपशांत क्षीण	क्षीण राग
४ कल्प	स्थित, अस्थित, स्थविर	स्थित, अस्थित, जिनकल्प, स्थविर	बकुशवत् ४	स्थित, अस्थित, जिनकल्प, स्थविर, कल्पातीत	स्थित, अस्थित, कल्पातीत	निर्ग्रन्थ वत्
५ चारित्र	सामायिक, छेदोपस्थापनीय	सामायिक, छेदोपस्थापनीय	सामायिक, छेदोपस्थापनीय	आद्य चार	यथाख्यात	यथाख्यात
६ प्रतिसेवना	मूल गुण, उत्तर गुण	उत्तर गुण	पुलाकवत्	अप्रतिसेवि	अप्रतिसेवी	अप्रतिसेवी
७ ज्ञान प्रवचन	२ वा ३ प्रवचन, ज० ८, उ० नवमे पूर्वकी ३ वस्तु	२ वा ३ प्रवचन; ज० ८, उ० १० पूर्व	बकुशवत्	२ वा ३ वा ४ प्रवचन, ज० ८, उ० १४ पूर्व	कषायकुशीलवत्	केवल, सूत्र व्यतिरिक्त
८ तीर्थ	तीर्थमे	तीर्थमे	तीर्थमे	तीर्थमे अतीर्थमे वा	कषायकुशीलवत्	कषाय कुशीलवत्
९ लिंग	द्रव्ये ३ भावे स्वलिंग	→	ए	व	म्	→
१० शरीर	३ औ, तै, का	४ औ, वै, तै, का	४ औ, वै, तै, का	पांच	३ औ, तै, का	३ औ, तै, का
११ क्षेत्र	जन्म कर्मभूमि संहरण नही	जन्म कर्म० संहरण अकर्म	→	ए	व	म्

[1] क्षीणवेदमां अथवा उपशांतवेदमां होय ।

१२ काल		अवसर्पिणीमे जन्म आश्री ३।४ आरे छता भाव आश्री ३।४।५ आरे उत्सर्पिणीमें जन्म आश्री २।३।४ आरे, छता भाव आश्री ३।४ आरे	जन्म अवसर्पिणी ३।४।५ आरे, छता ३।४ आरे, उत्सर्पिणी जन्म आश्री ३।४।२, छता ३।४, संहरण सर्व	वकुशवत्	वकुशवत्	जन्म आश्री पुलाकवत् सहरण आश्री सर्वत्र	निर्ग्रन्थवत्
१३ गति, पदवी—इंद्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंशत्, लोकपाल, अहमिन्द्र		ज० सौधर्म, उ० ८ मा देवलोक पदवी ४ मेसु एक, स्थिति ज० पृथक् पल्योपम, उ० १८ सागरोपम	ज० सौधर्म, उ० १२ मे देवलोक, पदवी ४ मेसुं एक, स्थिति ज० पृथक् पल्योपम, उ० २२ सागरोपम	वकुशवत्	ज० सौधर्म, उ० पाच अनुत्तर; पदवी पाचमेसु एक, ज० पृथक्पल्योपम, उ० ३३ सागरोपम	पाच अनुत्तरमे, पदवी एक अहमिन्द्र, स्थिति ज० उ० ३३ सागरोपम	मोक्षगति
१४ सयमस्थान अल्पबहुत्व		असख्याते, ३ असख्य गुणे	असख्याते, ४ असख्य गुणे	असख्याते, ५ असख्य गुणे	असख्याते, ६ असख्य गुणे	एक, स्तोक	एक, तुल्य
१५ चारित्र पर्यायना सन्निकर्ष	पु	६ स्थान	अनंत गुण हीन	अनत गुण हीन	६ स्थान	अनत गुण हीन	अनत गुण हीन
	व	अनत गुण अधिक	६ स्थान	६ स्थान	"	" " "	" " "
	प्र	अनत गुण अधिक	" "	" "	" "	" " "	" " "
	क	६ स्थान	" "	" "	" "	" " "	" " "
	नि	अनत गुण अधिक	अनंत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	तुल्य	तुल्य
	स्ना	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	"	"
जघन्य		१ स्तोक	३ अनत गुण	३ तुल्य	१ तुल्य	०	०
उत्कृष्ट		२ अनंत गुण	४ "	५ अनत गुण	६ अनत गुण	७ अनत	७ तुल्य

(११२) अथ ३६ द्वारं यंत्रमे वर्णन करीये है—

१ प्रज्ञापन	१ पुलाक	२ बकुश	३ प्रतिसेवना	४ कषाय-कुशील	निर्ग्रन्थ	स्नातक
२ वेद	पुरुष, नपुंसक, कृत्रिम पिण जन्मनपुंसक नही इति वृत्तौ	स्त्री, पुरुष, नपुंसक कृत्रिम	बकुशवत्	बकुशवत् अथवा [1]क्षीणवेद उपशांतवेदे भवेत्	उपशांतवेद, क्षीणवेद	क्षीण वेद
३ राग	सरागी	सरागी	सरागी	सरागी	उपशात क्षीण	क्षीण राग
४ कल्प	स्थित, अस्थित, स्थविर	स्थित, अस्थित, जिनकल्प, स्थविर	बकुशवत् ४	स्थित, अस्थित, जिनकल्प, स्थविर, कल्पातीत	स्थित, अस्थित, कल्पातीत	निर्ग्रन्थ वत्
५ चारित्र	सामायिक, छेदोपस्थापनीय	सामायिक, छेदोपस्थापनीय	सामायिक, छेदोपस्थापनीय	आद्य चार	यथाख्यात	यथाख्यात
६ प्रतिसेवना	मूल गुण, उत्तर गुण	उत्तर गुण	पुलाकवत्	अप्रतिसेवि	अप्रतिसेवी	अप्रतिसेवी
७ ज्ञान प्रवचन	२ वा ३ प्रवचन, ज० ८, उ० नवमे पूर्वकी ३ वस्तु	२ वा ३ प्रवचन, ज० ८, उ० १० पूर्व	बकुशवत्	२ वा ३ वा ४ प्रवचन, ज० ८, उ० १४ पूर्व	कषायकुशीलवत्	केवल सूत्र व्यतिरिक्त
८ तीर्थ	तीर्थमे	तीर्थमे	तीर्थमे	तीर्थमे अतीर्थमे वा	कषायकुशीलवत्	कषाय कुशीलवत्
९ लिंग	द्रव्ये ३ भावे स्वलिंग	→	ए	व	म्	→
१० शरीर	३ औ, तै, का	४ औ, वै, तै, का	४ औ, वै, तै, का	पांच	३ औ, तै, का	३ औ, तै, का
११ क्षेत्र	जन्म कर्मभूमि सहरण नही	जन्म कर्म० संहरण अकर्म	→	ए	व	म्

[1] क्षीणवेदमां अथवा उपशांतवेदमां होय ।

१२ काल		अवसर्पिणीमे जन्म आश्री ३।४ आरे छता भाव आश्री ३।४।५ आरे उत्सर्पिणीमें जन्म आश्री २।३।४ आरे; छता भाव आश्री ३।४ आरे	जन्म अवसर्पिणी ३।४।५ आरे, छता ३।४ आरे, उत्सर्पिणी जन्म आश्री ३।४।२, छता ३।४, संहरण सर्वे	बकुशवत्	बकुशवत्	जन्म आश्री पुलाकवत् संहरण आश्री सर्वत्र	निर्ग्रन्थवत्
१३ गति, पदवी—इद्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंशत्, लोकपाल, अहमिन्द्र		ज० सौधर्म, उ० ८ मा देवलोक पदवी ४ मेसु एक, स्थिति ज० पृथक् पल्योपम, उ० १८ सागरोपम	ज० सौधर्म, उ० १२ मे देवलोक, पदवी ४ मेसु एक, स्थिति ज० पृथक् पल्योपम, उ० २२ सागरोपम	बकुशवत्	ज० सौधर्म, उ० पाच अनुत्तर; पदवी पाच मेसु एक, ज० पृथक्पल्योपम, उ० ३३ सागरोपम	पाच अनुत्तरमे, पदवी एक अहमिन्द्र, स्थिति ज० उ० ३३ सागरोपम	मोक्ष गति
१४ सयमस्थान अल्पबहुत्व		असख्याते, ३ असख्य गुणे	असख्याते, ४ असख्य गुणे	असख्याते, ५ असख्य गुणे	असख्याते, ६ असख्य गुणे	एक, स्तोक	एक, तुल्य
१५ चारित्र	पु	६ स्थान	अनत गुण हीन	अनत गुण हीन	६ स्थान	अनंत गुण हीन	अनत गुण हीन
पर्यायना	ब	अनत गुण अधिक	६ स्थान	६ स्थान	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
सन्निकर्ष	प्र	अनत गुण अधिक	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
	क	६ स्थान	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
	नि	अनत गुण अधिक	अनंत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनंत गुण अधिक	तुल्य	तुल्य
	स्ना	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	,,	,,
जघन्य		१ स्तोक	३ अनत गुण	३ तुल्य	१ तुल्य	०	०
उत्कृष्ट		२ अनत गुण	४ ,,	५ अनत गुण	६ अनत गुण	७ अनंत	७ तुल्य

(११२) अथ ३६ द्वार यंत्रमे वर्णन करीये है—

१ प्रज्ञापन	१ पुलाक	२ बकुश	३ प्रतिसेवना	४ कषाय-कुशील	निर्ग्रन्थ	स्नातक
२ वेद	पुरुष, नपुंसक, कृत्रिम पिण जन्मनपुंसक नही इति वृत्तौ	स्त्री, पुरुष, नपुंसक कृत्रिम	बकुशवत्	बकुशवत् अथवा क्षीणवेद उपशातवेदे भवेत्[1]	उपशांतवेद, क्षीणवेद	क्षीण वेद
३ राग	सरागी	सरागी	सरागी	सरागी	उपशात क्षीण	क्षीण राग
४ कल्प	स्थित, अस्थित, स्थविर	स्थित, अस्थित, जिनकल्प, स्थविर	बकुशवत् ४	स्थित, अस्थित, जिनकल्प, स्थविर, कल्पातीत	स्थित, अस्थित, कल्पातीत	निर्ग्रन्थ वत्
५ चारित्र	सामायिक, छेदोपस्थापनीय	सामायिक, छेदोपस्थापनीय	सामायिक, छेदोपस्थापनीय	आद्य चार	यथाख्यात	यथाख्यात
६ प्रतिसेवना	मूल गुण, उत्तर गुण	उत्तर गुण	पुलाकवत्	अप्रतिसेवि	अप्रतिसेवी	अप्रति सेवी
७ ज्ञान प्रवचन	२ वा ३ प्रवचन; ज० ८, उ० नवमे पूर्वकी ३ वस्तु	२ वा ३ प्रवचन; ज० ८, उ० १० पूर्व	बकुशवत्	२ वा ३ वा ४ प्रवचन, ज० ८, उ० १४ पूर्व	कषायकुशीलवत्	केवल सूत्र व्यतिरिक्त
८ तीर्थ	तीर्थमे	तीर्थमे	तीर्थमे	तीर्थमे अतीर्थमे वा	कषायकुशीलवत्	कषाय कुशीलवत्
९ लिंग	द्रव्ये ३ भावे स्वलिंग	→	ए	व	म्	→
१० शरीर	३ औ, तै, का	४ औ, वै, तै, का	४ औ, वै, तै, का	पांच	३ औ, तै, का	३ औ, तै, का.
११ क्षेत्र	जन्म कर्मभूमि संहरण नही	जन्म कर्म० संहरण अकर्म	→	ए	व	म्

[1] क्षीणवेदमां अथवा उपशांतवेदमां होय ।

१२ काल		अवसर्पिणीमे जन्म आश्री ३।४ आरे छता भाव आश्री ३।४।५ आरे उत्स र्पिणीमें जन्म आश्री २।३।४ आरे, छता भाव आश्री ३।४ आरे	जन्म अवस र्पिणी ३।४।५ आरे, छता ३।४ आरे, उत्सर्पिणी जन्म आश्री ३।४।२; छता ३।४, सहरण सर्वे	वकुशवत्	वकुशवत्	जन्म आश्री पुलाकवत् संहरण आश्री सर्वत्र	निर्ग्रन्थ-वत्
१३ गति, पदवी—इद्र, सामातिक, त्रायस्त्रिंशत्, लोकपाल, अहमिन्द्र		ज० सौधर्म, उ० ८ मा देवलोक पदवी ४ मेसु एक, स्थिति ज० पृथक् पल्योपम, उ० १८ सागरोपम	ज० सौधर्म, उ० १२ मे देवलोक, पदवी ४ मेसु एक, स्थिति ज० पृथक् पल्योपम, उ० २२ सागरोपम	वकुशवत्	ज० सौधर्म, उ० पाच अनुत्तर, पदवी पाच-मेसु एक, ज० पृथक्पल्योपम, उ० ३३ सागरोपम	पाच अनुत्त-रमे, पदवी एक अहमिन्द्र, स्थिति ज० उ० ३३ सागरोपम	मोक्ष गति
१४ सयमस्थान अल्पबहुत्व		असख्याते, ३ असख्य गुणे	असख्याते, ४ असख्य गुणे	असख्याते, ५ असख्य गुणे	असख्याते, ६ असख्य गुणे	एक, स्तोक	एक, तुल्य
१५ चारित्र	पु	६ स्थान	अनत गुण हीन	अनंत गुण हीन	६ स्थान	अनत गुण हीन	अनत गुण हीन
पर्यायना	व	अनत गुण अधिक	६ स्थान	६ स्थान	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
सन्निकर्ष	प्र	अनत गुण अधिक	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
	क	६ स्थान	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
	नि	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	तुल्य	तुल्य
	स्ना	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	,,	,,
जघन्य		१ स्तोक	३ अनत गुण	३ तुल्य	१ तुल्य	०	०
उत्कृष्ट		२ अनत गुण	४ ,,	५ अनत गुण	६ अनत गुण	७ अनत	७ तुल्य

१६ उपयोग	मन आदि ३	→	प	व	मू	मन आदि ३, अयोगी वा
१७ उपयोग	साकार १, अनाकार २	→	प	व	मू	→
१८ कषाय	क्रोध आदि ४	४	४	४।३।२।१	उपशांत, क्षीण	क्षीण
१९ लेश्या	३ प्रशस्त	६	६	६	१ शुक्ल	१, वा अलेश्यी
२० परिणाम	वर्धमान, हीन, अवस्थित	वर्धमान, हीन, अवस्थित	वर्धमान, हीन, अवस्थित	वर्धमान, हीन, अवस्थित	वर्धमान, अवस्थित	निर्ग्रन्थवत्
	वर्धमान ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त, हीयमान ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त, अवस्थित ज० १ समय, उ० ७ समय,	प	व	मू	वर्धमान ज० उ० अंतर्मुहूर्त, अवस्थित ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त	वर्धमान ज० उ० अंतर्मुहूर्त, अवस्थित ज० अंतर्मुहूर्त, उ० देश ऊन पूर्व कोटि
२१ बंध	७ आयु नही	७ ८	७ ८	८ ७ ६	१ साता	१ बंधे वा अबंधक
२२ वेद	८ कर्म	८	८	८	७ मो वर्जी	४
२३ उदीरणा	६ आयु, १ वेदनीय वर्जी	७ ८ ६	७ ८ ६	८ ७ ६ ५	५ वा २	उदीरे २, वा अनुदीरक
२४ उवसंपजहण्ण	पुलाकपणा छोडी कषायकुशील १, असंयम २, प २ प्रति आदरे	प्रतिसेवना १, कषायकुशील २, असंयम ३, देशविरति ४, पच ४ आदरे, बकुशपणा छोडी	प्रतिसेवनापणा छोडी बकुश १, कषाय कुशील २, असंयम ३ देशविरति ४, प ४ आदरे	कषायकुशीलपणा छोडी पुलाक १, बकुश २, प्रतिसेवना ३, निर्ग्रन्थ ४, असंयम ५, देशविरति ६, प ६ आदरे	निर्ग्रन्थपणा छोडी कषाय कुशील १, स्नातक २, असंयम ३, प ३ पडिवजे	स्नातकपणा छोडी सिद्धगति पडिवजे

२५ संज्ञा	नोसंज्ञोपयुक्त	संज्ञोपयुक्त १, नोसंज्ञोपयुक्त २	एवम्	एवम्	नोसंज्ञोपयुक्त	नोसंज्ञोपयुक्त
२६ आहार	आहारक	आहारी	आहारी	आहारी	आहारी	आहारी अनाहारी
२७ भव	ज० १, उ० ३	ज० १, उ० ८	ज० १, उ० ८	ज० १, उ० ८	ज० १, उ० ३	१ तेही ज०
२८ आकर्ष-एक भव आश्री	ज० १, उ० ३	ज० १, उ० पृथक् शत	ज० १, उ० पृथक् शत	ज० १, उ० पृथक् शत	ज० १, उ० २	१
घणे भव आश्री	ज० २, उ० ७	ज० २, उ० ७२००	ज० २, उ० ७२००	ज० २, उ० ७२००	ज० २, उ० ५	०
२९ स्थिति-एक जीव आश्री	ज० उ० अंतर्मुहूर्त	ज० १ समय, उ० देश ऊन पूर्व कोटि	एवम्	एवम्	ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० देश ऊन पूर्व कोटि
नाना जीव आश्री	ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त	सर्वाद्धा	सर्वाद्धा	सर्वाद्धा	ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त	सर्वाद्धा
३० अंतर-एक जीव आश्री	ज० अंतर्मुहूर्त उ० वनस्पति काल	——→	एवम्	——→	——→	नास्ति अंतरम्
घणा जीव आश्री	ज० १ समय, उ० संख्यात वर्ष	नास्ति अन्तरम्	नास्ति अन्तरम्	नास्ति अन्तरम्	ज० १ समय, उ० ६ समय	,, ,,

३१ समुद्घात	वे १, क २, मर ३	वे १, क २, म ३, वे ४, ते ५	वे १, क २, म ३, वे ४, ते ५	६ केवल नहीं	०	१ केवल
३२ क्षेत्र	लोकके असंख्यमे भाग	——→	एवम्	——→	——→	असंख्यमे घणे, असंख्य सर्व लोक
३३ स्पर्शन	,,	,,	,,	,,	,,	,,
३४ भाव	क्षयोपशम	ए	व	म्	औपशमिक वा क्षायिक	क्षायिक

३५ परिणाम	प्रतिपद्यमान [1]सिय अत्थि, [2]सिय नत्थि, [3]जदि अत्थि ज० १, २, ३, उ० पृथक् शत, पूर्वप्रतिपन्न [4]स्याद् अस्ति [5]स्याद् नास्ति [6]यद्यस्ति ज० १, २, ३, उ० पृथक् सहस्र	प्रतिपद्यमान होवे, नही वी होवे, जोकर होवे तो ज० १, २, ३, उ० पृथक् शत, पूर्वप्रतिपन्न जघन्य, उत्कृष्ट पृथक् शतकोटि	वकुशवत्	प्रतिपद्यमान होवे वी, नही वी होवे, जो होवे तो ज० १, २, ३, उ० पृथक् सहस्र, पूर्वप्रतिपन्न जघन्य, उत्कृष्ट पृथक् सहस्र कोटि	प्रतिपद्यमान होवे वी, नही वी होवे, जो होवे तो ज० १, २, ३, उ० १६२ तिनमे १०८ क्षपक ५४ उपशम, पूर्वप्रतिपन्न होवे वी, नही वी होवे, होवे तो ज० १, २, ३, उ० पृथक् शत	प्रतिपद्यमान स्याद् अस्ति, स्याद् नास्ति, यद्यस्ति तदा ज० १, २, ३, उ० पृथक् शत; पूर्वप्रतिपन्न ज० उ० पृथक् कोटि
३६ अल्प बहुत्व	२ संख्येय गुणा	४ संख्येय गुणा	५ संख्येय गुणा	६ संख्येय गुणा	१ स्तोक	३ संख्येय गुणा

(११३) अथ श्रीभगवती (श. २५, उ. ७) थी संयत ५ यंत्रम्

१	प्रज्ञापना	सामायिक १	छेदोपस्थापनीय २	परिहारविशुद्धि ३	सूक्ष्मसम्पराय ४	यथाख्यात ५
२	वेद	३ वेद, अवेदी वा	सामायिकवत्	पुरुषवेद १, कृत नपुंसक वेद २	उपशांतवेद, क्षीणवेद	उपशांतवेद, क्षीणवेद
३	राग	सरागी ——→	प	व	म्	उपशांतराग, क्षीणराग
४	कल्प	स्थितकल्प १, अस्थित २, जिनकल्प ३, स्थविर ४, कल्पातीत ५	स्थितकल्प १, जिनकल्प २, स्थविरकल्प ३	स्थितकल्प १, जिनकल्प २, स्थविरकल्प ३	स्थितकल्प १, अस्थितकल्प २, कल्पातीत ३	स्थितकल्प १, अस्थितकल्प २, कल्पातीत ३
५	पुलाकादि पट्	आद्य ४	आद्य ४	कषायकुशील १	कषायकुशील १	निर्ग्रन्थ १, स्नातक २
६	प्रतिसेवना	मूलगुण १, उत्तरगुण २, सेवे प(डं)डे, अप्रतिसेवी ३	सामायिकवत्	अप्रतिसेवी	अप्रतिसेवी	अप्रतिसेवी

१ कथंचित् होय। २ कथंचित् न होय। ३ जो होय। ४,५,६ अनुक्रमे १,२,३ प्रमाणे।

७	ज्ञान	२।३।४ प्रवचन ज० ८ प्रवचन, उ० १४ पूर्व पठन करे	सामायिकवत्	१।२।३।४ ज्ञान, प्रवचन, ज० ९ पूर्व, उ० १० मठेरा	२।३।४ ज्ञान; प्रवचन ज० ८, उ० १४ पूर्व	२।३।४।१ ज्ञान, प्रवचन, ज० ८, उ० १४ पूर्व श्रुतातीत
८	तीर्थ	तीर्थे अतीर्थे वा	तीर्थे	तीर्थे	तीर्थे अतीर्थे	तीर्थे अतीर्थे
९	लिंग	द्रव्ये ३, भावे १ स्वलिंग	सामायिकवत्	द्रव्ये भावे १ स्वलिंग	द्रव्ये ३, भावे १ स्वलिंग	द्रव्ये ३, भावे १ स्वलिंग
१०	शरीर	५	५	३ औ, ते, का	३ ओ, तै, का	३ ओ, तै, का
११	क्षेत्र	जन्म आश्री कर्मभूमि, सहरण आश्री सर्वत्र	जन्म० कर्म०, संह० सर्वत्र	कर्मभूमि	जन्म० कर्म०, सह० सर्वत्र	जन्म० कर्म०, सह० सर्वत्र
१२	काल	वकुशवत् अव सर्पिणी उत्स र्पिणी भावनीय	एवं वकुशवत्, नवर जन्म महाविदेह नही	पुलाकवत्	निर्ग्रन्थवत्	निर्ग्रन्थवत् सर्व जानना
१३	गति	विराधक चार जातके देव तामे, आराधक ज० सौधर्म, उ० सर्वार्थ सिद्ध	सामायिकवत्	ज० सोधर्म, उ० ८ मा देव लोक	ज० उ० पंच अनुत्तरेषु उत्पद्यते[1]	अनुत्तर-विमाने वा सिद्धगतौ[2]
१४	स्थिति, पदवी पामे	स्थिति ज० २ पल्योपम, उ० ३३ सागरोपम, पदवी पाचमेस् अन्यतर १	सामायिकवत्	ज० २ पल्यो पम, उ० १८ सागरोपम, पदवी ४ मे अनतर एकाय	ज०, उ० ३३ सागरोपम, पदवी एक— अहमिन्द्रकी पामे	ज०, उ० ३ सागरोपम, पदवी एक- अहमिन्द्र
१५	सयमस्थिति अल्पबहुत्व	असंख्याते ४ असंख्यगुणे	असख्याते ४ तुल्य	असख्याते ३ असख्यगुणे	असख्याते, अतर्मुहूर्तके समय तुल्य २ असख्यगुण	एक्य १ स्तोक

१ पाच अनुत्तरोमा उत्पन्न थाय छे । २ 'अनुत्तर' विमानमां अथवा सिद्ध गतिमां ।

		०	सामायिक	छेदोपस्थापनीय	परिहारविशुद्धि	सूक्ष्मसंपराय	यथाख्यात
	चारित्रपर्यवना सनिकर्ष	सा०	६	६	६	अनतगुणहीन	अनतगुणहीन
		छे०	,,	,,	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
		प०	,,	,,	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
		सू०	अनंत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनंत गुण अधिक	अनत गुण हीन अनंत गुण अधिक	अनंत गुण हीन
		य०	अनंत गुण अधिक	—> ए	व	म्	तुल्य
	चारित्र पर्यवनू जघन्य उत्कृष्ट अल्पबहुत्व		१ स्तोक	१ तुल्य	२ अनंत गुण	५ अनंत गुण	०
			४ अनंत गुण	४ ,,	३ ,, ,,	६ ,, ,,	७ अनंत गुण
१६	योग		मन आदि ३	—> ए	व	म्	मन आदि ३, अयोगी वा
१७	उपयोग		साकार १, अनाकार २	—>	ए	व	म्
१८	कषाय		४।३।२।१ संज्वलन	एवम्	४ संज्वलन	१ लोभ संज्वलन	उपशातक्षीण वा
१९	लेश्या		६ द्रव्ये	६ द्रव्ये	३ प्रशस्त	१ शुक्ल	१ परम शुक्ल
२०	परिणाम		वर्धमान, हीयमान, अवस्थित	वर्ध०, हीय०, अव०	वर्ध०, हीय०, अव०	वर्ध०, हीय०	वर्ध०, अव०
	परिणाम स्थिति		वर्ध० ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त, हीय० ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त; अ० ज० १ समय, उ० ७ समय	सामायिकवत्	सामायिकवत्	वर्ध० ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त; हीय० ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त	वर्ध० ज० उ० अंतर्मुहूर्त; अव० ज० १ समय, उ० देश ऊन पूर्वकोटि
२१	बंध		७,८	७,८	७,८	६ मोह, आयु नही	१ साता, अबंधक वा

२२	वेदना(नीय) कर्म	८ वेदे	→ ए	ए	मू	७ वा ४ वेदे
२३	उदीरणा	८,७,६, आयु, वेदनीय वर्जी	८,७,६	८,७,६,	६, ५, आयु, वेदनीय, मोह वर्जी	५ वा २, अनुदीरक वा
२४	उपसपत्ति त्याग	सामायिक छोडी छेदो० १, सू० २, असयम ३, संयमास यम ४ आदरे	छेदो० छोडी सा० १, प० २ सू० ३, असयम ४, असयमास यम ५ आदरे	परि० छोडी छे० १, असयम २, ए २ आदरे	सूक्ष्म० छोडी सा० १, छे० २, यथा० ३, असंयम ४, ए ४ आदरे	यथा० छोडी सू० १, असं यम २ आदरे
२५	सज्ञा	४ सज्ञा, नो-सज्ञोपयुक्त वा	सामायिकवत्	सामायिकवत्	नोसज्ञोपयुक्त	नोसज्ञोपयुक्त
२६	आहार	आहारी	→ आहारी	आहारी	आहारी	आहारी, अनाहारी वा
२७	भव केते करे?	ज० १, उ० ८	ज० १, उ० ८	ज० १, उ० ३	ज० १, उ० ३	ज० १, उ० ३
२८	आकर्ष एक भव आश्री,	ज० १, उ० पृथक् शत	ज० १, उ० १२०	ज० १, उ० ३	ज० १, उ० ४	ज० १, उ० २
	आकर्ष नाना भव आश्री	ज० २, उ० ७२००	ज० २, उ० नवसेसे उपरात, हजारके हेठे	ज० २, उ० ७ वेला	ज० २ उ० ९,	ज० २, उ० ५
२९	स्थिति एक जीव आश्री	ज० १ समय, उ० नव वर्ष ऊन पूर्व फोड	सामायिकवत्	ज० १ समय, उ० २९ वर्ष ऊन पूर्व फोड	ज० १ समय, उ० अतर्मुहूर्त	ज० १ समय, उ० देश ऊन पूर्व कोटि
	स्थिति घणा आश्री	सर्वाद्धा	ज० २५० वर्ष, उ० ५० लाख फोडि सागरोपम	ज० देश ऊन २०० वर्ष, उ० देश ऊन दो पूर्वकोटि	ज० १ समय, उ० अतर्मुहूर्त	सर्वाद्धा
३०	अतर एक जीव आश्री	ज० अतर्मुहूर्त, उ० अनत फाल, अर्ध पुद्गल दे	→	ए	ए	मू

	अंतर घणा जीव आश्री	नास्त्यन्तरम्	ज० ६३ सहस्र वर्ष, उ० १८ कोटाकोटि सागरोपम	ज० ८४ सहस्र वर्ष, उ १८ कोटाकोटि सागरोपम	ज० १ समय, उ० ६ मास	नास्ति अन्तरम्
३१	समुद्घात	६ केवल वर्जी	६	धुरली ३	०	केवल १
३२	क्षेत्र	लोकने असंख्यमे भाग	→ प	घ	म्	असख्यमे घणे, अस० सर्व लोक
३३	स्पर्शना	" " "	→ प	घ	म्	" "
३४	भाव	क्षयोपशम	→ प	घ	म्	उपशम, क्षय
३५	परिमाण	प्रतिपद्यमान होवे, नही वी होवे, जे, होवे (तो) ज० १।२।३, उ० पृथक् सहस्र, पूर्वप्रतिपन्न पृथक् सहस्र कोड	प्रतिपद्यमान होवे, नही वी होवे, जो होवे (तो) ज० १।२।३, उ० पृथक् शत, पूर्वप्रतिपन्न होवे, न वी होवे, (जो होवे तो) ज० उ० पृथक् शत-कोटि	पुलाकवत्	निर्ग्रन्थवत्	प्रतिपद्यमान होवे, नही वी होवे; जो होवे (तो) ज० १।२।३, उ० १६२; पूर्वप्रतिपन्न पृथक् कोटि
३६	अल्पबहुत्व	५ सख्येय गुणा	४ संख्येय	२ संख्येय गुणा	१ स्तोक	३ संख्येय गुणा

(११४) भगवती (श. ७, उ. २, सू २७३) अल्पबहुत्व

१ यंत्र	मूल गुण पच्चक्खाणी	उत्तरगुण पच्चक्खाणी	अपच्चक्खाणी
जीव	१ स्तोक	२ असख्येय	३ अनंत
तिर्यंच पचेन्द्रिय	" "	" "	३ असंख्य
मनुष्य	" "	" "	" "

२ यन्त्र	सर्वमूल	देशमूल	अपच्चक्खाणी
जीव	१ स्तोक	२ असख्य	३ अनंत गुण
तिर्यंच पचेन्द्रिय	०	१ स्तोक	,, असख्य
मनुष्य	१ स्तोक	२ सख्येय	,, ,,

३ यंत्र	सर्व उत्तरगुण पच्चक्खाणी	देश उत्तरगुण पच्चक्खाणी	अपच्चक्खाणी
जीव	१ स्तोक	२ असख्य	३ अनंत
तिर्यंच पचेन्द्रिय	,, ,,	,, ,,	,, ,,
मनुष्य	,, ,,	,, सख्य	,, असंख्य

(११५) स्थानांगस्थाने दशमे दशविध यतिधर्म

	नामपाठ	अर्थ		नामपाठ	अर्थ
१	खंती	क्रोधनिग्रह	६	सच्चे	सत्यवादी
२	मुत्ती	निर्लोभता	७	संजमे	१७ सयमवान्
३	अज्जवे	सरल स्वभाव	८	तवे	द्वादशभेदी तपवान्
४	मद्दवे	मार्दव, अहकार-रहित कोमल (स्वभाव)	९	चियाए	प्रतीतकारी घरका वस्त्र पात्र अन्य आदिवै(सै?) साधूकू दान देवे
५	लाघवे	द्रव्ये भावे हलका	१०	बमचेरवासे	ब्रह्मचर्यके साथ सोवे

दश बोलमे 'वास' शब्द इस वास्ते कहा है जैसे गृहस्थ अगनाके सग शयन करे है ऐसे शीलकू संग लेके रात्रौ वास करे इति वृत्तौ.

(११६) भगवती (श. ८, उ ८) परीषह २२ यंत्रकम्

	अष्ट कर्मके बधकमे परीषह २२	षड्विध बधकमे एक बध छद्मस्थमे	एकविध बधक वीतराग केवलीमे ११	कौनसे कर्मके उदय कौनसा परीषह?
१	क्षुधा	अस्ति १	अस्ति १	वेदनीयके उदय
२	तृट्	,, २	,, २	,, ,,
३	शीत	,, ३	,, ३	,, ,,
४	उष्ण	,, ४	,, ४	,, ,,
५	दशमशक	,, ५	,, ५	,, ,,
६	अचेल	०	०	चारित्रमोहके उदय

७	अरति	०	०	,, ,,
८	स्त्री	०	०	,, ,,
९	चर्य्या	अस्ति ६	अस्ति ६	वेदनीयके ,,
१०	नैषेधिकी	०	०	चारित्रमोहके ,,
११	शय्या	अस्ति ७	अस्ति ७	वेदनीयके ,,
१२	आक्रोश	०	०	चारित्रमोहके ,,
१३	वध	अस्ति ८	अस्ति ८	वेदनीयके ,,
१४	याचना	०	०	चारित्रमोहके ,,
१५	अलाभ	अस्ति ९	०	अंतरायके ,,
१६	रोग	,, १०	अस्ति ९	वेदनीयके ,,
१७	तृणस्पर्श	,, ११	,, १०	,, ,,
१८	मल	,, १२	,, ११	,, ,,
१९	सत्कारपुरस्कार	०	०	चारित्रमोहके ,,
२०	प्रज्ञा	अस्ति १३	०	ज्ञानावरणके ,,
२१	अज्ञान	,, १४	०	,, ,,
२२	दर्शन	०	०	दर्शनमोहके ,,

सत्ता २२		१४	११
वेदे एक साथे २०,	वावीसमे चर्य्या, निसिहिया एकतर, शीत, उष्ण एकतर	शीत होय तो उष्ण नही, उष्ण होय तो शीत नही; चर्य्या, शय्या एकतर, एव १९	शीत, उष्णमेसु एक; चर्या, शय्यामेसु एक तर; एव ९ वेदे एव अयोगी पिण

कोइ कहे जोकर कोइ पुरुष शीत कालमें अग्नि तापे है सो तिसके एक पासे तो उष्ण परीषह है अने एक पासे शीत लगे है, तो युगपद् दोनो परीषह कयु न कहे ? तिसका उत्तर— एह दोनो परीषहकी विवक्षा शीत काल अने उष्ण कालकी अपेक्षा है; कुछ अग्निकी ताप अपेक्षा नही इति वृत्तौ; और परीषहकी चर्चा भगवतीजीकी टीकामे (पृ. ३८९) मे स्वल्प कथन किया है सोइ तिहांसे लिख्यते—

"[1]जं समयं चरिया० नो तं समय निसिहिया०" (भग० श. ८, उ. ८ सू. ३४३) इत्यादि. तिहां 'चर्या'परीषह तो ग्राम आदिकमे विहार अने 'नैषेधिकी' परीषह ग्राममे मासकल्प आदि रहणा अने 'शय्या' परीषह उपाश्रयमे जाकर वैसणा. इस अर्थ करकेइ इस कारण विहार अने अवस्थान अर्थात् तिष्ठने करके परस्पर विरोध है. इस वास्ते एक कालमे

१ यत् समये चर्या० न तत्समये नैषेधिका० ।

नही संभवे है. अथ प्रश्न—नैपेधिकी अने शय्या एह दोनो चर्याके साथ विरोधी है तो दोनोका एककालमे संभव हुया. यदि एककालमे संभव हुया तदि एककालमे १९ परीपह वेदे इह सिद्ध हुया. अथ उत्तर–इम नही है. किस वास्ते ? ग्राम आदि जानेकूं प्रवृत्ते है तिस कालमे जाता हूया भोजनविश्रामके अर्थे औत्सुक्य परिणाम सहित थोडे काल वास्ते शय्यामे वर्त्ते है। तिस कालमे 'शय्या' परिपहका 'चर्या' अने 'नैपेधिकी' दोनीको साथ सबंध है. इस वास्ते २० ही परिपह एककालमे वेदे है. यो ऐसे कह्या तो षड्विध बंधक आश्री कह्या है. जिस समये चर्या है तिस समय शय्या नही. इहा कैसे सभव हूया ? उत्तर—षड्विध बंधकके 'मोह' कर्म उदयमे बहुत नही है इस वास्ते शय्याकालमे औत्सुक्य परिणामका अभाव है इस वास्ते. शय्याकालमे शय्या ही है, परतु बादर रागके उदय औत्सुक्य करके विहारके परिणाम नही. इस वास्ते परस्पर विरोधी होने करके दोनो युगपत् एककालमे नही. इति अलं चर्चेण (चर्चया).

उत्तराध्ययनके २४ मे अध्ययनात् पांच समिति, तीन गुप्ति स्वरूप—

प्रथम ईर्यासमिति–आलंबने १, काल २, मार्ग ३, यत्ना ४ ए चार प्रकारे. शुद्ध ईर्या शोधे तिहां आलम्बन–ज्ञान १, दर्शन २, चारित्र ३ इन तीनोकू अवलंबीने ईर्या शोधे १. काल थकी दिवसमे ईर्या शोधे २. मार्ग थकी उत्पथ वर्जे ३. यत्नाके चार भेद है—द्रव्य १, क्षेत्र २, काल ३, भाव ४. द्रव्य थकी तो चक्षुसे देख कर चाले १. क्षेत्र थकी चार हाथ प्रमाण धरती देखीने चाले २. काल थकी जितना काल चलनेका तहां लग यत्न करी चाले ३. भाव थकी उपयोग सहित. उपयोग सहित किस तरे होवे ? पाच इंद्रियकी विपयथी रहित पाच प्रकारकी वाचना आदि स्वाध्याय रहित शरीरकू ईर्यारूप करे. ईर्यामें उद्यम एह उपयोग थकी ईर्या शोधे इति ईर्यासमिति.

भाषासमिति क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, हास्य ५, भय ६, मुखारि (मौखर्य) ७, विकथा ८ ए आठ स्थानक वर्जीने बोले. असावद्य मर्यादा सहित भाषा बोले. उचित काले बोले. तथा दश भेदे सत्य, बारां भेदे व्यवहार, एवं २२ भेदे भाषा बोले. ते बावीस भेद लिख्यते—

(१) जणवए सच्चे—'जनपद'सत्य. जौनसे देशमे जो भाषा बोले सो तिहां सत्य. जैसे 'कोकन' देशमे पाणीकू पिछ, कोइ देशमे बडे पुरुपकू बेटा कहै वा बेटेकू काका, पिताकू भाइ, सासूकूं आइ. सो सत्यम्. (२) सम्मत(य)—'समत'सत्य. जैसे पकसे उपना मींडक, सेवाल अने कमल; तो हि पिण कमलने 'पंकज' कहीये पिण मींडक, सेवालने 'पकज' शब्द नही. (३) ठवणा—'स्थापना'सत्य. जिसकी मूर्त्ति स्थापी है सो मूर्तिकू देव कहना जूठ नही. (४) नाम—'नाम'सत्य. 'कुलवर्धन' नाम है, चाहे कुलका क्षय करे तो पिण कुलवर्धन कहना जूठ नही. (५) रूवे—गुणकरी भ्रष्ट है तो पिण साधुके वेपवालेकू 'साधु' कहीये. (६) पडुच—'अपेक्षा'सत्य. जैसे मध्यमाकी अपेक्षा अनामिकी कनिष्ठा अंगुली है. (७) ववहार—'व्यवहार'सत्य. जैसे

पर्वत चलता है, रस्ता चलता है. (८) भाव—'भाव'सत्य. जैसे तोतेमें पांच वर्ण है तो पिण तोता हर्या है. (९) जोग—'योग'सत्य. जैसे दंडके संयोगसे दंडी कहीये; छत्रसे छत्री. (१०) उवमासच्चे–'उपमा'सत्य. चंद्रवत् वदन, समुद्रवत् तडाग. असत्य यंत्रम्—

कोहनिस्सिया—क्रोधके उदय बोले. माननिस्सिया—मानके उदय बोले. मायानिस्सिया—मायाके उदय बोले. लोहनिस्सिया—लोभनिश्रित बोले. पेज्जनिस्सिया—रागके उदय बोले. दोसनिस्सिया—द्वेषके उदय बोले. हासनिस्सिया–हासके उदय बोले. भयनिस्सिया—भयके उदय बोले. अक्खायनिस्सिया—विकथा करी. उवघायनिस्सिया—हिंसाकारी वचन. (११७)

मिश्र भाषा पा	अर्थ	मिश्र भाषा पा.	अर्थ
१ उप्पन्नसिसि(स्सि?)या	इस गाममे दस बालक जन्मे है	६ जीवाजीवमिसिया	जीव, अजीव दोनोकी मिश्र भाषा बोले
२ विगयमिसिया	इस गाममे आज दस जणे मरे है	७ अनंतमिसिया	मूली आदिक कंदोमे अनंते जीव है सो 'प्रत्येक' जीव कहै.
३ उप्पन्नविगयमिसिया	इस गाममे दस जन्मे है, दस(की) मृत्यु होइ है	८ परत(रित्त)मिसिया	प्रत्येककूं अनंतकाया कहै
४ जीवमिसिया	एकचा(त्र) सर्व जीव है	९ अद्धामिसिया	ऊठ रे दिन चढ्या पहरके तडकेसे कहै
५ अजीवमिसिया	अन्नकी रास देखके कहे ए तो अजीव है	१० अद्धद्धामिसिया	घणे कालका जूठ, घडी एक रात गये (रहे) दिन ऊगा कहै

व्यवहार भाषाके बारां भेद

(१) आमंतणि—हे भगवन्. (२) आणवणि—इह काम कर तथा यह वस्तु लाव. (३) जायणि—यह हमें देउगे. (४) पुच्छणि–ग्राम आदिनो मार्ग पूछणा. (५) पन्नवणि–धर्म ऐसे होता है. (६) पच्चक्खाणी—यह काम हम नही करेंगे. (७) इच्छाणुलोम—अहासुह देवानुप्रिय. (८) अणभिग्गहिया—अगलेका कह्या ठीकतरे समजे न. (९) अभिग्गहिया–मुझे ठीक है. (१०) ससयकारण—खबर नही क्यों कर है. (११) वोगडा–प्रगट अर्थ कहै. (१२) अवोगडा–अप्रगट अर्थ.

इह ४२ भेद भाषाके है. सत्य १०, व्यवहार १२, एवं २२ भेद बोले. इति भाषासमिति संपूर्ण.

एषणासमितिका स्वरूप विस्तार सहित पिंडनिर्युक्ति तथा पिंडविशुद्धिसे जाणना इति.

अथ 'आदानभंडनिक्षेप'समिति लिख्यते—उपधि दो भेदे है—(१) औधिक, (२) औपग्राहिक. 'औधिक' ते साधु, साध्वी सदाइ राखे अने 'औपग्राहिक' ते जे कदाचित् कार्य उपने ग्रहै ते. प्रथम औधिक कहीये है—

"उवही उवग्गहे संगहे य तह पग्गहुग्गहे चेव ।
भंडग उवगरणे वि य करणे वि य हुंति एगट्ठा ॥ १ ॥ (ओघ० ६६६)
पत्तं १ पत्ताबंधो २ पायट्ठवणं ३ च पायकेसरिया ४ ।
पडलाइं ५ रयत्ताणं ६ (च) गुच्छओ ७ पायनिजो(ज्जो)गो ॥ २ ॥ (ओ० ६६८)
तिन्नेव य पच्छागा १० रयहरणं ११ चेव होइ मुहप(पो)त्ती १२ ।
एसो दुवालस्स(स)विहो उवही जिणकप्पियाणं तु ॥ ३ ॥ (ओ० ६६९)
एते(ए) चेव दुवालस्स(स) मत्तग १ अइरेग चोलपट्टो य ।
एसो चउद्दसविहो उवही पुण थेरकप्पमि ॥ ४ ॥ (ओ० ६७०)
पत्तं १ पत्ताबंधो २ पायट्ठवणं ३ च पायकेसरिया ४ ।
पडलाइ ५ रयत्ताणं ६ (च) गुच्छओ ७ पायनिजो(ज्जो)गो ॥ ५ ॥ (ओ० ६७४)
तिन्नेव य पच्छागा १० रयहरणं ११ चेव होइ मुहपत्ती १२ ।
तत्तो (य) मत्तउ खलु १३ चउद्दसमो कमढओ(गो) चेव १४ ॥ ६ ॥ (ओ० ६७५)
उग्गहणंतग १५ पट्टो(ट्टो) १६ उड्ढोरू (अद्धोरुअ) १७ चलणिया १८ य बोद्धव्वा ।
अब्भितर १९ वाहरि(हिर?) २० नियंसणी य तह कंचुए २१ चेव ॥ ७ ॥ (ओ० ६७६)
उग(क)च्छिय २२ वेगच्छिय २३ सघाडी २४ चेव खधकरणी २५ य ।
ओहोवहिमि एऐ अज्जाणं पन्नवीसं तु ॥ ८ ॥ (ओ० ६७७)
उक्कोसगो जिणाणं चउवि(व्विहा) मज्झिमो वि एमेव ।
जहन्नो चउविहो खलु एत्तो थेराण वुच्छामि ॥ ९ ॥

१ उपधिरुपग्रह सङ्ग्रहश्च तथा प्रतिग्रहश्चैव । भाण्डकमुपकरणमपि च करणेऽपि च भवन्ति एकार्थाः ॥ १ ॥
पात्र पात्रबन्ध पात्रस्थापन च पात्रकेसरिका । पटलानि रजस्त्राण (च) गुच्छक पात्रनिर्योग ॥ २ ॥
त्रय एव च प्रच्छादका रजोहरण चैव भवति मुखपत्ति (°वस्त्रिका) । एष द्वादशविध उपधिर्जिनकल्पिकानां तु ॥३॥
एते चैव द्वादश मात्रकमतिरिक्त चोलपट्टश्च । एष चतुर्दशविध उपधि पुन स्थविरकल्पे ॥ ४ ॥
२ ततो मात्रकश्चतुर्दशम कमठग चैव ॥ ६ ॥
अवग्रहानन्तक पट्टोऽर्धोरुक चलनिका च बोद्धव्या । आभ्यन्तरा बाहिरा निवसनी च तथा कञ्चुकश्चैव ॥ ७ ॥
औपकच्छिक वैकक्षिक सङ्घाटी चैव स्कन्धकरणी च । ओघोपधौ एते आर्याणां पञ्चविंशतिस्तु ॥ ८ ॥
उत्कृष्टो जिनानां चतुर्विधो मध्यमोऽपि एवमेव । जघन्यश्चतुर्विध खलु इत स्थविराणां वक्ष्ये ॥ ९ ॥

उंक्कोसो थेराणं चउवि(वि)हो छवि(वि)हो उ मज्झिमओ ।
जहन्नो चउवि(व्वि)हो खलु एत्तो अज्जाण साहेमि ॥ १० ॥
उक्कोसो अट्ठविहो मज्झिमओ होइ तेरसविहो उ ।
जहन्नो चउवि(व्वि)हो खलु तेण परमुवग्गहं जाणे(ण) ॥ ११ ॥ (ओ० ६७८)
एगं पायं जिणकप्पियाण थेराण मत्तओ बीओ ।
एयं गणणपमाणं पमाणमाणं अओ वुच्छं ॥ १२ ॥ (ओ० ६७९)
तिन्नि विहत्थी चउरंगुलं च भाणस्स मज्झिमपमाणं ।
इत्तो हीण जहन्नं अइरेगयरं तु उक्कोसं ॥ १३ ॥ (ओ० ६८०)
पत्तावंधपमाणं भाणपमाणेण होइ नायव्वं ।
जह गंठिंमि कयंमि कोणा चउरंगुला हुति ॥ १४ ॥ (ओ० ६९३)
पत्तट्ठवणं तह गुच्छओ य पायपडिलेहणी(णि)या य ।
तिण्हं पि य प्पमाणं विहत्थि चउरंगुलं चेव ॥ १५ ॥ (ओ० ६९४)
जेहिं सविया न दीसइ अंतरिओ तारिसा भवे पडला ।
तिन्नि व पंच व सत्त व कदलीगब्भोवमा मसिणा ॥ १६ ॥ (ओ० ६९७)
अड्ढाइज्जा हत्था दीहा छत्तीस अंगुले रुंदा ।
बीयं च (वितियं) पडिग्गहाओ ससरीराओ य निप्फन्नं ॥ १७ ॥ (ओ० ७०१)
माणं तु रयत्ताणे भाणपमाणेण होइ निप्फन्नं ।
पायाहिणं करंतं मज्झे चउरंगुलं कमइ ॥ १८ ॥ (ओ० ७०३)
कप्पा आयपमाणा अड्ढाइज्जा य वित्थडा हत्था ।
दो चेव सुत्तिया उ उन्निय तइओ मुणेयव्वो ॥ १९ ॥ (ओ० ७०५)
बत्तीसंगुलदीहं चउवीसंगुलाइं दंडो से ।
अट्ठंगुला दसाओ एगतरं हीणमहियं वा ॥ २० ॥ (ओ० ७०८)

---

१ उत्कृष्ट स्थविराणां चतुर्विध षड्विधस्तु मध्यमक । जघन्यश्चतुर्विध खलु इत आर्याणां कथयामि (?) ॥ १० ॥
उत्कृष्टोऽष्टविधो मध्यमको भवति त्रयोदशविधस्तु । जघन्यश्चतुर्विध खलु तेन परमुपग्रह जानीयात् ॥ ११ ॥
एक पात्र जिनकल्पिकानां स्थविराणा मात्रक द्वितीयम् । एतद् गणनाप्रमाण प्रमाणमानमतो वक्ष्ये ॥ १२ ॥
त्रयो विहस्तयश्चतुरङ्गुल च भाजनस्य मध्यमप्रमाणम् । अतो हीन जघन्यमतिरिक्ततरं तूत्कृष्टम् ॥ १३ ॥
पात्रबन्धप्रमाण भाजनप्रमाणेन भवति ज्ञातव्यम् । यथा ग्रन्थौ कृते कोणाश्चतुरङ्गुला भवन्ति ॥ १४ ॥
पात्रस्थापन तथा गुच्छकश्च पादप्रतिलेखनिका च । त्रयाणामपि च प्रमाण विहस्तिश्चतुरङ्गुल चैव ॥ १५ ॥
ये सविता न दृश्यतेऽन्तरितस्तादृशानि भवन्ति पटलानि । त्रीणि पञ्च वा सप्त वा कदलीगर्भोपमानि मसृणानि ॥१६॥
अर्धतृतीयहस्तदीर्घाणि षट्त्रिंशदङ्गुलानि रुन्द्राणि । द्वितीय च पतद्ग्रहात् स्वशरीराच्च निष्पन्नम् ॥ १७ ॥
मान तु रजस्त्राणे भाजनप्रमाणेन भवति निष्पन्नम् । प्रादक्षिण्य कुर्वन् मध्ये चतुरङ्गुलानि क्रामति ॥ १८ ॥
कल्पा आत्मप्रमाणा अर्धतृतीयांश्च विस्तृता हस्तान् । द्वौ चैव सौत्रिकौ तु और्णिकस्तृतीयो ज्ञातव्य ॥ १९ ॥
द्वात्रिंशदङ्गुलदीर्घं चतुर्विंशतिरङ्गुलानि दण्डकस्य । अष्टाङ्गुला दशा एकतरं हीनमधिक वा ॥ २० ॥

उंनियं उट्टियं वा वि कंबलं पायपुच्छणं ।
तिपरीयल्लमणिस्सट्ठं रयहरणं धारए इक्कं ॥ २१ ॥ (ओ० ७०९)
चउरंगुलं विहत्थी एवं मुहणंतगस्स उ पमाणं ।
बीयं मुहप्पमाणं गणणपमाणेण इक्किक्कं ॥ २२ ॥ (ओ० ७११)
जो मागहओ पत्थो सविसेसयरं तु मत्तगपमाणं ।
दोसु वि दव्वग्गहणं वासावासासु अहिगारो ॥ २३ ॥ (ओ० ७१३)
सूओदणस्स भरियं दुगाउमद्धाणमागओ साहू ।
भुंजइ एगट्ठाणे एयं किर मत्तयपमाणं ॥ २४ ॥ (ओ० ७१४)
दुगुणो चउगुणो वा हत्थो चउरंस चोलपट्टो य ।
थेरजुवाणाणट्ठा सण्हे थूलंमि य विभासा ॥ २५ ॥ (ओ० ७२१)
संथारुत्तरपट्टो अड्ढाइज्जा य आयया हत्था ।
दोण्हं पि य वित्थारो हत्थो चउरंगुल चेव ॥ २६ ॥ (ओ० ७२३)
रयहरणपट्टमित्ता अदसागा किंचि वा समइरेगा ।
इक्कगुणा उ निसिज्जा हत्थपमाणा सपच्छागा ॥ २७ ॥ (ओ० ७२५)
वासोवग्गहिओ पुण दुगुणो अवही उ वासकप्पाई ।
आयासंजमहेउं इक्कगुणो सेसओ होइ ॥ २८ ॥ (ओ० ७२६)
जं पुण सपमाणाओ ईसि हीणाहियं व लभिज्जा ।
उभयं पि अहाकडयं न संधणा तस्स छेओ वा ॥ २९ ॥" (ओ० ७२७)

इति औघिकोपधिः संपूर्णः। अथ औपग्राहिकं उपगरणमाह—औपग्राहिक उपधिके तीन भेद—(१)जघन्य, (२) मध्यम, (३) उत्कृष्ट. तत्र प्रथमं जघन्यमाह—

[2]पीठ १ निसिज्जा २ दंडग ३ पमज्जणं ४ घट्ट ५ डगल ६ पिप्पलग ७ सूइ ८ नह-

---

१ और्णिक औष्ट्रिक वाऽपि कम्बलं पादप्रोञ्छनम् । त्रि परिवर्तमनिसृष्टं रजोहरणं धारयेदेकम् ॥ २१ ॥
चतुरङ्गुलं वितस्तिरेव मुखानन्तकस्य तु प्रमाणम् । द्वितीयं मुखप्रमाणं गणनप्रमाणेनैकैकम् ॥ २२ ॥
यो मागधकः प्रस्थः सविशेषतरं तु मात्रकप्रमाणम् । द्वयोरपि द्रव्यग्रहणं वर्षावर्षयोरधिकार ॥ २३ ॥
सूपौदनेन भृतं द्विगव्यूताध्वन आगत साधु । भुङ्क्ते यदेकस्थानमेतत् किल मात्रकस्य प्रमाणम् ॥ २४ ॥
द्विगुणश्चतुर्गुणो वा हस्तश्चतुरस्रश्चोलपट्टश्च । स्थविरयूनामर्थाय श्लक्ष्णे स्थूले च विभाषा ॥ २५ ॥
संस्तारकोत्तरपट्टौ अर्धतृतीयौ च आयतौ हस्तौ । द्वयोरपि च विस्तारो हस्तश्चतुरङ्गुल चैव ॥ २६ ॥
रजोहरणपट्टमात्रा अदशाका किञ्चित् समतिरेका वा । एकगुणा तु निषद्या हस्तप्रमाणा सपाश्चात्या ॥ २७ ॥
वर्षौपग्रहिकः पुनर्द्विगुणोऽवधिस्तु वर्षाकल्पादि । आत्मसंयमहेतुरेकगुण शेषको भवति ॥ २८ ॥
यत् पुन स्वप्रमाणादीषद्धीनमधिक वा लभ्येत । उभयमपि यथाकृत न सन्धना तस्य छेदो वा ॥ २९ ॥

२ पीठक निषद्या दण्डक प्रमार्जनी घट्टको डगल पिप्पलक सूची नखहरणी दन्तकर्णशोधनद्वयी ।

रणी ९ दंत १० कन्न ११ सोधणी इति जघन्यम् ॥

"वासता(त्त)णाइ उ मज्झिमगो वासता(त्त)ण पंच इमे ।
वाले १ सुत्ते २ सूई ३ कुडसीसग ४ छत्त ए ५ चेव ॥ २ (१) ॥
तहियं दुन्निय ओहो वहं(हिं)मि वाले य सुत्तिए चेव ।
सेस तिय वासताणायणंगं तह चिलमिलीण इमं ॥ ३ ॥
वालमई सुत्तमई वागमई तह य दंडकडगमई ।
संथार दुगमप्पु सिरिपियदंडगपो(प्प१)णगं ॥ ४ ॥
दंड विदंड लट्ठी विलट्ठी तह नालिया य पंच ।
अवलेहणिमत्तटिगं पासवणुचारखेले य ॥ ५ ॥
चिंचणिया वुर पेपी उरवलिगा अहवा विचंमतिविहिमिमं ।
कत्ती तलिगा वहु झाझाध पट्टदुगं चेव होइ मिमं ॥ ६ ॥
संथारुपट्टो अहवा सन्नाहपट्ट पल्हत्थी ।
मज्झो अजाणं पुण अइरित्तो वारगो होइ ॥ ७ ॥
लेट्ठी आयपमाणा विलट्ठि चउरंगुलेण परिहीणा ।
दंडो वाहुपमाणो विदंडओ कक्खमित्तो य ॥ ८ ॥ (ओ० ७३०)
सिरसोवरिं चउरंगुलं दीहा उ नालिया होई ।
अवलेहणि वटोंवुर तस्स अला[व]भंमि चिंचिणिया ॥ ९ ॥"

इति मज्झिम । उत्कृष्टमाह—

"अक्खा संथारो या दुविहो एकंगिओ तदियरो वा ।
वीय पयपुत्थपणगं फलगं तह होई उक्कोसा ॥ १० ॥"

---

१ आ गाथाओ असत अशुद्ध छे वळी तेनु मूळ स्थळ पण जाणवामा नथी एवी परिस्थितिमां एनी छाया आपवी ते एक प्रकारनु साहस गणाय एटले ए दिशामा प्रयास करातो नथी तेने माटे जग्या कोरी रखाय छे

• ••• ••• ••• •• • •••
••• • • • • • • •• • •••
• • • •• • • • •
• •• •

२ यष्टिरात्मप्रमाणा वियष्टिश्चतुरङ्गुलेन परिहीना । दण्डो वाहुप्रमाणो विदण्डकः कक्षामानश्च ॥ ८ ॥
शीर्षोपरि चत्वारि अङ्गुलानि दीर्घा तु नालिका भवति । •••• तस्य ••• ॥ ९ ॥

३ अक्षा संस्तारको या द्विविध एकान्तरस्तदितरो वा । द्वितीय••• पुस्तकपञ्चक फलक तथा भवत्युत्कृष्टा ॥ १० ॥

तथा—"दंडए लट्ठिया चेव चम्मए चम्मकोसए ।
चम्मच्छेयणए पट्टो चिलिमिली धारए गुरु ॥ १ ॥ (ओ० ७२८)
जं चन्न एवमाई तवसंजमसाहगं जइजणस्स ।
ओहाइरेगगहियं उवगहियं तं वियाणाहि ॥ २ ॥ (ओ० ७२९)
ज जस्स उ उवयारो उवगरणं (भुंजइ उवगरणे) तंसि होई उवगरण ।
अइरेग अहिगरणं अजतो अजयं परिहरंतो ॥ ३ ॥ (ओ० ७४१)
न केवलमइरित्तं अहिगरणं पइमियं पि जो अजओ ।
परिभुंजइ उवगरण अहिगरणं तस्स वि होई ॥ ४ ॥"

इति, अथ उपगरणधारणकारणानि—
"छक्कायरक्खणट्ठा पायग्गहण जिणेहि पन्नत्तं ।
जे य गुणा संभोए हवंति ते पायगहणे त्ति(वि) ॥ १ ॥ (ओ० ६९१)
अतरंतबालवुड्ढसेहाएसा गुरु असहुवग्गे ।
साहारणुग्गहालद्धिकारणा पायगहणं तु ॥ २ ॥ (ओ० ६९२)
रयमाइरक्खणट्ठा पत्तगठवण वि उ उवइस्सति ।
होइ पमज्जणहेउ गुच्छओ भाणवत्थाण ॥ ३ ॥ (ओ० ६९५)
पायपमज्जणहेउ केसरिया पाएँ पाएँ इक्किका ।
गुच्छग पत्तट्ठवण इक्किक्क गणणमाणेणं ॥ ४ ॥ (ओ० ६९६)
पुप्फफलोदयरयरेणुसउणपरिहारपायरक्खट्ठा ।
लिंगस्स य संवरणे वेओदयरक्खणे पडला ॥ ५ ॥ (ओ० ७०२)
मूसगरयउक्केरे वासे(सा) सिन्हा रए य रक्खट्ठा ।
हुंति गुणा रयत्ताणे पाए पाए य इक्केक ॥ ६ ॥ (ओ० ७०४)
तणगहणानलसेवानिवारणा धम्मसुक्कझाणट्ठा ।
दिट्ठं कप्पग्गहणं गिलाणमरणट्ठया चेव ॥ ७ ॥ (ओ० ७०६)

---

१ दण्डको यष्टिका चैव चर्मकं चर्मकोशक । चर्मच्छेदनक पट्ट चिलिमिली (यवनिका) धारयेद् गुरु ॥ १॥
यच्चान्यदेवमादि तपःसंयमसाधकं यतिजनस्य । ओघातिरेक गृहीतमौपग्रहिक विजानीहि ॥ २ ॥
यदुपयुज्यते उपकरणे तदेव भवति उपकरणम् । अतिरेकमधिकरण अयतोऽयतं परिहरन् ॥ ३ ॥
न केवलमतिरिक्तमधिकरण परिमितमपि योऽयत । परिभुनक्ति उपकरण अधिकरणं तस्यापि भवति ॥ ४ ॥

२ षट्कायरक्षणार्थं पात्रग्रहण जिनैः प्रज्ञप्तम् । ये च गुणा सम्भोगे भवन्ति ते पात्रग्रहणे इति ॥ १ ॥
अतो ग्लानबालवृद्धशिक्षकादेशा गुरुः असहिष्णुवर्गः । साधारणानुग्रहात् अलब्धिकारणात् पात्रग्रहण तु ॥ २ ॥
रजआदिरक्षणार्थं पात्रकस्थापनमपि उपदिशन्ति । भवति प्रमार्जनहेतुर्गुच्छको भाजनवस्त्राणाम् ॥ ३ ॥
पात्रप्रमार्जनहेतु केसरिका पात्रे पात्रे एकैका । गुच्छक पात्रस्थापन एकैक गणनाप्रमाणेन ॥ ४ ॥
पुष्पफलोदकरजोरेणुशकुनपरिहारपात्ररक्षणार्थम् । लिङ्गस्य च संवरणे वेदोदयरक्षणे पटलानि ॥ ५ ॥
मूषकरजउत्करे वर्षावश्यायरजोरक्षणार्थं च । भवन्ति गुणा रजस्त्राणे पात्रे पात्रे चैकैकम् ॥ ६ ॥
तृणग्रहणानलसेवानिवारणार्थं धर्मशुक्लध्यानार्थम् । दृष्टं कल्पग्रहण ग्लानमरणार्थं चैव ॥ ७ ॥

आयाणे निक्खेवे ठाण निसीयण तुयट्ट संकोए ।
पुव्वं पमज्जणट्ठा लिंगट्ठा चेव रयहरणं ॥ ८ ॥ (ओ० ७१०)
संपाइमरयरेणुपमज्जणट्ठा वयंति मुहपत्तिं ।
नासं मुहं च बंधइ तीए वसहिं पमज्जंतो ॥ ९ ॥ (ओ० ७१२)
संपाइमतसपाणा धूलिसरिक्खे अ परिगलंतंमि ।
पुढविदगअगणिमारुयउद्धंसणखिंसणाडहरे ॥ १० ॥ (ओ० ७१५)
आयरिए य गिलाणे पाहुणए दुल्लहे सहसदाणे ।
संसत्तए भत्तपाणे मत्तगपरिभोगणुन्नाउ ॥ ११ ॥ (ओ० ७१६)
संसत्तभत्तपाणेसु वा वि देसेसु मत्तए गहणं ।
पुव्वं तु भत्तपाण सोहेउ छुहंति इयरेसु ॥ १२ ॥ (ओ० ७२०)
वेउव्ववाउडे वाइए हीय खद्धपजणणे चेव ।
तेसिं अणुग्गहट्ठा लिंगुदयट्ठा य पट्टो उ ॥ १३ ॥ (ओ० ७२२)
पाणाईरेणुसंरक्खणट्टया हुंति पट्टगा चउरो ।
छप्पइयरक्खणट्ठा तत्थुवरिं खोमियं कुज्जा ॥ १४ ॥ (ओ० ७२४)
दुट्ठपसुसाणसावयविज्ज(चिक्ख)लविसमेसु उदगमज्झेसु ।
लट्ठी सरीररक्खा तवसंजमसाहणी भणिया ॥ १५ ॥ (ओ० ७३९)
मुखट्ठा नाणाई तणू तयट्ठा तयट्ठिया लट्ठी ।
दिट्ठो जहोवयारो कारणंमि कारणेसु जहा (कारणतकारणेरसु तहा?) ॥ १६ ॥"
(ओ० ७४०)

इति कारणम्. इनकूं जतनासे लेवे, जतनासे मेले ए चौथी समिति.

अथ पांचमी-समिति अचित्त स्थंडले दस दोष ते रहितमे मल आदि व्युत्सर्जन करे. मन, वचन, काया पापसे गोपे ते 'गुप्त'.

---

१ आदाने निक्षेपे स्थाने निषदने त्वग्वर्तने सङ्कोचने । पूर्वं प्रमार्जनार्थं लिङ्गार्थं चैव रजोहरणम् ॥ ८ ॥ सम्पातिमरजोरेणुप्रमार्जनार्थं वदन्ति मुखवस्त्रिकाम् । नासिकां मुखं च बध्नाति तया वसतिं प्रमार्जयन् ॥ ९ ॥ सम्पातिमत्रसप्राणा धूलिसरजस्के च परिगलमाने । पृथिव्युदकाग्निमारुतोद्धसणपरिभवडहरे ॥ १० ॥ आचार्ये ग्लाने प्राघूणके दुर्लभे सहसादाने । संसक्तके भक्तपाने मात्रकपरिभोगमनुज्ञात ॥ ११ ॥ संसक्तभक्तपानेषु वाऽपि देशेषु मात्रकग्रहणम् । पूर्वं तु भक्तपान शोधयित्वा प्रक्षिपन्ति इतरेषु ॥ १२ ॥ वैक्रियोऽप्रावृतो वातिको ह्रीको बृहत्प्रजननश्चैव । तेषामनुग्रहार्थं लिङ्गोदयार्थं च पट्टस्तु ॥ १३ ॥ प्राण्यादिरेणुसंरक्षणार्थं च भवन्ति पट्टकाश्चत्वार । षट्पदिकारक्षणार्थं ॥ १४ ॥ दुष्टपशुश्वश्वापदविपक्खलविषमेषूदकमध्येषु । यष्टि शरीररक्षार्थं तप सं मोक्षार्थं ज्ञानादीनि तनु तदर्थं तदर्थिका यष्टि । दृष्टो यथोपकार क

अथ द्वादशभावनास्वरूप. दोहरा—

पावन भावन मन वसी, सब दुष मेटनहार; श्रवण सुनत सुप होत है, भवजलतारनहार १

अथ 'अनित्य' भावना. सवईया इकतीसा—

संध्या रग छिन भंग सजन सनेही संग उडत पतंग रग चंद रवि संगमे
तन कन धन जन अवधि तरंग मन सुपनेकी संपतमे रांक रमे रगमे
देपते ही तोरे भोरे रक कोरे तोरे भये राजन भिपारी भये हीन दीन नगमे
बादरकी छाया माया देपते विनस जात भोरे चिदानद भूलो काहेकी तरंगमे ? १
इंद चंद सुरगिंद आनन आनंद चंद नरनको इंद मोहे नीके नीके वेसमे
उत्तम उत्तग सोध जंगमे अभग जोध घुमत मतग रग राजत हमेसमे
रभा तलपमा जैसी माननी अनूप ऐसी रसक दसक दिन माने सुप ए समे
परले पवन तृण उडत गगन जेसे पवर न काहु वाहु गये काहु देसमे २

अथ 'असरण' भावना(स्व)रूप—

मात तात दारा भ्रात सजन सनेही जात कोउ नही त्रात भ्रात नीके देप जोयके
तन धन जोवन अनग रग संग रसे करम भरम नीज गये मूढ वोयके ।
नाम न निशान थान रान पानलेपि यत दरव गरव भरे जरे नंगे होयके
त्राता नही कोउ ऐसे बलवंत जंत संत अंतकाल हाथ मल गये सब रोयके १
साजन सुहाये लाप प्रेमके सदन बीच हसे मोह फसे कसे नीके रग लसे है
माननीके प्रेम लसे फसे धसे कीच बीच मीचके हिंडोले हीच मूढ रग रसे है
चपलासी झमक अनित बाजी जगतकी रुंपनमे वास रात पपी चह चसे है
मोहकी मरोर भोर ठानत अधिक ओर छोर सब जोर सिर काल बली हसे है २ इति

अथ 'संसार' भावना—

राजा रंक सुर कक सुंदर सरूप भंक रति पति रूप भूप कुष्ठ सरवग है
अरी मरी मीत धरी तात मात नारी करी रामा मात परी करी धूयावरी रग है
उलट पलट नट वट केसो पेल रच्यो मच्यो जगजालमे विहाल वहु रंग है
एते माहे तेरो जोरो कोउ नाही नम्र फेरो गेरो चिदानंद मेरो तूही सरवंग है १
रंग चग सुप मग राग लाग मोहे सोहे छिनकमे दोहे जोहे मौत ही मरदके
नीके बाजे गाजे साजे राजे दरबार ही मे छिनकमे कूकहूक सुनीये दरदके
जगमे विहाल लाल फिरत अनादि काल सारमेय थाल जैसे चाटत छरदके!
मद भरे मरे परे जंगरमे परे जरे देप तन जरे घरे छरे है गरदके २

अथ 'एकत्व' भावना—

एक टेक पकर फकर मत मान मन जगत सरूप सब मिथ्या अंधकूप है
चारों गत भटक पटक सब रूप रंग यति मति सति रति छति एकरूप है

करमको घेरे गेरे नाना कछु नही तेरो मात तात भ्रात तेरो नाही कर चूप है
चिदानंद सुपकद राकाके पूरन चंद आत्मसरूप मेरे तूही निज भूप है १
आथ साथ नाही चरे काहेकू गेरत गरे संगी रंगी साथी तेरे जाथी दुख लहिये
एक रोच केरो तेरो संगी साथी नही नेरो मेरो मेरो करत अनंत दुप सहिये
ऊपरमे मेह तैसो सजन सनेह जेह पेहके बनाये गेह नेह काहा चहिये
जान सब ज्ञान कर वासन विपम हर इहां नही तेरो घर जाते तो सो कहिये २ इति

अथ 'अन्य' भावना—

तेल तिल संग जैसे अगनि वसत संग रंग है पतंग अंग एक नाही किन्न है
करमके संग एक रंग ढंग तंग हूया डोल तस छंद मंद गंद भरे दिन्न है
दधि नेह अभ्र मेह फूलमे सुगंध जेह देह गेह चित एह एक नही भिन्न है
आतमसरूप धाया पुग्गलकी छोर माया आपने सदन आया पाया सब चिन्न है १
काया माया वाप ताया सुत सुता मीत भाया सजन सनेही गेही एही तासो अन्न है
ताज वाज राज साज मान गान थान लाज चीत प्रीत रीत चीत काहुका ए धन्न है।
चेतन चंगेरो मेरो सबसे एकेरो होरे डेरो हुं वसेरो तेरो फेरे नेरो मन्न है
आपने सरूप लग माया काया जान ठग उमग उमग पग मोपमे लगन्न है २

अथ 'अशुच(चि)' भावना—

पट चार द्वार धुले गंदगीके संग झुले हिले मिले पिले चित कीट ज्युं पुरीसके
हाड चाम खेल धाम काम आम आठो जाम लपट दपट पट कोथरी भरी सके
गंदगीमे जंदगी है बंदगी करत नत तत्त वात आत जात रात दिन जीसके
मैली थेली मेली वेली वैलीवद फैली जैली अंतकाल मूढ तेऊ मूए दांत पीसके १
जननीके खेत सृग रेतको करत हार उर घर चरन करी धरी देह दीन रे
सातो धात पिंड धरी चमक दमक धरी मद भरी मरी परी करी धाजी छीन रे
प्रिये मीत जार कर छर न मे राख कर आन वेठे निज घर साथ दीया कीन रे
छरद करत फिर चाटत रसक अत आतम अनूप तोहे उपजेना घीन रे २

अथ 'आश्रव' भावना—

हिसा झूठ चोरी गोरी कोरी केरे रंग रस्यो क्रोध मान माया लोभ पोभ घेरो देतु है
राग द्वेप ठग भेस नारी राज भत्त देस कथन करन कर्म भ्रमका सहेतु है
चंचल तरंग अंग भामनिके रंग चंग उद्धत विहंग मन अति गर मेतु है
मोहमे मगन जग आतम धरम ठग चले जग मग जिय ऐसें दुप लेतु है १
नाक कान रान काट वाटमे उचाट ताट सहे गहे वंदी रहे दुख भय मानने
लोग रोग सोग भोग वेदना अनेक थोग परे [illegible]

आपने कमाये पाप भोगनमे आपे आप अंग जरे कुष्ट भरे इंदुवत आनने
आपने करम करी दुप रोग पीर परी मिथ्यामति कहे ए तो कीये भगवानने २
अथ 'संवर' भावना—

हिरदेमे ज्ञान धर पापपंथ परहर निहचे सरूप कर डर जर करसे
आवत महान अघ रोध कर हो अनघ आपने विकार तज भज कर भरसे
करम पटल ढग तिन माही देह अगनि कसत गुन दग आप परठरसे
करम भरम जावे मोद मन बोध पावे ऐसा रसरसीया ते आ रसकूं परसे १
सत मत नव तत भेदाभेदवित हित भीत जीत तीन नित तीन तेरे बोधके
तीन चीन भीन लीन उदक प्रवीन पीन खीन दीन हीन तज रजक ज्युं सोधके
सत्ताको सरूप जान परणत भ्रम मान निज गुन तान जेही महानंद सोधके
भ्रमजाल परहरे काहुकी न भीत करे संजमके वारे मारे कर्म सारे रोधके २
अथ 'निर्जरा' भावना—
जैसे न्यारी सुध रीत छानत कनक पीत डारत असुध लीत मोद मन कर्यो है
तैसी ही सुधार यार करम पकार डार मार मार चार थार लार तेरे पर्यो है
जोलों चित रीत नाही तोलों मिटे भीत नाही कुगुर डगर बीच लूटवेको प(? प)यों है
आतम सियाने वीर करमकी मिते पीर परम अजीत जीत सिवगढ चर्यो है १
सत जत सील तप करम भरम कप वासना सनेह गेह चितमे न धरीये
नरक निगोद रोग भोगत अनंत काल माया भ्रम जाल लाल भवदधि तरिये
संकटमे पर्यो दुप भर्यो मर्यो वसुधामे चर्यो जगछोर मोर अब मन डरिये
चारत ककन धर दोस दृष्ट दूर कर अरहत ध्यान कर मोप(क्ष)वधू वरिये २
अथ 'लोकसरूप' भावना—
जामाधार नराकार भामरी करत यार लोकाकार रूप धार कह्या करतार रे
राज दस चार जान ऊचताको परिमान अधो विसतार राज सात है पतारने
घटत घटत मृत मंडलमे एक राज पचम सुरग मध्य पांच राज धारने
आदि अंत नही संत स्वयं सिद्धरूप ए तो पट द्रव्य वास एही आपत उचारने १
नरक भवन पिति वतुवात घन मिति वसत पवार वार करमके दोपमे
पिति आप तेज वात वन रन त्रस घन विगल तिगल पसु पंपी अहि रोपमे
नर नारी भेस धारी धरम विहारी सारी वीतराग ब्रह्मचारी नारी धन तोपमें
सुरगन सुपमन नाटक करत धन धन धन प्रभु सिद्ध पूरे सुप मोपमे २
अथ 'धर्म' भावना—
पिमा धर तोप कर कपट लपट हर मान अरि मार कर भार सब छोरके
सत परिमान कर पाप सब छार कर करम इंधन जर तप धूनी जोरके

तपोधन दान कर सील भीत चीत धर निज गुण वास कर दस धम्म दोरके
आतम सियाने माने एह धर्मरूप जाने पाने जाने दोरे भोरे फल मल तोरके १
असी चार लाप जोन पाली तिहां रही कोन वार ही अनंत जंत जिहा नही जाया है
नवे नवे भेस धार रांक ढांक नर नार दूप भूप मूक घूक ऊंच नीच पाया है
राजा राना दाना माना सूरवीर धीर छाना अंतकाल रोया सब काल वाज पाया है
तो है समजाया अब ओसर पुनीत पाया निज गुन धाया सोइ वीर प्रभु गाया है २
अथ 'बोध(धि)दुर्लभ' भावना—
सुंदर रसीली नार नाककी वसनहार आप अवतार भार सुंदर दिदार रे
इंद चंद धरणिंद माधव नरिंद चंद वसन भूषन पंद पाये बहु वार रे
जगतके ख्याल रंगवद रंग लाल माल मुगता उजाल डाल रे(ह)दे वीच हार रे
ए तो सब पाये मन भाये काम जगतके एक नही पाये विभु वीर वच तार रे १
सुंदर सिंगार करे वार वार मोती भरे पति विन फीकी नीकी निंदा करे लोक रे
वदन रदन सित दृग विन फीके नित पगरि तेरि वकित भूपनके थोक रे
जीव विन काया माया दान विन सूम गाया सील विन वायां खाया तोष विन लोक रे
तप जप ज्ञान ध्यान मान सनमान सब सम कद रस विन जाने सब फोक रे २

इति द्वादशभावनाविचार.

अथ प्रत्याख्यानस्वरूप ठाणांग, आवश्यक, आवश्यकभाष्यात्

(१) भावि—आचार्य आदिकनी वैयावृत्त्य निमित्ते जो तप आगे करणा था पर्युषण आदिमे अष्टम आदि सो पहिला करे ते 'भावि–अनागत तप.' (२) अईयं—आचार्य आदिकनी वैयावृत्त्य निमित्ते पर्युषण आदिमे अष्टम आदि तप न करे, पर्युषण आदिकके पीछे करे ते 'अतीत तप' कहिये. (३) कोडिसहियं—प्रारंभता अने मूकतां छोडतां चतुर्थ आदिक सरीपो तप ते वेहु छेहडा मेल्या हुइ ते 'कोटिसहितम्.' (४) सागार—अणत्थणा भोग सहसागार इन दोना विना अपर महत्तरागार आदि आगार राषे ते 'सागारतप.' (५) अणागार—अणत्थणाभोगेण सहसागारेण ए दो विना होर (और) कोइ आगार न राषे ते 'अणागार तप'. (६) परिमाण—एक दाता आदि १ कवल २ घर ३ द्रव्य संख्या करे ते 'प्रमाणकृत.' (७) निरविसेसे—सर्व अशन आदि वोसरावे ते 'निर्विशेष.' (८) नियंद्दि—अमुको तप अमुक दिने निश्चे करूंगा 'नियंत्रित तप.' ए जिनकल्पी विषे प्रथम संघयण होता है; सो वर्तमानमे व्यवच्छेद (च्छिन्न) है. (९) संकेय—अंगुट्ठि १ मुट्ठि २ गंट्ठी ३ घर ४ से ५ ऊसास ६ थिवुग ७ जोइरके ८; ए आठ 'संकेत'कें भेद जानने. (१०) अद्धा—नमुकारसहियं १ पोरसि २ साढपोरसि ३ पुरिम ४ अपार्द्ध ५ विगय ६ निवीता ७ आचाम्ल ८ एकासणा ९ वेआसणा १० एकलठाणा ११ पाण १२ दिस १३ अभत्तट्ठ १४ चरम १५ अभिग्रह १६.

(११८) १५ भेद पाण विनां द्वार दूजा आगार संख्यां

	नमोकार सहियं १	पोरसी २	साढपोरसी ३	पुरम ४	अपार्द्ध ५	विगय ६	निवीता ७	आचाम्ल ८	एकासणा ९	बेआसणा १०	एकलठाणा ११	अभत्तट्ठ १२	दिवस १३ चरम १४	अभिग्रह १५
अणत्थणाभोगे	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ
सहसागारेण	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स
पच्छन्नकालेण	०	प	प	प	प	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिसामोहेण	०	दि	दि	दि	दि	०	०	०	०	०	०	०	०	०
साहुवयणेण	०	सा	सा	सा	सा	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अकुंचनपसा०	०	०	०	०	०	०	०	०	अ	अ	०	०	०	०
गुरुअब्भुट्ठा	०	०	०	०	०	०	०	०	गु	गु	गु	०	०	०
सागारियागा०	०	०	०	०	०	०	०	०	सा	सा	सा	०	०	०
पारिट्ठावणिया	०	०	०	०	०	पा	पा	पा	पा	पा	पा	पा	०	०
लेवालेवेण	०	०	०	०	०	ले	ले	ले	०	०	०	०	०	०
उक्खित्तविवेगे	०	०	०	०	०	उ	उ	उ	०	०	०	०	०	०
गिहत्थसंसट्ठे	०	०	०	०	०	गि	गि	गि	०	०	०	०	०	०
पडुच्चमक्खियेे	०	०	०	०	०	प	प	०	०	०	०	०	०	०
महत्तरागारे	०	०	०	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म
सव्वसमाहिव०	०	स	म्न	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स
आगारसंख्या	२	६	६	७	७	९	९	८	८	८	७	५	४	४

अथ आगार-अर्थ लिख्यते—अणत्थ० अत्यंत भूल गया, पचक्खाण करके भोजन मुखमे दीया पीछे पचक्खाण संभार्यो तदा तत्काल थूक देवे तो भंग नही १. सहसा० गाय आदि दोहना मुखमें छींट पडे, बलात्कारे मुखमे पडे पूर्ववत् थूके २. पच्छन्नकाल० सूर्य बादलसे ढक्यो पूरी पोरसीकी बुद्धिसे पारे पीछे सूर्य देख्या तो पोरसी नही हुइ तदा मुखके कवलकूं रापमे यत्नसे थूके, पूरी हुइ पोरसी तदा फेर जीमे तो भग नही इम सर्व जगे जानना. ३. दिसामो० पूर्व दिस(श) पश्चिम जाणे तदा पारे पीछे खबर पडे पूर्वोक्तवत् थूके ४. सा० साधुके वचनथी पोरसी जाणी जीमे पीछे जाण्या पोरसी नही आइ पूर्वोक्त० ५. महत्तरा० अति मोटा काम संघ गुरुकी आज्ञासे जीमे तो भंग नही; ग्लान आदिकनी वैयावृत्त्य करणी ते विना खाया होइ नही, इस वास्ते भोजन करे तो भंग नही ६. सव्वसमाहि० प्रत्याख्यान कर्या है अने तीव्र शूल आदि उपना अथवा सर्प आदि डसो तदा आर्त्तध्याने मरे तो अच्छा नही

इस वास्ते औषधी करे भंग नही ७. सागारी० जिसकी नजर लगे दोष हूइ तो अध जीमे उठके ओर जगे जायके जीमे पिण तिसकी दृष्टि आगे न जीमे अथवा साधुकूं भोजन करतां गृहस्थ देखता होइ तो तिहाथी अन्यत्र जाइ जीमे तो भंग नही होइ ८. आउट्टण०—हाथ, पग आदि संकोचे पसारे तो भंग नही, वात आदि कारणात् ९. गुरुअब्भु०—गुरुकूं आवता देखके जो खडा होवे तो भंग नही १०. पारिट्ठा०—विधिसे लीया विधिसे जीम्या इम करतां जे विगय प्रमुख आहार ऊगर्या ते परिठावणिया गुरुनी आज्ञाये लेवे तो भंग नहीं. ११. लेवालेवे०—जे विगय त्यागया है तिणे करी कडछी आदिक खरडी हूइ तिण कडछी करी आहर आदिक दीइ ते लेता व्रत भंग नही होइ १२. गिहत्थसं०—गृहस्थे आपणे काजे उ(ओ)दन दूधे(धसे) अथवा दही करी उल्या हूइ तिहा जे धान्य उपरि चार आंगुल चडिउ दूध दही हूइ ते निवीये कल्पे, जो पांच अंगुल तो विग(य) ही जाननी. ए आचाम्ल ताइ कल्पे १३. ए आगार साधुने. उक्खित्तवि०—गाढी विगय गुड पकवान आदिक पोली ऊपरि मूकी हुइ ते उपाडी दूर करी ते पोली आचाम्ल ताइ कल्पे १४. ए आगार साधुने. पडुच्चमक्खि०—सर्वथा रूपा मंडक आदिकने राख दूर करनेकू हाथ फेरे मंडा फेरे १५.

पच्चक्खाण तिविहार करे तदा पाणीके छ आगार—पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा बहलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसरामि. अस्य अर्थ—पाण० जिस करी भाजन आदि खरडाइ ते खर्जुर आदिकनउ पाणी लेपकृत १. अलेवे० अलेप पाणी कांजिका प्रमुख २. अच्छेण० अच्छा निर्मल तत्ता पाणी ३. बहलेण० बहल डोहलउ तंदुल धोवल प्रमुख ४. ससित्थे० सीथ सहित उसामण आदि ५. असित्थे० सीथ रहित पाणी ६; ए ६ पाणी लेवे तो भंग नही. पच्चक्खाण करणेवाला वोसरामि कहै; गुरु करावणेवाला वोसरइ कहै. श्रावककूं आचाम्ल नीवीमे पाणी भोजन अचित्त करे, सचित्त न करे, अने श्रावकने आचाम्ल नीवीमे तीन आहारका त्याग जानना. नमोकारसीमे अने रात्रिभोजनमे साधुके च्यार ही आहारका त्याग निश्चै करी होय है, शेष पच्चक्खाण तिविहार चौविहार होय है. रात्रिभोजन १ पोरसि २ दोपहीरी ३ एकासणेमे श्रावकने दो आहार, तीन आहार, चार आहारका त्याग होवे है. ए सर्व पच्चक्खाणका भेद जानना.

अथ च्यार आहारका स्वरूप लिख्यते—प्रथम अशनके भेद—शालि, ज्वारि, वरठी प्रमुख सर्व ओदन १, मूंग आदि सर्व दाल २, सत्तू आदि सर्व आटा ३, पेठ आदि सर्व तीमण ४, मोदक आदि सर्व पकवान ५, सूरण आदि सर्व कंद ६, मंडक आदि सर्व तली वस्तु ७, वेसण ८, विराहली ९, आमला १०, सैंधव ११, कउठपत्र १२, लींबुपत्र १३, लूण १४, हींग १५; ए सर्व अशनका भेद जानना. १.

पाण० पाणी कांजिक १, जव २, कयर ३, ककोडा आदिकनो धोवण ४, अवर सर्व शास्त्रोक्त धोवण ५, ए सर्व पाणी; साकरपाणी १ आंबिलपाणी इक्षु रसप्रमुख सर्व सरस पाणी. ए पाणीमे गिण्या पिण व्यवहारे अशन ही है. २.

खाइम० सूंखडी पतासा आदि १, सेक्या धान्य २, खोपरा ३, द्राख ४, बा(ब)दाम ५, अक्षोट ६, खर्जूर ७, प्रमुख सर्व मेवा काकडी, आम्र, फणस आदि सर्व फल.

साइम० सुंठ १, हरडे २, पीपल ३, मिरी ४, अजमो ५, जाइफल ६, कसेलउ ७, काथो ८, खयरडी ९, जेठी मधु १०, तज ११, तमालपत्र १२, एलची १३, लवंग १४, विडंग १५, काठा १६, विडलवण, १७, आजउ १८, अजमोद १९, कुलिंजण २०, पीपलामूल २१, चीणीकबाब २२, कचूरउ २३, मोथ २४, कंटासेलूउ २५, कपूर २६, सूंचल २७, छोटी हरडे २८, बहेडा २९, कुंमडउ ३०, पोनपूग ३१, हिंगुलाष्टक ३२, हींगु त्रेवीस ३३, पुष्करमूल ३४, जवासामूल ३५, बावची ३६, बउलछाल ३७, धवछालि ३८, खयरछाली ३९, खेजडेकी छाल ४०; ए सर्व 'स्वादिम' कहिये. गुड 'खादिम' कहीए पिण व्यवहारे 'अशन' ही ज है. फोकोक्यो(?) नीर साकर वासिउ १, पाडल वासिउ २, सूंठनउ पाणी ३, हरडइनउ पाणी, ए जो नितारीने छाण्या होइ तो 'खादिम' नही; तिविहारमे लेणा कल्पे. जीरा प्रवचनसारोद्धारमे 'खादिम' कह्या अने श्रीकल्पवृत्तिमे 'स्वादिम' कह्या है. ए चार आहारनो विचार संपूर्णम्.

नींव छाल १, मूल पनडा शिली २, गोमूत्र ३, गिलो ३ (?) कडु ४, चिरायता ५, अतिविस ६, चीडी ७, सूकड ८, राख ९, हलद १०, रोहिणी ११, उपलोठ १२, वेजत्रिफला १३, पांच कूलि भूनिंब १४, धमासउ १५, नाहि १६, असंधिरोगणी १७, एलूउ १८, गुगल १९, हरडा दालि २०, वउणिमूल २१, चोरमूल २२, कंवेरीमूल २३, कयरनो मूल २४, पूयाड २५, आछी २६, मंजीठ २७, वालवीउ २८, कुयारी २९, वोडाथरी ३०, इत्यादि जे अनिष्टपणे इच्छा विना लीजे ते चारो आहारमे नहीं, 'अनाहार' ही ज जाणना. इति अनाहारः.

अथ विगय स्वरूप—दूध १, घृत २, दही ३, तेल ४, गुड ५, पकनान ६, ए छ 'भक्ष्य विगय' है. अथ दूध-विगयके भेद ५—गायका १, महिसका २, ऊंटणीका ३, बकरीका ४, भेडका ५; और दूध-विगय नही १. घृत अने दही ४ भेदे—ऊटणी विना. अथ तेल-विगय ४ भेदे—तिल १, सरसव २, अलसि ३, करड ४. अथ गुड २ भेदे—ढीलालाला १, काठा २. पकवान-विगय जे घृत तेलथी तली.

अथ महाविगय ४ अभक्ष्य—कुत्तिना १, मखिना २, भमरिना ३, ए मधु सहित. काष्ठका १ पीठीका २ मद्य २ भेदे. थलचर १, जलचर २, खेचर ३ का मांस तीन भेदे. माखण चार भेदे घृतवत् जानना. ए ४ अभक्ष्य जाननी.

अथ विगयके अंतर्गत तीस भेद. तीस भेद. प्रथम दूधनी पांच द्राक्ष सहित रांधिउ दूध ते 'पय' १, घणे चावल थोडा दूध ते 'खीर' २, अल्प चावल घणा दूध ते 'पेया' ३, तंदुलना चूर्ण सहित दूध रांध्या ते 'अवलेहि' कहीये ४, आछण सहित वितरेडिउ ते दूध 'दुग्धाटी' ५; ए पांच दूधना विगयगत भेद जानना.

अथ घृतना ५—पकवान जिसमे तल्या ते 'दग्धघृतनिभंजन' कहीये १, दहीने तारी घी काढे ते वीस्यंदन २, औषधी पकाके काढ्या घी ३, घृत नीतार्या पीछे छाछ रही ते ४, औषधी करी रांध्या पचिउ घृत ५. ए पांच घृतना विगयगत भेद.

अथ दहीनी ५—करवो १, शिषरणी मीठा घाली दही मसल्या २, लूण सहित दही मथ्यो ३, कपडसे छाणी दही घोल ४, घोलवडा उकालिउ दही जे माहे वडा घोल्या ते ५. ए ५ दहीना विगयगत भेद जानना.

अथ तेलना ५—जिसमे पकवान तलिया ते 'तेलदग्धनिभंजन' १, तिलकुट्टि माहे जो गुड आदि घणा घाल्या होइ ते वासी राख्या पीछे विगयगत २, लाक्षा आदि द्रव्ये करी पच्यो तेल ३, औषध पची नितार्या तेल ४, तेलना मल ५; ए ५ तेलनी.

अथ गुडनी ५—साकरना गुलत्राणी १, उकालिउ २, गुडनी पात ३, खांडकी राव ४, अधकटिउ इक्षुरस; ए पांच गुडनी.

अथ पकवाननी ५—तवी भरी घीकी पूडे करी सगली भरी तिहां जे पाछे पूडा तले ते १, नवा घी अणघाले तवीमे जे तीन पूर उतर्या पाछे जे पकवान उतरे ते २, गुडधाणी ३, पहिला कढाइहीमे सोहाली करी पाछे तिणे घी खरडी कडाहीमें जे लापसी आदिक करे ते ४, खरडी तवी मे जे पूडा कर्या ५. ए पांच पकानना विगयगत भेद. एवं ३०. ए नीवीमे लेणे नही कल्पते, गाढा कारण हूइ तो वात न्यारी.

अथ २२ अभक्ष्य लिख्यन्ते-गाथा—

"[1]पंचुंबर(रि) ५ चउ विगई ९ हिम १० विस ११ करगे य १२ सव्वमट्टी १३ य ।
रयणीभोयण १४ बयगण १५ बहुवीय १६ मणंत १७ संधाणा(णं) १८ ॥ १ ॥
विदलामगोरसाइं १९ अमुणियनामाइं पुप्फफलयाइं २० ।
तुच्छफलं २१ चलियरसं २२ वज्जह वज्जाणि बावीसं ॥ २ ॥"

इति गाथाद्वयं. अनयोरर्थः—वडवंटा १, पीपलवंटा २, गूलिर ३, पीलुखण ४, कठुंवर ५; ए ५ 'उंवर' कहीए. इन पांचो माहै मसाने आकारे घणा त्रस जीव भर्या होइ है तिस वास्ते अभक्ष्य ५; मधु १, माखण २, मध ३, मांस ४ ए माहे तद्वर्णे निरंतर संमूर्च्छिम पंचेंद्री उपजे इस वास्ते अभक्ष्य; माखण इहां छाछेथी अलग हुया जानना ९; हेमनि केवल असंख्य अप्काय भणी अभक्ष्य १०; विसउदर माहिला गंडोला आदि सर्व जीवने मारे अने मरण समय असावधानपणाना कारण ११, करहा गडाओले असंख्याता अप्काय भणी अभक्ष्य १२, खडीमरुहंड प्रमुख सर्व जातिनी मट्टी, मींडक आदिक पंचेंद्री जीवनी उत्पत्ति भणी अने आम घात आदि रोग उपजे तिस वास्ते अभक्ष्य १३; रात्रिभोजन एह लोक परलोक विरुद्ध १४; बहु बीजा पपोट, रींगणा आदि फल जेह माहे जितने बीज ते माहे तीतने जीव १५;

[1] पञ्चोदुम्बरी चतस्रो विकृतयो हिमं विष करक च सर्वमृत्तिका च । रजनीभोजन वृन्ताक बहुबीजमनन्त(कायिक) सन्धानम् । द्विदलामगोरसे अज्ञाननामानि पुष्पफलानि । तुच्छफल चलितरस वर्जत वर्ज्यानि द्वाविंशतिम् ॥

घोलवडा जे काचा गोरस माहें घाल्या वडा हुइ ते अभक्ष्य, तत्काल जीवनी उत्पत्ति होइ है, एवं सर्व मूंग आदि दो दल जानना. जेहनी दो दाल होइ अने घाणी पीड्या तेल न निकले ते काचा गोरसमे मिल्या अभक्ष्य ए विदल आमगोरसका अर्थ १६, अनतकाय ३२ अभक्ष्य ते बत्तीस आगे कहेगे १७; संधाण कहीये अथाणा अर्थात् आचार विल्ल, अंब, पाडल, नींबू आदि ते जीवनी उत्पत्ति रस चलतके कारण अभक्ष्य १८; वइगण काम दीपावे अने नींद घनी आवे अने आकार बुरा १९; अजाण फल फूल आदि कदे (?) विषफल होइ २०; तुच्छ फल जिसके घणे खाणेसे तृपित न होइ २१; चलित रस जे कुहिया अन्न आदिक उदन पहर उपरांत दही, १६ पहर, छाछ १२ पहर, करबा ८ पहर, जाडी रानडी १२ पहर, पतली रानडी ८ पहर, लापसी ४ पहर, पूडा ४ पहर, रोटी ४ पहर, काजीके वडे ४ पहर, कोरे वडे ४ पहर, खीचडी ४ पहर, पीछे ए सर्व रस चलित होइ है जोकर तप्त आदि कारणे जलदी रस चले तो विवेकीये पहिला ही वरजणा, ए व्यवहारकी अपेक्षा है. एव २२ वर्जनीय.

अथ बत्तीस अनतकाया—सर्व कंद जाति सूरणकद १, वज्रकंद २, आली हलद ३, आदउ ४, आला कचूर ५, सतावरि ६, विराली ७, कुमारि ८, थोहर ९, गिलो १०, लहसण ११, वासना करल १२, गाजर १३, लाणा जिसकूं वाली साजी करे १४, लोढो पोयणनउ कद १५, गिरिकर्णिका वेलि १६, नवा ऊगता किसलय पत्र १७, खेरिं सुया १८, थेगकद १९, आला मोथ २०, लूनण वृक्षकी छाल २१, खेलूडा २२, अमृतवेलि २३, मूली २४, भूमिफोडा जे वर्षाकाले छत्रडा उपजे २५, विरूहा जे कठुल धान्य अकुरिया हुइ २६, जे छेद्या पीछे ऊगे २७, सूयरवाल जे मोटउ होइ २८, कोमल आंबली जेह माहे चीचकउ संचरिउ नही २९, पलंक ३०, आलू ३१, पिंडालू ३२, ए अनतकाय प्रसिद्ध है और अनंतकायके लक्षण श्रीपन्नवणाजीके(प्रथम)पद (सू. २५) थी जानना "चक्कगं भज्ज" इत्यादि.

अथ भग १४७ श्रावकके श्रीभगवतीजीसे जानने करण कारवण आदि. गुरुमुखे पचक्खाण करे; इहां गुरु अने श्रावक आश्री च्यार भांगा है. ते किम? गुरु पचक्खाणनउ जाण अने श्रावक पचक्खाणनउ जाण, ए भांगा शुद्ध १, अने गुरु जाणकार पिण श्रावक अजाण तउ तेहने पचक्खाण सखेपथी सुणा कर भेद करावे ए भागा शुद्ध २, तथा गुरु अजाण पिण श्रावक जाणकार ए भागामां भलउ ३, तथा श्रावक अजाण अने गुरु अजाण, ए भागा सर्वथा अशुद्ध ४. एवं च्यार भांगा जानना.

अथ पच्चक्खाणकी ६ शुद्धि—(१) फासिय-विशुद्धिसे यथावत् उचित काल प्राप्त, (२) पालिय-वार वार स्मरण करणा, (३) सोहिय-गुरुदत्त शेष भोजन करणा, (४) तीरिय-आपणे काल तक पूरी करे, (५) किट्टिय-भोजनके अवसर फेर स्मरण करे, (६) आराहिय-उपरिले बोल पूरे करे ते आराध्या. अथवा छ शुद्धि प्रकारातरे—सद्दहणा शुद्ध १, जानना शुद्ध २, विनयशुद्धि ३, अनुभासणशुद्ध ४, अनुपालनशुद्ध ५, भावशुद्ध ६. इस विध पच-क्खाण पालीने अनंत जीव तरे, आगे तरसे इति समत्त.

अथ आगे श्रावकके बारह व्रतांके सर्व भंगका स्वरूप लिख्यते—

प्रा	मृ	अ
१	१	१
२	१	१
३	१	१
४	१	१
५	१	१
६	१	१
१	२	१
२	२	१
३	२	१
४	२	१
५	२	१
६	२	१
१	३	१
२	३	१
३	३	१
४	३	१
५	३	१
६	३	१
१	४	१
२	४	१
३	४	१
४	४	१
५	४	१
६	४	१
१	५	१
२	५	१
३	५	१
४	५	१
५	५	१
६	५	१
१	६	१
२	६	१
३	६	१
४	६	१
५	६	१
६	६	१

	६	एक संयोग १	६	
प्रा	६	एक संयोग १	६	६
प्रा मृ	६ ३६	ए सं. २ द्वि ,, १	१२ ३६	४८
प्रा मृ अ	६ ३६ २१६	ए ,, ३ द्वि ,, ३ त्रि ,, १	१८ १०८ २१६	३४२
प्रा मृ अ मै	६ ३६ २१६ १२९६	ए ,, ४ द्वि ,, ६ त्रि ,, ४ चा ,, १	२४ २१६ ८६४ १२९६	२४००
प्रा मृ अ मै प	६ ३६ २१६ १२९६ ७७७६	१ ,, ५ २ ,, १० ३ ,, १० ४ ,, ५ ५ ,, १	३० ३६० २१६० ६४८० ७७७६	१६८०६
प्रा मृ अ मै प दि	६ ३६ २१६ १२९६ ७७७६ ४६६५६	१ ,, ६ २ ,, १५ ३ ,, २० ४ ,, १५ ५ ,, ६ ६ ,, १	३६ ५४० ४३२० १९४४० ४६६५६ ४६६५६	११७६४८
प्रा मृ अ मै प दि भो	६ ३६ २१६ १२९६ ७७७६ ४६६५६ २७९९३६	१ ,, ७ २ ,, २१ ३ ,, ३५ ४ ,, ३५ ५ ,, २१ ६ ,, ७ ७ ,, १	४२ ७५६ ७५६० ४५३६० १६३२९६ ३२६५९२ २७९९३६	८२३५४२
प्रा मृ अ मै प दि भो अ	६ ३६ २१६ १२९६ ७७७६ ४६६५६ २७९९३६ १६७९६१६	१ ,, ८ २ ,, २८ ३ ,, ५६ ४ ,, ७० ५ ,, ५६ ६ ,, २८ ७ ,, ८ ८ ,, १	४८ १००८ १२०९६ ९०७२० ४३५४५६ १३०६३६८ २२३९४८८ १६७९६१६	५७६४८००

प्रा	६	१	,,	९	५४	४०३५३६०६
मृ	३६	२	,,	३६	१२९६	
अ	२१६	३	,,	८४	१८१४४	
मै	१२९६	४	,,	१२६	१६३२९६	
प	७७७६	५	,,	१२६	९७९७७६	
दि	४६६५६	६	,,	८४	३९१९१०४	
भो	२७९९३६	७	,,	३६	१००७७६९६	
अ	१६७९६१६	८	,,	९	१५११६५४४	
सा	१००७७६९६	९	,,	१	१००७७६९६	

प्रा	६	१	,,	१०	६०	२८२४७५२४८
मृ	३६	२	,,	४५	१६२०	
अ	२१६	३	,,	१२०	२५९२०	
मै	१२९६	४	,,	२१०	१७२१६०	
प	७७७६	५	,,	२५२	१९५९५५२	
दि	४६६५६	६	,,	२१०	९७९७७६०	
भो	२७९९३६	७	,,	१२०	३३५९२३२०	
अ	१६७९६१६	८	,,	४५	७५५८२७२०	
सा	१००७७६९६	९	,,	१०	१००७७६९६०	
दे	६०४६६१७६	१०	,,	१	६०४६६१७६	

प्रा	६	१	,,	११	६६	१९७७३२६७४२
मृ	३६	२	,,	५५	१९८०	
अ	२१६	३	,,	१६५	३५६४०	
मै	१२९६	४	,,	३३०	४२७६८०	
प	७७७६	५	,,	४६२	३५९२५१२	
दि	४६६५६	६	,,	४६२	२१५५५०७२	
भो	२७९९३६	७	,,	३३०	९२३७८८८०	
अ	१६७९६१६	८	,,	१६५	२७७१३६६४०	
सा	१००७७६९६	९	,,	५५	५५४२७३२८०	
दे	६०४६६१७६	१०	,,	११	६६५१२७९३६	
पौ	३६२७९७०५६	११	,,	१	३६२७९७०५६	

प्रा	६	१	,,	१२	७२	१३८४१२८७२००
मृ	३६	२	,,	६६	२३७६	
अ	२१६	३	,,	२२०	४७५२०	
मै	१२९६	४	,,	४९५	६४१५२०	
प	७७७६	५	,,	७९२	६१५८५९२	
दि	४६६५६	६	,,	९२४	४३११०१४४	
भो	२७९९३६	७	,,	७९२	२२१७०९३१२	
अ	१६७९६१६	८	,,	४९५	८३१४०९९२०	
सा	१००७७६९६	९	,,	२२०	२२१७०९३१२०	
दे	६०४६६१७६	१०	,,	६६	३९९०७६७६१६	
पौ	३६२७९७०५६	११	,,	१२	४३५३५६४६७२	
अ	२१७६७८२३३६	१२	,,	१	२१७६७८२३३६	

प्रथमव्रते पट् भंगा त एव सप्तगणाः; कथं? पट्गुणने ३६ द्वितीयव्रतस्य ६ पट् प्रथमव्रतस्य प्रक्षेप्यन्ते यथा ४८; एवं सर्वत्र ७ गुणाः पट्प्रक्षेपः

प्रा १,२,३,४,५,६ भंगा एकसयोगे १	प्रा १,२,३,४,५,६, ३६ मृ ६,६,६,६,६,६ द्विकसंयोग २

प्रा १ १ १ १ १ १ मृ १ २ ३ ४ ५ ६ अ ६ ६ ६ ६ ६ ६ त्रिकसयोग ३	प्रा २ २ २ २ २ २ मृ १ २ ३ ४ ५ ६ अ ६ ६ ६ ६ ६ ६	प्रा ३ ३ ३ ३ ३ ३ मृ १ २ ३ ४ ५ ६ अ ६ ६ ६ ६ ६ ६

प्रा ४ ४ ४ ४ ४ ४ मृ १ २ ३ ४ ५ ६ अ ६ ६ ६ ६ ६ ६	प्रा ५ ५ ५ ५ ५ ५ मृ १ २ ३ ४ ५ ६ अ ६ ६ ६ ६ ६ ६	प्रा ६ ६ ६ ६ ६ ६ मृ १ २ ३ ४ ५ ६ अ ६ ६ ६ ६ ६ ६	एव ३६, पट् पट्त्रिंशद्धि॰ भग २१६, एव अग्रेऽपि भावना कार्या

प्रा १ १ १ १ १ १ मृ १ २ ३ ४ ५ ६	प्रा ४ ४ ४ ४ ४ ४ मृ १ २ ३ ४ ५ ६		प्रा	९	१	९	९
प्रा २ २ २ २ २ २ मृ १ २ ३ ४ ५ ६	प्रा ५ ५ ५ ५ ५ ५ मृ १ २ ३ ४ ५ ६	एव ३६, प्रथम व्रतस्य पट्, द्वितीयव्रतस्य पट्, एवं १२, एव ३६ मध्ये प्रक्षेपे ४८	प्रा मृ	९ ८१	२ १	१८ ८१	९९
प्रा ३ ३ ३ ३ ३ ३ मृ १ २ ३ ४ ५ ६	प्रा ६ ६ ६ ६ ६ ६ मृ १ २ ३ ४ ५ ६		प्रा मृ अ	९ ८१ ७२९	३ ३ १	२७ २४३ ७२९	९९९

एवं अग्रेतन अष्ट यंत्र ज्ञेयं १२ मे

३ ३ ३ २ २ १ १ ३ ३	२ २ २ ३ २ १ ३ ९ ९	१ १ १ ३ २ १ ३ ९ ९	क का अ नु लब्ध	नव भंग्युक्त २ मेद ४९ भंगयंत्र. म १ व २ का ३ मावा ४ माका ५ वाका ६ मावाका ७ कर १ करा २ कराकरा ३ सत त्रि २१, एह एकवीस भंगाका स्वरूपम्

नव भङ्ग्या तु प्रथमव्रते भङ्गा नव ९, ततो द्विकादि व्रते संयोगे दशगुणित नवकप्रक्षेपक्रमेण तावद् गन्तव्यं यावदेकादशवेलायां द्वादशव्रतसंयोगभङ्गसङ्ख्या ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९; ए सर्व नवभंगीना भागा

२ २ २ ३ २ १ १ ३ ३	१ १ १ ३ २ १ २ ६ ६	क का म व का	पट्भंग्युत्तरभेद २१ भगयंत्रम्		
प्रा	९		१२	१०८	
मृ	८१		६६	५३४६	९
अ	७२९		२२०	१६०३८०	९
मे	६५६१		४९५	३२४७६९५	९
प	५९०४९		७९२	४६७६६८०८	९
दि	५३१४४१		९२४	४९१०५१८८४	९
मो	४७८२९६९		७९२	३७८८१११४४८	९
अ	४३०४६७२१		४९५	२१३०८१२६८९५	९
सा	३८७४२०४८९		२२०	८५२३२५०७५८०	९
दे	३४८६७८४४०१		६६	२३०१२७७७०४६६	९
पो	३१३८१०५९६०९		१२	३७६५७२७१५३०८	९
अ	२८२४२९५३६४८१		१	२८२४२९५३६४८१	

एवं एकविंशति भंग न्यायेन

प्रा मृ अ मै प दि भो अ सा दि पौ अ			
प्रा	२१	१२	२५२
मृ	४४१	६६	२९१०६
अ	९२६१	२२०	२०३७४२०
मै	१९४४८१	४९५	९६२६८०९५
प	४०८४१०१	७९२	३२३४६०७९९२
दि	८५७६६१२१	९२४	७९२४७८९५८०४
भो	१८०१०८८५४१	७९२	१४२६४६२१२४४७२
अ	३७८२२८५९३६१	४९५	१८७२२३१५३८३६९६
सा	७९४२८००४६५८१	२२०	१७४७४१६१०२४७८२०
दि	१६६७९८८०९७८२०१	६६	११००८१२१४८५६१२६६
पौ	३५०२७७५००५४२२२१	१२	४२०३३३०००६५०६६४२
अ	७३५५८२७५११३८६६४१	१	७३५५८२७५११३८६६४१

१२८५५००२६३१०४९२२५

कर १ करा २ अनु ३ कर । करा ४ करा अनु ५ कार अनु ६ कारा अनु ७ सप्त सप्त गुणा ४९ भंगी भवति

प्रा मृ अ मै प दि भो अ स दे पौ अ			
प्रा	४९	१२	५८८
मृ	२४०१	६६	१५८४६६
अ	११७६४९	२२०	२५८८२७८०
मै	५७६४८०१	४९५	२८५३५७६४९५
प	२८२४७५२४९	७९२	२२३७२०३९७२०८
दि	१३८४१२८७२०१	९२४	१२७९९३४९३७३७२४
भो	६७८२२३०७२८४९	७९२	५३७१५७६७३६९६४०८
अ	३३२३२९३०५६९६०१	४९५	१६४५०३००६३१९५२४९५
स	१६२८४१३५९७९१०४४९	२२०	३५८२५०९९१५४०२९८७८०
दे	७९७९२२६६२९७६१२००१	६६	५२६६२८९५७५६४२३९२०६६
पौ	३९०९८२१०४८५८२९८८०४९	१२	४६९१७८५२५८२९९५८५६५८८
अ	१९१५८१२३१३८०५६६४१४४०१	१	१९१५८१२३१३८०५६६४१४४०१

२४४१४०६२४९९९९९९९९

एकसो सेंतालीस १४७ भंगी न्यायेन

प्रा मृ अ मै प दि भो अ सा दे पौ अ			
प्रा	१४७	१२	१७६४
मृ	२१६०९	६६	१४२६१९४
अ	३१७६५२३	२२०	६९८८३५०६०
मै	४६६९४८८८१	४९५	२३११३२९६९६०९५
प	६८६४१४८५५०७	७९२	५४३६४०५६५२१५४४
दि	१००९०२९८३६९५२९	९२४	९३२३४३५६९३४४४७९६
भो	१४८३२७७३८६०३२०७६३	७९२	११७४७५२८९७३७४०४४२९६
अ	२१८०४१२५७४६७१५२१६१	४९५	१०७९३०४२२४६२४०३१९६९५
सा	३२०५२०६४८४७६७१३६७६६७	२२०	७०५१४५४२६६४८७७००८८६७४०
दे	४७११६५३५३२६०७६९१०४७०८९	६६	३१०९६९१३३१५२१०७६०९१०५२३४
पौ	६९२६१३९६९२९३३०५८३९१६२०३	१२	८३११३५६८३१५१९९६७००६९९४४३६
अ	१११८१५४०६४८६११९५९३८३५६८१८४१	१	१११८१५४०६४८६११९५९३८३५६८१८४१

१३०४४३९००७०१९६११५३३५६९५७६९५

एकविंशतिभङ्गाः—प्रथमव्रते एकविंशतिभङ्गास्ततो द्विकादिव्रतसंयोगे द्वाविंशतिगुणितं एकविंशतिप्रक्षेपक्रमेण तावद् गन्तव्यं यावदेकादशवेलाया द्वादशव्रतसंयोगे भङ्गसङ्ख्या ।

एकोनपञ्चाशद् भङ्गाः—प्रथमव्रते एकोनपञ्चाशद् भङ्गास्ततो द्विकादिव्रतसंयोगे पञ्चाशद्गुणितं एकोनपञ्चाशत्प्रक्षेपक्रमेण तावद्० ।

सप्तचत्वारिंशत्शतभङ्गाः—प्रथमव्रते सप्तचत्वारिंशत्शतं भङ्गाः द्विकादिसंयोगे अष्टचत्वारिंशत्शतगुणितं सप्तचत्वारिंशत्शत-प्रक्षेपक्रमेण तावद्० ।

( )

प्रा० १	मृ० २	अ० ३	मैथुन ४	परि० ५	दिग् ६	भोगो० ७	अन० ८	सामा० ९	दिशा० १०	पौषध ११	अतिथि० १२
मने करी करू नही	——	——	→	ए	च	म्			→		→
मने करी करावु नही १	६	३६	२१६	१२९६	७७७६	४६६५६	२७९९३६	१६७९६१६	१००७७६९६	६०४६६१७६	३६२७९७०५६
वचने करी करू नही २	१२	७२	४३२	२५९२	१५५५२	९३३१२	५५९८१२	३३५९२३२	२०१५५३९२	१२०९३२३५२	७२५५९४११२
वचने करी करावू नही ३	१८	१०८	६४८	३८८८	२३३२८	१३९९६८	८३९८०८	५०३८८४८	३०२३३०८८	१८१३९८५२८	१०८८३९११६८
काया करी करू नही ४	२४	१४४	८६४	५१८४	३११०४	१८६६२४	१११९७४४	६७१८४६४	४०३१०७८४	२४१८६४७०४	१४५११८८२२४
काया करी करावू नही ५	३०	१८०	१०८०	६४८०	३८८८०	२३३२८०	१३९९६८०	८३९८०८०	५०३८८४८०	३०२३३०८८०	१८१३९८५२८०
१ सयोगी	२ सं०	३ सं०	४ सं०	५ सं०	६ स०	७ स०	८ सं०	९ सं०	१० सं०	११ स०	१२ सं०
६	३६	२१६	१२९६	७७७६	४६६५६	२७९९३६	१६७९६१६	१००७७६९६	६०४६६१७६	३६२७९७०५६	२१७६७८२३३६

एग वए छ भंगा, निदिट्ठा सावयाण जे सुत्ते । ते च्चिय वयवुड्ढीए, सत्तगुणा छज्जुया कमसो ॥ १ ॥

इति सर्वव्रतानां भङ्गोत्पत्तिकारिका मंतव्या इति श्रावकव्रतानां भङ्गाः समर्थिताः ।
इति आत्मारामसङ्कलितायां संवरतत्त्वं संपूर्णम् ।

अथ 'निर्जरा' तत्त्व लिख्यते—अथ 'निर्जरा' शब्दार्थ—'निर्' अतिशय करके 'जॄ' कहता हानि करे कर्मपुद्गलनी ते 'निर्जरा' कहीये. अथ निर्जराके बारा भेद लिख्यते—अनशन १, ऊनोदरी २, भिक्षाचरी ३, रसपरित्याग ४, कायक्लेश ५, प्रतिसंलीनता ६; प्रायश्चित्त १, विनय २, वैयावृत्त्य ३, स्वाध्याय ४, ध्यान ५, व्युत्सर्ग ६; एवं १२. पहेले ६ भेद बाह्य निर्जराके जानने; आगले ६ भेद अभ्यंतर निर्जराके जानने, तपवत्. इस तरे निर्जराके भेदोंका विस्तार उववाइ शास्त्रसे जानने. इहां तो किंचित् मात्र ध्यान च्यारका स्वरूप लिख्यते श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणविरचित ध्यानशतकथी ।

अथ ध्यानस्वरूप दोहरा—

शुक्ल ध्यान पावक करी, करमेंधन दीये जार; वीर धीर प्रणमु सदा, भवजल तारनहार १

अथ आर्त्तध्यानके चार भेद कथन सवईया इकतीसा—

द्वेपहीके वस पर अमनोग विसे घर तिनका विजोग चिंते फेर मत मिलीयो
शूल कुष्ठ तप रोग चाहे इनका विजोग आगेकुं न होय मन औषधिमे भिलियो
राग वस इष्ट विसे साता सुख माहि लिगे नारी आदि इष्टके सजोग भोग किलियो
इंद चंद धरनिंद नरनको इंद थऊ इत्यादि निदान कर आरतमे झिलियो १

अथ स्वामी अने लेश्या कथन. सवईया ३१ सा—

राग द्वेष मोह भर्यो आरतमे जीव पर्यो बीज भयो जगतरु मन भयो आध रे
किसन कपोत नील लेसा भइ मध मही उतकृष्ट जगनमे एकही न साध रे
आरतके वस पर्यो नर जन्म हार कर्यो चलत दिखाइ हाथ चढ चहू काध रे
आतम सयाना तोकूं एही दुपदाना जाना दाना मरदाना है तो अब पाल बाध रे २

अथ आर्तके लिंग—

रोद करे सोग करे गाढ स्वर नाद करे हिरदेकुं कूट मरे इष्टके विजोग ते
चित्त माजि पेद करे हाय हाय साद करे वदन ते लाल गिरे कष्टके संजोग ते
निंदे कृत आप पर रिद्धि देप चित ताप चाहे राग फाहे मेरे ऐसा क्यु न जोग ते
विसेका पिया सामन आसा पासा भासा वन आलसी विसेमे गृद्ध मूढ मति जोग ते ३

इति आर्तध्यान सपूर्णम्. अथ रौद्र ध्यानके चार भेद—

निर्घृण चित्त करी जीव वध नीत धरी वेध बंध दाह अरु मारण प्रणाम रे
माया झूठ पिशुनता कठन वचन भने एक ब्र (ब्र)ह्म जग मने नाना नही काम रे
पचभूतरूप काया देवकूं कुदेव गाया आतम सरूप भूप नही इन ठाम रे
छाना पाप करे लरे दुष्ट परिणाम धरे ठगवासी रीत करे दूजा भेद आम रे ४

पर धन हरे क्रोध लोभ चित धरे दूर दिल दया करे जीव वध करी राजी है
पापसे न डरे कष्ट नरकके गरे परे तिनकी न भीत करे कहे हम हाजी है
मांस मद पान करे भामनि लगावे गरे रात दिन काम जरे मन हूये राजी है
नरककी आग जरे जमनकी मार परे रोय रोय मरे जिहां अल्ला है न काजी है ५

अथ चौथा भेद—

साद आद साधनके धनकूं समार रपे कारण विसेके सब मेलत महान है
वीणा आद साद पूर पूतरी गंध कपूर मोदक अनेक कूर ललना सुहान है
अमनोगसे उदास दुष्ट मनन विसास पर घात मन धरे मलिन अग्यान है
आतमसरूप कोरे तप जप दान चोरे ग्यानरूप मारे कोरे टरे रुद्र ध्यान है ६

अथ स्वामी—

राग द्वेस मोह भरे चार गति लाभ करे नरकमे परे जरे दुखकी अगनसे
किसन कपोत नील संकलेस लेस तीन उतकिरू(कृ)ष्ट रूप भइ गइ है जगनसे
मोहकी मरोर पगे कामनीके काम लगे निज गुन छोर भगे होरकी लगनसे
एही रीत जिन टारी भय है घरम धारी मात तात सुत नारी जाने है ठगनसे ७

अथ लिंग ४ कथन—

दिव माहे वहु वार जीव वध आदि चार चिंतन कर करत लिंग प्रथम कहातु है
वहु दोस एक दोन तीन चार चिते सोय मोहमे मगन होय मूढ ललचातु है
नाना दोस अमुकहूं अमुक प्रकार करी मार गारु पार डारु रिदेमे ठरातु है
आमरण दोस फाही अंतकाल छोडे नाही जगमे रुलाइ भव भ्रमण करातु है ८

अथ कृत(कर्त)व्य—

रुद्रध्यान पर्यो जीव पर दुप देप कर मनमे आनंद माने ठाने न दया लगी
पाप करी पछाताप मनसे न करे आप अपर करीनें पाप चिते मेरिं झालगी
किसकी न सार करे निरदयी नाम परे करथी न दान करे जरे कामदा लगी
कही समझाया फिर जात उर झाया समझे न समझाया मेरे कहे की कहा लगी ९

इति रौद्र ध्यान संपूर्णम् ॥ २ ॥ अथ धर्मध्यानका स्वरूप लिख्यते—द्वार १२—भावना १, देश २, काल ३, आसन ४, आलंबन ५, क्रम ६, ध्यातव्य ७, ध्याता ८, अनुप्रेक्षा ९, लेश्या १०, लिंग ११, फल १२. तत्र प्रथम भावना ४—ज्ञान १, दर्शन २, चारित्र ३ वैराग्य ४. अथ प्रथम 'ज्ञान'–भावना, सवईया इकतीसा—

यथावत् जोग वही गुरुगम्य ग्यान लही आठ ही आचार ही ग्यान सुद्ध धर्यो है
ग्यानके अभ्यास करी चंचलता दूर टरी आसवास दूर परी ग्यानघट भर्यो है

प्रकट तुरंग रंग कूदित विहंग खंग मन थिर भयो जुं निवात दीप ज्यों है
ग्यान सार मन धार विमल मति उजार आतम संभार थिर ध्यान जोग कयों है १
इति 'ग्यान' भावना. अथ 'दर्शन'–भावना—
संखा कंखा दूर करी मूढता सकल हरी सम थिर गुन भरी टरी सब मोहनी
मिथ्या रंग भयो भग कुगुर कुसंग फंग सतगुर संग चंग तत्त वात टोहनी
निर्वेद सम मान दयाने संवेग ठान आसति करत जान राग द्वेस दोहनी
ध्यान केरी तान धरे आतमसरूप भरे भावना समक करे मति सोहनी १
इति. अथ 'चारित्र'–भावना—
उपादान नूतन करम कोन करे जीव पुन्य भव संचित दगध करे छारसी
सुभका गहन करे ध्यान तो धरम धरे विना ही जतन जैसे चाकर जुहारसी
चारतको रूप धार करम पपार डार मार धार मार बूंद गिरे जैसे ठारसी
करम कलंक नासे आतमसरूप पासे सत्ताको सरूप भासे जैसे देपे आरसी १
इति. अथ 'वैराग'–भावना—
चक्रपति विभो अति हलधर गदाधर मंडलीक रान जाने फूले अतिमानमे
रतिपति विभो मति सुखनकु मान अति जगमे सुहाये जैसे वादर विहानमे
रंभा अनुहार नार तनमे करे सिंगार पिनक तमासा जैसे वीज आसमानमे
पवन झकोर दीप बुझत छिनकमा जिऐसे बुझ गये फिर आये न जिहानमे १
खासा खाना खाते मनमाना सुख चाते ताते जानते न जात दिन रात तान मानमे
सुंदर सरूप वने भूपनमे वने वने पोर समेसने अने वच मद मानमे
गेह नेह देह संग आस लोभ नार रंग छोरके विहंग जैसे जात असमानमे
पवन झकोर दीप बुझत छिनकमां जिऐसे बुझ गये फिर आये न जिहानमे २
रोयां रीकी घरे परी रापत न एक घरी प्रिया मन सोग करी परीकूने जाइ रे
माता छु विहाल कहे लाल मेरो गयो छोर आसमान माही मेरी पूरी हुं न काइ रे
मिल कर चार नर अरथीमे घर कर जगमे दिखाइ कर कूटे सिर माइ रे
पीछे ही तमासा तेरो देपेगा जगत सब आपना तमासा आप क्यूं न देपे भाइ रे! ३
हाथी आथी छोर करी धाम वाम परहरी ना तातो तोर करी घरी न ठराइ रे
पान पीन हार यार कोउ नही चले नार आपने कमाये पाप आप साथ जाइ रे
सुंदरसी वपु जरी छारनमे छार परी आतम ठगोरी भोरी मरी घोपो पाइ रे
पीछेहि तमासा तेरो देपेगा जगत सब आपना तमासा आप क्यूं न देपे भाइ रे! ४
इति 'भावना' द्वार संपूर्णम्. अथ 'देश' द्वारमाह–कुशीलसंगवर्जन सवईया इकतीसा—
भामनि पसु ने पंड रहित स्थान चंग विजन कुसील जनसगत रहतु है
धूतकार १ हस्तिपार २ सवतिकार ३ नार ४ छातर पवनहार ५ कुट्टिनी सहतु है

नट विट भांड रांड पर घर नित हांड एही सब दूर छांडकु 'सील' कहतु है
ध्यान दृढ मुनि मन सुन्य गृह ग्राम वन तथा जना कीरण विसेस न लहतु है १
मन वच काये साधि होत है जहां समाधि तेही देस थानक धियानजोग कहे है
पृथी (थ्वी) आप तेज वन बीज फूल जीव घन कीट ने पतंग भृंग जीव वधन हे है
ऐसा ही सथान ध्यान करनेके जोग जान संग एकलो विसेस नही लहे है
एही देस द्वार मान ध्यान केरा वान तान मिट कर अरि थान सदा जीत रहे है २
इति 'देश' द्वार २. अथ 'काल' द्वारमाह–दोहरा—
जोग समाधिमे वसे, ध्यान काल है सोय; दिवस घरीके कालको, ताते नियम न कोय १
इति 'काल' द्वार ३. अथ 'आसन' द्वार–दोहरा—
सोवत वैठे तिष्ठते, ध्यान सवी विध होय; तीन जोग थिरता करो, आसन नियम कोय १
इति 'आसन' द्वार ४. अथ 'आलंबन' द्वार, सवईया इकतीसा—
वाचन पूछन कित वार वार फेरे नित अनुपेहा सुद्ध मेहा धरम सहतु है
समक श्रुत समाय देस सब वृत्ति थाय चारो ही समाय धाय लाभ लहतु है
विषम प्रसाद पर चरवेको मन कर रजुकूं पकर नर सुपसे चरतु है
ऐसो 'धर्म' ध्यान सौंध चरवेको भयो वौंध वाचनादि 'आलंवन' नामजुं कहतु है १
इति 'आलंबन' द्वार ५. अथ 'क्रम' द्वार–योगनिरोधविधि, दोहरा—
प्रथम निरोधे मन सुद्धी, वच तन पीछे जान; तन वचन मन रोधे तथा, वचन तन मन इक ठान १
इति 'क्रम' द्वार ६. अथ 'ध्यातार' द्वार, सवैया ३१ सा—
धरमका ध्याता ग्याता मुनिजन जग त्राता जगतकूं देत साता गाता निज गुणने
छोरे सब परमाद जारे सब मोह माद ग्यान ध्यान निरावाद वीर धीर थुणने
खीण उपसंत मोह मान माया लोभ कोह चारों गेरे खोह जोह अरि निज मुणने
आलम उजारी टारी करम कलंक भारी महावीर वैन ऐननीकी भांत सुणने १
इति 'ध्यातार' द्वार ७. अथ 'ध्यातव्य' द्वार. प्रथम आज्ञाविज(च)य—
निपुन अनादि हित मोल तोलके न कित कथन निगोद मित महत प्रभावना
भासन सरूप धरे पापको न लेस करे जगत प्रदीप जिनकथन सुहावना
जड मति बूझे नहि नय भंग सूझे नहि गमक परिमान गेय गहन भुलावना
आरज आचारजके जोग विना मति तुच्छ संका सब छोर वाद वारके कहावना १

अथ अपायविज(च)य—
कुटुंबके काज लाज छोरके निलज्ज भयो ठान तजका जवन सीत घाम सहे है
चिंता करी चकचूर दुपनमे भरपूर उड गयो तननूर मेरो मेरो कहे है
पाप केरी पोटरी उठाय कर एक रोतू रींक झींक सोग भरे साथी इहां रहे है
नरक निगोद फिरे मापनको हार गरे रोय रोय मरे फेर ऊन सुख चहे है २

अथ विपाकविज(च)य—

करम सभावथित रस परदेस मित मन वच काये थित सुभासुभ कर्यो है
मूल आठ भेद छेद एकसो अठावना है निज गुन सब दबे प्राणी भूल पर्यो है
राजन ते रंक होत ऊंच थकी नीच गोत कीट ने पतंग भृग नाना रूप धर्यो है
छेदे जिन कर्म भ्रम ध्यानकी अगन गर्म मानत अनंग सर्म धर्मधारी ठर्यो है ३

अथ संठाणविज(च)य—

आदि अंत वेहूं नही वीतराग देव कही आसति दरब पंचमय स्वयं सिद्ध है
नाम आदि भेद अड्डुपुव्व धार कहे वहु अधो आदि तीन भेद लोक केरे किद्ध है
पिति वले दीप चार नरक विमानाकार भवन आकार चार कलस महिद्ध है
आतम अपंड भूप ग्यान मान तेरो रूप निज द्दग पोल लाल तोपे सब रिद्ध है ४

इस सवईयेका भावार्थ आगे यंत्रोमे लिखेंगे तहांसे जानना इति संस्थानविज(च)य इति 'ध्यातव्य' द्वार ८.

अथ 'अनुप्रेक्षा' द्वार–ध्यान कर्या पीछे चितना ते 'अनुप्रेक्षा.' सवईया ३१ सा, समुद्रचिंतन—

आपने अग्यान करी जन्म जरा मींच नीर कषाय कलस नीर उमगे उतावरो
रोग ने विजोग सोग स्वापद अनेक थोग धन धान रामा मान मूढ मति वावरो
मनकी धमर तोह मोहकी भमर जोह वातही अग्यान जिन तान वीचि धावरो
संका ही लघु तरंग करम कठन द्रंग पार नही तर अब कहूं तो हे नावरो १

अथ पोतवरनन—

संत जन वणिग विरतमय महापोत पत्तन अनूप तिहा मोपरूप जानीये
अवधि तारणहार समक वधन डार ग्यान है करणधार छिद्र मिटानीये
तप वात वेग कर चलन विराग पंथ संकाकी तरग न ते पोभ नही मानीये
सील अंग रतन जतन करी सौदा भरी अवाबाध लाभ धरी मोप सौध ठानीये २

इति अनुप्रेक्षा द्वार ९. अथ अनुप्रेक्षा चार कथन, सवैया ३१ सा—

जगमे न तेरो कोउ संपत विपत दोउ ए करो अनादिसिद्ध भरम भुलानो है
जासो तूतो माने मेरो तामे कोन प्यारो तेरो जग अघ कूप छेरो परे दुख मानो है
मात तात सुत भ्रात भारजा वहिन आत कोइ नही त्रात थात भूल भ्रम ठानो है
थिर नही रहे जग जग छोर धम्म लग आतम आनद चद मोप तेरो थानो है ३

इति अनुप्रेक्षा द्वार ९. अथ 'लेश्या' द्वारकथन, दोहरा—

पीत पउम ने सुक्क है, लेस्या तीन प्रधान; सुद्ध सुद्धतर सुद्ध है, उत्कट मंद कहान १

इति लेश्याद्वार १०. अथ 'लिंग' द्वार, सवैया इकतीसा—

घमा धम्म आदि गेय ग्यान केरे जे प्रमेय सत सरद्दान करे संका सब छारी है
आगम पठन करी गुरवैन रिदे धरी वीतराग आन करी स्वयंबोध भारी है

चार ही प्रकार करी मिथ्या भ्रम जार जरी सतका सरूप धरी भय ब्रह्मचारी है
आतम आराम ठाम सुमतिको करी वाम भयो मन सिद्ध काम फूलनकी वारी है १
इति 'लिंग'द्वारम्. अथ 'फल'द्वार—
कीरति प्रशंसा दान विने श्रुत सील मान धरम रतन जिन तिनही को दीयो है
सुरगमे इंद भूप थान ही विमानरूप अमर समरसुप रंभा चंभा कीयो है
नर केरी जो न पाय सुप सद्दु मिले धाय अंत ही विहाय सन तोपरस पीयो है
आतम अनंत वल अघ अरि तोर दल मोपमे अचल फल सदा काल जीयो है १
इति फलम्. इति धर्मध्यानं संपूर्णम् ३.

अथ शुक्ल ध्यान लिख्यते—अथ 'आलंबन' कथन, दोहरा—
खंति आर्जव मार्दव, मुक्ति आलंबन मान; सुकल सौधके चरनको, एही भये सोपान १
इति आलंबन. अथ ध्यानक्रमस्वरूप, सवैया ३१ सा—
त्रिभुवन फस्यो मन क्रम सो परमानु विपे रोक करी धर्यो मन भये पीछे केवली
जैसे गारुडिक तन विसकूं एकत्र करे डंक मुप आन धरे फेर भूम ठेवली
ध्यानरूप वल भरी आगम मंतर करी जिन वैद अनु थकी फारी मनने वली
ऐसे मन रोधनकी रीत वीतराग देव करे धरे आतम अनंत भूप जे वली १
जैसे आगइं धनके घट ते घटत जात स्तोक एध दूर कीये छार होय परी है
जैसे-घरी कुंड जर घर नार छेर कर सने सने छीज तजुं मन दोर हरी है
जैसे तत्ततवे धर्यो उदग जर तपस्यो तैसें विभु केवलीकी मनगति जरी है
ऐसें वच तन दोय रोधके अजोगी भये नाम है 'सेलेस' तत्र ए जनही करी है २

अथ शुक्ल ध्यानके च्यार भेद कथन, सवैया—
एक हि दरव परमानु आदि चित धरी उतपात व्यय ध्रुवस्थिति भंग करे है
पुव्व ग्यान अनुसार पर जाय नानाकार नय विसतार सात सात सात सत धरे है
अरथ विजन जोग सविचार राग विन भंगके तरंग सब मन वीज भरे है
प्रथम सुकल नाम रमत आतमराम पृथग वितर्क आम सविचार परे है १ इति प्रथम.
एक हि दरवमांजि उतपात व्यय ध्रुव भंग नय परि जाय एकथिर भयो है
निरवात दीप जैसे जरत अकंप होत ऐसे चित धोत जोत एकरूप ठयो है
अरथ विजन जोग अविचार तत जोग नाना रूप गेय छोर एकरूप छयो है
'एकतवितर्क' नाम अविचार सुप धाम करम थिरत आग पाय जैसे तयो है २ इति दूजा.
विमल विग्यान कर मिथ्या तम दूर कर केवल सरूप धर जग ईस भयो है
मोपके गमनकाल तोर सब अघजाल ईपत निरोध काम जोग वस ठयो है
तनु काय क्रिया रहे तीजा भेद वीर कहे करम भरम सब छोरवेको थयो है
सूपम तो होत क्रिया 'अनिवृत्त' नाम लीया तीजा भेद सुकर मुकर दरसयो है ३ इति तीजा.

ईस सन कर्म पीस मेरु नगरा जईस ऐसे भयो थिर धीस फेर नही कंपना
करे हीन परे ऐसो परम सुकल भेद छेद सब किया ऐही नाम याको जंपना
प्रथम सुकल एक योग तथा तीनहीमे एक जोग गाहे दूजा भेद लेह ठंपना
काय जोग तीजो भेद चौथ भयो जोग छेद आतम उमेद मोप महिल धरपना ४
जैसे छदमस्थ केरो मनोयोग ध्यान कह्यो तैसे विभु केवलीके काय छोरे ध्यान ठेरे है
विना मन ध्यान कह्यो पूरव प्रयोग करी जैसे कुंभकारचाक एक वेरे है
पीछे ही फिरत आप ऐसे मन करे थाप मन रुक गयो तो ही ध्यानरूप लेरे है
वीतराग वैन ऐन मिथ्या नही कहे जैन ऐसे विभु केवलिने कर्म दूर गेरे है ५
इति चौथा. अथ अनुप्रेक्षाकथन, सवैया ३१ सा—
पापके अपथ केरी नरकमे दुप परे सोगकी अगन जरे नाना कष्ट पायो है
गर्भके वास वसे मूत ने पुरीप रसे जन्म पाय फेर हसे जरा काल खायो है
फेर ही निगोद वसे अंत विन काल फसे जगमे अभव्य लसे अंत नही आयो है
राजन ते रक होत सुप मान देप रोत आतम अपंड जोत घोत चित ठायो है १

अथ लेश्याकथन, दोहरा—
प्रथम भेद दो सुकलमे, तीजा परम वखान; लेश्यातीत चतुर्थ है, ए ही जिनमतवान १
अथ लिंगकथन, सवईया एकतीसा—
परीसहा आन परे ध्यान थकी नाही चरे गज मुनि जैसे परे ममताकूं छोरके
देवमाया गीत नृत मूढता न होत चित सूषम प्रमान ग्यान धारे भ्रम तोरके
दीपे जो ही नेत्रको ही सब ही विनास होही निज गुन टोही तोही कहूं कर जोरके
घर नर नार यार धन धान धाम वार आतमसे न्यार धार डार पार दोरके १
इति लिंग. अथ फल—
देव इद चंद पद दोनोचर नारविंद पूजन आनद छंद मंगल पठतु है
नाकनाथ रंभापति नाटक विबुध रति भयो हे विमानपति सुप न घटतु है
हलधर चक्रधर दाम धाम वाम धर रात दिन सुपभर कालयू कटतु है
जोग धार तप ठये अघ तोर मोप गये सिद्ध विभु तेरी जयनाम यू रटतु है १ इति फल.
दोनो सुभध्यान धरे पापको न लेस करे ताते दोनो नही भये कारण संसार के
संवर निर्जर दोय भाव तप दोनो पोय तप सब अघ खोय धोय सन छार के
याते दोनो तप भरे जीव निज चित धरे करम अंधारे टारे ग्यानदीप जार के
करम करूर भूर आतमसे कीये दूर ध्यान केरे सूरने तो मारे है पछार के १
अथ आतम कर्म ध्यान दृष्टांतकथन—
वस्त्र लोह मही वंक मलिन कलंक पंक जलानल सूर नूर सोधन करतु है
अंबर ने लोह मही आतमसरूप कही करत कलंक पंक मलिन कहतु है

जलानल दूर ध्यान आतम अधिष्ठान जलानल ग्यान भान मानके रहतु है
वसनकी मैल क्षरे लोह केरी कीटी जरे मही केरो पंक हरे उपमा लहतु है १
जैसे ध्यान धर करी मन वच काय लरी ताप सोस भेद परी ऐसे कर्म कहे है
जैसे वैद लंघन विरेचन उपध कर ऐसे जिनवैद विशुरीत परठहे है
तप ताप तप सोस तप ही उपध जोस ध्यान भयो तपको स रोग दूर थहे है
ए ही उपमान ग्यान तपरूप भयो ध्यान मार फिर पान भान केवलको लहे है १
जैसे चिर संचि एध अगन भसम करे तैसे ध्यान छाररूप करत कर्मको
जैसे वात आभवृंद छिनमे उडाय डारे तैसे ध्यान ढाह डारे कर्मरूप हर्मको
जब मन ध्यान करे मानसीन पीर करे तनको न दुप धरे धरे निज सर्मको
मनमे जो मोप वसी जग केरी तो (?) रसी आतमसरूप लसी धार ध्यान मर्मको १

अथ पिछले सवैइयेका भावार्थमे लोकसरूप आदि विवरण लिख्यते—
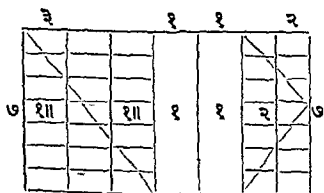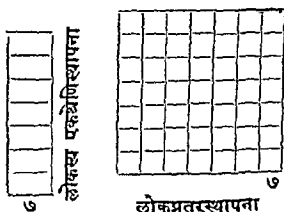
घनीकृतलोकस्थापना ज्ञेयम्
लोकप्रतरस्थापना

अथ घनीकृत लोकस्वरूप लिख्यते—अथ पुनः किस प्रकार करके लोक संवर्त्य समचतुरस्र करीये तिसका स्वरूप कहीये है. स्वरूप थकी इह लोक चौदां रज्जु ऊंचा है, अने नीचे देश ऊन सात रज्जु चौडा है, तिर्यग्लोकने मध्य भागे एक रज्जु चौडा है, ब्रह्मदेवलोकने मध्ये पांच रज्जु विस्तीर्ण है, ऊपर लोकांते एक रज्जु चौडा है, शेष स्थानकमे अनियत विस्तार है. रज्जुका प्रमाण–'स्वयंभूरमण' समुद्रकी पूर्वकी वेदिकाथी पश्चिमकी वेदिका लगे; अथवा दक्षिणनी वेदिकाथी उत्तरकी वेदिका पर्यंत एक रज्जु जान लेना. ऐसे रह्या इह लोकना बुद्धि करी कल्पना करके संवर्त्य घन करीये है. तथाहि–एक रज्जु विस्तीर्ण त्रसनाडीके दक्षिण दिशावर्ती अधोलोकको खंड नीचे देश ऊन रज्जु तीन विस्तीर्ण अनुक्रमे हाय मान विस्तारथी उपर एक रज्जुका संख्यातमे भाग चौडा अने सात रज्जु झझेरा ऊंचा एहवा पूर्वोक्त खंड लइने त्रसनाडीके उत्तर पासे विपरीतपणे स्थापीये, नीचला भाग उपर अने उपरला भाग नीचे करी जोडना इत्यर्थः. ऐसे कर्या अधोवर्ति लोकका अर्ध देश ऊन चार रज्जु विस्तीर्ण विस्तीर्ण झझेरा सात रज्जु ऊंचा अने चौडा नीचे तो किहा एक देश ऊन सात रज्जु मान अने अन्यत्र तो अनियत प्रमाणे जाडा अर्थात् बाह(ह)ल्यपणे है. अत्र उपरला लोकार्ध संवर्ती-

(की)ये है तिहां पिण रज्जु प्रमाण त्रसनाडीके दक्षिण दिशे रह्या ब्रह्मलोकके मध्य भाग थकी नीचला अने उपरना दो दो खंड, ब्रह्मलोकके मध्यमे प्रत्येक प्रत्येक दो दो रज्जु विस्तीर्ण उपर लोकने समीपे अने नीचा रत्नप्रभाने क्षुल्लक प्रतर समीपे अंगुल सहस्र भाग विस्तारे देश ऊन साढे तीन रज्जु प्रमाण दोनो खंडांने बुद्धि कर करे गृहीने तेहने उत्तरने पासे पूर्वोक्त रीत करके स्थापीये. ऐसा कर्या हुंतें उपरले लोकांनो अर्ध अंगुलना दो सहस्र भाग अधिक तीन रज्जु विस्तीर्ण हुइ. इहां चारो ही पंडांने छेहडे चार अंगुलना सहस्र भाग हुइ केवल एक दिशने विषे दोनो ही भागे करी एक ज अंगुल सहस्र भाग होइ एक दिग्वर्त्तीपणा थकी; इम अनेराइ जे दो भाग तिने करी एक सहस्र भाग हुइ; इस वास्ते दो भाग अधिकरूपणें कह्यो. देश ऊन सात रज्जु ऊंचा बाहल्य थकी ब्रह्मलोकने मध्ये पांच रज्जु बाहल्य अने अन्यत्र ओर जगें अनियत विस्तार. ऐसा ऊर्ध्व लोक गृहीने हेठला संवर्तिक लोकना अर्द्धने उत्तरने पासे जोडीये तिवारे अधोलोकना पड थकी जे प्रतर अधिक हुइ ते खंडने ऊपरिला जोड्या खंडना बाहल्यने विषे उर्द्धायत जोडीये. इम कर्या पाच रज्जु क्षकेरा किंहाएक बाहल्यपणे हुइ तथा हेठिले खंडने हेठे यथासंभव देश ऊन सात रज्जु बाहल्य पूर्वे कह्या है. ऊपरिला खंडना देश ऊन रज्जुद्वय बाहल्य थकी जे अधिक हुइ ते खंडीने ऊपरिला खंडना बाहल्यने विषे जोडीये. इम कर्या हुंते बाहल्य थकी सर्व ए चउरस कृत आकाशनो खंड कितनेक प्रदेशांने विषे रज्जुना असंख्यातमो भाग अधिक छ रज्जु होइ ते व्यवहार थकी ए सर्व सात रज्जु बाहल्य बोलाये; जे भणी व्यवहार नय ते कछुक ऊणा सात हस्तप्रमाण पट आदि वस्तुने परिपूर्ण सात हस्त प्रमाण माने; एतले देश ऊन वस्तुने व्यवहार नय परिपूर्ण कहै. इस वास्ते एहने मते इहा सात रज्जु बाहल्यपणे सर्वत्र जानना अने आयाम विष्कंभपणे प्रत्येक प्रत्येक देश ऊन सात रज्जु प्रमाण हुया है ते पिण 'व्यवहार' नयमते सात सात रज्जु पूरा गिण्या. एवं 'व्यवहार' नयमते सब जगे सात रज्जु प्रमाण घन होइ तथा श्रीसिद्धांतमे जहां कही श्रेणीनाम न ग्राह्यो है तिहां सब जगे घनीकृत लोकनी सात रज्जुप्रमाण लंबी श्रेणी जाननी; एवं प्रतर पिण एह घनीकृत लोकनो स्वरूप अनुयोगद्वारनी वृत्तिथी लिख्या है.

१	१	१	१
१	१	१	१
१	१	१	१
१	१	१	१

प्रतररज्जुस्थापना

४	४	४	४
४	४	४	४
४	४	४	४
४	४	४	४

घनरज्जुस्थापना

१
१
१
१

सूचीरज्जुस्थापना

१

पङ्डुक

६४ पंडुकका एक 'घन-रज्जु' होता है. १६ पंडुकका एक 'प्रतर-रज्जु' होता है. ४ पंडुकका एक 'सूची रज्जु' होता है. निश्चे लोकस्वरूप तो अनियत प्रमाण है. सो सर्वज्ञ गम्य है, परंतु स्थूल दृष्टिके वास्ते सर्व प्रदेशांकी घाटवाध एकठी करके एह स्वरूप लोकका जानना लोकनालिकाबत्तीसीसे.

(१२०) अथ अधोलोकमे नाम आदि नरकका स्वरूप चिंतवे तेहना यंत्रम्

नाम नरकका	नरक ७	घमा १	वंशा २	शैला ३	अंजना ४	अरिष्टा ५	मघा ६	माघवती ७
गोत्र सार्थक	,, ,,	रत्नप्रभा	शर्कराप्रभा	वालुकाप्रभा	पंकप्रभा	धूमप्रभा	तमप्रभा	तमतमप्रभा
पृथ्वीपिंड	००० ०००	१,८०,०००	१,३२,०००	१,२८,०००	१,२०,०००	१,१८,०००	१,१६,०००	१,०८,०००
घनोदधि	००० ०००	२०,०००	———	———→	ए	व	म्	→
घनवात	००० ०००	असंख्य योजन	———	———→	ए	व	म्	→
तनुवात	००० ०००	,,	———	———→	ए	व	म्	→
आकाश	००० ०००	,,	———	———→	ए	व	म्	→
वलय	००० ०००	१२ योजन	१२ २/३	१३ १/३	१४ योजन	१४ २/३	१५ १/३	१६ योजन
घनोदधि वलय	००० ०००	६ ,,	६ १/३	६ २/३	७ ,,	७ १/३	७ २/३	८ योजन
घनवात-वलय	००० ०००	४॥ ,,	४॥। योजन	५ यो०	५। ,,	५॥ यो०	५॥। यो०	६ ,,
तनुवात-वलय	००० ०००	१॥ ,,	१ ७/१२	१ ८/१२	१॥। ,,	१ १०/१२	१ ११/१२	२ ,,
आकाश-वलय	००० ०००	अलोक	———	———→	ए	व	म्	→
प्रतर	४९	१३	११	९	७	५	३	१
शून्य पृथ्वी	००० ०००	१००० योजन	———	———→	ए	व	म्	→
प्रतर अंतर	००० ०००	११५८३ १/३ भागा	९,७००	१२,३७५	१६,१६६ २/३	२५,२५०	५२,५००	००० ०००
आवलि	००० ०००	८	८	८	८	८	८	४
नरकावास	८४,००,०००	३० लाख	२५ लाख	१५ लाख	१० लाख	३ लाख	९९,९९५	५
दिशा विदिश	०० ००	४९ ४८	३६ ३५	२५ २४	१६ १५	९ ८	४ ३	१ ०
प्रमाण	००० ०००	असंख्य संख्य	——— ———	———→ ———→	ए ए	व व	म् म्	→ →
उत्सेध	००० ०००	३,००० योजन	———	———→	ए	व	म्	→

अथ (१२१) दशभवनपतियंत्रम्

भुवनपतिनाम	असुरकुमार	नाग	सुवर्ण	विद्युत्	अग्नि	द्वीप	उदधि	दिक्	पवन	स्तनित
विमान	३४ लाख	४४ लाख	३८ लाख	४० लाख	४० लाख	४० लाख	४० लाख	४० लाख	५० लाख	४० लाख
	३० ,,	४० ,,	३४ ,,	३६ ,,	३६ ,,	३६ ,,	३६ ,,	३६ ,,	४६ ,,	३६ ,,
विमान-परिमाण जघन्य	जम्बूद्वीप	——	——	→	ए	व	म्	——	——	→
मध्यम	संख्य योजन	——	——	→	ए	व	म्	——	——	→
	असंख्य ,,	——	——	→	ए	व	म्	——	——	→
चिह्न	चूडामणि	फण	गरुड	वज्र	कलश	सिंह	अश्व	गज	मगर	वर्धमान
वर्ण	काला	पंडुर	कनक	अरुण	अरुण	अरुण	पंडुर	कनक	प्रियंगु	कनक
वस्त्र	राता	नीला	धवला	नीला	नीला	नीला	नीला	धवला	संध्यावर्ण	धवला
इन्द्र	चमर	धरण	वेणुदेव	हरिकंत	अग्निसिंह	पूरण	जलकांत	अमितगति	वेलंब	घोष
	बल	भूतानंद	वेणुदालि	हरिसिंह	अग्निमानव	विशिष्ट	जलप्रभ	अमितवाहन	प्रभंजन	महाघोष
सामानिक	६४,०००	६,०००	——	——	→	ए	व	म्	——	→
	६०,०००	६,०००	——	——	→	ए	व	म्	——	→
आत्मरक्षक	२५६०००	२४,०००	——	——	→	ए	व	म्	——	→
	२४००००	२४,०००	——	——	→	ए	व	म्	——	→
त्रायस्त्रिंश	३३	——	——	→	ए	व	म्	——	——	→
अणिका	७	——	——	→	ए	व	म्	——	——	→
लोकपाल	४	——	——	→	ए	व	म्	——	——	→
अग्रमहिषी	५	६	——	——	→	ए	व	म्	——	→
	५	६	——	——	→	ए	व	म्	——	→
परिषद्	३	——	——	→	ए	व	म्	——	——	→

अथ (१२२) व्यंतर २८ का यंत्र तिर्यग् लोके चिंतवे

व्यंतरनाम	पिशाच	भूत	यक्ष	राक्षस	किन्नर	किंपुर-(रुप)	महोरग	गान्धर्व
नगरसंख्या	असंख्य	———	———→	ए	व	म्	———	→
नगरपरिमाण	जंबूद्वीप	———	———→	ए	व	म्	———	→
मध्यम	विदेह	———	———→	ए	व	म्	———	→
जघन्य	भरतक्षेत्र	———	———→	ए	व	म्	———	→
चिह्न	कलंब	सुलस	वड वृक्ष	पडग	अशोक	चंपग	नाग	तुंबरु
वर्ण	श्याम	श्याम	श्याम	धवल	नील	धवल	श्याम	श्याम
इन्द्र	काल	सरूप	पूर्णभद्र	भीम	किन्नर	सत्पुरुष	अति-काय	गीतरति
	महाकाल	प्रतिरूप	मणिभद्र	महाभीम	किंपुरुष	महापुर-(रुप)	महा-काय	गीतयश
सामानिक	४०००	———	———→	ए	व	म्	———	———→
आत्मरक्षक	१६,०००	———	———→	ए	व	म्	———	———→
अनीक	७	———	———→	ए	व	म्	———	———→
अग्रमहिषी	४	———	———→	ए	व	म्	———	———→
परिषद्	३	———	———→	ए	व	म्	———	———→
व्यंतर लघु	अणपन्नी	पणपन्नी	इसिवाइ	भूयवाइ	कंदिय	महा-कंदिय	कुहुंड	पयगदेव
इन्द्र	सनिहिय १	धाइ ३	इसि ५	ईसरप ७	सुवत्स ९	हास्य ११	श्वेत १३	पयंग १५
	समाणि २	विधाइ ४	इसिपाल ६	महेप ८	सुविशाल १०	हास्य-रति १२	महा श्वेत १४	पयगो १६

(१२३) ज्योतिपचक्रस्वरूप चिंतवे यंत्रम्

ज्योतिपचक्र आयाधा	मेरुथी ११२१ योजन	अलोकथी ११११ योजन
अवधा मेरु पर्वत थकी	चद्र चद्रके ४४८२० योजन	सूर्य सूर्यके ४४८२० योजन
जंवूद्वीपप्रवेश	१८० योजन	१८० योजन
लवणप्रवेश	३३० योजन ५६।६१ भाग	३३० योजन ४८ भा. ६१
मंडलक्षेत्र	५१० योजन ५६।६१ भा	५१० योजन ४८ भा ६१
मडलसख्या	१५	१८४
पक्ति	२	२
मंडलातर	चंद्र ३५ योजन, ३० भा, चूर्णि ४ भाग	सूर्यके २ योजन
जवूद्वीपे चन्द्रसूर्यसङ्ख्या	२	२

(१२४)

ज्योतिपी		ज्योतिपचक्र	चद्र	सूर्य	ग्रह	नक्षत्र	तारक
समभूतलथी		७९० योजन	८८० योजन	८०० योजन	८८८ योजन	८८४ योजन	७९० योजन
निष्कम		१ रज्जु	५६।६१	४८।६१	१।२	१।८	१।८
उच्चत्व		११०	२८।६१	२४।६१	१।४	१।८	१।१६
अंतर	जघन्य		९९६४०	९९६४०	३	२	२६६ यो ५०० ध.
	उत्कृष्ट		१००६६०	१००६६०	"	"	१२२४२ यो. ४०० ध
गति		० ०	१ मद	२ शीघ्र	३ शीघ्र	४ शीघ्र	५ शीघ्र
ऋद्धि		० ०	५ महा	४ महा	३ महा	२ महा	१ अल्प
विमानवाहक		० ०	१६,०००	१६,०००	८,०००	४,०००	२,०००
अल्पबहुत्व		० ०	१ स्तोक	१ स्तोक	३ सख्येय	२ संख्येय	४ सख्येय

(१२५)

	योजन	धनुप	अगुल	यव	जूका	लीप
अंदरले माडलेकी परिधि	३,१५,०८९	२,७६८	४५॥	०	०	०
अदरले माडलेकी चक्षुस्पर्श	४७,२६३	३,२१५	२६	०	४	०
अभ्यतरलेकी चाल	५,२५१	३,९१२	७७	४	४	०
चक्षुस्पर्शका घटावना वधावना	८३	३,६०७	४१	७	२	१
मुहूर्तकी चाल घटावना वधावना	०	२,३५०	१०	२	७	३॥

अथ (१२२) व्यंतर २८ का यंत्र तिर्यग् लोके चिंतवे

व्यंतरनाम	पिशाच	भूत	यक्ष	राक्षस	किन्नर	किंपुरुष (रुप)	महोरग	गान्धर्व
नगरसंख्या	असंख्य	————	————→	ए	व	म्	————	—→
नगरपरिमाण	जंबूद्वीप	————	————→	ए	व	म्	————	—→
मध्यम	विदेह	————	————→	ए	व	म्	————	—→
जघन्य	भरतक्षेत्र	————	————→	ए	व	म्	————	—→
चिह्न	कलब	सुलस	वड वृक्ष	पडग	अशोक	चपग	नाग	तुंबरु
वर्ण	श्याम	श्याम	श्याम	धवल	नील	धवळ	श्याम	श्याम
इन्द्र	काल	सरूप	पूर्णभद्र	भीम	किन्नर	सत्पुरुष	अतिकाय	गीतरति
	महाकाल	प्रतिरूप	मणिभद्र	महाभीम	किंपुरुप	महापुरुष (रुप)	महाकाय	गीतयश
सामानिक	४०००	————	————→	ए	व	म्	————	——→
आत्मरक्षक	१६,०००	————	————→	ए	व	म्	————	——→
अनीक	७	————	————→	ए	व	म्	————	——→
अग्रमहिषी	४	————	————→	ए	व	म्	————	——→
परिषद्	३	————	————→	ए	व	म्	————	——→
व्यंतर लघु	अणपन्नी	पणपन्नी	इसिवाइ	भूयवाइ	कंदिय	महाकंदिय	कुहुंड	पयगदेव
इन्द्र	संनिहिय १	धाइ ३	इसि ५	ईसरप ७	सुवत्स ९	हास्य ११	श्वेत १३	पयग १५
	समाणि २	विधाइ ४	इसिपाल ६	महेप ८	सुविशाल १०	हास्यरति १२	महाश्वेत १४	पयगे १६

(१२३) ज्योतिषचक्रस्वरूप चिंतवे यंत्रम्

ज्योतिषचक्र आवाधा	मेरुथी ११२१ योजन	अलोकथी ११११ योजन
अवधा मेरु पर्वत थकी	चंद्र चद्रके ४४८२० योजन	सूर्य सूर्यके ४४८२० योजन
जंबूद्वीपप्रवेश	१८० योजन	१८० योजन
लवणप्रवेश	३३० योजन ५६।६१ भाग	३३० योजन ४८ भा ६१
मंडलक्षेत्र	५१० योजन ५६।६१ भा	५१० योजन ४८ भा ६१
मडलसख्या	१५	१८४
पक्ति	२	२
मंडलांतर	चंद्र ३५ योजन, ३० भा., चूर्णि ४ भाग	सूर्यके २ योजन
जबूद्वीपे चन्द्रसूर्यसङ्ख्या	२	२

(१२४)

ज्योतिषी		ज्योतिषचक्र	चद्र	सूर्य	ग्रह	नक्षत्र	तारक
समभूतलथी		७९० योजन	८८० योजन	८०० योजन	८८८ योजन	८८४ योजन	७९० योजन
विष्कभ		१ रज्जु	५६।६१	४८।६१	१।२	१।४	१।८
उच्चत्व		११०	२८।६१	२४।६१	१।४	१।८	१।१६
अंतर	जघन्य		९९६४०	९९६४०	३	२	२६६ यो ५०० ध
	उत्कृष्ट		१००६६०	१००६६०	,,	,,	१२२४२ यो ४०० ध
गति		० ०	१ मद	२ शीघ्र	३ शीघ्र	४ शीघ्र	५ शीघ्र
ऋद्धि		० ०	५ महा	४ महा	३ महा	२ महा	१ अल्प
विमानवाहक		० ०	१६,०००	१६,०००	८,०००	४,०००	२,०००
अल्पबहुत्व		० ०	१ स्तोक	१ स्तोक	३ सख्येय	२ सख्येय	४ सख्येय

(१२५)

	योजन	धनुष	अंगुल	यव	जूका	लीख
अदरले माडलेकी परिधि	३,१५,०८९	२,७६८	४५॥	०	०	०
अदरले माडलेकी चक्षुस्पर्श	४७,२६३	३,२१५	२६	०	४	०
अभ्यतरलेकी चाल	५,२५१	३,९१२	७७	४	४	०
चक्षुस्पर्शका-घटावना वधावना	८३	३,६०७	४१	७	२	१
मुहूर्तकी चाल घटावना वधावना	०	२,३५०	१०	२	७	३॥

अथ (१२२) व्यंतर २८ का यंत्र तिर्यग् लोके चिंतवे

व्यंतरनाम	पिशाच	भूत	यक्ष	राक्षस	किन्नर	किंपुर-(रुष)	महोरग	गान्धर्व
नगरसंख्या	असंख्य	———	———→	ए	व	म्	———	→
नगरपरिमाण	जंबूद्वीप	———	———→	ए	व	म्	———	→
मध्यम	विदेह	———	———→	ए		म्	———	→
जघन्य	भरतक्षेत्र	———	———→	ए		म्	———	→
चिह्न	कलंब	सुलस	वड वृक्ष	पडग	अशोक	चंपग	नाग	तुंबरु
वर्ण	श्याम	श्याम	श्याम	धवल	नील	धवल	श्याम	श्याम
इन्द्र	काल	सरूप	पूर्णभद्र	भीम	किन्नर	सत्पुरुष	अति काय	गीतरति
	महाकाल	प्रतिरूप	मणिभद्र	महाभीम	किंपुरुष	महापुर-(रुष)	महा-काय	गीतयश
सामानिक	४०००	———	———→	ए	व	म्	———	→
आत्मरक्षक	१६,०००	———	———→	ए	व	म्	———	→
अनीक	७	———	———→	ए	व	म्	———	→
अग्रमहिषी	४	———	———→	ए	व	म्	———	→
परिषद्	३	———	———→	ए	व	म्	———	→
व्यंतर लघु	अणपन्नी	पणपन्नी	इसिवाइ	भूयवाइ	कंदिय	महा-कंदिय	कुहुंड	पयगदेव
इन्द्र	संनिहिय १	धाइ ३	इसि ५	ईसरप ७	सुवत्स ९	हास्य ११	श्वेत १३	पयग १५
	समाणि २	विधाइ ४	इसिपाल ६	महेप ८	सुविशाल १०	हास्य-रति १२	महा श्वेत १४	पयगे १६

(१२३) ज्योतिपचक्रसरूप चिंतवे यंत्रम्

ज्योतिपचक्र आबाधा	मेरुथी ११२१ योजन	अलोकथी ११११ योजन
अथवा मेरु पर्वत थकी	चंद्र चंद्रके ४४८२० योजन	सूर्य सूर्यके ४४८२० योजन
जंबूद्वीपप्रवेश	१८० योजन	१८० योजन
लवणप्रवेश	३३० योजन ५६।६१ भाग	३३० योजन ४८ भा ६१
मंडलक्षेत्र	५१० योजन ५६।६१ भा	५१० योजन ४८ भा ६१
मंडलसंख्या	१५	१८४
पंक्ति	२	२
मंडलांतर	चंद्र ३५ योजन, ३० भा, चूर्णि ४ भाग	सूर्यके २ योजन
जंबूद्वीपे चन्द्रसूर्यसंख्या	२	२

(१२४)

ज्योतिषी	ज्योतिपचक्र	चंद्र	सूर्य	ग्रह	नक्षत्र	तारक
समभूतलथी	७९० योजन	८८० योजन	८०० योजन	८८८ योजन	८८४ योजन	७९० योजन
विष्कंभ	१ रज्जु	५६।६१	४८।६१	१।२	१।२	१।८
उच्चत्व	११०	२८।६१	२४।६१	१।४	१।८	१।१६
अंतर	जघन्य	९९६४०	९९६४०	३	२	२६६ यो ५०० ध
	उत्कृष्ट	१००६६०	१००६६०	,,	,,	१२२४२ यो ४०० ध
गति	० ०	१ मंद	२ शीघ्र	३ शीघ्र	४ शीघ्र	५ शीघ्र
ऋद्धि	० ०	५ महा	४ महा	३ महा	२ महा	१ अल्प
विमानवाहक	० ०	१६,०००	१६,०००	८,०००	४,०००	२,०००
अल्पबहुत्व	० ०	१ स्तोक	१ स्तोक	३ संख्येय	२ संख्येय	४ संख्येय

(१२५)

	योजन	धनुष	अंगुल	यव	जूका	लीख
अंदरले मांडलेकी परिधि	३,१५,०८९	२,७६८	४५॥	०	०	०
अंदरले मांडलेकी चक्षुस्पर्श	४७,२६३	३,२१५	२६	०	४	०
अभ्यंतरलेकी चाल	५,२५१	३,९१२	७७	४	४	०
चक्षुस्पर्शका घटावना वधावना	८३	३,६०७	४१	७	२	१
मुहूर्तकी चाल घटावना वधावना	०	२,३५०	१०	२	७	३॥

	योजन	धनुष	अंगुल	यव	जूका	लीख
परिधिका घटावना वधावना	१७	५,००६	४६	०	०	०
बाहिरले मांडलेकी परिधि	३,१८,३१४	६,९५४	१५॥	०	०	०
बाहिरले मांडलेकी चाल मुहूर्तमे	५,३०५	१,९८२	५४	५	॥	०
बाहिरले मांडलेकी चक्षुस्पर्श	३१,८३१	३,८९५	३९	६	३	०

(१२६)

संख्या	जंबूद्वीप	लवण	धातकी	कालोदधि	पुष्कर	द्वीपो-दधि	श्रेणयः	चंद्र सूर्य
चंद्र, सूर्य	२	४	१२	४२	७२	जंबू	१	२
नक्षत्राणि	५६	११२	३३६	१,१७६	२,०१६	लवण	२	४
ग्रहा	१७६	३५२	१,०५६	३,६९६	६,३३६	धातकी	६	१२
तारका	१,३३,९५०	२,६७,९००	८,०३,७००	२,८२,९५०	४८,२२,२७०	कालो-दधि	२१	४२
कोडाकोडि संज्ञा(ख्या) सब जगे जाननी ताराकी						पुष्कर	३६	७२

कर्कसंक्रान्ति ने प्रथम दिन सर्व अभ्यंतर मंडल सूर्यना तापक्षेत्र स्थापना सर्वत्र यंत्र. ते दिन मान १८ मुहूर्त, रात्रिमान १२ मुहूर्त, मेरु थकी ४५,००० योजन जगती है अने लवण समुद्र माहि ३३,३३३ योजन अने एक योजनका तीजा भाग अधिक एतले बेहु मिलीने ७८,३३३ योजन एक योजनका तीजा भाग अधिक इतना तापक्षेत्र है लांबा अने अंधकार-क्षेत्रनी अभ्यंतरकी बाह मेरु पास ६३,२४५ योजन, एक योजनका दसीया षड भाग ६ जानने. बाहिरली बाह ६३,२४५ योजन, एक योजनना दसीया ६ भागः तापक्षेत्रनी अंतर बाह ९४८६ योजन, एक योजनना दसीया ९ भागः बाहिरली बाह ९४,०६८ योजन, एक योजनका दसीया ९ भाग है; इस अभ्यंतरले मांडले थकी बाहिर जाता हूया ताप क्षेत्र घटे, अंधकार वधे. शनि ९००, मंगल ८९७, बृहस्पति ८९४, शुक्र ८९१, बुध ८८८–ग्रह उच्चत.

([1]१२७)

०	महाकलश	लघुकलश	०
संख्या	४	७,८८४	कलश
वलयसंख्या	एक वलय	९ वलय	वलय
विष्कंभ	१०,०००	१००	मुख
"	१ लाख योजन	१,०००	मध्य
"	१०,०००	१००	तले
ठीकरी	१,०००	१०	जाडी
त्रिभाग	जल	जल	उपरि
"	जल १, वायु २	जल १, वायु २	मध्य
"	वायु	वायु	तले

[1] आ यन्त्रनु स्थान १२८ मा यन्त्रनी बराबर उपर छे, परंतु १८९ मा पृष्ठ गत चित्रने अहीं स्थलसंकोचने लीधे स्थान नहि आपी शकाबाथी आनो अहीं निर्देश करायो छे

भूतले मेरुपरिधि २१,६२३, भूतले मेरुविष्कंभ १०,०००, मेरु उपरि विष्कंभ १०००, मेरु उपरि परिधि ३१६२, मेरु मूलविष्कंभ १००९० $\frac{१०}{११}$, मेरु मूलपरिधि ३१९१० $\frac{३}{११}$. एक सहस्र योजनप्रमाण मेरुका प्रथमकाड जानना, ६३ सहस्र योजनका द्वितीय काड, ३६ सहस्र योजनप्रमाण तीजा काड भद्रशालथी ५०० योजन उंचा नंदन वन है. नन्दन वनस्य परिधि ३१, ४७९, नन्दनवन-मध्ये परिधि (?), नन्दनवनस्य विष्कंभ ९९५४ $\frac{६}{११}$, नन्दनवनमध्ये विष्कंभ ८९५४ $\frac{६}{११}$, सौमनसवनस्य परिधि १३५११ $\frac{६}{११}$, सौमनसवनमध्ये परिधि १०३४९ $\frac{३}{११}$, सौमनसवनस्य विष्कभ ४२७२ $\frac{८}{११}$, सौमनसवनमध्ये विष्कभ ३२७२ $\frac{८}{११}$, चूलकके मूलथी ४९४ योजन वलयाकारे विष्कभ पडग वन-(का) है जिनप्रसाद अर्ध कोश पृथुत्व, कोश लावा, १४४० धनुप उच्चत्व पडग वनमे चार शिला ५०० योजनकी लावी, २०० योजन पिहुली ४ योजनकी उची है. अर्धचन्द्राकारे श्वेत सुवर्ण मयी शिलाना मानथी आठ सहस्रमे भागे सिंहासनका प्रमाण जानना पूर्व पश्चिमकी शिला उपरि दो दो सिंहासन है अने दक्षिण, उत्तरकी शिला उपरि एकेक सिंहासन है इन शिला उपरि भगवानका जन्ममहोत्सव इन्द्र करते है
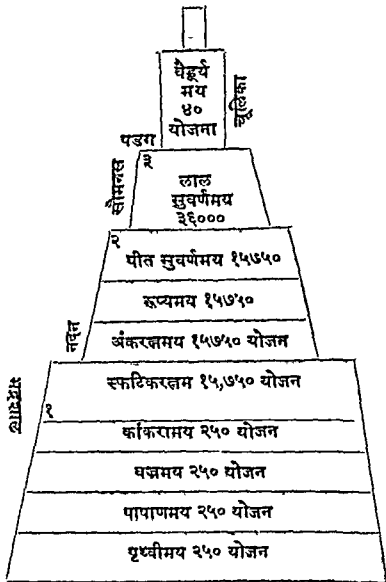
(१२८) हैमवंत १ शिखरीकी दाढा चार, चार, तिस उपरि सात सात अंतरद्वीप.

०	१	२	३	४	५	६	७
जगती परस्पर अंतर	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००
विष्कभ	"	"	"	"	"	"	"
परिधि	९४९ यो०	१२५८ यो०	१५८१ यो०	१८९७ यो०	२२१३ यो०	२५२९ यो०	२८४५ यो०
जल उपरि	२॥ २ ९५	२॥ ९० ९५	३ ६५ ९५	४ ४० ९५	५ १५ ९५	५ ८५ ९५	६ अभ्य- ६० तर ९५
योजन २	२ योजन	→	प	च	मू	——	→बाह्य

(१२९)

०	वेलधर	अनुवेलंधर	०
संख्या	४	४	०
दिग्	दिग् ४	दिग् ४	०
समुद्रमे जाय	४२,०००	४२,०००	०
विष्कभ	४२४	४२४	शिखर
०	१,०२२	१,०२२	०
०	१,७२१	१,७२१	०
दिसें	९६,९४,०९५	९६,९४,०९५	ज० दिसा
	९६,९७,७९५	९६ ९७,७,९५	,, ,,

नन्दीश्वरद्वीपे यतः अञ्जनगिरिवृत्तसामः (?) वापीमध्ये दधिमुखाः घृत्ताः श्वेताः, वाप्यन्तरे द्वौ द्वौ रतिकरौ अस्तो (स्तः ?) एवं अष्टौ रतिकराः, चत्वारो दधिमुखाः, एकोऽञ्जनगिरिः, एवं एकाम्यां(कस्यां?) दिशि त्रयोदश पर्वताः स्युः, चतुर्दिसौ(क्षु) च द्विपञ्चाशदिति विदिक्षु च इन्द्राणीनां राजधानी (?) सन्ति नन्दीश्वरे. अग्रे सर्वाणां स्थाना(नि) चित्रात् ज्ञेयं (ज्ञेयानि).

(१३०) नन्दीश्वरद्वीपयंत्रम् स्थानांगचतुर्थस्थानात्

१	नामानि	आयाम	विष्कंभ	परिधि	उचा	अध	संस्थान
२	अंजनगिरि	०	१०,००० मू. १०,००० उपर	यथायोग्य	८४ सहस्र योजन	१००० यो.	गोपुच्छ
३	वापी	एक लाख योजन	५०,००० योजन	०	०	,, ,,	आयाम
४	दधिमुख	०	१०,००० ,,	यथायोग्य	६४ सहस्र योजन		पल्लक
५	रतिकर	०	,, ,,	,,	१००० योजन	२५० योजन	
६	राजधानी	०	जंबूद्वीप	जंबूद्वीप	०	०	चंद्र

(१३१) अथ ऊर्ध्वलोके स्वरूपचिंतनयंत्र. प्रथम बारदेवलोके देवता

देवलोक-नामानि	सौधर्म १	ईशान २	सनत्कु-मार ३	माहेन्द्र ४	ब्रह्म ५	लान्तिक ६	शुक्र ७	सहस्रार ८	आनत ९ प्राणत १०	आरण ११ अच्युत १२
संस्थान	अर्ध चंद्र	अर्ध चंद्र	अर्ध चंद्र	अर्ध चंद्र	पूर्ण चंद्र	पूर्ण चन्द्र	पूर्ण चंद्र	पूर्ण चंद्र	अर्ध चंद्र	अर्ध चंद्र
आधार	घनोदधि	घनोदधि	घनवात	घनवात	घनवात	२	२	२	आकाश	आकाश.

विमान-सङ्ख्या	३२ लाख	२८ लाख	१२ लाख	८ लाख	४ लाख	५० सहस्र	४० सहस्र	६ सहस्र	४००	३००
पृथ्वी-पिंड	२७००	२७००	२६००	२६००	२५००	२५००	२४००	२४००	२३००	२३००
विमान-उच्चत्व	५०० यो	५०० यो	६०० यो	६०० यो	७०० यो	७०० यो	८०० यो	८०० यो	९०० यो	९०० यो
विष्कंभ	सख्येय	———	———	——→	प	व	म्	———	———	——→
विमान	असंख्य	———	———	——→	प	व	म्	———	———	——→
विमान-वर्ण	५	५	४	४	३	३	२	२	१	१
प्रतर ६२	१३		१२		६	५	४	४	४	४
आवलि	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
चिह्न	मृग	महिष	वराह	सिंह	व्याघ्र	शार्दूल	हय	गज	भुजग शशी	वृषभ विडाल
शरीर-वर्ण	कनक	कनक	पद्म	पद्म	पद्म	श्वेत	श्वेत	श्वेत	श्वेत	श्वेत
यान विमान	पालक	पुष्कर								
इन्द्र	सुधर्म	ईशान	सनत्कुमार	माहेन्द्र	ब्रह्म	शुक्र	लान्तिक	सहस्रार	प्राणत	अच्युत
सामानिक	८४,०००	८०,०००	७२,०००	७०,०००	६०,०००	५०,०००	४०,०००	३०,०००	२०,०००	१०,०००
आत्म रक्षक	४ गुणा	———	———	——→	प	व	म्	———	———	——→
त्राय स्त्रिंश	३३	———	———	——→	प	व	म्	———	———	——→
लोक-पाल	४	———	———	——→	प	व	म्	———	———	——→
अनीक	७	———	———	——→	प	व	म्	———	———	——→
देवी अग्र महिषी	८	८	०	०	०	०	०	०	०	०
परिषद्	३	———	———	——→	प	व	म्	———	———	——→
कंदर्प किल्बिषिक आभियोगिक	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१

सौधर्म देवलोक अपरिगृहीत देवीना विमान ६ लाख, ते किणि किणि देवलोकि भोग आवे ते (१३२) यंत्रम्

सनत्कुमार	पल्योपम १०	स्पर्शभोगी
ब्रह्म	,, २०	रूप देखी भोगवे
महाशुक	,, ३०	शब्द साभळी भोगवे
आनत	,, ४०	मन करी विकार करी
आरण	,, ५०	मनइं चिंतवी

(१३३) ईशान देवलोके अपरिगृहीत देवीना विमान ४, ते किस किसके ?

माहेन्द्र	पल्योपम १५	स्पर्शभोगी
लान्तक	,, २५	रूप देखी
सहस्रार	,, ३५	शब्दभोगी
प्राणत	,, ४५	मनि विकार करी
अच्युत	,, ५५	मन चिंतवी भोगवे

(१३४) अथ ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तरविमानयंत्रम्

	हेठत्रिक	मध्यत्रिक	उपरत्रिक	४ अनुत्तर	सर्वार्थसिद्ध
संस्थान	पूर्ण चंद्र	पूर्ण चद्र	पूर्ण चंद्र	अंस	वृत्त
विमान-सख्या	१११	१०७	१००	४	१
पृथ्वीपिंड	२,२००	२,२००	२,२००	२,१००	२,१००
विमान-उच्चत्व	१,०००	१,०००	१,०००	१,१००	१,१००
विष्कंभ	संख्य असंख्य	संख्य असंख्य	संख्य असंख्य	असंख्य	संख्य
प्रतर	३	३	३	१	०
पदवी	अहमिन्द्र	अहमिन्द्र	अहमिन्द्र	अहमिन्द्र	अहमिन्द्र

(१) उडु प्रतर, (२) चंद्र प्र०, (३) रजत प्र०, (४) वाल्गू प्र०, (५) वीर्य प्र०, (६) वारुण प्र०, (७) आनंद प्र०, (८) ब्रह्म प्र०, (९) कांचन प्र०, (१०) रुचिर प्र०, (११) चंद्र प्र०, (१२) अरुण प्र०, (१३) दिशि प्र०, (१४) वैडूर्य प्र०, (१५) रुचक प्र०, (१६) रुचक (?) प्र०, (१७) अंक प्र०, (१८) मेघ प्र०, (१९) स्फटिक प्र०, (२०) तपनीय प्र०, (२१) अर्घ प्र०, (२२) हरि प्र०, (२३) नलिन प्र०, (२४) लोहिता प्र०, (२५) वज्र प्र०, (२६) अंजन प्र०, (२७) (?), (२८) मजाप्प प्र०, (२९) हव प्र०, (३०) सौम्य प्र०, (३१) लांगल प्र,० प्र०, (३२) बलभद्र प्र०, (३३) चक्र प्र०, (३४) गदा प्र०, (३५) स्वस्तिक प्र०, (३६) न्यर्वत (?) प्र०, (३७) आरंभ प्र०, (३८) गृद्धि प्र०, (३९) केतु प्र०, (४०) गरुड प्र०, (४१) ब्रह्मित
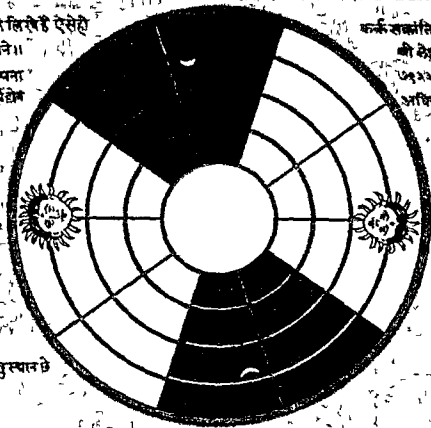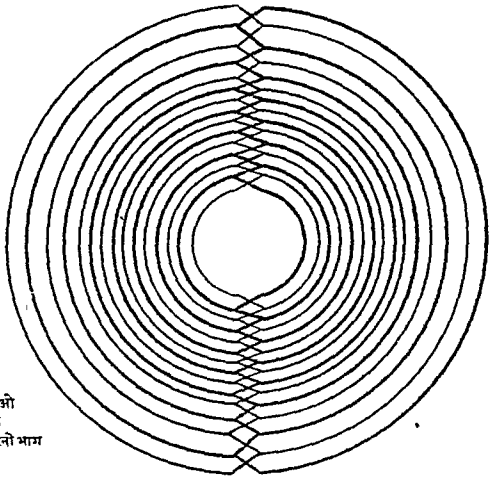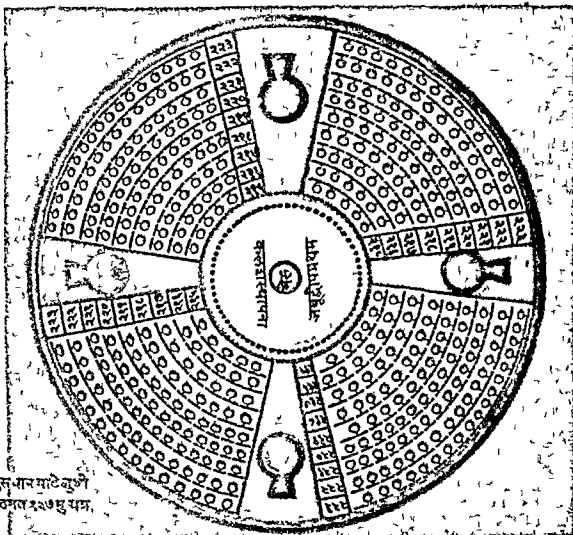
आना अनुसंधान माटे जुओ
१८८ मा पृष्ठमां २२७ मुं यंत्र.
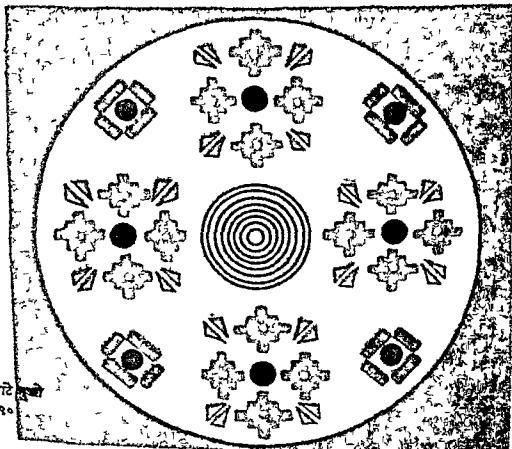
अनुसंधान माटे जुओ
पृष्ठ-१९०

प्र०, (४२) ब्रह्म प्र०, (४३) ब्रह्मोत्तर प्र०, (४४) लांतक प्र०, (४५) महाशुक्र प्र०, (४६) सहस्रार प्र०, (४७) आनत प्र०, (४८) प्राणत प्र०, (४९) पुष्प प्र०, (५०) अलका प्र०, (५१) आरण प्र०, (५२) अरुण प्र०, (५३) सुदर्शन प्र०, (५४) सुप्रबद्ध प्र०, (५५) मनोहर प्र०, (५६) सर्वतो प्र०, (५७) विशाल प्र०, (५८) सुमनस प्र०, (५९) सौमनस प्र०, (६०) प्रीतिकर प्र०, (६१) आदित्य प्र०, (६२) सर्वतोभद्र प्र० इति ६२ प्रतरनामानि.

अथ ध्यानसामासी (?) सवैइया ३१ सा—
पूज जो खमाश्रमण जिनभद्र गणि विभु दूषण अंधारे वीच दीप जो कहायो है
सत सात अधिक जो गाथानद्धरूप करी ध्यानको सरूप भरी सतक सुहायो है
टीका नीका सुपजीका भेदने प्रभेद धीका तुच्छ मति भये नीका पठन करायो है
लेसरूप भान धरी छंद वध रूप करी आतम आनंद भरी वा लण्या लगायो है ॥ १ ॥
इति श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणविरचितध्यानशतकात्.

(१३५) असज्झाइ स्थानांग, निसी[ह]थ, प्रवचनसारोद्धार (द्वा. २६८) थकी

१	उल्कापात तारा छूटे उजाला हुइ रेषा पडे आकाशमे	क्षेत्र जिस मंडळमे	निवर्त्यां पीछे १ प्रहर सूत्र न पढे
२	कणगते कहीये जिहां रेषा हुइ उजाला नही	,, ,, ,,	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
३	दिग्दाह दसो दिसा अग्निवत् राती होइ	,, ,, ,,	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
४	आकाशे गधर्वनगर देवताना कीधा दीसे	,, ,, ,,	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
५	आकाशथी सूक्ष्म रज पडे	,, ,, ,,	जा लग पडे ता लगे
६	मांसरुधिरवृष्टि	,, ,, ,,	१ अहोरात्र निवर्त्यां पीछे
७	केस १ पाषाणवृष्टि	,, ,, ,,	निवर्त्यां पछे सूझे
८	अकाल गर्जे	,, ,, ,,	२ पहर
९	,, वीजळी	,, ,, ,,	१ ,,
१०	आसो सुदि ५ना दो पहरथी लेकर कार्तिक वदि १	सब जगे	११ दिन असज्झाइ
११	आषाढ चोमासी पडिकमणाथी श्रावण वदि	,, ,,	२, २॥ दिन
१२	एव कार्तिक चोमासी	,, ,,	२, २॥ दिन असज्झाइ
१३	एव चैत्र सुदि ५ थी वैशाख वदि पडवा लगे	,, ,,	११ ,, ,,
१४	राजाना युद्ध	जिस मंडले	निवर्त्यां पछे सूझे
१५	म्लेच्छने भये	,, ,,	,, ,, ,,

१६	उपाश्रय ढूकडा स्त्री पुरुष झूझे मल्लयुद्धे	उपाश्रय ढूकडा	निवर्त्यां पछे सूझे
१७	होली पर्वे रज उडे	जिस जगे	,, ,, ,,
१८	निर्घात वादले अथवा अणवादले शब्द कडकड होवे	,, मडले	१ प्रहर
१९	जूव० शुक्ल पक्षनी पडिवासे ३ दिन	सब जगे	१ प्रहर रात्रि
२०	जक्खालिए आकोशे अग्नियक्षप्रभावे	जिस मडले	१ प्रहर
२१	काबी धौली धूयर गर्भमासे	,, जगे	जा लग पडे ता लग सर्व क्रिया न करे
२२	पचेन्द्रिय तिर्यचना हाड, मास, लोही, चाम	६० हाथ दूर नही	३ प्रहर
२३	माजारी मुसा आदि मारे उपाश्रये तथा ले जावे	उपाश्रय अभ्यतर	१ अहोरात्रि
२४	मनुष्याना हाड, मांस, लोही, चाम	१०० हाथ उरे	,, ,,
२५	स्त्रीधर्मनी	उपाश्रयमे	३ दिन
२६	स्त्रीजन्मनी		८ ,,
२७	पुरुषजन्मनी		७ ,,
२८	हाड पुरुषथी अलग कीया	१००० हाथ माहे	१२ वर्ष लगे
२९	मलमूत्र	जा लग दीपे गध आवे	तब लगे
३०	मसाणना समीपे	१००० हाथ चौफेरे	सदा
३१	राजाके पडणे	जहां ताइ आज्ञा	नवा राजा न बैठे
३२	गाममे असमजस प्रवर्त न भाजे तो	जिस मडले	८ प्रहर
३३	सात घरमे कोइ प्रसिद्ध पुरुष मरे	,, गामे	१ अहोरात्रि
३४	तथा सामान्य पुरुष सात घरातरे मरे	,, ,,	कलेवर काढ्या पीछे सूझे
३५	इडा पू(फू)टे गाय वियाइ जर पडे	,, जगे	१ प्रहर
३६	भूमी कपे	,, ,,	८ ,,
३७	बुदबुदा रहित तथा सहित वर्षे	,, ,,	अहोरात्रि उपरात असज्झाइ
३८	नान्ही फुवारे निरतर वर्षे	,, मडले	७ दिन ,, ,,
३९	पर्क्षानी रात्रि	सब जगे	४ प्रहर असज्झाइ
४०	प्रभात १, मध्याह्न २, अस्त ३, अर्ध रात्रि ४	,, ,,	२ घडी
४१	आसो १ कार्तिक २, चैत्र ३, आषाढ ४ पूर्णमासी	,, ,,	१ अहोरात्रि

४२	कार्तिक १ मागसर २ वैशाख ३, श्रावण ४ वदी पडिवा	,, ,,	८ प्रहर
४३	चंद्रग्रहणे	,, ,,	,, ,, १२ ,,
४४	सूर्यग्रहणे	,, ,,	१६ ,, १२ ,, ४ ,,

चंद्रग्रहणे ऊगतो ग्रस्यो ग्रस्यो ज आथम्यो तदा ४ प्र हर दिन रात्री १ अहोरात्र आगे, एवं १२; रात्रिने छेहडे ग्रस्या तदा ८ पहर आगले, एवं ८ वीचमे मध्यम; तथा सूर्यो ऊगता ग्रस्यो ग्रस्यो ज आथम्यो तो ४ प्रहर दिनना, ४ रात्रिरा अने एक अहोरात्रि आगे, एवं १६; आथमतो ग्रहे १२ प्रहर, दिने ग्रह्यो दिने छुटा तो रात्रिना ४ प्रहर, एवं ४.

इति 'निर्जरा' तत्त्वसंपूर्णम् ॥
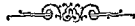
अथ अग्रे 'बन्ध' तत्त्व लिख्यते. प्रथम सर्वबंध देशबंधनो स्वरूप लिखीये है ते यंत्रात् ज्ञेयम्.

(१३६) औदारिक शरीरना सर्वबंध, देशबंधनी स्थिति

१	सर्वबन्ध स्थिति	देशबन्धस्थिति
समुच्चय औदारिक शरीरना प्रयोगबंधनी स्थिति	१ समय	जघन्य १ समय, उत्कृष्ट एक समय ऊणा तीन पल्योपम
एकेन्द्रिय औदारिक	,, ,,	ज० १ समय, उ० एक समय ऊणा २२,००० वर्ष
पृथ्वीना ,,	,, ,,	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव, उ० १ समय ऊणा २२,००० वर्ष
अप्, तेजस्काय, वनस्पति, बेइन्द्री, तेइन्द्री, चौरिन्द्री औदारिक	,, ,,	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव, उ० जिसकी जितनी स्थिति है उत्कृष्टी सो १ समय ऊणी कहणी
वायु औदारिक शरीर प्रयोग बंध	,, ,,	ज० १ समय, उ० १ समय ऊणा ३,००० वर्ष ज्ञेयम्
तिर्यंच पचेंद्री मनुष्य औदारिक शरीर	,, ,,	ज० १ समय, उ० ३ समय ऊणे ३ पल्योपम

एह औदारिकना देशबंध, सर्वबंधनी स्थिति.

(१३७) औदारिक शरीरके सर्वबंध, देशबंधका अंतरा

२	सर्वबंधका अंतरा	देशबंधका अंतरा
समुच्चय औदारिक	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव १, उ० ३३ सागर पूर्व कोड १समय अधिक	ज० १ समय, उ० ३ समय अधिक ३३ सागर
समुच्चय एकेन्द्रिय औदारिक	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव १, उ० १ समय अधिक २२, ००० वर्ष	ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त १
पृथ्वीके औदारिकका	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव १, उ० १ समय अधिक २२, ००० वर्ष	ज० १ समय, उ० ३ समय
अप्, तेउ, वणस्सइ, बेइद्री, तेइद्री, चौरिंद्री	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव १, उ० १ समय अधिक जिसकी जितनी स्थिति	ज० १ समय, उ० ३ समय
वायु औदारिक	ज० २ समय ऊणा क्षुल्लक भव, उ० समय अधिक ३,००० वर्ष	ज० १ समय, उ० अतर्मुहूर्त
पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव, उ० पूर्व कोड १ समय अधिक	ज० १ समय, उ० १ अतर्मुहूर्त

जीव एकेन्द्रियपणा छोडी नोएकेन्द्रिय हुया फेर एकेन्द्रिय होय तो सर्वबंध, देशबंधना कितना अंतर ए (१३८) यंत्रम्

३	सर्वबन्धान्तरम्	देशबन्धान्तरम्
एकेन्द्रिय नोएकेन्द्रिय फेर एकेन्द्रिय हुया	ज० ३ समय ऊणा २ क्षुल्लक भव, उ० २,००० सागर संख्याते वर्ष अधिक	ज० १ समय अधिक १ क्षुल्लक भव, उ० २,००० सागर संख्याते वर्ष अधिक
पृथ्वी, अप्, तेउ, वाउ, बेइंद्री, तेइंद्री, चौरिंद्री, तिर्यंच पचेंद्री, मनुष्य	ज० ३ समय ऊणा २ क्षुल्लक भव, उ० वनस्पतिकाल असख्य पुद्गलपरावर्त	ज० १ समय अधिक १ क्षुल्लक भव, उ० वनस्पतिकाल असख्य पुद्गलपरावर्त
वनस्पति	ज० ३ समय ऊणा २ क्षुल्लक भव, उ० असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी	ज० १ समय अधिक १ क्षुल्लक भव १, उ० असख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणी

(१३९) औदारिक शरीरके सर्वबंध, देशबंध, अबंधककी अल्पबहुत्व

देशबंध	सर्वबंध	अबंधक
असख्य गुणा ३	सर्वसे स्तोक १	विशेषाधिक २

ए औदारिकका यंत्र चौथा इति औदारिक.

(१४०) वैक्रिय शरीरके सर्वबंध, देशबंधनी स्थिति

१	सर्वबंधनी स्थिति	देशबंधनी स्थिति
समुच्चय वैक्रिय	ज० १ समय, उ० २ समय	ज० १ समय, उ० १ समय ऊणा ३३ सागर
वायु वैक्रिय	ज० १ समय	ज० १ समय, उ० १ अतर्मुहूर्त
रत्नप्रभा वैक्रिय	,, ,, ,,	ज० ३ समय ऊणा १०, ००० वर्ष, उ० १ समय ऊणा १ सागर
शेष ६ नरक, भवनपति १०, व्यतर, जोतिषी, वैमानिक	,, ,, ,,	ज० ३ समय ऊणी जेहनी जितनी जघन्य स्थिति कहनी, उ० उत्कृष्टी स्थितिमे १ समय ऊणी कहनी
तिर्यच पचेन्द्रिय, मनुष्य	,, ,, ,,	ज० समय, उ० १ अतर्मुहूर्त

(१४१) वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धान्तरम्

२	सर्वबन्धान्तरम्	देशबन्धान्तरम्
ओघवैक्रिय	ज० १ समय, उ० वनस्पतिकाल	ज० १ समय, उ० वनस्पतिकाल
वायु वेक्रिय	ज० अतर्मुहूर्त, उ० पल्योपमनो असख्यातमो भाग	ज० अतर्मुहूर्त, उ० पल्योपमनो असख्यातमो भाग
पचेन्द्रिय तिर्यच, मनुष्य	ज० अतर्मुहूर्त, उ० पृथक् पूर्व कोड	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० पृथक् पूर्व कोड

(१४२) जीव हे भगव(न्) वायुकाय हुइने नोवायुकाय हुया फेर वायुकाय हुइ तो अतरयत्रम्

३	सर्वबन्धान्तर	देशबन्धान्तर
वायु, पचेन्द्रिय तिर्यच, मनुष्य	ज० अतर्मुहूर्त, उ० वनस्पतिकाल	ज० अतर्मुहूर्त, उ० वनस्पति-काल

वायु, मनुष्य, तिर्यच पचेन्द्रिय वैक्रिययत्रम् (१४३)

रत्नप्रभा पुनरपि रत्नप्रभा	ज० अंतर्मुहूर्त अधिक १०,००० वर्ष, उ० वनस्पतिकाल	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० वनस्पतिकाल
शेष ६ नरक, भवनपति आदि यावत् सहस्रार	ज० अतर्मुहूर्त अधिक जिसकी जितनी जघन्य स्थिति, उ० वनस्पतिकाल	ज० अतर्मुहूर्त, उ० वनस्पतिकाल
आनतसे ग्रैवेयक पर्यंत	ज० पृथक् वर्ष अधिक जेहनी जितनी जघन्य स्थिति, उ० वनस्पतिकाल	ज० पृथक् वर्ष, उ० वनस्पतिकाल
४ अनुत्तर वैमानिक	ज० पृथक् वर्ष अधिक ३१ सागर, उ० सख्याते सागर	ज० पृथक् वर्ष अधिक, उ० सख्याते सागर

(१४४) वैक्रियना सर्वबंधादि संबंधी अल्पबहुत्व

अल्पबहुत्व	देशबंध	सर्वबंध	अबंधक
०	असंख्यगुणा २	१ स्तोक	अनंतगुणा ३

इति वैक्रिययंत्रचतुष्टयम्.

(१४५) आहारक शरीरना प्रयोगबंधनी स्थिति

१	सर्वबन्धस्थिति	देशबन्धस्थिति
आहारक मनुष्य	ज० १ समय	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० अंतर्मुहूर्त

(१४६) अंतर

२	सर्वबन्धान्तर	देशबन्धान्तर
आहारक अंतर	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० देश ऊन अर्ध पुद्गलपरावर्त	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० देश ऊन अर्ध पुद्गलपरावर्त

(१४७) अल्पबहुत्व सर्व० देश० अबन्ध

आहारककी अल्पबहुत्व	देशबन्ध	सर्वबन्ध	अबन्धक
	संख्यात गुणे २	सर्व स्तोक १	अनंत गुणे ३

इति आहारकयंत्र तीन.

(१४८) (तैजस शरीर)

१	देशबन्धस्थिति	
तैजस शरीर	अनादि अपर्यवसित, अनादिसपर्यवसित	
२	देशबन्धान्तर	
तैजस	दोनाका अंतर नही	
३	देशबन्ध	अबन्धक
तैजस शरीर	अनंत गुणा २	सर्व स्तोक १
अल्पबहुत्व	०	

(१४९) (कार्मण शरीर)

१	देशबन्धस्थिति	
कार्मणशरीरस्थिति	अनादि अपर्यवसित, अनादि सपर्यवसित	
२	देशबन्धान्तर	
कार्मण	दोनाका अंतर नही	
३	देशबन्ध	अबन्धक
कर्म ७ अल्पबहुत्व	अनंत गुणा २	सर्व स्तोक १
आयु अल्पबहुत्व	१ स्तोक	संख्यात २

(१५०)-आपसमे नियम भजनेका यन्त्र

१	औदारिका २	वैक्रिय २	आहारक २	तैजस १	कार्मण १
ओदारिक सर्व देश ३	०	नथी	नथी	भजना	भजना
वैक्रिय सर्व १, देश २	नथी	०	„	„	„
आहारक सर्व १, देश २	„	नथी	०	„	„
तैजस देशबन्ध १	नियमा	नियमा	नियमा	०	„
कार्मण देशबन्ध १	„	„	„	नियमा	०

(१५१) अल्पबहुत्वयन्त्रम्

अल्पबहुत्व	देशबन्ध	सर्वबन्ध	अबन्धक
ओदारिक	असख्य ८	अनत ६	विशे० ७
वैक्रिय	„ ४	असख्य ३	„ १०
आहारक	सख्यात २	स्तोक १	„ ११
तैजस	विशे० ९	०	अनंत ५
कार्मण	तुल्य „	०	तुल्य „

तेरह बोलकी अल्पबहुत्व सपूर्ण

(१५२) आपआपनी अल्पबहुत्व

औदारिक	१ स्तोक	३ असख्य	२ विशे०
वैक्रिय	„ „	२ „	३ अनत
आहारक	„ „	२ सख्येय	„ असंख्य
तैजस	०	„ अनत	१ स्तोक
कार्मण	०	„ „	„ „
आयुकर्म	०	१ स्तोक	२ सख्येय

इति श्रीभगवत्यां सर्वबन्ध देशबन्ध अधिकार शते ८, उ० ९ और विशेष स्वरूप टीकासे जानना. किस वास्ते ? थोडे घणे है टीकामे स्वरूप कथन कीया है.

"जीवा १ य लेस्म २ पक्खी ३ दिट्ठी ४ अन्नाण ५ नाण ६ सन्नाओ ७ ।
वेद ८ कसाय ९ उवओग १० जोग ११ एगारस जीवट्ठाणा ॥ १ ॥"

गाथा है भगवती श० २६ (उ० १).

१ छाया—जीवाश्च लेश्या पक्षी दृष्टिरज्ञानज्ञानसञ्ज्ञा ।
वेद कषाय उपयोगो योग एकादश जीवस्थानानि ॥

बंधी बंधइ बंधिस्सइ १, बंधी बंधइ न बंधिस्सइ २, बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ३, बंधी न बंधइ न बधिस्सइ ४, ए च्यार भांगा जान लेना.

(१५३) (पापकर्मादि आश्री भंग)

जीव मनुष्य १,२,३,४	पापकर्म १ ज्ञानावरणी २ दर्शनावरणी ३ मोहनीय ४ नाम ५ गोत्र ६ अंतराय आश्री
१ ३ २ ४ भंग	सलेसी १, शुक्लेशी २, शुक्लपक्षी ३, सम्यग्दृष्टि ४, सज्ञान आदि जाव मन पर्यवज्ञानी ९, नोसंज्ञोपयुक्त १०, अवेदी ११, सजोगी १२, मन १३, वाक् १४, काया १५ योगी, साकारोपयुक्त १६, अनाकारोपयुक्त १७
१ २	कृष्णा आदि लेश्या ५, कृष्णपक्षी ६, मिथ्यादृष्टि ७, मिश्रदृष्टि ८, चार संज्ञा १२, अज्ञान ४।१६, सवेद आदि ४।२०, क्रोध २१, मान २२, माया २३
४	अलेशी १, केवली २, अयोगी ३
३ ४	अकपायी १, एव ४६ (?) बोल

(१५४) (वेदनीय आश्री भंग)

जीव मनुष्य	वेदनीय कर्म आश्री वधभंग १२४
१ २ ४	सलेशी १, शुक्लेशी २, शुक्लपक्षी ३, सम्यग्दृष्टि ४, नाणी ५, केवलनाणी ६, नोसंज्ञोपयुक्त ७, अवेदी ८, अकपायी ९, साकारोपयुक्त १०, अनाकारोपयुक्त ११
४	अलेशी १, अयोगी २,
१ २	कृष्ण आदि लेश्या ५, कृष्णपक्षी ६, मिथ्यादृष्टि ७, मिश्रदृष्टि ८, अज्ञान आदि ४।१२, सज्ञा ४।१६, ग्यान ४।२०, सवेद आदि ४।२४, सकपाय आदि ५।२९, सयोग आदि ४।३३ एवं बोल ४६

(१५५) (आयु आश्री भंग)

जीव मनुष्य	आयुकर्म आश्री वधभंग १, २, ३, ४
१ ३ २ ४	सलेशी आदि ७, शुक्लपक्षी ८, मिथ्यादृष्टि ९, अज्ञान आदि ४।१२, सज्ञा ४।१७, सवेद आदि ४।२१, सकपाय आदि ५।२६, सयोग आदि ४।३०, साकारोपयुक्त ३१, अनाकारोपयुक्त ३२
१, २, ३	मन.पर्यव १, नोसंज्ञोपयुक्त २
४	अलेशी १, केवली २, अमोगी ३
१, ३	कृष्णपक्षी
३, ४	मिश्रदृष्टि १, अवेदी २, अकपायी ३, एवं ४६ (?) बोल

परंपरोनवन्नगा १, परं० गाढा २, परंपरो आहारगा ३, परं० पज्जत्तगा ४, चरम ए पांच उद्देशा जीव मनुष्यना प्रथम उद्देशावत् ज्ञेय. नवर इतना विशेष चरम मनुष्यने आयुना बंध आश्री एक चौथा भंग संभवे, और भंग नही. एह अर्थ श्रीमदभयदेवसूरियें भगवती-जीकी टीकामे लिख्या है जो कर चौथा भंग आदि सर्व भंग पावे तो चरमपण कैसे होय ? इस वास्ते चौथा भंग सभवता है.

(१५६) पापकर्म १ मोह २ ज्ञाना० ३ दर्शना० ४ वेदनीय ५ नाम ६ गोत्र ७ अंतराय ८ आश्री

३४	३६	२६	२५	३०	३९	३६	३३	३५
नरक	भवनपति	पृथ्वी १, अपू २ वन स्पति ३	तेज १, वायु २	विगलेंद्री	तिर्यंच	व्यंतर	जो-ति-षी	वैमा-निक
१।२	१।२	१।२	१।२	१।२	१।२	१।२	१।२	१।२

(१५७) आयु आश्री यंत्र

कृष्णलेशी	१।३ भग	०	तेजो-लेश्यामे तीजा भग ३, शेष २५	समदिट्ठी	४ज्ञानीमे ३ भग	सम० १ ज्ञानीमे ४ १।३।४	०	०	०
कृष्णपक्षी	१।३	१।३	१।३	१।३	१।३	१।३	१।३	१।३	१।३
मिश्रदृष्टि	३।४	३।४	०	०	०	३।४	३।४	३।४	३।४
शेष बोल	१।२।३।४	१।२।३।४	१।२।३।४	१।२।३।४	१।३	१।२।३।४	१।२।३।४	१।२।३।४	१।२।३।४

मनुष्य अनतरो० मे नही	अलेशी १, मन पर्यव २, केवल ३, नो संज्ञोपयुक्त ४, अवेदी ५, अकषायी ६, अयोगी ७ ए ७ नही	मिश्रदृष्टि नही	मन १, वचन २, योग नही	विभग नही	अवधि है
नरक, देव	उपरले सात मूलसे नहीं	०	०	है	है
तिरिय	,, ,, ,,	०	०	०	
विगलेंद्री	,, ,, ,,	मूले नही	वचन नही	मूले नही	मूले नही

नारक आदि २४ दंडकमे आयु वर्जी शेष ज्ञानावरण १ पापकर्म आदि ८ बोल आश्री जिसमे जितने बोल है लेश्या आदि सर्व बोलमे १।२ भंग जानना. आयु आश्री २३ दंडकमे एक तीजा ३ भंग, मनुष्यमे आयु आश्री ३।४ भंग अनतरोववन्नगा १, अनंतरोगाढा २, अनं-

तरआहारगा ३, अनं०पज्जत्तगा ४; ए चार उद्देशे एक सरीपे है. एव सर्व उद्देशो १० हूये.

अथ अचरमना ११ मा उद्देशा लिख्यते–मनुष्य वर्जी २३ दंडके आयु वर्जी पापकर्म आदि ८ आश्री सर्व बोला मे १।२ भांगा. आयु आश्री नरक १, तिर्यच २, देव ३ मे मिश्रदृष्टिमे भंग ३ तीजा. पृथ्वी १, अप २, वनस्पति ३, तेजोलेश्यीमे ३ तीजा भंग. विगलेंद्रीमे सम्यक्त्व १, ज्ञान आदि ३ ए ४ मे ३ तीजा भंग, मनुष्य अचरममे अलेश्यी १, अकेवली २, अयोगी ३; ए ३ नही, शेष बोल ४३ मे जहां चौथा भंग है सो नही कहना और सर्व प्रथम उद्देशवत् इति बंध अलम्.

(१५८) (अतीतादि आश्री भंग)

भंग	अतीत	वर्तमान	अनागत
१	बं	ब	बं
२	,,	,,	न
३	,,	न	ब
४	,,	,,	न
५	न	ब	बं
६	,,	,,	न
७	,,	न	ब
८	,,	,,	न

(१५९) (भव आश्री भंग)

घणे भव अपेक्षा	एक भव अपेक्षा
श्रेणिथी गिर फेर ११ मे	कति समये उपशात
पूर्व भवे ११ मे, वर्तमाने क्षीणमोह	सयोगीने छेहले समये
पूर्व भवे ११ मा, वर्तमान नही, आगे होगा ११	११ मे से गिर फिर श्रेणि पावे नही
सिद्ध	१४ मे गुणस्थाने
उपशात पहिले ही पाया है	उपशात मोहके प्रथम समये
क्षपकश्रेणि चढ्या, उपशम कदे नही	शून्य
भव्य मोक्षार्ह	१० मे गुणस्थानवाळा भव्य
अभव्य	मिथ्यादृष्टि वा अभव्य

(१६०) संपरायके बंधके भंग

ऽ ऽ ऽ	अभव्य वा भव्यक
ऽ ऽ ।	भव्य

ऽ । ऽ	उपशातमोह गुणस्थान
ऽ ॥ ऽ	क्षीणमोह आदिक

एह दोनो यंत्र भगवतीजीके

(१९१) कर्म समुचय जीव मनुष्य आश्री

कर्म	बाधे। बाधे १	बाधे। वेदे २	वेदे। बाधे ३	वेदे। वेदे ४
१	८।७।६	८	८।७।६	८।७
२	८।७।६	,,	८।७।६	८।७
३	८।७।६।१	८।७।४	८।७।६।१	८।७।६
४	८।७	८	८।७।६	८
५	८	,,	८।७।६।१	८।७।४
६	८।७।६	,,	८।७।६।१	८।७।६
७	८।७।६	,,	८।७।६।१	८।७।४
८	८।७।६	,,	८।७।६।१	८।७

(१९२) शेष २३ दंडक आश्री ४ भंग

१	८।७	८	८।७	८
२	८।७	,,	८।७	,,
३	८।७	,,	८।७	,,
४	८।७	,,	८।७	,,
५	८	,,	८।७	,,
६	८।७	,,	८।७	,,
७	८।७	,,	८।७	,,
८	८।७	,,	८।७	

श्रीपन्नवणापद. (१९३) अथ आयुयन्त्रम्

द्वार	देव नरक युगल	नो(निरु?)पक्रमी	सोपक्रमी	संख्या
अबन्ध काल	६ मास ऊणा स्वस्व भवस्थिति	दोतिहाइ ($\frac{2}{3}$) आपआपणे आयुकी	ज० दो तिहाइ, उ० अंतर्मुहूर्त ऊणा भव	१
बन्ध काल	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	२
आबाधा	६ मासा	एक तिहाइ आपआपणे आयुकी	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० पूर्व कोडकी तीहाइ	३

उ(सो)पक्रम आयु त्रूटवाना कारण ७—(१) अध्यवसाय–भय आदिक, सोमल ब्राह्मणवत्, (२) निमित्त–शस्त्र आदिकसे मरण पामे, (३) आहार–अजीर्ण आदिसे मरण, (४) वेदना–शूल आदिक, (५) पराघात आदि–ठोकर खाइने पडना, (६) स्पर्श–सर्प आदि डकणा, (७) आनप्राण–श्वासोच्छ्वासना रोकणा. एह सात प्रकारे सोपक्रमीनों आयु त्रुटे पिण नोपक्रमीनो नही. एह यंत्र श्रीस्थानांग, भगवतीथी जानना इति.

(१६४) भगवती बंधी ५० बोलकी अष्ट कर्म आश्री

		ज्ञाना०, दर्शना०, अतराय	वेदनीय	मोहनीय	आयु	नाम, गोत्र
१-३	स्त्री, पुरुष, नपुंसक-वेद	नियमा	नियमा	नियमा	भजना	नियमा
४	अवेदी संयत	भ.	भ	भ	०	भ
५	सयती	,,	,,	,,	भ	,,
६	असंयती	नि.	नि	नि	,,	नि
७	श्रावक सयतासंयत	,,	,,	,,	,,	,,
८	नोसयत, नोअसंयत, नोसंयतासंयत	०	०	०	०	०
९	सम्यग्दृष्टि	भ	भ	भ	भ	भ
१०	मिथ्यादृष्टि	नि	नि	नि.	,,	नि
११	मिश्रदृष्टि	,,	,,	,,	०	,,
१२	सज्ञी	भ	नि	भ	भ	भ
१३	असज्ञी	नि	,,	नि	,,	नि
१४	न सज्ञी न असज्ञी	०	०	०	०	०
१५	भव्य	भ	भ	भ.	भ	भ
१६	अभव्य	नि	नि	नि.	,,	नि
१७	न भव्य न अभव्य	०	०	०	०	०
१८-२०	चक्षु आदि ३ दर्शन	भ	नि	भ.	भ	भ
२१	केवलदर्शन	०	भ	०	०	०
२२	पर्याप्ता	भ	,,	भ	भ.	भ
२३	अपर्याप्ता	नि	नि	नि	,,	नि
२४	न पर्याप्त न अपर्याप्त	०	०	०	०	०
२५	भाषक	भ	नि	भ	भ	भ
२६	अभाषक	,,	भ	,,	,,	,,
२७	परत ससारी	,,	,,	,,	,,	,,
२८	अपरत संसारी	नि	नि	नि	,,	नि
२९	न परत न अपरत	०	०	०	०	०
३०-३३	मति आदि ४ ज्ञान	भ	नि	भ	भ	भ
३४	केवलज्ञान	०	भ.	०	०	०

३५-३७	मति आदि ३ अज्ञान	नि	नि	नि	भ	नि
३८-४०	मन, वचन, काया योग	भ	,,	भ	,,	भ
४१	अयोगी	०	०	०	०	०
४२-४३	साकार अनाकार उपयोग	भ	भ	भ	भ	भ
४४	आहारक	भ	नि	,,	,,	,,
४५	अणाहारी	,,	भ	,,	०	,,
४६	सूक्ष्म	नि	नि	नि	भ	,,
४७	बादर	भ	भ	भ	,,	,,
४८	न सूक्ष्म न बादर	०	०	०	०	०
४९-५०	चरम, अचरम	भ	भ	भ	भ	भ

अथ द्वार गाथा (१)—

वेय[2] संजय दिट्ठी सन्नी भविए दंसण पज्जत्त भासय परित्त नाण जोगो इ उवओग आहारग सुहम्म चरम बद्धे य अप्पाबहु १

अल्पबहुत्व सुगम.

अथ मार्गणा उपरि बंधद्वार. अथ घर्मा आदि नरकत्रय रचना गुणस्थान ४; बंध-प्रकृति १०१ अस्ति. एकेन्द्रिय १, स्थावर १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्ति(प्त) १, साधारण १, विकलत्रय ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २; एवं १९ नास्ति.

१	मि	१००	*तीर्थंकर उतारे मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एवं ४ विच्छित्ति*
२	सा	९६	अनंतानुबंधी आदि २५ विच्छित्ति ब्यौरा सास्वादनवत्
३	मि	७०	मनुष्यायु उतारी १
४	अ	७२	मनुष्यायु १, तीर्थंकर १, एवं २ मिले

अथ अंजना आदि नरकत्रय रचना गुणस्थान ४; बंधप्रकृति १०० अस्ति. १९ पूर्वोक्त अने तीर्थंकर १; एवं २० नास्ति.

१	मि	१००	मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एवं ४ विच्छित्ति
२	सा	९६	अनंतानुबंधी आदि २५ विच्छित्ति सास्वादन गुणस्थानवत्
३	मि	७०	मनुष्यायु उतारी १
४	अ	७२	मनुष्यायु १ मिले

१ छाया—वेदः संयमो दृष्टिः सञ्ज्ञी भविको दर्शनं पर्याप्तो भाषकः परीतो ज्ञानं योगश्चोपयोग आहारकः सूक्ष्मश्चरमबद्धे चाल्पबहुत्वम् ॥ २ विवरण ।

अथ माघवी नरक रचना गुणस्थान ४; बंधप्रकृति ९९. पूर्वोक्त २०, मनुष्यायु १; एवं २१ नास्ति.

१	मि	९६	मनुष्यद्विक २, उच्च गोत्र १; एवं ३ उतारे. मिथ्यात्व १, हुंडक १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, तिर्यचायु १, एवं ५ विच्छित्ति
२	सा	९१	अनंतानुबंधी आदि २४ विच्छित्ति व्योरा सास्वादनवत्
३	मि	७०	मनुष्यद्विक २, उंच गोत्र १ मिले.
४	अ	७०	० ० ०

अथ तिर्यग् गति रचना गुणस्थान ५ आदिके बंधप्रकृति ११७ अस्ति. तीर्थंकर १, आहारकद्विक नास्ति.

१	मि	११७	मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, एवं १६ विच्छित्ति
२	सा	१०१	अनतानुबंधी आदि २५ तो सास्वादन गुणस्थानवत् अने वज्रऋषभ १, औदारिकद्विक २, मनुष्यत्रिक ३, एव ३१ विच्छित्ति
३	मि	६९	देवायु १ उतारे
४	अ	७०	देवायु १ मिले अप्रत्याख्यान ४ विच्छित्ति
५	दे	६६	० ० ०

अथ तिर्यच अपर्याप्ति रचना गुणस्थान तीन–१।२।४; बंधप्रकृति १११ अस्ति. तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, आयु ४, नरकद्विक २; एवं ९ नास्ति.

१	मि	१०७	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २ उतारे मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुसक १, छेवट्ठा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्ति १, साधारण १, विकलत्रय ३; एव १३ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनंतानुबधी ४, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, दुर्भग १, दु स्वर १, अनादेय १, संस्थान ४ मध्यके, संहनन ४ मध्यके, अप्रशस्त गति १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, तिर्यचद्विक २, उद्द्योत १, वज्रऋषभ १, औदारिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, एव २९ विच्छित्ति
४	अ	६९	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, एवं ४ मिले

अथ तिर्यच अलब्धिपर्याप्त रचना गुणस्थान १–प्रथम; बंधप्रकृति १०९ अस्ति. तीर्थकर १, आहारकद्विक २, देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, नरकद्विक ३; एव ११ नास्ति. उपरला यंत्र करण अपर्याप्तिका जान लेना.

०　०　०

१	मि	१०१	

अथ मनुष्य रचना गुणस्थान सर्वे १४; बंधप्रकृति १२० सर्वे अस्ति. आदिके च्यार गुणस्थान यंत्र अन्य ५ मेसें लेकर सर्वे गुणस्थान समुच्चयवत्.

१	मि	११७	आहारकद्विक २, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व आदि १६ प्रकृतिकी विच्छित्ति व्योरा मिथ्यात्व गुणस्थान रचनाथी ज्ञेयम्
२	सा	१०१	अनंतानुबंधी आदि २५ सास्वादन गुणस्थान रचनावाली अने वज्रऋषभ १, ओदारिकद्विक २, मनुष्यत्रिक ३, एवं ३१ विच्छित्ति
३	मि	६९	देवायु १ उतारी
४	अ	७१	देवायु १, तीर्थंकर १ मिले

अथ मनुष्य अलब्धिपर्याप्ति रचना गुणस्थान १–मिथ्यात्व; बंधप्रकृति १०९, तीर्थंकर १, आहारक २, देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २; एवं ११ नास्ति. भवनपति, व्यंतर, जोतिषी तत्देवी ३ तथा वैमानिकदेवी रचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति १०३ है. सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एवं १७ नही.

१	मि	१०३	मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १; एवं ७ वि०
२	सा	९६	अनंतानुबंधी आदि २५ सास्वादन गुणस्थानवाली विच्छित्ति
३	मि	७०	मनुष्यायु १ उतारे
४	अ	७१	मनुष्यायु १ मिले

तत् अपर्याप्ति रचनामें गुणस्थान यथा संभवे तिनमें मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १; एवं २ नास्ति.

अथ सौधर्म, ईशान रचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति १०४ है. सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २; एवं १६ नही. बंध भवनपतिवत् जहां संभवे तिहां. तीर्थंकर अधिक चौथेमे.

तत् अपर्याप्तमे गुणस्थान तीन–१।२।४; बंध १०२ का. १६ पूर्वोक्त अने मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १, एवं १८ नही. पहिले १०१, दूजे ९४, चौथे ७१ उपरवत्.

अथ सनत्कुमार आदि ६ कल्परचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति १०१ है. पूर्वोक्त (१६) सौधर्म, ईशानवाली अने एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १; एवं १९ नही.

१	मि	१००	तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १; एवं ४ विच्छित्ति.
२	सा	९६	अनंतानुबंधी आदि २५ विच्छित्ति सास्वादन गुणस्थानवत्
३	मि	७०	मनुष्यायु १ उतारे
४	अ	७२	मनुष्यायु १, तीर्थंकर १ मिले.

तत् अपर्याप्ति रचना गुणस्थान ३–१।२।४; बंधप्रकृति ९ है. पूर्वोक्त तिर्यंचायु अने मनुष्यायु; एवं २ नास्ति. पहिले, दूजे, चौथे पर्याप्तवत्.

१	मि	९८	तीर्थंकर उतारे. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुसक १, छेवट्ठ १, एव ४ विच्छित्ति.
२	सा	९४	अनंतानुबंधी आदि २४ विच्छित्ति ब्योरा माघवीके सास्वादनवत्
४	अ	७१	तीर्थंकर १ मिले

अथ आनत आदि ग्रैवेयक पर्यंत रचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति ९७ अस्ति. पूर्वोक्त १९ सनत्कुमार आदिवाली अने तिर्यंचत्रिक ३, उद्योत १; एवं २३ नही. तीसरे गुणस्थानकी रचना बहुश्रुतसे समज लेनी.

१	मि	९६	तीर्थंकर उतारे. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुसक १, छेवट्ठा १, एव ४ विच्छित्ति
२	सा	९२	अनंतानुबंधी ४, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, संस्थान ४ मध्यके, संहनन ४ मध्यके, अप्रशस्त गति १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, सर्व २१ विच्छित्ति
३	मि	७०	मनुष्यायु १ उतारे
४	अ	७२	मनुष्यायु १, तीर्थंकर १, एवं २ मिले

तत् अपर्याप्ति रचना गुणस्थान ३–१।२।४; बंधप्रकृति ९६ है. पूर्वोक्त २३ अने मनुष्यायु १; एवं २४ नास्ति. मनुष्यायु घटा देना. पहिले ९५, दूजे ९१, चौथे ७१ है.

अथ पांच अनुत्तर रचना गुणस्थान १–चौथा; बंधप्रकृति ७२. पूर्वोक्त २३ तो आनत आदि रचनावाली अने मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, अनंतानुबंधी ४, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, संस्थान ४ मध्यके, संहनन ४ मध्यके, अप्रशस्त गति १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १; एवं ४८ नही.

तत् अपर्याप्तरचना मनुष्यायु १ नही. और सर्व पूर्वोक्तवत्.

अथ एकेन्द्रिय १, विकलत्रय ३, अपर्याप्ति रचना गुणस्थान २ आदिके बंधप्रकृति १०७ है. आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १; एवं २३ नास्ति. करण-अपर्याप्त.

१	मि	१०७	मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुसक १, छेवट्ठा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, विकलत्रय ३, एव १३ विच्छित्ति
२	सा	९४	० ० ०

अथ एकेन्द्रिय १, विकलत्रय ३ पर्याप्त रचना गुणस्थान १–मिथ्यात्व १; बंधप्रकृति १०९ है. पूर्वोक्त १०७; मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १, ए दोइ अधिक बधी.

अथ एकेन्द्रिय, विकलत्रय अलब्धिपर्याप्त रचना गुणस्थान १–मि०; बंध १०९ पूर्वोक्त.

अथ पंचेन्द्रियरचनागुणस्थानवत्. अथ पृथ्वीकाय, अप्, वनस्पति अपर्याप्तरचना, एकेन्द्रियविकलत्रयपर्याप्तवत्. अथ तेजवायुरचनागुणस्थान १–मिथ्यात्व १; बंधप्रकृति १०५ है. आहारकद्विक २, तीर्थकर १, देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, मनुष्यत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, उंच गोत्र १; एवं १५ नास्ति. अथ त्रसकायरचना गुणस्थानवत्. अथ मनोयोग ४, वचनयोग ४, रचनागुणस्थान १३ वत्. अथ औदारिकयोग रचना गुणस्थान सर्वे १४; बंधप्रकृति १२० सर्वे सन्ति, मनुष्यरचनागुणस्थानवत् सर्व. अथ औदारिकमिश्रयोगरचनागुणस्थान ४–पहिला, दूजा, चौथा, तेरमा; बंधप्रकृति ११४ है. देवायु १, नरकत्रिक ३, आहारकद्विक २; एवं ६ नही. इहां कार्मणसे मिलया मिश्र ग्राह्य.

१	मि	१०९	वैक्रियद्विक २, देवद्विक २, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, हुड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १; एवं १५ विच्छित्ति.
२	सा	९४	अनंतानुबंधी आदि २९ विच्छित्ति व्यौरा तिर्यंच अपर्याप्त रचना सास्वादन गुणस्थानवत्
४	अ	७०	वैक्रियद्विक २, देवद्विक २, तीर्थंकर १ मिले अप्रत्याख्यान ४, प्रत्याख्यान ४, षष्ठ गुणस्थानकी ६, अष्टम गुणस्थानकी ३४, आहारकद्विक २ विना नवमे गुणस्थानकी ५, दशम गुणस्थानकी १६, एवं ६९ विच्छित्ति
१३	स	१	० ० ० ०

अथ देवगति वैक्रियक मिश्रयोग रचना गुणस्थान ३–१।२।४; बंधप्रकृति १०२ है. सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, देवद्विक २, वैक्रियकद्विक २, आहारकद्विक २, तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १; एवं १८ नही.

१	मि	१०१	तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, हुड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १, एवं ७ विच्छित्ति.
२	सा	९४	अनंतानुबंधी आदि उद्योत पर्यंत २४ की विच्छित्ति सौधर्म, ईशान अपर्याप्ति-रचना सास्वादनगुणस्थानवत् माघवीवाली
४	१	७१	तीर्थंकर १ मिले

अथ देवगति वैक्रियक रचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति १०४ है. पूर्वोक्त सूक्ष्म आदि आहारकद्विक पर्यंत १६ नास्ति.

१	मि	१०३	तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, हुड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १, एवं ७ व्यवच्छेद
२	सा	९६	अनतानुबंधी आदि २५ विच्छित्ति सास्वादन गुणस्थानवत्
३	मि	७०	मनुष्यायु १ उतारे
४	अ	७२	मनुष्यायु १, तीर्थंकर १ मिले

अथ नरकगति वैक्रियमिश्र रचना गुणस्थान २–पहिला, चौथा; बन्धप्रकृति ९९ है. एकेंद्री १, थावर १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, मनुष्य-आयु १, तिर्यंच-आयु १; एवं २१ नास्ति.

१	मि	९८	तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, हुंडक १, नपुंसक १, छेवट्ठ १, अनंतानुबंधी आदि ४, एवं २८ व्यवच्छेद
४	अ	७१	तीर्थंकर १ मिले

अथ नरकगति वैक्रिय रचना गुणस्थान ४ आदिके बन्धप्रकृति १०१. पूर्वोक्त एकेंद्री आदि आहारकद्विक पर्यंत १९ नही, समुच्चयनरकवत्.

१	मि	१००	तीर्थंकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठ १, एवं ४ विच्छित्ति
२	सा	९६	अनंतानुबंधी आदि २५ विच्छित्ति सास्वादन गुणस्थानवत्
३	मि	७०	मनुष्य-आयु १ उतारे
४	अ	७२	मनुष्य आयु १, तीर्थंकर १ मिले

अथ आहारक काय योग तथा आहारक मिश्र रचना गुणस्थान १–प्रमत्त; बन्धप्रकृति ६३ है. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एकेंद्री १, थावर १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, अनंतानुबंधि ४, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, संस्थान ४ मध्यके, संहनन ४ मध्यके, अप्रशस्त गति १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, तिर्यंचद्विक २, उद्योत १, तिर्यंच-आयु १, अप्रत्याख्यान ४, वज्रऋषभ १, औदारिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, मनुष्य-आयु १, प्रत्याख्यान ४, आहारकद्विक २; एवं ५७ नही.

अथ कार्मण योग रचना गुणस्थान ४–१।२।४।१३ मा बन्धप्रकृति ११२ है. देव-आयु १, नरक-आयु १, नरकद्विक २, आहारकद्विक २, मनुष्य-आयु १, तिर्यंच-आयु १; एवं ८ नही.

१	मि	१०७	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, तीर्थंकर १, एव ५ उतारे मिथ्यात्व आदि विकल त्रय पर्यंत १३ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनंतानुबंधी आदि उद्योत पर्यंत २४ विच्छित्ति
४	अ	७५	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, तीर्थंकर १, एव ५ मिले अप्रत्याख्यान ४, वज्रऋषभ १, औदारिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, प्रत्याख्यान ४, षष्ठ गुणस्थानकी ६, आहारकद्विक विना अष्टम गुणस्थानकी ३४, नवम गुणस्थानकी ५, दशम गुणस्थानकी १६, एवं ७४ व्यवच्छेद एक सातावेदनीय रही तेरमे
१३	स	१	० ० ० ० ० ०

अथ वेदरचना गुणस्थानकरचनावत् नवमे गुणस्थान पर्यंत. अथ अनंतानुबंधिचतुष्करचना गुणस्थान २ आदिके बन्धप्रकृति ११७ है. आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एव ३ नास्ति.

१	मि	११७	मिथ्यात्व आदि नरक आयु पर्यंत १६ विच्छित्ति
२	सा	१०१	० ० ० ०

अप्रत्याख्यान ४ का बंध आदिके चार गुणस्थानवत्. प्रत्याख्यान आदिके पांच गुणस्थानवत्. संज्वलन क्रोध १, मान २, माया १ नवमे लग पूर्ववत् अने संज्वलन लोभ आदिके दश गुणस्थानवत्.

अथ अज्ञान रचना गुणस्थान २ आदिके बन्धप्रकृति ११७ पहिले, दूजे १०१ पूर्ववत्.

अथ मति, श्रुत, अवधिज्ञान रचना चौथेसे लेकर बारमे ताइ समुचयगुणस्थानवत्. अथ मनःपर्यवज्ञान छट्ठेसे लेकर बारमे पर्यंत रचना समुचयवत्. केवलज्ञान १३ मे १४ मे वत्.

अथ सामायिक, छेदोपस्थापनीय छट्ठे, सातमे, आठमे, नवमे गुणस्थानवत्. अथ परिहारविशुद्धि ६।७ मे वत्, सूक्ष्मसंपराय दशमेवत्. यथाख्यात ११।१२।१३।१४ वत्, देश संयम पांचमेवत्, असयती आदिके चार गुणस्थानवत्.

अथ चक्षु, अचक्षु, अवधिदर्शन अवधिज्ञानवत् रचना १२ मे पर्यंत गुणस्थानवत्, केवलदर्शन केवलज्ञानवत्.

अथ कृष्ण १, नील २, कापोत ३ लेश्या रचना बन्धप्रकृति ११८ है. आहारकद्विक नही. गुणस्थानक ४ आदिके तीर्थकर रहित पहिले ११७ आगले तीन गुणस्थान समुचयगुणस्थानवत्. अथ तेजोलेश्या रचना गुणस्थान ७ आदिके बन्धप्रकृति १११ है. सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३; एवं ९ नास्ति. तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, ए तीन विना पहिले १०८ आगे ६ गुणस्थानोमे समुचयगुणठाणावत्. पद्मलेश्या रचना गुणस्थान ७ आदिके बन्धप्रकृति १०८ है. एकेंद्रि १, थावर १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३; एवं १२ नास्ति. तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, ए त्रण विना पहिले १०५ आगे गुणस्थानवत्. अथ शुक्लेश्या रचना गुणस्थान १३ आदिके बन्धप्रकृति १०४ है. पूर्वोक्त एकेंद्रिय आदि १२ अने तिर्यंचत्रिक ३, उद्योत् १; एव १६ नास्ति. तीर्थंकर १, आहारद्विक २ विना पहिले १०१ आगे सर्वगुणस्थानवत्.

अथ भव्यरचना १४ गुणस्थानवत्, अभव्य प्रथम गुणस्थानवत् जानना.

अथ क्षायिक सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ११—अविरति सम्यग्दृष्टि आदि; बन्धप्रकृति ७९ है. मिथ्यात्व आदि १६, अनतानुबंधि आदि २५; एवं ४१ नही. आहारकद्विक विना चौथे ७७ आगे समुचयगुणस्थानद्वारवत्, अथ क्षयोपशम सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ४—अविरतिसम्यग्दृष्टि आदि; बन्ध पूर्वोक्त ७९ क्षायिकवत्, चारो गुणस्थान परि जान लेना. अथ उपशम सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ८—अविरति सम्यग्दृष्टि आदि; बन्धप्रकृति ७७ है. पूर्वोक्त ४१ तो क्षायिकवाली अने मनुष्य आयु १, देव-आयु १, एवं ४३ नास्ति, क्षायिकवत्

अथ नरकगति वैक्रियमिश्र रचना गुणस्थान २–पहिला, चौथा; बन्धप्रकृति ९९ है. एकेंद्री १, थावर १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, मनुष्य-आयु १, तिर्यंच-आयु १; एवं २१ नास्ति.

१	मि	९८	तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, हुंडक १, नपुसक १, छेवट्ठ १, अनंतानुबधी आदि ४, एवं २८ व्यवच्छेद
४	अ	७१	तीर्थंकर १ मिले

अथ नरकगति वैक्रिय रचना गुणस्थान ४ आदिके बन्धप्रकृति १०१. पूर्वोक्त एकेंद्री आदि आहारकद्विक पर्यंत १९ नही, समुच्चयनरकवत्.

१	मि	१००	तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, हुड १, नपुसक १, छेवट्ठ १, एवं ४ विच्छित्ति
२	सा	९६	अनंतानुबधी आदि २५ विच्छित्ति सास्वादन गुणस्थानवत्
३	मि	७०	मनुष्य-आयु १ उतारे
४	अ	७२	मनुष्य-आयु १, तीर्थंकर १ मिले

अथ आहारक काय योग तथा आहारक मिश्र रचना गुणस्थान १–प्रमत्त; बन्धप्रकृति ६३ है. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुसक १, छेवट्ठा १, एकेंद्री १, थावर १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, अनंतानुबधि ४, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, संस्थान ४ मध्यके, संहनन ४ मध्यके, अप्रशस्त गति १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, तिर्यचद्विक २, उद्योत १, तिर्यंच-आयु १, अप्रत्याख्यान ४, वज्रऋषभ १, औदारिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, मनुष्य-आयु १, प्रत्याख्यान ४, आहारकद्विक २; एवं ५७ नही.

अथ कार्मण योग रचना गुणस्थान ४–१।२।४।१३ मा बन्धप्रकृति ११२ है. देव-आयु १, नरक आयु १, नरकद्विक २, आहारकद्विक २, मनुष्य-आयु १, तिर्यंच-आयु १; एवं ८ नही.

१	मि	१०७	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, तीर्थंकर १, एव ५ उतारे मिथ्यात्व आदि विकलत्रय पर्यंत १३ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनतानुबंधी आदि उद्योत पर्यंत २४ विच्छित्ति
४	अ	७५	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, तीर्थंकर १; एवं ५ मिले अप्रत्याख्यान ४, वज्रऋषभ १, औदारिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, प्रत्याख्यान ४, षष्ठ गुणस्थानकी ६, आहारकद्विक विना अष्टम गुणस्थानकी ३४, नवम गुणस्थानकी ५, दशम गुणस्थानकी १६, एव ७४ व्यवच्छेद एक सातावेदनीय रही तेरमे
१३	स	१	० ० ० ० ०

अथ वेदरचना गुणस्थानकरचनावत् नवमे गुणस्थान पर्यंत. अथ अनंतानुबंधिचतुष्करचना गुणस्थान २ आदिके बन्धप्रकृति ११७ है. आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एव ३ नास्ति.

१	मि	११७	मिथ्यात्व आदि नरक आयु पर्यंत १६ विच्छित्ति
२	सा	१०१	० ० ० ०

अप्रत्याख्यान ४ का बंध आदिके चार गुणस्थानवत्. प्रत्याख्यान आदिके पांच गुणस्थानवत्. संज्वलन क्रोध १, मान २, माया १ नवमे लग पूर्ववत् अने संज्वलन लोभ आदिके दश गुणस्थानवत्.

अथ अज्ञान रचना गुणस्थान २ आदिके बन्धप्रकृति ११७ पहिले, दूजे १०१ पूर्ववत्.

अथ मति, श्रुत, अवधिज्ञान रचना चौथेसे लेकर बारमे ताइ समुचयगुणस्थानवत् अथ मनःपर्यवज्ञान छट्ठेसे लेकर बारमे पर्यंत रचना समुचयवत्. केवलज्ञान १३ मे १४ मे वत्.

अथ सामायिक, छेदोपस्थापनीय छट्ठे, सातमे, आठमे, नवमे गुणस्थानवत्. अथ परिहारविशुद्धि ६।७ मे वत्, सूक्ष्मसंपराय दशमेवत्. यथाख्यात ११।१२।१३।१४ वत्, देश संयम पांचमेवत्, असंयती आदिके चार गुणस्थानवत्.

अथ चक्षु, अचक्षु, अवधिदर्शन अवधिज्ञानवत् रचना १२ मे पर्यंत गुणस्थानवत्, केवलदर्शन केवलज्ञानवत्.

अथ कृष्ण १, नील २, कापोत ३ लेश्या रचना बन्धप्रकृति ११८ है. आहारकद्विक नही. गुणस्थानक ४ आदिके तीर्थंकर रहित पहिले ११७ आगले तीन गुणस्थान समुच्चयगुणस्थानवत्. अथ तेजोलेश्या रचना गुणस्थान ७ आदिके बन्धप्रकृति १११ है. सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३; एवं ९ नास्ति. तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, ए तीन विना पहिले १०८ आगे ६ गुणस्थानोमे समुचयगुणठाणावत्. पद्मलेश्या रचना गुणस्थान ७ आदिके बन्धप्रकृति १०८ है. एकेंद्रि १, थावर १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३; एवं १२ नास्ति. तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, ए त्रण विना पहिले १०५ आगे गुणस्थानवत्. अथ शुक्लेश्या रचना गुणस्थान १३ आदिके बन्धप्रकृति १०४ है. पूर्वोक्त एकेंद्रिय आदि १२ अने तिर्यंचत्रिक ३, उद्योत १; एवं १६ नास्ति. तीर्थंकर १, आहारद्विक २ विना पहिले १०१ आगे सर्वगुणस्थानवत्.

अथ भव्यरचना १४ गुणस्थानवत्; अभव्य प्रथम गुणस्थानवत् जानना.

अथ क्षायिक सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ११–अविरति सम्यग्दृष्टि आदि; बन्धप्रकृति ७९ है. मिथ्यात्व आदि १६, अनंतानुबंधि आदि २५, एवं ४१ नही. आहारकद्विक विना चौथे ७७ आगे समुचयगुणस्थानद्वारवत्. अथ क्षयोपशम सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ४–अविरतिसम्यग्दृष्टि आदि; बन्ध पूर्वोक्त ७९ क्षायिकवत्, चारो गुणस्थान परि जान लेना. अथ उपशम सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ८–अविरति सम्यग्दृष्टि आदि; बन्धप्रकृति ७७ है. पूर्वोक्त ४१ तो क्षायिकवाळी अने मनुष्य आयु १, देव-आयु १, एवं ४३ नास्ति, क्षायिकवत्

बन्ध परंतु आयु दोनो सातमे ताइ घटावनी सास्वादन सास्वादन गुणस्थानवत्, मिश्र मिश्र गुणस्थानवत्.

अथ संज्ञी रचना गुणस्थानरचनावत्. अथ असंज्ञी रचना गुणस्थान २ आदिके बन्ध पहिले, दूजे पूर्ववत् ११७।१०१.

अथ आहारक रचना गुणस्थान १३ पर्यंत. अथ अनाहारक रचना गुणस्थान ४–१, २, ४ अने १३; बन्धप्रकृति ११२ अस्ति. आयु ४, आहारकद्विक २, एवं नरकद्विक २; एवं ८ नास्ति.

१	मि	१०७	वेदद्विक २, वैक्रियद्विक २, तीर्थंकर १; एवं ५ उतारे. मिथ्यात्व आदि विकलत्रिक ३ पर्यंत १३ की विच्छित्ति
२	सा	९४	अनंतानुबंधि आदि उद्योत पर्यंत २४ विच्छित्ति
४	अ	७५	देवद्विक २, वैक्रियकद्विक २, तीर्थंकर १; एवं ५ मिले. अप्रत्याख्यान आदि ९, प्रत्याख्यान ४, अथिर आदि ६, आहारकद्विक २ विना ३४ अपूर्वकरणकी, अनिवृत्तिकरणकी ५, सूक्ष्मसंपरायकी १६; एवं ७४ की विच्छित्ति
१३	स	१	एक सातावेदनीय रही

इति श्रीबन्धाधिकार संपूर्ण.

अथ उदयाधिकारः लिख्यते गुणस्थानेषु—

अथ नरकगति रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ७६ अस्ति. स्त्यानगृद्धित्रिक ३, पुरुषवेद १, स्त्रीवेद १, आयु ३ नरक विना, उंच गोत्र १, गति ३ नरक विना, जाति ४ पंचेंद्री विना, औदारिकद्विक २, आहारकद्विक २, संहनन ६, संस्थान ५ हुडक विना, प्रशस्त गति १, नरक विना आनुपूर्वी ३, थावर १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, यश १, आतप १, उद्योत १, तीर्थंकर १; एवं ४६ नास्ति.

१	मि	७४	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे मिथ्यात्व (१) विच्छित्ति
२	सा	७२	नरकगति आनुपूर्वी १ उतारी. अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	६९	मिश्रमोहनीय १ मिले मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
४	अ	७०	सम्यक्त्वमोहनीय १, नरकगति आनुपूर्वी १ मिले

अथ सामान्य तिर्यंच रचना गुणस्थान ५ आदिके उदयप्रकृति १०७. आयु ३ तिर्यंच विना, मनुष्यद्विक २, उंच गोत्र १, आहारकद्विक २, वैक्रियछक ६, तीर्थंकर १; एवं १५ नास्ति.

१	मि	१०५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १; एवं ५ विच्छित्ति
२	सा	१००	अनतानुबंधि ४, एकेन्द्रिय १, थावर १, विकलत्रय ३; एवं ९ विच्छित्ति
३	मि	९१	तिर्यंचानुपूर्वी १ उतारे मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
४	अ	९२	सम्यक्त्वमोहनीय १, तिर्यंचानुपूर्वी १ मिले अप्रत्याख्यान ४, तिर्यंचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एवं ८ विच्छित्ति
५	दे	८४	० ० ०

अथ पंचेंद्री रचना गुणस्थान ५ आदिके उदयप्रकृति ९९ है. आयु ३ तिर्यंच विना, मनुष्यद्विक २, आहारकद्विक २, उंच गोत्र १, वैक्रियपद् ६, तीर्थंकर १, एकेंद्री १, थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, विकलत्रय ३; एवं २३ नास्ति.

१	मि	९७	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १ उतारे मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	९५	अनतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	९१	तिर्यंचानुपूर्वी १ उतारे मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९२	सम्यक्त्वमोह० १, तिर्यंचानुपूर्वी १ मिले अप्रत्याख्यान ४, तिर्यंचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एवं ८ विच्छित्ति
५	दे	८४	० ० ० ०

अथ पर्याप्त तिर्यंचने रचना गुणस्थान ५ आदिके उदयप्रकृति ९७ अस्ति. पूर्वोक्त २३, स्त्रीवेद १, अपर्याप्त १; एवं २५ नास्ति.

१	मि	९५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	९०	मिश्रमोहनीय १ मिले तिर्यंचानुपूर्वी १ उतारी. मिश्रमोह १ विच्छित्ति
४	अ	९१	सम्यक्त्वमोहनीय १, तिर्यंचानुपूर्वी १ मिले अप्रत्याख्यान ४, तिर्यंचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एवं ८ विच्छित्ति
५	दे	८३	० ० ० ०

अथ अलब्धिपर्याप्त तिर्यंच रचना गुणस्थान १-मिथ्यात्व; उदयप्रकृति ७१ अस्ति. आयु ३ तिर्यंच विना, उंच गोत्र १, मनुष्यद्विक २, आहारकद्विक २, वैक्रियपद् ६, तीर्थंकर १, थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, एकेंद्री १, बेंद्री १, तेंद्री १, चौरिंद्री १, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १, यश १, आदेय १, सुभग १, संस्थान ५ हुंडक विना, संहनन ५ छेवट्ठ विना, स्त्रीवेद १, पुरुषवेद १, स्त्यान-

गृद्धित्रिक ३, पर्याप्त १, सुस्वर १, दुःस्वर १, मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १; एवं ५१ नास्ति. एह संमूर्छिम अपेक्षा जानना, पहिले ७१ है.

अथ सामान्य मनुष्य रचना गुणस्थान सर्वे; उदयप्रकृति १०२ है. थावर १, सूक्ष्म १, तिर्यचत्रिक ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, आतप १, उद्द्योत १, एकेंद्री १, विकलत्रय ३, साधारण १, वैक्रियद्विक २; एवं २० नास्ति.

१	मि	९७	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	९५	अनतानुबधी ४ व्यवच्छेद
३	मि	९१	मनुष्यानुपूर्वी १ उतारे मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९२	सम्यक्त्वमोहनीय १, म(आ?)नुपूर्वी १ मिले अप्रत्याख्यान ४, मनुष्यानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एव ८ विच्छित्ति
५	दे	८४	प्रत्याख्यान ४, नीच गोत्र १, एव ५ विच्छित्ति
६	प्र	८१	आहारकद्विक २ मिले

सातमेसे लेकर आगे सर्व समुच्चयगुणस्थानवत् जान लेना.

अथ पर्याप्त मनुष्य रचना गुणस्थान सर्वे १४; उदयप्रकृति १०० है. पूर्वोक्त २०, स्त्रीवेद १, अपर्याप्त १; एवं २२ नास्ति.

१	मि	९५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थकर १, एवं ५ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनतानुबंधी ४ विच्छित्ति
३	मि	९०	मनुष्यानुपूर्वी १ उतारी मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९१	सम्यक्त्वमोह० १, मनुष्यानुपूर्वी १ मिले अप्रत्याख्यान ४, मनुष्यानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एव ८ विच्छित्ति
५	दे	८३	प्रत्याख्यान ४, नीच गोत्र १, एव ५ विच्छित्ति
६	प्र	८०	आहारकद्विक २ मिले आहारकद्विक २, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, एव ५ विच्छित्ति
७	अ	७५	सम्यक्त्वमोह० १, संहनन ३ अंतके, एव ४ विच्छित्ति
८	अ	७१	हास्य आदि षट् ६ विच्छित्ति
९	अ	६५	नपुंसक १, पुरुषवेद १, सज्वलन क्रोध १, मान १, माया १ विच्छित्ति

शेष गुणस्थानमे समुच्चयवत्.

अथ अलब्धिपर्याप्त मनुष्य रचना गुणस्थान १–मिथ्यात्व, उदयप्रकृति ७१ है. ज्ञाना-

वरण ५, दर्शनावरण ४, निद्रा १, प्रचला १, मिथ्यात्व १, कपाय १६, हास्य आदि ६, नपुंसकवेद १, मनुष्यत्रिक ३, नीच गोत्र १, औदारिकद्विक २, वेदनीय २, हुंडक १, छेवट्ठा १, पंचेंद्री १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, त्रस १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, शुभ १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १, अंतराय ५; एवं ७१ है.

अथ सामान्य देव रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ७७. ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४, निद्रा १, प्रचला १, मोहनीय २७, नपुंसक विना वेद २, देव-आयु १, देवद्विक २, वैक्रियकद्विक २, पचेंद्री १, तैजस १, कार्मण १, समचतुरस्र १, प्रशस्त गति १, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, निर्माण १, अथिर १, अशुभ १, त्रसदशक १०, उच गोत्र १, अंतराय ५; एवं ७७ अस्ति, शेष ४५ नास्ति.

१	मि	७५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	७४	अनतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	७०	देवानुपूर्वी १ उतारी मिश्रमोहनीय १ मिले मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
४	अ	७१	आनुपूर्वी देवस्य १, सम्यक्त्वमोहनीय १ मिले.

अथ सौधर्म आदि नव ग्रैवेयक पर्यंत रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ७६ अस्ति, स्त्रीवेद विना पूर्वोक्त; एवं भवनपति आदि ३.

१	मि	७४	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	७३	अनतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	६९	देवानुपूर्वी १ उतारी, मिश्रमोहनीय १ मिली, मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
४	अ	७०	देवानुपूर्वी १, सम्यक्त्वमोहनीय १, एव २ मिले

अनुत्तर ५ रचना गुणस्थान १—चौथा; उदयप्रकृति ७० है. पूर्वोक्त सामान्य देव रचनावाली ७७, तिण मध्ये मिथ्यात्व १, मिश्रमोहनीय १, अनंतानुबंधी ४, स्त्रीवेद १; एवं ७ नास्ति.

४	अ	७०	० ० ० ०

अथ एकेंद्री रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ८०. ज्ञाना० ५, दर्शना० ४, वेदनीय २, मोहनीय २४, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, पुम (?) १ स्त्रीवेद विना, तिर्यंच-आयु १, तिर्यंचद्विक २, औदारिक शरीर १, हुड १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, शुभ १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १, थावर १, एकेंद्री १, परा-

गृद्धित्रिक ३, पर्याप्त १, सुस्वर १, दुःस्वर १, मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १; एवं ५१ नास्ति. एह संमूर्च्छिम अपेक्षा जानना, पहिले ७१ है.

अथ सामान्य मनुष्य रचना गुणस्थान सर्वे; उदयप्रकृति १०२ है. थावर १, सूक्ष्म १, तिर्यचत्रिक ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, आतप १, उद्द्योत १, एकेंद्री १, विकलत्रय ३, साधारण १, वैक्रियद्विक २; एवं २० नास्ति.

१	मि	९७	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	९५	अनतानुबंधी ४ व्यवच्छेद
३	मि	९१	मनुष्यानुपूर्वी १ उतारे मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९२	सम्यक्त्वमोहनीय १, म(आ ?)नुपूर्वी १ मिले अप्रत्याख्यान ४, मनुष्यानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एव ८ विच्छित्ति
५	दे	८४	प्रत्याख्यान ४, नीच गोत्र १, एव ५ विच्छित्ति
६	प्र	८१	आहारकद्विक २ मिले

सातमेसे लेकर आगे सर्व समुच्चयगुणस्थानवत् जान लेना.

अथ पर्याप्त मनुष्य रचना गुणस्थान सर्वे १४; उदयप्रकृति १०० है. पूर्वोक्त २०, स्त्रीवेद १, अपर्याप्त १; एवं २२ नास्ति.

१	मि	९५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, एवं ५ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनतानुबंधी ४ विच्छित्ति
३	मि	९०	मनुष्यानुपूर्वी १ उतारी मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९१	सम्यक्त्वमोह० १, मनुष्यानुपूर्वी १ मिले अप्रत्याख्यान ४, मनुष्यानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एव ८ विच्छित्ति
५	दे	८३	प्रत्याख्यान ४, नीच गोत्र १, एव ५ विच्छित्ति
६	प्र	८०	आहारकद्विक २ मिले आहारकद्विक २, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, एव ५ विच्छित्ति
७	अ	७५	सम्यक्त्वमोह० १, सहनन ३ अतके, एव ४ विच्छित्ति
८	अ	७१	हास्य आदि षट् ६ विच्छित्ति
९	अ	६५	नपुसक १, पुरुषवेद १, सज्वलन क्रोध १, मान १, माया १ विच्छित्ति

शेष गुणस्थानमे समुच्चयवत्.

अथ अलब्धिपर्याप्त मनुष्य रचना गुणस्थान १–मिथ्यात्व, उदयप्रकृति ७१ है. ज्ञाना-

वरण ५, दर्शनावरण ४, निद्रा १, प्रचला १, मिथ्यात्व १, कपाय १६, हास्य आदि ६, नपुसकवेद १, मनुष्यत्रिक ३, नीच गोत्र १, औदारिकद्विक २, वेदनीय २, हुंडक १, छेवट्ठा १, पंचेंद्री १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, त्रस १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, शुभ १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १, अतराय ५. एव ७१ है.

अथ सामान्य देव रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ७७. ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४, निद्रा १, प्रचला १, मोहनीय २७, नपुसक विना वेद २, देव-आयु १, देवद्विक २, वैक्रियकद्विक २, पचेंद्री १, तैजस १, कार्मण १, समचतुरस्र १, प्रशस्त गति १, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, निर्माण १, अथिर १, अशुभ १, त्रसदशक १०, उच गोत्र १, अंतराय ५; एव ७७ अस्ति, शेष ४५ नास्ति.

१	मि	७५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	७४	अनतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	७०	देवानुपूर्वी १ उतारी मिश्रमोहनीय १ मिले मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
४	अ	७१	आनुपूर्वी देवस्य १, सम्यक्त्वमोहनीय १ मिले

अथ सौधर्म आदि नव ग्रैवेयक पर्यंत रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ७६ अस्ति, स्त्रीवेद विना पूर्वोक्त; एव भवनपति आदि ३.

१	मि	७४	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	७३	अनतानुबधि ४ विच्छित्ति
३	मि	६९	देवानुपूर्वी १ उतारी, मिश्रमोहनीय १ मिली, मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
४	अ	७०	देवानुपूर्वी १, सम्यक्त्वमोहनीय १, एवं २ मिले

अनुत्तर ५ रचना गुणस्थान १—चौथा; उदयप्रकृति ७० है. पूर्वोक्त सामान्य देव रचनावाली ७७, तिण मध्ये मिथ्यात्व १, मिश्रमोहनीय १, अनंतानुबंधी ४, स्त्रीवेद १, एव ७ नास्ति.

४	अ	७०	० ० ० ०

अथ एकेंद्री रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ८०. ज्ञाना० ५, दर्शना० ४, वेदनीय २, मोहनीय २४, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, पुम (?) १ स्त्रीवेद विना, तिर्यंच-आयु १, तिर्यचद्विक २, औदारिक शरीर १, हुंड १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, शुभ १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १, थावर १, एकेंद्री १, परा-

घात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्द्योत १, पर्याप्त १, साधारण १, सूक्ष्म १, यश १, नीच गोत्र १, अंतराय ५; एवं ८०(?) है, शेष ४२ नही.

१	मि	८०	मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, स्त्यानगृद्धि ३, पराघात १, उच्छ्वास उद्द्योत १; एवं ११ विच्छित्ति
२	सा	६९	० ० ०

अथ विकलत्रय रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्र० ८१. ज्ञाना० ५, दर्शना० वेदनीय २, मिथ्यात्व १, कषाय १६, हास्य आदि ६, नपुंसकवेद १, तिर्यंच-आयु १, तिर्यंच द्विक २, औदारिकद्विक २, हुंडक १, छेवट्ठ १, विकलेंद्री स्वकीय १, तैजस १, कार्मण वर्ण(चतुष्क) ४, अपर्याप्त १, अथिर ६, त्रस ६, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात निर्माण १, उच्छ्वास १, उद्द्योत १, यश १, अप्रशस्त गति १, नीच गोत्र १, अंतराय एवं ८१ है.

१	मि	८१	मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्द्यो १, दुःस्वर १, अप्रशस्त गति १; एवं १० विच्छित्ति
२	सा	७१	० ० ०

अथ पंचेंद्री रचना गुणस्थान १४ सर्वे; उदयप्रकृति ११४ अस्ति. एकेंद्री १, थावर सूक्ष्म १, साधारण १, विकलत्रय ३, आतप १; एवं ८ नास्ति.

१	मि	१०९	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, एव उतारे. मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	१०६	नरकानुपूर्वी १ उतारी, अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	१००	शेष आनुपूर्वी ३ उतारी मिश्रमोहनीय १ मिली. मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
४	अ		आनुपूर्वी ४, सम्यक्त्वमोहनीय १, एवं ५ मिले

पांचमेसे लेकर सर्व गुणस्थानमे समुच्चयवत्.

अथ पृथ्वीकाय रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ७९. ज्ञाना० ५, दर्शना० ९ वेदनीय २, मिथ्यात्व १, कषाय १६, हास्य आदि ६, नपुसक १, तिर्यंच-आयु १, तिर्यंच द्विक २, औदारिक १, हुंडक १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, शुभ १, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, निर्माण १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्द्योत १, पर्याप्त १, एकेंद्री १, यश १, थावर १, सूक्ष्म १, नीच गोत्र १, अंतराय ५; एवं ७९ है. ४३ नही.

१	मि	७९	मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १, आतप १, सूक्ष्म १, थीणत्रिक ३, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्द्योत १; एवं १० विच्छित्ति
२	सा	६९	० ० ०

अथ अप्कायरचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ७८ है. पूर्वोक्त ७९, आतप १ विना.

१	मि	७८	मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १, सूक्ष्म १, थीणत्रिक ३, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १ विच्छित्ति
२	सा	६९	० ० ०

अथ तेजोवायुकाय रचना गुणस्थान १–मिथ्यात्व; उदयप्रकृति ७७ है. पूर्वोक्त ७९ आतप १, उद्योत १ विना.

अथ वनस्पतिकाय रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति (७९). ज्ञाना० ५, दर्शना० ९, अंतराय ५, मिथ्यात्व १, कषाय १६, हास्य आदि ६, नपुंसक १, तिर्यंचत्रिक ३, नीच गोत्र १, औदारिक १, हुडक १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, शुभ १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, पर्याप्त १, साधारण १, एकेंद्री १, यश १, थावर १, सूक्ष्म १, वेदनी २, सर्व अस्ति ७९, शेष ४३ नास्ति.

१	मि	७८	मिथ्यात्व १, सूक्ष्मत्रिक १, थीणत्रिक ३, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १ विच्छित्ति
२	सा	६९	० ० ०

अथ त्रसकाय रचना गुणस्थान १४ सर्व; उदयप्रकृति ११७ अस्ति. थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, एकेंद्री १, आतप १; एवं ५ नास्ति.

१	मि	११२	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, एवं ५ उतारे मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १, एवं २ विच्छित्ति
२	सा	१०९	नरकानुपूर्वी १ उतारी. अनंतानुबंधि ४, विकलत्रय ३ विच्छित्ति
३	मि	१००	शेष आनुपूर्वी ३ उतारी मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	१०४	आनुपूर्वी ४, सम्यक्त्वमोहनीय १ मिले

पांचमेसे लेकर चौदमे ताइं समुच्चयवत् जानना.

अथ मनचतुष्क आदि वचनत्रिक, एवं ७ योगरचना गुणस्थान १२ आदिके उदयप्रकृति १०९ अस्ति. एकेंद्री १, थावर १, सूक्ष्मत्रिक ३, आतप १, विकलत्रय ३, आनुपूर्वी ४, एवं १३ नास्ति.

१	मि	१०८	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १ वि०
२	सा	१०३	अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	१००	मिश्रमोह० १ मिली मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	१००	सम्यक्त्वमोह० १ मिले अप्रत्याख्यान ४, वैक्रियद्विक २, देवगति १, नरकगति १, देव आयु १, नरक आयु १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १ विच्छित्ति
५	दे	८७	० ० ०

आगले गुणस्थानोमें समुच्चयवत् जानना.

अथ व्यवहार वचन योग रचना गुणस्थान १३ आदिके उदयप्रकृति ११२ है. एकेंद्री १, थावर १, सूक्ष्मत्रिक ३, आतप १, आनुपूर्वी ४; एवं १० नास्ति.

१	मि	१०७	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १ वि०
२	सा	१०६	अनंतानुबंधि ४, विकलत्रय ३; एवं ७ विच्छित्ति.
३	मि	१००	मिश्रमोह० १ मिली. मिश्रमोह० १ विच्छित्ति.
४	अ	१००	सम्यक्त्वमोह० १ मिली. अप्रत्याख्यान ४, वैक्रियद्विक २, देवगति १, देव-आयु १, नरकगति १, नरक-आयु १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १ विच्छित्ति.
५	दे	८७	० ० ०

आगले गुणस्थानोमे समुच्चयवत् जानना.

अथ औदारिक काय योगरचना गुणस्थान १३ आदिके उदयप्रकृति १०९ अस्ति. आहारकद्विक २, वैक्रियकद्विक २, आनुपूर्वी ४, देवगति १, देव-आयु १, नरकगति १, नरक-आयु १, अपर्याप्त १; एवं १३ नास्ति.

१	मि	१०६	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्म १, साधारण १, एवं ४ विच्छित्ति.
२	सा	१०२	अनंतानुबंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, एवं ९ विच्छित्ति
३	मि	९४	मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	,,	सम्यक्त्व १ मिले अप्रत्याख्यान ४, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १ विच्छित्ति
५	दे	८७	प्रत्याख्यान ४, तिर्यंच गति १, तिर्यंच-आयु १, नीच गोत्र १, उद्योत १, एव ८ वि०
६	प्र	७९	० ० ०

आगले गुणस्थानोमे समुच्चयवत्.

अथ औदारिकमिश्र योग रचना गुणस्थान ४—पहिलो, दूजो, चौथो, तेरमो; उदयप्रकृति ९८ है. आहारकद्विक २, वैक्रियद्विक २, आनुपूर्वी ४, देवगति १, देव-आयु १, नरकगति १, नरक-आयु १, मिश्रमोह० १, थीणत्रिक ३, दुःस्वर १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १; एवं २४ (?) नही.

१	मि	९६	सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १ [illegible] १, [illegible] ३ विच्छित्ति
२	सा	९२	अनंतानु० ४, एकेंद्रिय १, थावर [illegible] ३, दुर्भग [illegible] १, अयश १, नपुंसकवेद १ स्त्री १, एवं १४

अथ वैक्रिय योग रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ८६ है. ज्ञानावरण ५, दर्शना० ६ थीणत्रिक विना, वेदनीय २, मोहनीय २८, अंतराय ५, गोत्र २, देवगति १, देव-आयु १, वैक्रियद्विक २, पचेंद्री १, तैजस १, कार्मण १, समचतुरस्र १, हुडक १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, उपघात १, उच्छ्वास १, निर्माण १, अथिर १, अशुभ १, त्रसदशक १०, दुःस्वर १, अनादेय १, अयश १, नरकगति १, नरक-आयु १, दुर्भग १; एवं ८६ (?) अस्ति, शेष ३६ नास्ति.

१	मि	८४	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	८३	अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	८०	मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	८०	सम्यक्त्वमोह० मिले

अथ वैक्रियमिश्र योग रचना गुणस्थान ३–प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ; उदयप्रकृति ७९ अस्ति. पूर्वोक्त ८६ तिण मध्ये मिश्रमोह० १, पराघात १, उच्छ्वास १, सुस्वर १, दुःस्वर १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १; एवं ७ नास्ति.

१	मि	७८	सम्यक्त्वमोह० १ उतारी मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	६९	नरकगति १, नरक आयु १, नीच गोत्र १, हुडक १, नपुसक १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एव ८ उतारे अनंता० ४, स्त्रीवेद १; एव ५ विच्छित्ति
४	अ	७३	सम्यक्त्वमोह० १, नरकगति १, नरक आयु १, नीच गोत्र १, हुडक १, नपुसकवेद १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एव ९ मिले

अथ आहारक योग रचना गुणस्थान १–प्रमत्त; उदयप्रकृति ६१ अस्ति. मिथ्यात्व १, मिश्रमोह० १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, अनंता० ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, अप्रत्या० ४, वैक्रियकद्विक २, देवगति १, देव-आयु १, नरक-गति १, नरक-आयु १, आनुपूर्वी ४, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, प्रत्या० ४, तिर्यंच आयु १, नीच गोत्र १, तिर्यंच गति १, उद्द्योत १, तीर्थंकर १, एवं ४१ नास्ति, शेष ६१ षष्ठ गुणस्थान अस्ति. तिण मध्ये थीणत्रिक ३, नपुसकवेद १, स्त्रीवेद १, अप्रशस्त गति १, दुःस्वर १, संहनन ६, औदारिकद्विक २, संस्थान ५ समचतुरस्र विना; एवं २० नास्ति, शेष ६१ अस्ति.

अथ आहारकमिश्र योग रचना गुणस्थान १–प्रमत्त; उदयप्रकृति ५७ अस्ति. पूर्वोक्त ६१ तिण मध्ये सुस्वर १, पराघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त गति १; एव ४ नही.

अथ कार्मण योग रचना गुणस्थान ४–पहिला, दूजा, चौथा, तेरमा; उदयप्रकृति ८९ अस्ति. सुस्वर १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १, प्रत्येक १, साधारण १, आहारकद्विक २, औदारिकद्विक २, मिश्रमोह० १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्द्योत १, वैक्रियद्विक २, थीणत्रिक ३, संस्थान ६, संहनन ६; एव ३३ (?) नास्ति.

१	मि	८७	सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	८१	नरकत्रिक उतारे अनंता० ४, एकेंद्रि १, थावर १, विकलत्रय ३, स्त्रीवेद १, एवं १० विच्छित्ति
४	अ	७५	सम्यक्त्वमोह० १, नरकत्रिक ३ मिले अप्रत्या० ४, देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, तिर्यंचत्रिक ३, मनुष्यानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, प्रत्या० ४, नीच गोत्र १, सम्यक्त्वमोह० १, नपुंसकवेद १, पुरुषवेद १, हास्य आदि ६, सज्वलन ४, निद्रा १, प्रचला १, आवरण ९, अंतराय ५, एवं ५१ विच्छित्ति
१३	स	२५	तीर्थंकर १ मिले

अथ पुरुषवेद रचना गुणस्थान ९ आदिके उदयप्रकृति १०७ है. थावर १, सूक्ष्मत्रिक ३, नरकत्रिक ३, विकलत्रिक ३, एकेंद्री १, स्त्रीवेद १, नपुंसकवेद १, आतप १, तीर्थंकर १; एवं १० (?) नास्ति.

१	मि	१०३	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	१०२	अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	९६	आनुपूर्वी ३ नरक विना उतारी मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९९	सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ३ नरक विना, एवं ४ मिले अप्रत्या० ४, वैक्रियद्विक २, देवत्रिक ३, मनुष्यानुपूर्वी १, तिर्यंचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एव १४ विच्छित्ति
५	दे	८५	प्रत्या० ४, तिर्यंच आयु १, नीच गोत्र १, उद्योत १, तिर्यंच गति १ विच्छित्ति
६	प्र	७९	आहारकद्विक २ मिले थीणत्रिक ३, आहारकद्विक २ विच्छित्ति
७	अ	७४	सम्यक्त्वमोह० १, अंतके सहनन ३, एव ४ विच्छित्ति
८	अ	७०	हास्य आदि ६ विच्छित्ति
९	अ	६४	० ० ० ०

अथ स्त्रीवेद रचना गुणस्थान ९ आदिके उदयप्रकृति १०५ अस्ति. पूर्वोक्त १०७, स्त्रीवेद १; एवं १०८, तिण मध्ये आहारकद्विक २, पुरुषवेद १; एवं ३ नही.

१	मि	१०३	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	१०२	अनंता० ४, आनुपूर्वी ३ नरक विना, एवं ७ विच्छित्ति
३	मि	९६	मिश्रमोह० १ मिली मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	,,	सम्यक्त्वमोह० १ मिले अप्रत्या० ४, देवगति १, देव आयु १, वैक्रियद्विक २, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एव ११ विच्छित्ति
५	दे	८५	प्रत्या० ४, तिर्यंच आयु १, उद्योत १, नीच गोत्र १, तिर्यंच गति १ विच्छित्ति

६	प्र	७७	थीणत्रिक ३ विच्छित्ति
७	अ	७४	सम्यक्त्वमोह० १, अतके सहनन ३, एव ४ विच्छित्ति
८	अ	७०	हास्य आदि ६ विच्छित्ति
९	अ	६४	० ० ०

अथ नपुसक वेद रचना गुणस्थान ९ आदिके उदयप्रकृति ११४ है. आहारकद्विक २, तीर्थकर १, देवत्रिक ३, स्त्रीवेद १, पुरुषवेद १; एवं ८ नही.

१	मि	११२	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १ उतारे मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३ वि०
२	सा	१०६	नरकानुपूर्वी १ उतारी अनता० ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, मनुष्यानुपूर्वी १, तिर्यचापूर्वी १; एवं ११ विच्छित्ति
३	मि	९६	मिश्रमोह० १ मिली मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९७	सम्यक्त्वमोह० १, नरकानुपूर्वी १ मिले अप्रत्या० ४, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एव १२ विच्छित्ति
५	दे	८५	प्रत्या० १, तिर्यंच-आयु १, उद्योत १, नीच गोत्र १, तियच गति १ विच्छित्ति
६	प्र	७७	थीणत्रिक ३ विच्छित्ति
७	अ	७४	सम्यक्त्वमोह० १, अतके सहनन ३, एव ४ विच्छित्ति
८	अ	७०	हास्य आदि ६ विच्छित्ति
९	अ	६४	० ० ०

अथ क्रोधचतुष्क रचना गुणस्थान ९ आदिके उदयप्रकृति १०९ अस्ति. तीर्थकर १, मान ४, माया ४, लोभ ४; एवं १३ नास्ति.

१	मि	१०५	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २ उतारे मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, एव ५ विच्छित्ति
२	सा	९९	नरकानुपूर्वी १ उतारी अनता० क्रोध १, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, एव ६ विच्छित्ति
३	मि	९१	आनुपूर्वी ३ नरक विना उतारी मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९५	सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ४ मिले अप्रत्या० क्रोध १, वैक्रियक अष्टक ८, मनुष्यानुपूर्वी १, तिर्यचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एव १४ विच्छित्ति
५	दे	८१	प्रत्या० क्रोध १, तिर्यंच आयु १, नीच गोत्र १, उद्योत १, तिर्यंच गति १ विच्छित्ति
६	प्र	७८	आहारकद्विक २ मिले थीणत्रिक ३, आहारकद्विक २ विच्छित्ति
७	अ	७३	सम्यक्त्वमोह० १, अतके संहनन ३, एव ४ विच्छित्ति
८	अ	६९	हास्य आदि ६ विच्छित्ति
९	अ	६३	० ० ०

एवं मानचतुष्क; एवं माया ४, एवं लोभ ४. इतना विशेष—आपणे अपणे चतुष्क करी जानना. लोभ दशमे ताइं है सोइ नवमे गुणस्थानकी ६३ माहिथी वेद तीनकी विच्छित्ति कर्या ६० रही. अपणी बुद्धिसें विचार लेना.

अथ मति-अज्ञान, श्रुत-अज्ञान रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ११७ पहिले, १११ दूजे, समुच्चयवत्.

अथ विभंगज्ञान रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति १०६ अस्ति. एकेंद्री १, आतप १, विकलत्रय ३, थावरचतुष्क ४, आनुपूर्वी मनुष्यकी १, तिर्यचकी १, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एवं १६ नास्ति.

१	मि	१०६	मिथ्यात्व १, नरकानुपूर्वी १ विच्छित्ति
२	सा	१०४	० ० ०

अथ ज्ञानत्रय रचना गुणस्थान ९ अविरतिसम्यग्दृष्टि आदि; उदयप्रकृति १०६ है. मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, अनंता० ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, मिश्रमोह० १, तीर्थंकर १; एवं १६ नास्ति.

४	अ	१०४	आहारकद्विक २ उतारे. अप्रत्या० ४, वैक्रिय-अष्टक ८, मनुष्यानुपूर्वी १, तिर्यचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १ विच्छित्ति
५	दे	८७	० ० ०

आगे सर्वत्र समुच्चयगुणस्थानवत्. मनःपर्याय छट्ठेसे लेकर पूर्वोक्तवत्. केवलज्ञान १३।१४ मे वत्. सामायिक, छेदोपस्थापनीय छट्ठेसे नवमे लग समुच्चयवत्.

अथ परिहारविशुद्धि रचना गुणस्थान २—प्रमत्त, अप्रमत्त; उदयप्रकृति ७८ है. पूर्वोक्त छट्ठेकी ८१; तिण मध्ये स्त्रीवेद १, आहारकद्विक २; एवं ३ नही. सातमे थीणत्रिक नही ७५. सूक्ष्मसंपराय दशमे वत्. यथाख्यातमे ११।१२।१३।१४ मे गुणस्थानवत् जान लेनी. देशविरते ८७. अथ असंयम प्रथम चार गुणस्थानवत्.

अथ चक्षुदर्शन रचना गुणस्थान १२ आदिके उदयप्रकृति १०९ है. तीर्थंकर १, साधारण १, आतप १, एकेंद्री १, थावर १, सूक्ष्म १, बेंद्री १, तेंद्री १ आनुपूर्वी ४, अपर्याप्त १; एवं १३ नही.

१	मि	१०५	मिश्रमोह०१, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, एव ४ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	१०४	अनतानुबधि ४, चौरिंद्री १, एवं ५ विच्छित्ति
३	मि	१००	मिश्रमोह० १ मिली मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	,,	सम्यक्त्वमोह० १ मिली

आगे समुच्चयगुणस्थानवत्.

अचक्षुर्दर्शनमें गुणस्थान १२ आदिके उदयप्रकृति १२१. तीर्थकर १ नास्ति. गुणस्थानोमे समुच्चयवत् पहिले ११७, दूजे १११ इत्यादि. अवधिदर्शन अवधिज्ञानवत्. केवलदर्शन केवलज्ञानवत्.

अथ कृष्ण, नील, कापोत लेश्या रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ११९ है. आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एवं ३ नास्ति.

१	मि	११७	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १ उतारे मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, नरकानुपूर्वी १, एव ६ विच्छित्ति
२	सा	१११	अनता० ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, देवानुपूर्वी १, तिर्यचानुपूर्वी १, एवं ११ विच्छित्ति
३	मि	१००	मनुष्यानुपूर्वी १ उतारी मिश्रमोह० १ मिली मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	१०४	आनुपूर्वी ४, सम्यक्त्वमोह० १, एव ५ मिली

अथ तेजोलेश्या रचना गुणस्थान ७ आदिके उदयप्रकृति १०१ है. आतप १, विकलत्रय ३, सूक्ष्मत्रिक ३, नरकत्रिक ३, तीर्थंकर १; एवं ११ नास्ति

१	मि	१०७	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, एवं ४ उतारे मिथ्यात्व १ वि०
२	सा	१०६	अनतानुबंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, एव ६ विच्छित्ति
३	मि	९८	आनुपूर्वी ३ उतारे मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	१०१	सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ३; एव ४ मिले वैक्रियद्विक २, अप्रत्या० ४, देवत्रिक ३, आनुपूर्वी ३, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एव १४ (?) विच्छित्ति
५	दे	८७	प्रत्या० ४, तिर्यंच-आयु १, नीच गोत्र १, उद्योत १, तिर्यंच गति १ विच्छित्ति
६	प्र	८१	आहारकद्विक २ मिले थीणत्रिक ३, आहारकद्विक २ विच्छित्ति
७	अ	७६	० ० ०

अथ पद्मलेश्या रचना गुणस्थान ७ आदिके उदयप्रकृति १०९ है. आतप १, एकेंद्री १, थावरचतुष्क ४, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, तीर्थंकर १; एवं १३ नास्ति. १०५।१०४। ९८, चौथे १०१।८७।८१।७६.

अथ शुक्ललेश्या रचना गुणस्थान १३ आदिके उदयप्रकृति ११० अस्ति. आतप १, एकेंद्री १, विकलत्रय ३, थावरचतुष्क ४, नरकत्रिक ३, एवं १२ नास्ति.

१	मि	१०५	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, एव ५ उतारे. मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	१०४	अनतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	९८	आनुपूर्वी ३ उतारी मिश्रमोह० १ मिली मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	१०१	सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ३ मिले

आगे गुणस्थान समुच्चयवत्. अथ भव्यरचना गुणस्थानवत् १४ सर्वे. अथ अभव्य प्रथम गुणस्थानवत्.

अथ उपशम रचना गुणस्थान ८ चौथा आदि उदयप्रकृति १०० है. मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, अनंतानुबंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ३ देव विना, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एवं २२ नास्ति.

४	अ	१००	अप्रत्याख्यान ४, वैक्रियद्विक २, देवत्रिक ३, नरकगति १, नरक-आयु १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एव १४ व्यवच्छेद
५	दे	८६	प्रत्याख्यान ४, तिर्यच-आयु १, नीच गोत्र १, उद्योत १, तिर्यंच गति १ विच्छित्ति
६	प्र	७८	थीणत्रिक ३ विच्छित्ति
७	अ	७५	०

आगले च्यार गुणस्थानोमे समुच्चय गुणस्थानवत्.

अथ क्षयोपशम सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ४–४।५।६।७ समुच्चयगुणस्थानवत्.

अथ क्षायिक सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ११–चौथा आदि; उदयप्रकृति १०६ है. मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, अनंतानुबंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १; एवं १६ नास्ति.

४	अ	१०३	आहारकद्विक २, तीर्थंकर १ उतारे अप्रत्या० ४, वैक्रिय-अष्टक ८, मनुष्य-आनुपूर्वी १, तिर्यच-आनुपूर्वी १, तिर्यच-आयु १, उद्योत १, तिर्यच गति १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एवं २० विच्छित्ति
५	दे	८३	प्रत्याख्यान ४, नीच गोत्र १ विच्छित्ति
६	प्र	८०	आहारकद्विक २ मिले थीणत्रिक ३, आहारकद्विक २ विच्छित्ति
७	अ	७५	०

आगे समुच्चयवत्. अथ मिश्र १, सास्वादनसम्यक्त्व १, मिथ्यात्व १, आपणे आपणे गुणस्थानवत्.

अथ संज्ञी रचना गुणस्थान १२ आदि के उदयप्रकृति ११३ अस्ति. एकेंद्री १, थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, विकलत्रय ३, तीर्थंकर १; एवं ९ नास्ति.

१	मि	१०९	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, एव ४ उतारे मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	१०६	नरक-आनुपूर्वी १ उतारी अनतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	१००	आनुपूर्वी ३, नरक विना उतारी मिश्रमोह० १ मिली

आगे समुच्चयवत्.

अथ असंज्ञी रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ९४ अस्ति. उंच गोत्र १, वैक्रियछक ६, संहनन ५ छेवट्ट विना, संस्थान ५ हुडक विना, प्रशस्त गति १, सुभगत्रिक ३, आयु २ देव, नरककी, आहारकद्विक २, तीर्थकर १, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १; एवं २८ नही.

१	मि	९४	मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, थीणत्रिक ३, पराघात १, मनुष्यत्रिक ३, उच्छ्वास १, उद्योत १, दु:स्वर १, अप्रशस्त गति १, एव १६ विच्छित्ति.
२	स	७८	०

अथ आहारक रचना गुणस्थान १३ है; आदिके उदय प्रकृति ११८; आनुपूर्वी ४ नही.

१	मि	११३	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, एवं ५ उतारे मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३; एव ५ विच्छित्ति.
२	सा	१०८	अनतानुबधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, एवं ९ विच्छित्ति
३	मि	१००	मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	,,	सम्यक्त्वमोह० १ मिली

आगे सर्व समुच्चयवत्.

अथ अनाहारक रचना गुणस्थान ४–पहिलो, दूजो, चौथो, तेरमो; उदयप्रकृति ८९ अस्ति. दु:स्वर १, सुस्वर १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १, प्रत्येक १, साधारण १, आहारकद्विक २, औदारिकद्विक २, मिश्रमोह० १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, वैक्रियद्विक २, थीणत्रिक ३, संहनन ६, सस्थान ६; एवं ३३ नास्ति.

१	मि	८७	सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	८१	नरकत्रिक उतारे अनतानुबधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, स्त्रीवेद १; एवं १० विच्छित्ति.
४	अ	७५	सम्यक्त्वमोह० १, नरकत्रिक ३ मिले अप्रत्याख्यान आदि अतराय पर्यंत ५१ विच्छित्ति व्योरा कार्मणरचनावत्
१३	स	२५	तीर्थंकर १ मिले

इति उदयाधिकार समाप्त.

अथ सत्ताधिकार कथ्यते. अथ घर्मा आदि नरकत्रय रचना गुणस्थान ४ आदि; सत्ताप्रकृति १४७. देव-आयु नही.

१	मि	१४७	०
२	सा	१४६	तीर्थंकर १ उतारे
३	मि	,,	०
४	अ	१४७	तीर्थंकर १ मिले

१	मि	१४६	०	अंजना आदि त्रयमे देव-आयु १, तीर्थंकर १; एवं २ नास्ति सातमीमे तीर्थंकर १, देव आयु १, मनुष्य-आयु १; एवं ३ नही १४५ मि. १४५ सा १४५ मि १४५ अ
२	सा	,,	,,	
३	सि	,,	,,	
४	अ	,,	,,	

अथ सामान्य तिर्यंच रचना गुणस्थान ४ आदिके सत्ताप्रकृति १४७; तीर्थंकर १ नही. पहिले १४७, दूजे १४७, तीजे १४७, चौथे १४७; मनुष्य रचना गुणस्थान १४ वत्.

अथ सौधर्म आदि सहस्रार पर्यंत देवलोक रचना गुणस्थान ४; सत्ताप्रकृति १४७; नरक-आयु नास्ति. अथ आनत आदि नव ग्रैवेयक पर्यंत सत्ता० १४६; नरक १, तिर्यंच-आयु नही.

१	मि	१४६	तीर्थंकर १ उतारे
२	सा	,,	०
३	मि	,,	०
४	अ	१४७	तीर्थंकर १ मिले

१	मि	१४५	तीर्थंकर १ उतारे
२	सा	,,	०
३	मि	,,	०
४	अ	१४६	तीर्थंकर १ मिले

अथ ५ अनुत्तर रचना गुणस्थान १—चौथा, सत्ता० १४६, नरक आयु १, तिर्यंच-आयु १; एवं २ नही.

अथ भवनपति, व्यंतर १, जोतिषि १, सर्व देवी १, रचना गुणस्थान ४ आदिके सत्ताप्रकृति १४६ अस्ति. तीर्थंकर १, नरक-आयु १; एवं २ नास्ति.

१	मि	१४६	०
२	सा	,,	०
३	मि	,,	०
४	अ	,,	०

अथ एकेंद्री विकलत्रय रचना गुणस्थान २ आदिके सत्ताप्रकृति १४५ अस्ति तीर्थंकर १, नरक आयु १, देव आयु १ नही. अथ पंचेंद्री रचना गुणस्थानवत्

१	मि	१४५
२	सा	,,

अथ पृथ्वीकाय १, अप्काय १, वनस्पतिकाय रचना एकेंद्री विकलत्रय रचनावत्. अथ तेजोवातकाय रचना गुणस्थान १—मिथ्यात्व १; सत्ताप्रकृति १४४ है. तीर्थंकर १, देव आयु १, मनुष्य-आयु १, नरक-आयु १; एवं ४ नास्ति. अथ त्रसकाय रचना गुणस्थानवत्. अथ मनोयोगचतुष्क ४, वचनयोगचतुष्क ४, औदारिककाययोग १; एवं योग ९ गुणस्थान रचनावत्. अथ वैक्रियकाययोग रचना गुणस्थान ४ आदिके सत्ताप्रकृति १४८; पहिले १४८, दूजे १४७, तीजे १४७, चौथे १४८.

अथ आहारक आहारक मिश्र रचना गुणस्थान १—प्रमत्त; सत्ताप्रकृति १४८ सर्वे.

अथ औदारिकमिश्रयोग रचना गुणस्थान ४—पहिला, दूजा, चौथा, तेरमा; सत्ता० १४६ अस्ति. देव-आयु १, नरक-आयु १ नही.

१	मि	१४५	तीर्थंकर १ उतारे
२	सा	,,	०
४	अ	१४६	तीर्थंकर १ मिले सातमे गुणस्थानकी, नवमे गुण०की, दशमे गुण०की, बारमे गुण०की; एव ६१ की विच्छित्ति शेष ८५ रही तेरमे गुणस्थानमे
१३	स	८५	०

अथ नरकगति मिश्रवैक्रियका गुणस्थान २-पहिला, चौथा; सत्ता० १४५. मनुष्य-आयु १, तिर्यच-आयु १, देव-आयु १; एव ३ नही. पहिले १४५, चौथे १४५ है.

अथ देवगति संबंधि वैक्रियकमिश्रयोग रचना गुणस्थान ३-पहिला, दूजा, चौथा; सत्ता० १४५. मनुष्य-आयु १, तिर्यच-आयु १, नरक-आयु १; एव ३ नही.

अथ कार्मणरचना गुणस्थान ४-पहिला, दूजा, चौथा, तेरमा; सत्ता० १४८ सर्व सन्ति.

१	मि	१४४	तीर्थंकर १ उतारे
२	सा	,,	०
४	अ	१४५	तीर्थंकर १ मिले
०	०	०	०

१	मि	१४८	०
२	सा	१४६	तीर्थंकर १, नरक आयु १ उतारे
४	अ	१४८	तीर्थंकर १, नरक-आयु १ मिले
१३	स	८५	रही ८५का व्योरा गुणस्थानवत्

अथ वेद तीनो नव गुणस्थान लग समुचयगुणस्थानवत् जानना. अथ अनतानुबंधिचतुष्क रचना गुणस्थान २ आदिके सत्ता० पहिले १४८, दूजे १४७. अथ अप्रत्याख्यान ४ रचना गुणस्थान ४ आदि सत्ता० समुचयगुणस्थानवत्. अथ प्रत्याख्यानमे गुणस्थान ५ आदिके रचना समुचयगुणस्थानवत्. अथ संज्वलन क्रोध १, मान १, माया १ नवमे ताइ लोभ दशमे ताइ समुचयवत्. अथ अज्ञानत्रय रचना गुणस्थान २ आदिके सत्ता० समुचयवत् जानना. अथ ज्ञानत्रय रचना गुणस्थान ९ चौथा आदि बारमे लग सत्ता० १४८ समुचवत्. अथ मनःपर्यायज्ञानरचना गुणस्थान ७-प्रमत्त आदि; सत्ता० १४८ सर्वे, समुचयवत्. केवलज्ञानमे सत्ता० ८५ की, गुणस्थान १३।१४ मा समुचयवत्. अथ सामायिक, छेदोपस्थापनीय रचना गुणस्थान ४-प्रमत्त आदि; सत्ता० १४८ समुचयवत्. अथ परिहारविशुद्धि रचना गुणस्थान २-प्रमत्त, अप्रमत्त; सत्ताप्रकृति १४८ समुचयवत्. सूक्ष्मसंपराय चारित्र दशमेवत्. अथ यथाख्यात रचना ११।१२।१३।१४ मे वत्. अथ देशविरति पंचमे वत्. अथ असयम रचना आदिके ४ गुणस्थानो वत्. अथ अचक्षु, चक्षुदर्शन रचना गुणस्थानरचनावत् गुणस्थान १२ पर्यंत. अथ अवधिदर्शन रचना अवधिज्ञानवत्. अथ केवलदर्शन केवलज्ञानवत्. अथ कृष्ण, नील लेश्या, कापोत लेश्या रचना गुणस्थान ४ प्रथमवत्. अथ तेजो पद्मलेश्या रचना गुणस्थान ७ आदिके समुचयवत्. अथ शुक्ल लेश्या रचना गुणस्थान १३ आदिके रचना १४८ सत्ता० समुचयवत्. अथ भव्य रचना गुणस्थानवत्. अथ अभव्य रचना गुणस्थान १-मिथ्यात्व; सत्ताप्रकृति १४१. मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, आहारकबंधन १, आहारकसघातन १; एवं ७ नही. अथ उपशमसम्यक्त्वरचना गुणस्थान ८-अविरतिसम्यग्दृष्टि आदि; सत्ता० सर्व गुणस्थानोकी १४८ जाननी. अथ क्षयोपशमसम्यक्त्व रचना गुणस्थान ४-अविरतिसम्यग्दृष्टि आदि; सत्ता० १४८ समुचयगुणस्थानवत्. अथ क्षायिक सम्यक्त्वरचना गुणस्थान ११-अविरतिसम्यग्दृष्टि आदि, सत्ताप्रकृति १४१ अस्ति. अनंतानुबंधि ४, मिथ्यात्व १, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १; एवं ७ नास्ति. यंत्र नाम मात्र लिख्या. विस्तार समुचयसत्ताथी जानना

४	अ	१४१	
५	दे	,,	
६	प्र	,,	
७	अ	,,	आयु ३ की विच्छित्ति
८	अ	१३८	०
९	अ	,,	भाग ९करी ३६की विच्छित्ति व्यौरा गुणस्थानरचनावत्
१०	सू	१०२	संज्वलन लोभ विच्छित्ति
११	उ	१०१	०
१२	क्षी	,,	निद्रा १, प्रचला १, ज्ञानावरण ५, दर्शना० १, वर्ण ४, अंतराय ५ विच्छित्ति
१३	स	८५	०
१४	अ	,,	० ८५ व्यवच्छेदे मुक्तौ

मिथ्यात्व मिथ्यात्ववत्. सास्वादन सास्वादनवत्, मिश्र मिश्रगुणस्थानवत्. अथ संज्ञी रचना गुणस्थानरचनावत् गुणस्थान १२ पर्यंत. अथ असंज्ञी रचना गुणस्थान २ आदिके सत्ता० १४७ अस्ति; तीर्थंकर १ नहीं. पहिले १४७, दूजे १४७. अथ आहारक रचना गुणस्थानरचनावत् १३ लगे. अथ अनाहारक रचना कार्मणयोगरचनावत्. इति सत्ताधिकार संपूर्ण.

(१६५) उत्कृष्ट प्रकृतियन्धयन्त्रम् (१६६)
शतकात्

(१६७) अथ स्थितिबंध अल्पबहुत्व संख्या

यति सूक्ष्म संपराय जघन्य	स्तो १	चउरिंद्री अपर्याप्त जघन्य	वि १९
बादर एकेंद्री पर्याप्त ,,	अस २	,, ,, उत्कृष्ट	,, २०
सूक्ष्म ,, ,, ,,	नि ३	,, पर्याप्त ,,	,, २१
बादर ,, अपर्याप्त ,,	,, ४	असन्नी पचेंद्री पर्याप्त जघन्य	सं २२
सूक्ष्म ,, ,, ,,	,, ५	,, ,, अपर्याप्त ,,	वि २३
,, ,, ,, उत्कृष्ट	,, ६	,, ,, ,, उत्कृष्ट	,, २४
बादर ,, ,, ,,	,, ७	,, ,, पर्याप्त ,,	,, २५
सूक्ष्म ,, पर्याप्त ,,	,, ८	यतिना उत्कृष्ट स्थितिबंध	स २६
बादर ,, ,, ,,	,, ९	देशविरति जघन्य स्थिति	,, २७
बेइंद्री पर्याप्त जघन्य	स १०	,, उत्कृष्ट ,,	,, २८
,, अपर्याप्त ,,	वि ११	अविरतिसम्यग्दृष्टि पर्याप्त जघन्य	,, २९
,, ,, उत्कृष्ट	,, १२	,, अपर्याप्त ,,	,, ३०
,, पर्याप्त ,,	,, १३	,, ,, उत्कृष्ट	,, ३१
तेइंद्री ,, जघन्य	,, १४	,, पर्याप्त ,,	,, ३२
,, अपर्याप्त ,,	,, १५	सन्नी ,, जघन्य	,, ३३
,, ,, उत्कृष्ट	,, १६	,, अपर्याप्त ,,	,, ३४
,, पर्याप्त ,,	,, १७	,, ,, उत्कृष्ट	,, ३५
चउरिंद्री पर्याप्त जघन्य	,, १८	,, पर्याप्त ,,	,, ३६

(१६८) अथ ४१ प्रकृतिका अबंध कालयंत्र

प्रकृति	अबंधकाल
नरकत्रिक ३, तिर्यंचत्रिक ३, उद्योत १, एव सर्वे ७	१६३ सागरोपम, ४ पल्योपम मनुष्य-भव अधिक जुगलियाने
थावरचतुष्क ४, एकेंद्री १, विकलत्रिक ३, आतप १	१८५ सागरोपम, ४ पल्योपम मनुष्यभव अधिक नारकने
प्रथम संहनन वर्जी ५ संहनन, प्रथम संस्थान वर्जी ५ संस्थान, अशुभ गति १, अनंतानुबंधि ४, मिथ्यात्व १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, थीणत्रिक ३, नीच गोत्र १, नपुंसकवेद १, स्त्रीवेद १	१३२ सागरोपम मनुष्य-भवे अधिक यति भव आदि देइ पंचेंद्रीने अबंधस्थिति

अथ १६३।१८५ कह्या ते पूरवाना ठाम लिख्यते. विजय आदिकने विषय दो रे वार तीन वार अच्युतने विषय १३२ एक ग्रैवेयकने विषे १६३, इम तमाने विषे १८५.

(१६९) अथ ७३ अध्रुवबंधनो उत्कृष्ट जघन्य निरंतर बन्धयन्त्र

प्रकृतिनामानि	निरंतर बन्ध
सुरद्विक २, वैक्रियद्विक २	तीन पल्योपम
तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, नीच गोत्र १	समयथी लइ असंख्य काल
आयु ४	१ अंतर्मुहूर्त
औदारिक शरीर १	असंख्य पुद्गलपरावर्त
सातावेदनीय १	देश ऊन पूर्व कोड
पराघात १, उच्छ्वास १, पचेंद्री १, त्रसचतुष्क ४	१३२ सागरोपम
शुभ विहायगति १, पुरुषवेद १, सुभगत्रिक ३, उंच गोत्र १, समचतुरस्र संस्थान १, अशुभ विहायगति १, जाति ४, अशुभ सहनन ५, अशुभ संस्थान ५, आहारकद्विक २, नरकगति १, नरकानुपूर्वी १, उद्योत १, आतप १, थिर १, शुभ १, यश १, स्थावरदशक १०, नपुंसकवेद १, स्त्रीवेद १, हास्य १, रति १, अरति १, शोक १, असातावेदनीय १	जघन्य उत्कृष्ट समयथी लेइ अंतर्मुहूर्त
मनुष्यद्विक २, जिननाम १, वज्रऋषभनाराच १, औदारिक अगोपांग १	३३ सागर, जघन्य अंतर्मुहूर्त

(१७०) अथ उत्कृष्ट रसबन्धस्वामियन्त्रं शतककर्मग्रन्थात्

प्रकृतिनामानि	रसबन्धस्वामि
पर्केद्री १, थावर १, आतप १	मिथ्यात्वी ईशानात देवता बांधे
विकलत्रिक ३, सूक्ष्मत्रिक ३, तिर्यंच आयु १, मनुष्य आयु १, नरकत्रिक ३,	मिथ्यात्वी तिर्यंच, मनुष्य
तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, छेवट्ठ १,	देवता, नारकी
वैक्रियद्विक २, देवगति १, देवानुपूर्वी १, आहारकद्विक २, शुभ विहायोगति १, शुभ वर्णचतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १, निर्माण १, जिननाम १, सातावेदनीय १, समचतुरस्र १, पराघात १, त्रसदशक १०, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, उच्चगोत्र १, एवं सर्व ३२	अपूर्वकरण गुणस्थानमे क्षपकश्रेणिमे बंध करे
उद्योत	सातमी नरकका नारकी सम्यक्त्वके सन्मुख
मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रऋषभसंहनन १	सम्यग्दृष्टि देवता
देवायु १	७ अप्रमत्त

(१७१) अथ जघन्यरसबन्धयन्त्रम्

प्रकृति	बन्धस्वामि
स्त्यानर्द्धि १, प्रचला १, निद्रानिद्रा १, अनंतानुबंधि ४, मिथ्यात्व १	संयम सन्मुख मिथ्यात्वी
अप्रत्याख्यान ४	अविरतिसम्यग्दृष्टि सयम सन्मुख
प्रत्याख्यान ४	देशविरति
अरति १, शोक १	प्रमत्त यति
आहारकद्विक २	अप्रमत्त ,,
निद्रा १, प्रचला १, शुभ वर्णचतुष्क ४, हास्य १, रति १, कुत्सा (?) १, भय १, उपघात १	अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती
पुरुषवेद १, सज्वलनचतुष्क ४	नवमे गुणस्थानवाला
अतराय ५, ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४	१० मे गुणस्थाने क्षपक
सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, आयु ४, वैक्रियकषट्क ६	मनुष्य, तिर्यंच
उद्द्योत १, आतप १, औदारिकद्विक २	देवता, नारकी
तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, नीच गोत्र १	सातमी नरके उपशमसम्यक्त्वके सन्मुख
जिननाम १	अविरतिसम्यग्दृष्टि
एकेंद्री १, थावर १	नरक विना तीन गतिना
आतप १	सौधर्म लगे देवता
साता १, असाता १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, यश १, अयश १	समदृष्टि वा मिथ्यादृष्टि परावर्त्तमान मध्यम परिणाम
त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, अशुभ वर्ण आदि चतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरु लघु १, निर्माण १, मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वी १, शुभ विहायगति १, अशुभविहायगति १, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, पराघात १, उच्चगोत्र १, संहनन ६, सस्थान ६, नपुसकवेद १, स्त्रीवेद १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, दुर्भग १, दु स्वर १, अनादेय १	चार गतिका मिथ्यात्वी बांधे

इति रसबन्ध समाप्त.

(१७२) अथ प्रदेशबन्धयन्त्रम्, मूल प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशबन्धस्वामि शतकात्

मोहनीय	१।४।५।६।७ गुणस्थानवर्ती
आयु, मोहनीय वर्जी ६ कर्म	१० गुणस्थानवर्ती

(१७३) अथ उत्तर प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशबंधयंत्र शतककर्मग्रन्थात्

ज्ञानावरणीय ५, दर्शना० ४, साता० १, यश १, उच्च गोत्र १, अंतराय ५	१० गुणस्थानवर्ती
अप्रत्याख्यान ४	४ गुणस्थाने
प्रत्याख्यान ४	देशविरति
पुरुषवेद १, सज्वलन ४	९ मे गुणस्थाने
शुभ विहायगति १, मनुष्य-आयु १, देव-आयु १, देवगति १, देवानुपूर्वी १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, वैक्रियद्विक २, सम चतुरस्र १, असाता० १, वज्रऋषभ १, एवं सर्वे १३	सम्यग्दृष्टी, मिथ्यादृष्टि
निद्रा १, प्रचला १, हास्य आदि षट् ६, तीर्थंकर १	अविरतिसम्यग्दृष्टि
आहारकद्विक २	अप्रमत्त ७ मे वाला
शेष ६६ प्रकृति	मिथ्यात्वी

(१७४) अथ जघन्यप्रदेशबन्धस्वामियन्त्रम्

आहारकद्विक २	अप्रमत्त यति
नरकत्रिक ३, देव-आयु १	असंज्ञी पर्याप्त जघन्य योगी
देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, जिननाम १	मिथ्यात्वने सन्मुख सम्यग्दृष्टि
शेष १०९ प्रकृति	आपणे भवके प्रथम समय सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जघन्य योगी

(१७५) अथ सात बोलकी अल्पबहुत्व

योगस्थान	स्तोक १
प्रकृतिभेद	असंख्य २
स्थितिभेद	,, ३
स्थिति बंधाध्यवसाय	,, ४
अनुभागस्थानक	,, ५
कर्मप्रदेश	अनंत ६
रसच्छेद	,, ७

(१७६) जीव बंधवर्गणा ग्रहे तिसका कर्मपणे वांटा

कर्म	वांटा
आयु	स्तोक १
नाम	वि २
गोत्र	तुल्य २
अंतराय	वि ३
ज्ञाना० १, दर्शना० १,	,, ४
मोहनीय	,, ५
वेदनीय	,, ६

(१७७)

बंधभेद ४	प्रकृतिबंध	स्थितिबंध	अनुभागबंध	प्रदेशबंध
अर्थ	स्वभाव	काल	रस	दल वांटे
दृष्टांत	वात आदि शमन	मास अर्ध मास आदि	पड, शर्करा आदि	तोला, दो तोला
कारण	योग	कषाय	कषाय	योग
भेदसंख्या	असंख्य	असंख्य	अनंत	अनंत
प्रमाण	श्रेणिके असंख्य भाग	श्रेणिके असंख्य भाग	अनंते	अनंते

(१७८)

संख्या	बंधप्रकृति ८	मूल प्रकृति ८	ज्ञाना० १	दर्शना० २	वेदनीय ३	मोह० ४	आयु ५	नाम ६	गोत्र ७	अंतराय ८
१	बंधस्थान	८।७।६।१	५	९ ६ ४	१	२२।२१। १७।१३। ९।५।४।१	१	२३।२५। २६।२८। २९।३०। ३१	१	५
२	भुयस्कार	६।७।८	०	६ ९	०	२।३।४।५। ९।१३। १७।२१। २२	०	६	०	०
३	अल्पतर	७।६।१	०	६ ४	०	१७।१३। ९।५।४।३। २।१	०	७	०	०
४	अवस्थित	८।७।६।१	१	९ ४	१	१०	१	८	१	१
५	अवक्तव्य	०	१	४ ६	०	१ १७	१	३	१	१

अधिक बंध करे ते 'भुयस्कार' कहीये. अल्प अल्प बंध करे तेहने 'अल्पतर बंधक' कहीये. जितने हे तितने ही बंध करे ते 'अवस्थित बंध' कहीये. अबंधक होय कर फेर बांधे ते 'अवक्तव्य' कहीये. अंग्रे स्वधिया विचारणीया.[1]

अथ अग्रे बन्धकारणं लिख्यते कर्मग्रन्थात्—

ज्ञानावरणीय कर्म	मति आदि ५ ज्ञान, ज्ञानी-साधु प्रमुख, ज्ञानसाधक(न)-पुस्तक आदि तेहना बुरा चिंतणा १, निह्नवणा गुरुलोपणा २, सर्वथा विणास करणा ३, अंतरंग अप्रीत ४, अंतराय-भक्त, पान, वस्त्र आदिना विघ्न करणा ५, अति आशातना जाति प्रमुख करी हीलणा ६, ज्ञान-अवर्णवाद ७, आचार्य, उपाध्यायनी अविनय ८, अकाले स्वाध्याय करणी ९, षट्-कायकी हिंसा १०
दर्शनावरणीय	दर्शन-चक्षु आदि ४, दर्शनी-साधु आदि, दर्शनसाधन-श्रोत्र, नयन आदि अथवा समति, अनेकान्तजयपताका आदि प्रमाणशास्त्रना पुस्तक आदिकने प्रत्यनीक आदि; पूर्वोक्त ज्ञानावरणीयवत् दश बोल जानने
सातावेदनीय	गुरु जे माता, पिता, धर्माचार्य तेहनी भक्ति १, क्षमावान् २, दयावान् ३, ५ महाव्रत-वान् ४, दशविधसामाचारीवान् ५, बाल, वृद्ध, ग्लान आदिकना वेयावृत्त्यनो करणहार ६, भगवान्की पूजामे तत्पर ७, सरागसंयम ८, देशसंयम ९, अकामनिर्जरा १०, बालतप ११
असाता	गुरुनी अवज्ञानो करणहार १, रीसालु २, दया रहित ३, उत्कट कषाय ४, कृपण ५, प्रमादी ६, हाथी, घोडा, बळदने निर्दयपणे दमन, वाहन, लांछन आदिकनो करवो ७, आप परने दु ख, शोक, वध, ताप, क्रंदकारक ८
दर्शनमोहनीय	उन्मार्गना उपदेशक १, सन्मार्गना नाशक २, देवद्रव्यनो हरणहार ३, वीतराग, श्रुत, संघ, धर्म, देवताना अवर्णवाद बोले ४, जगमे सर्वज्ञ है नही इम कहे ५, धर्ममें दूषण काढे ६, गुरु आदिकनो अपमानकारी ७

[1] आगळ पोतानी बुद्धि प्रमाणे विचारी लेवु

कपाय	कपायें करी परवश चित्त थकउ सोला कपाय वाधे
हास्य	उत्प्रासन १, कदर्प २, प्रहास ३, उपहास ४, शी(अश्ली?)ल घणा वोले ५, दीन वचन वोले ६
रति	देश आदि देखनेमे औत्सुक्य १, चित्राम, रमण, खेलन २, परचित्तावर्जन ३
अरति	पापशील १, परकीर्तिनाशन २, खोटी वस्तुमे उत्साह ३
शोक	परशोकप्रगटकरण १, आपको शोच उपजावनी २, रोणा ३
भय	आप भय करणा १, परकू भय करणा २, त्रास देणी ३, निर्दय ४
जुगुप्सा	चतुर्विध सघनी जुगुप्सा करे १, सदाचारजुगुप्सा २, समुच्चयजुगुप्सा ३
स्त्रीवेद	ईर्ष्या १, विषाद २, गृद्धिपणा ३, मृषावाद ४, वक्रता ५, परस्त्रीगमनरक्त ६
पुरुपवेद	स्वदारसन्तोप १, अनीर्ष्या २, मद कपाय ३, अवक्रचारी ४
नपुसकवेद	अनगसेवी १, तीव्र कपाय २, तीव्र काम ३, पापडी ४, स्त्रीका व्रत भंडे ५
नरक आयु	महारभ १, महापरिग्रह २, पंचेन्द्रियवध ३, मासाहार ४, रौद्र ध्यान ५, मिथ्यात्व ६, अनंतानुवंधि कपाय ७, कृष्ण, नील, कापोत लेश्या ८, अनृत भापण ९, परद्रव्यापहरण १०, वार वार मैथुनसेवन ११, इन्द्रियवशवर्ती १२, अनुग्रह रहित १३, स्थिर घणा काल लग रोस राखणहार १४
तिर्यच-आयु	गूढ हृदय १, शठ वोले मधुर, अंदर दारुण २, शल्य सहित ३, उन्मार्गदेशक ४, सत्मार्गनाशक ५, आर्त्त ध्यानी ६, माया ७, आरभ ८, लोभी ९, शीलव्रतमें अतिचार १०, अप्रत्याख्यान कपाय ११, तीन अधम लेश्या १२
मनुष्य आयु	मध्यम गुण १, अल्प परिग्रह २, अल्प परिग्रह (?) ३, मार्दव ४, आर्जव स्वभाव ५, धर्म ध्याननो रागी ६, प्रत्याख्यान कपाय ७, सविभागनो करणहार ८, देव, गुरुना पूजक ९, प्रिय वोले १० सुखे (?) प्रज्ञापनीया ११, लोकव्यवहारसें मध्यम परिणाम स्वभावे पतली कपाय १२, क्षमावान् १३
देव आयु	अविरतिसम्यग्दृष्टि १, देशविरति २, सरागसंयम ३, वालतपस्वी ४, अकामनिर्जरा ५, भले साथ प्रीति ६, धर्मश्रवणशीलता ७, पात्रमें दान देणा ८, अवक्तव्य सामायिक अजाण पणे सामायिक करे ९
शुभ नाम	माया रहित १, गारव तीनसे रहित २, ससारभीरु ३, क्षमा, मार्दव, आर्जव आदि गुणे सहित ४
अशुभ नाम कर्म	मायावी १, गौरववान् २, उत्कट क्रोध आदि परिणाम ३, परकुं विप्रतारण ४, मिथ्यात्व ५, पैशुन्य ६, चल चित्त ७, सुवर्ण आदिकमें खोट मिलावे ८, कूडी साख ९, वर्ण, रस, गंध, स्पर्श अन्यथाकरण १०, अगोपांगनउ छेदन करणा ११, यत्र पंजर वणावे १२, कूडा तोला, कूडा मापा १३, आपणी प्रशंसा १४, पाच आश्रवना सेवनहार १५, महारभ परिग्रह १६, कठोर भाषी १७ जूठ वोले १८, मुखरी १९ आक्रोश करे २०, आगलेके सुभागका नाश करणा २१, कार्मण करे २२, कुतूहली २३, चैत्याश्रयविंवका नाश करणहार २४, चैत्येषु अगराग २५, परकी हासी २६, परकुं विडवना करणी २७, वेश्या आदिकूं अलंकार देणा २८, वनमे आग लगावे २९, देवताना मिस करी गंध आदि चोरे ३०, तीव्र कपाय ३१

शुभ नाम	संसारभीरु १, अप्रमादी २, सूधा स्वभाव ३, क्षमावान् ४, सधर्मीना स्वागतकारक ५, परोपकारी ६, सारका ग्रहणहार ७
उच्च गोत्र	गुण बोले यथावत् १, दूषणमे उदासीन २, अष्ट मद रहित ३, आप ज्ञान पठन करे ४, अवराकू पढावे ५, बुद्धि थोडी होवे तो पढणेवालोकी बहुमानसे अनुमोदन करे ६, जिन, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, चैत्य, साधु, गुणगरिष्ठ तेहने विषे भक्ति, बहुमान कारक ७
नीच गोत्र	परनिन्दा १, अपहास २, सत्गुणलोपन ३, असत्दोषकथन ४, आपणी कीर्ति वाछे ५, आपणा दोष छिपावे ६, अष्ट मदका कारक ७
अंतराय कर्म	तीर्थंकरकी पूजाका विघ्न करे १, हिंसा आदि ५ आश्रव सेवे २, रात्रिभोजन आदिक करे ३, ज्ञान, दर्शन, चारित्रको विघ्न करे ४, साधु प्रते देता भात, पाणी, उपाश्रय, उपगरण, भेषज आदि निवारे ५, अन्य प्राणीने दान, लाभ, भोग, परिभोगना विघ्न करे ६, मंत्र आदिक करी अनेराना वीर्य हरे ७, वध, बंधन करे ८, छेदन, भेदन करे जीवाने ९, इन्द्रिय हणे १०

इति अष्ट कर्मना बंधकारण संपूर्ण. अथ पंचसंग्रह थकी युगपत् बंधहेतु लिख्यते—

पृथक् पृथक् गुणस्थानोपरि पाच प्रकारे मिथ्यात्व, एकैक मिथ्यात्वमे छ छ काया, एवं ३० हुइ. एकैक इन्द्रिय व्यापार पूर्वोक्त ३० मे, एव १५० हुइ. ऐसे ही एकैक युग्म साथ दोढसै दोढसै, एवं ३०० होइ. एवं एकैक वेदसे तीन सो तीन सो, एव ९०० हुए. एव एकैक क्रोध आदि च्यारि कषायसे नव(से) नवसे, एवं ३६०० हुइ. एवं दश योगसे ३६०० कू गुण्या ३६००० होइ. ५×६×५×२×३×४×१०.

मिथ्यात्व १, काय १, इन्द्रिय १, एक युगल २, तीनो वेदमेसू एक वेद १, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, सञ्वलनका क्रोध आदि त्रिक कोइ एक, एव ९, दश योगमेसू एक व्यापार योगका, एवं दश बंधहेतुसे ३६००० भंग हुइ.

दस तो पूर्वोक्त अने भय युक्त कीये ११ हुइ. तिसकी विभाषा पूर्ववत् करणेसे ३६००० हुइ. एवं जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण ३६०००. अथवा अनतानुबधी प्रक्षेपणे ते ११ हुइ अने योग १३ जानने तिहा भग ४६८००. अथवा कायद्वयवधसयोग क्षेपणे ते ग्यारे सयोग वियोग ते पूर्ववत् लब्ध भगा ९००००. एव सर्व २०८८००, दो लाख अठ्यासी सै. एकादश समुदाय करी इतने भंग हुइ.

दस तो पूर्वोक्त संयोग अने भय, जुगुप्सा प्रक्षेपे १२ संयोग हुइ, तिसके भंग ३६०००. अथवा भय अनतानुबंधी युक्त करे योग तिहा १३ जानने तदा भग ४६८००. जुगुप्सा, अनतानुबधी प्रक्षेपे पिण भग ४६८००. अथवा त्रिकायवध प्रक्षेपणे ते १२ होय है ते पिण वीस होय है तदा पूर्ववत् लब्ध भगा १२००००. भय द्विकायवध क्षेपत लब्ध भंग पूर्ववत् ९००००. एवं जुगुप्सा द्विकायवध क्षेपे पिण भगा ९००००. अनंतानुबधी द्विकायवध क्षेपे पूर्ववत् लब्ध भगा ११७०००. एव सर्व बारे समुदायके हेतु ५४६६०० हुइ.

दस तो तेही ज पूर्वोक्त भय, जुगुप्सा, अनंतानुबंधी युक्त १३ हुइ. इहां १३ संयोगना भंगा ४६८००. चार कायना वध प्रक्षेपणे ते १३ होय है तिहां १५ संयोगना भंगा पूर्ववत् लब्ध भंगा ९००००. त्रिकायवध भय क्षेपे १२०००० भंगा. एवं त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण लब्ध भंगा १२००००. त्रिकायवध अनंतानुबंधी प्रक्षेपे १५६०००. द्विकायवध, भय, जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण १३; तिहां पिण ९०००० भंगा. द्विकायवध भय अनंतानुबंधी प्रक्षेपे ११७०००. एवं द्विकायवध अनंतानुबंधी जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण ११७०००. एवं तेरा समुदायना सर्व हेतुना भंगा ८५६८००.

दस तो तेही ज पूर्वोक्त अने पांच काय वध संयुक्त १४ होते है; तिहां पट् पांचना संयोग पूर्ववत् ३६००० भंगा. चार काय वध भय प्रक्षेपे १४; तिहां पिण ९०००० भंगा. एवं चार काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण ९०००० भंगा. चार काय वध अनंतानुनंधी प्रक्षेपे ११७०००. त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२००००. त्रिकायवध भय अनंतानुबंधी प्रक्षेपे १५६०००. एव त्रिकायवध जुगुप्सा अनंतानुनंधी पे(प्रक्षे)पे पिणि १५६०००. द्विकाय वध भय जुगुप्सा अनतानुबंधी प्रक्षेपे ११७०००. सर्व भंग १४ समुदायके ८८२०००.

दस तो तेही पूर्वोक्त अने छकाय वध युक्त १५ होते है. तिहा पट्काययोग १; तिहां ६००० पूर्ववत्. पांच काय वध भय प्रक्षेपणे ते १५; तिहां ३६००० भंगा. एवं पांच काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे ३६००० भंगा. पांच काय वध अनंतानुनंधी प्रक्षेपे ४६८००. चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ९००००. चार काय वध भय अनंतानुबंधी प्रक्षेपे ११७०००. एवं चार काय वध जुगुप्सा अनंतानुनंधी प्रक्षेपे ११७०००. त्रिकायवध भय जुगुप्सा अनंतानुबंधी १५६०००. १५ समुदायना सर्व भग ६०४८००.

दस पूर्वोक्त पट् काय वध भय युक्त १६ होते है; तिहा ६००० भंगा. पट्कायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण ६०००. पट्कायवध अनतानुबंधी प्रक्षेपे ७८००. पांच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ३६०००. पाच काय वध भय अनतानुबंधी प्रक्षेपे ४६८००. एव पाच काय वध जुगुप्सा अनंतानुबधी प्रक्षेपे पिण ४६८००. चार काय वध भय जुगुप्सा अनंतानुबंधी प्रक्षेपे ११७०००. ए सर्व सोला समुदायके भंगा २६६४००.

दस पूर्वोक्त पट्कायवध भय जुगुप्सा युक्त १७ होते है; तिहां भंगा ६०००. पट्काय-वध भय अनतानुबधी प्रक्षेपे ७८००. एवं पट्कायवध जुगुप्सा अनंतानुबधी प्रक्षेपे ७८०० पाच काय वध भय जुगुप्सा अनतानुबधी प्रक्षेपे ४६८००. एवं सर्व १७ ना भंगा ६८४००.

दस पूर्वोक्त पट्कायवध भय जुगुप्सा अनतानुबंधी युक्त १८ होते है; तिहां ७८०० भगा.

एव मिथ्यादृष्टिके सर्व भंगा पूर्वोक्त मेलनसे ३४,७७,६००. मिथ्यादृष्टिना हेतु समाप्त. १

अनंतानुबंधी रहित योगका कारण कहीये है—अनंतानुबंधीके उदय १३ योग होते है, परंतु दस नही होते तिसका कारण कहीये है. उद्वेलना करता हूया अनंतानुबंधीकी सम्यग्दृष्टि प्राप्त मिथ्यात्व उदयके नही संक्रामआवलिका जां लगे अनंतानुबंधीका उदय तिसके उदय अभाव ते मरणका पिण अभाव है. भवां(त?)रके अभाव ते वैक्रियमिश्र १, औदारिकमिश्र १, कार्मण १ इन तीनोका अभाव है; इस वास्ते अनंतानुबंधी भय जुगुप्साके विकल्पोदयमे तथा उत्तर पदामे हेतुयाका अभाव सूचन कर्या.

अथ सास्वादनका विशेष कहीये है—सास्वादनमे मिथ्यात्वके अभाव ते प्रथम पद गया शेष पूर्वोक्त नव अनंतानुबंधीके विकल्प अभाव ते दस. ६।५।२।३।४।१३. इस चक्र विषे प्रथम वेदां ३ करके योगानूं गुणाकार करके एक रूप ऊठा करणा यथा एकैक वेदमे तेरा योग है. एवं ३९ हूये. नपुंसक वेदे वैक्रियमिश्र नही. एव एक काढ्या ३८ रहे. इन ३८ करी एकैक काय वधसूं गुण्या २२८ होय है. इन २२८ कूं एकेक इन्द्रियव्यापारसूं गुण्या ११४० हुइ. इन ११४० कूं एकेक युग्मसूं गुण्या २२८० हुइ. २२८० कू एकैक कषाय चारसूं गुण्या ९१२०. इतने हेतुसमुदाय हुये. एव शेष विषे भावना करवी.

दस पूर्वोक्त अने द्विकायवध युक्त ग्यारे हूये; तिहां पूर्ववत् २२८०० भंगा. भय प्रक्षेपणे ते ११ हूये; तिहा ९१२० भगा. एवं जुगुप्सा प्रक्षेप ९१२०. सर्व ग्यारे समुदायना भंगा ४१०४०.

पूर्वोक्त दस त्रिकायवध प्रक्षेपे बारा होते है; तिहा पिण पूर्ववत् ३०४००. अथवा द्विकायवध भय प्रक्षेपे पिण बारा होते है; तिहा पिण २२८००. एवं द्विकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २२८००. अथवा भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२; तिहा पिण ९१२०. एवं सर्व बारा समुदायके ८५१२० भंगा.

दस पूर्वोक्त चार काय वध युक्त तेरा होते है. पूर्ववत् तिहा २२८००. अथवा भय त्रिकायवध प्रक्षेपे तेरा; तिहां ३०४०० भंगा. एवं त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे ३०४००. अथवा द्विकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १३; तिहा भांगा २२८००. एव सर्व तेराके भग संख्या १०६४००.

दस पूर्वोक्त पचकायवध प्रक्षेपे चौदा हुइ; तिहा भंगा ९१२०. अथवा चार काय वध प्रक्षेपे चौदां; तिहां २२८०० भंगा. एव चतुःकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २२८००. अथवा त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १४; तिहा ३०४००. सर्व एकत्र मेले ८५१२०.

पूर्वोक्त दस षट्कायवध युक्त पदरा हुइ; तिहा १५२० भगा. पचकायवध प्रक्षेपे १५; तिहा ९१२०. एव पांच काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे ९१२०. अथवा चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १५; तिहा २२८०० भगा. सर्व एकत्र करे ४२५६०.

दस पूर्वोक्त षट्कायवध भय युक्त १६ होते है; तिहां भांगा १५२०. षट्कायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १५२०. अथवा पाच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १६; तिहा ९१२० भगा. सर्व एकत्र करे १२१६०.

दस पूर्वोक्त षट्कायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १७ होते है; तिहां भंगा १५२०.

एवं पूर्वोक्त सास्वादनके बंधहेतु सर्व एकत्र करे ३८३०४०. इति सास्वादनके बंधहेतु समाप्त २.

मिश्रदृष्टिके तेही दसमेसूं अनंतानुबंधी वर्जित नव होय है. एकैक काया वधे पांच इन्द्रिय व्यापारा, एवं ३० भांगे एकैक युगले त्रिंशत्; एवं ६०. एकैक वेदे साठ साठ; एवं १८०. एकैक कषाये ७२०. एवं दश जोगसे गुण्या ७२००. ६×५×२×३×४×१०.

ए नव हेतु नव पूर्वोक्त द्विकायवध युक्त १० होइ पूर्ववत् १८०००. अथवा भय प्रक्षेपे १०; तिहां ७२०० भंगा. एवं जुगुप्सा प्रक्षेपे ७२००. एवं एकत्र दस समुदायना सर्व ३२४०० भंगा.

नव पूर्वोक्त त्रिकायवध युक्त ११ होते है; तिहां २४००० भंगा. तथा द्विकायवध भय प्रक्षेपे ११ हुइ. तिहां १८०००. एवं द्विकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १८०००. अथवा भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ११ हुइ; तिहां भंगा ७२००. एवं सर्व ६७२००.

नव पूर्वोक्त चार काय वध युक्त बारा हुइ; तिहां १८०००. अथवा त्रिकायवध भय प्रक्षेपे १२; तिहां २४००० भंगा. एव त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २४०००. अथवा द्विकाय-वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२; इहा पिण १८०००. एव सर्व मिले ८४०००.

नव पूर्वोक्त पांच काय वध युक्त १३ हुइ; तिहां भांगा ७२००. अथवा चार काय वध भय प्रक्षेपे १३; तिहा १८००० भंगा. एव चार काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे १८०००. अथवा त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १३; तिहां भागा २४०००. सर्व एकत्र ६७२००.

नव पूर्वोक्त षट्कायवध युक्त १४ होते है; इहा भांगा १२००. अथवा पांच काय वध भय प्रक्षेपे १४; तिहां भांगा ७२००. एव पांच काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे ७२००. अथवा चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १४; तिहा १८००० भांगा. सर्व एकत्र करे ३३६००. इति १४ समुदाय.

नव पूर्वोक्त षट्कायवध भय प्रक्षेपे १५ होते है; तिहां पूर्ववत् भांगा १२००. एवं षट्कायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १२००. अथवा पांच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १५; तिहां भागा पूर्ववत् ७२००. ए सर्व ९६००. ए १५ समुदाय.

नव पूर्वोक्त षट्कायवध भय जुगुप्सा युक्त सोला होते है; इहां भांगा १२००.

सर्व मिश्रदृष्टिके भंगा मिलाय करे ३०२४०००. इति मिश्रदृष्टिहेतवः समाप्ताः. ३

एक काय १, एक इन्द्रिय १, एक युग्म १, एक वेद १, तीन कषाय ३, एक योग १, एह नव हेतु होते है जघन्य. अथ चक्ररचना ६।५।२।३।४।३. इहां प्रथम योगा करी वेदांक

गुणना तिवारे पीछे पूर्वोक्त भांगे च्यार काढे शेष ३५ रहे. वली शेष अंक करी गुण्या हुइ ८४००. ए नवकी समुदायके भावना पीछे कही ही है.

ते नव पूर्वोक्त द्विकायवध प्रक्षेपे १० हुइ; इहां भांगा २१०००. अथवा भय प्रक्षेपे १० हुइ; तिहां भांगा ८४००; एव जुगुप्साप्रक्षेपात् ८४००. सर्व एकत्र ३७८००. ए दस समुदायके.

नव पूर्वोक्त त्रिकायवध प्रक्षेपे ११ हुइ; तिहां २८००० भांगा. अथवा द्विकायवध भय प्रक्षेपे ११ हुइ; तिहां २१००० भंगा. एवं द्विकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २१०००. अथवा भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ११ हुइ; इहां ८४०० भांगा. सर्व एकत्र ७८४००. ए एकादश समुदाय.

ते नव पूर्वोक्त चार काय वध प्रक्षेपे १२ होते है; तिहां पूर्ववत् २१००० भांगा. अथवा त्रिकायवध भय प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां भांगे २८०००. एवं त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २८०००. अथवा द्विकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां २१००० भांगा. सर्व एकत्र करे ९८०००. ए बारा समुदाय.

नव पूर्वोक्त पांच काय वध युक्त १३ हुइ; तिहां भांगा ८४००. अथवा चार काय वध भय प्रक्षेपे १३ हुइ, तिहा भांगा २१००० एव चार काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण २१०००. अथवा त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १३ हुइ; तिहा पिण २८००० भागा. सर्व एकत्र करे ७८४००. ए तेरा समुदाय.

नव पूर्वोक्त षट्कायवध प्रक्षेपे १४ होते है; तिहा भांगा १४००. अथवा पाच काय वध भय प्रक्षेपे १४ हुइ; तिहा भांगा ८४००. एव पाच काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे ८४००. अथवा चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १४ हुइ, तिहा भांगा २१०००. सर्व एकत्र करे थके ३९२००. ए चौदा समुदाय.

नव पूर्वोक्त षट्कायवध भय प्रक्षेपे १५ हुइ; तिहां १४०० भांगा. एव षट्कायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १४०० भागा. अथवा पाच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १५ हुइ; तिहा भगा ८४००. सर्व एकत्र मेले ११२००. ए पांच समुदाय.

नव पूर्वोक्त षट्कायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे सोला होते है; तिहा भांगा १४००. एवं सर्व एकत्र करे ३५२८००. ए अविरतिके बंधहेतु समाप्त. ४

देशविरतिके त्रस कायकी विरति है; इस कारण ते पाच काय, तिसके द्विक, त्रिक, चार, पांच संयोग विचारने. तिसके आठ हेतु—एक काय १, एक इन्द्रिय १, एक युगम १, एक वेद १, दो २ कषाय, एक योग १, ए आठ. चक्ररचना–५×५×२×३×४×११. एकैक काये पांच पाच इन्द्रिया; एव २५. ते युगम भेदते ५०. ते पिण तीन वेदसू १५०. ते पिण चार कषायसे ६००. ते पिण ११ योगसे गुण्या ६६००. ए आठ हेतुसमुदाय.

आठ पूर्वोक्त अने द्विकायवध प्रक्षेपे नव हुइ; तिहां १३२०० भांगा. अथवा भय प्रक्षेपे ९ हुइ; तिहां ६६०० भांगा. अथवा जुगुप्सा प्रक्षेपे ९; तिहां ६६०० भांगा है. सर्व एकत्र करे २६४००. ए नव हेतु समुदाय.

आठ पूर्वोक्त त्रिकायवध युक्त करे दस हुइ. तीन संयोग इहां दस होय; तिस कारण ते भांगा १३२००. अथवा द्विकायवध भय प्रक्षेपे १० हुइ; इहां दस द्विकसंयोग है. भांगा १३२००. द्विकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण १३२००. अथवा भय, जुगुप्सा प्रक्षेपे १० हुइ; तिहां ६६०० भंगा. सर्व एकत्र ४६२००. ए दस समुदाय.

आठ पूर्वोक्त चार काय वध प्रक्षेपे ११ हुइ, तिहां ६६०० भांगा. अथवा त्रिकायवध भय प्रक्षेपे ११ हुइ; तिहां १३२००. एवं त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १३२००. अथवा द्विकायवध भय जुगुप्सा घाले ११ हुइ; तिहां भंग १३२००. सर्व एकत्र ४६२००. ए ग्यारे समुदायना.

आठ पूर्वोक्त पांच काय वध प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां भंग १३२०. अथवा चार काय वध भय प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां ६६०० भंग. एवं चार काय वध जुगुप्सा घाले ६६००. अथवा त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां १३२०० भांगा. सर्व एकत्र करे २७७२०. भंग. ए बारा समुदाय.

आठ पूर्वोक्त पांच काय वध भय प्रक्षेपे १३ हुइ; तिहां १३२० भंग. एवं पांच काय वध जुगुप्सा घाले १३२०. अथवा चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १३ हुइ; तिहां भगा ६६००. सर्व एकत्र करे ९२४० भंग. ए तेरा समुदाय.

आठ पूर्वोक्त पांच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १४ हुइ; तिहां १३२० भांगा. ए चौदा हेतु समुदाय.

सर्व एकत्र मेले १६३६८०. ए देशविरतिना भांगा. ५

अथ प्रमत्त अप्रमत्त विचार—प्रमत्तमे स्त्रीवेदमे आहारक १, आहारकमिश्र नही. अप्रमत्तमे आहारकद्विक ही नही है. प्रमत्त यंत्रक २।१।१।१;२।३।४।१३. प्रमत्त आदिकोंके पांच हेतु है—युग्म २, वेद ३, कषाय ४, योग. १३ योगा करी तीन वेद गुण्या ३९ हुइ. दो काढे ३७ रहै. युग्म भेदते द्विगुणा ७४. कषाय भेदते च्यार गुणा २९६. ए पांच हेतुसमुदाय. पाच तो तेही ज अने भय प्रक्षेपे ते तेही ज भांगा २९६. एवं जुगुप्सा घाले २९६. एव भय, जुगुप्सा घाले ७ हेतु हुइ; भागे तेही ज २९६. सर्व एकत्र करे ११८४. ए प्रमत्त भांगा. ६

अप्रमत्त यंत्रक—२।१।१।१;२।३।४।११. वेदांसे योग गुण्या ३३. एक रूप काढे ३२ रहै. युग्म भेदते दुगुणे ६४. कषाय भेदते च्यार गुणा २५६. ए पाच हेतुसमुदाय. एवं भय साथ पद २५६. एवं जुगुप्सा साथ भांगा २५६. सर्व मेले १०२४. ए अप्रमत्तना भांगा. ७

अपूर्वकरण यंत्र—२।१।१।१;२।३।४।९. युग्मसे वेद गुण्या ६. ते पिण कषाय भेदते २४. ए पिण चउवीस नव योगसे गुण्या २१६ (२×३×४×९). ए पाच हेतुसमुदाय. भय

प्रक्षेपे ६; भांगा २१६. जुगुप्सा प्रक्षेपे षट्. भांगा २१६. उभय प्रक्षेपे सात हुइ भंग २१६. सर्व एकत्र करे ८६४. ए अपूर्वकरणना हेतु. ८

बादरका यंत्रक—१।१; ४।९. कषाय ४, योग ९. द्विकसंयोगे ३६. ए द्विकसमुदाय. बादर पांच भंगकके वेदका पिण उदय है; इस कारण ते वेद प्रक्षेपे. तीन हेतु भांगे त्रिगुणे करे १०८. ए तीन हेतुसमुदाय. सर्व एकत्र करे १४४ भंग. ए बादर कषायना हेतु.

सूक्ष्मके एक कषाय एकैक योगसे नव योग साथ ९ द्विकयोग. उपशांतके नव हेतु. एवं क्षीणके नव हेतु. सयोगीके सात हेतु.

सर्व गुणस्थानना विशेषबंधहेतुसंख्या ४६८२७७०. इति गुणस्थानकसे बंध हेतु समाप्त.

इति श्रीआत्मारामसंकलता(ना)यां बन्धतत्त्वमष्टम सम्पूर्णम्.

अथ अग्रे 'मोक्ष' तत्त्व लिख्यते. प्रथम तीन श्रेणी रचना. (१७९) अथ गुणश्रेणिरचनायन्त्र शतकात्—

	सम्यक्त्वप्राप्ति आदि भेद	निर्जरा	काल अल्पबहुत्व
१	सम्यक्त्वप्राप्ति	स्तोक १	असंख्य ११
२	देशविरति	असंख्य गुणा	,, १०
३	सर्वविरति	,, ,,	,, ९
४	अनतानुबंधिविसंयोजन	,, ,,	,, ८
५	दर्शनमोहनीयक्षय	,, ,,	,, ७
६	उप(शम)श्रेणि चढता	,, ,,	,, ६
७	उपशातमोह ११ मे	,, ,,	,, ५
८	क्षपकश्रेणि चढता	,, ,,	,, ४
९	क्षीणमोह	,, ,,	,, ३
१०	सयोगी केवली	,, ,,	,, २
११	अयोगी केवली	,, ,,	स्तोक १

(१८०) उप(शम)श्रेणियन्त्रम् आवश्यकनिर्युक्तेः

संज्वलन लोभ
अप्रत्याख्यान लोभ | प्रत्याख्यान लोभ
संज्वलन माया
अप्रत्याख्यान माया | प्रत्याख्यान माया
संज्वलन मान
अप्रत्याख्यान मान | प्रत्याख्यान मान
संज्वलन क्रोध
अप्रत्याख्यान क्रोध | प्रत्याख्यान क्रोध
पुरुषवेद
हास्य | रति | शोक | अरति | भय | जुगुप्सा
स्त्री
नपुंसक
मिथ्यात्वमोह | मिश्रमोह | सम्यक्त्वमोह
अनंतानुबंधि क्रोध | अनंता० मान | अनंता० माया | अनंतानुबंधि लोभ

क्षपकश्रेणिस्वरूपयन्त्र आवश्यकनिर्युक्ति थकी लिखतोऽस्ति (लिखितमस्ति). चरम समये पांच ज्ञानावरणीय ५, च्यार दर्शनावरणीय ४, पाच अंतराय ५; एवं सर्व १४ षेपे. बार गुणस्थानके जद दो २ समये बाकी रहे तदा पहिले समय निद्रा १, प्रचला १, देवगति १, देवानुपूर्वी १, वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय अंगोपाग १, प्रथम संहनन वर्जी ५ संहनन, एक संस्थान वर्जी पांच संस्थान ५, तीर्थ(कर)नाम १, आहारकद्विक २; एवं सर्व १९ प्रकृति पहिले समय षेपवे. जो तीर्थंकर होय तो १९ प्रकृति न होय तो तीर्थंकर(नामकर्म) टाली १८ प्रकृति षेपइ ए प्रथम.

आठ पूर्वोक्त अने द्विकायवध प्रक्षेपे नव हुइ; तिहां १३२०० भांगा. अथवा भय प्रक्षेपे ९ हुइ; तिहां ६६०० भांगा. अथवा जुगुप्सा प्रक्षेपे ९; तिहां ६६०० भांगा है. सर्व एकत्र करे २६४००. ए नव हेतु समुदाय.

आठ पूर्वोक्त त्रिकायवध युक्त करे दस हुइ. तीन संयोग इहां दस होय; तिस कारण ते भांगा १३२००. अथवा द्विकायवध भय प्रक्षेपे १० हुइ; इहां दस द्विकसंयोग है. भांगा १३२००. द्विकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण १३२००. अथवा भय, जुगुप्सा प्रक्षेपे १० हुइ; तिहां ६६०० भंगा. सर्व एकत्र ४६२००. ए दस समुदाय.

आठ पूर्वोक्त चार काय वध प्रक्षेपे ११ हुइ, तिहां ६६०० भांगा. अथवा त्रिकायवध भय प्रक्षेपे ११ हुइ; तिहां १३२००. एवं त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १३२००. अथवा द्विकायवध भय जुगुप्सा घाले ११ हुइ; तिहां भंग १३२००. सर्व एकत्र ४६२००. ए ग्यारे समुदायना.

आठ पूर्वोक्त पांच काय वध प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां भग १३२०. अथवा चार काय वध भय प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां ६६०० भंग. एवं चार काय वध जुगुप्सा घाले ६६००. अथवा त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां १३२०० भांगा. सर्व एकत्र करे २७७२०. भंग. ए बारा समुदाय.

आठ पूर्वोक्त पांच काय वध भय प्रक्षेपे १३ हुइ; तिहां १३२० भंग. एवं पांच काय वध जुगुप्सा घाले १३२०. अथवा चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १३ हुइ; तिहां भंगा ६६००. सर्व एकत्र करे ९२४० भंग. ए तेरा समुदाय.

आठ पूर्वोक्त पाच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १४ हुइ; तिहां १३२० भांगा. ए चौदा हेतु समुदाय.

सर्व एकत्र मेले १६३६८०. ए देशविरतिना भांगा. ५

अथ प्रमत्त अप्रमत्त विचार—प्रमत्तमे स्त्रीवेदमे आहारक १, आहारकमिश्र नही. अप्रमत्तमे आहारकद्विक ही नही है. प्रमत्त यंत्रक २।१।१।१;२।३।४।१३. प्रमत्त आदिकोंके पांच हेतु है—युग्म २, वेद ३, कषाय ४, योग. १३ योगा करी तीन वेद गुण्या ३९ हुइ. दो काढे ३७ रहै. युग्म भेदते द्विगुणा ७४. कषाय भेदते च्यार गुणा २९६. ए पांच हेतुसमुदाय. पाच तो तेही ज अने भय प्रक्षेपे ते तेही ज भांगा २९६. एवं जुगुप्सा घाले २९६. एव भय, जुगुप्सा घाले ७ हेतु हुइ; भांगे तेही ज २९६. सर्व एकत्र करे ११८४. ए प्रमत्त भांगा. ६

अप्रमत्त यंत्रक—२।१।१।१;२।३।४।११. वेदासे योग गुण्या ३३. एक रूप काढे ३२ रहे. युग्म भेदते दुगुणे ६४. कषाय भेदते च्यार गुणा २५६. ए पांच हेतुसमुदाय. एवं भय साथ पद २५६. एवं जुगुप्सा साथ भांगा २५६. सर्व मेले १०२४. ए अप्रमत्तना भांगा. ७

अपूर्वकरण यत्र—२।१।१।१;२।३।४।९. युग्मसे वेद गुण्या ६. ते पिण कषाय भेदते २४. ए पिण चउवीस नव योगसे गुण्या २१६ (२×३×४×९). ए पांच हेतुसमुदाय. भय

प्रक्षेपे ६; भांगा २१६. जुगुप्सा प्रक्षेपे पट्. भांगा २१६. उभय प्रक्षेपे सात हुइ भंग २१६. सर्व एकत्र करे ८६४. ए अपूर्वकरणना हेतु. ८

बादरका यंत्रक—१।१; ४।९. कषाय ४, योग ९. द्विकसंयोगे ३६. ए द्विकसमुदाय. बादर पांच बंधकके वेदका पिण उदय है; इस कारण ते वेद प्रक्षेपे. तीन हेतु भांगे त्रिगुणे करे १०८. ए तीन हेतुसमुदाय. सर्व एकत्र करे १४४ भंग. ए बादर कषायना हेतु.

सूक्ष्मके एक कषाय एकैक योगसे नव योग साथ ९ द्विकयोग. उपशातके नव हेतु. एवं क्षीणके नव हेतु. सयोगीके सात हेतु.

सर्व गुणस्थानना विशेषबंधहेतुसंख्या ४६८२७७०. इति गुणस्थानक्रमे बंध हेतु समाप्त.

इति श्रीआत्मारामसंकलता(ना)यां बन्धतत्त्वमष्टमं सम्पूर्णम्.

अथ अग्रे 'मोक्ष' तत्त्व लिख्यते. प्रथम तीन श्रेणी रचना. (१७९) अथ गुणश्रेणिरचनायन्त्रं शतकात्—

	सम्यक्त्वप्राप्ति आदि लेद	निर्जरा	काल अल्प बहुत्व
१	सम्यक्त्वप्राप्ति	स्तोक १	असंख्य ११
२	देशविरति	असंख्य गुणा	,, १०
३	सर्वविरति	,, ,,	,, ९
४	अनंतानुबंधिविसंयोजन	,, ,,	,, ८
५	दर्शनमोहनीयक्षय	,, ,,	,, ७
६	उप(शम)श्रेणि चढता	,, ,,	,, ६
७	उपशांतमोह ११ मे	,, ,,	,, ५
८	क्षपकश्रेणि चढता	,, ,,	,, ४
९	क्षीणमोह	,, ,,	,, ३
१०	सयोगी केवली	,, ,,	,, २
११	अयोगी केवली	,, ,,	स्तोक १

(१८०) उप(शम)श्रेणियन्त्रम् आवश्यकनिर्युक्तेः

संज्वलन लोभ
अप्रत्याख्यान लोभ | प्रत्याख्यान लोभ
संज्वलन माया
अप्रत्याख्यान माया | प्रत्याख्यान माया
संज्वलन मान
अप्रत्याख्यान मान | प्रत्याख्यान मान
संज्वलन क्रोध
अप्रत्याख्यान क्रोध | प्रत्याख्यान क्रोध
पुरुषवेद
हास्य | रति | शोक | अरति | भय | जुगुप्सा
स्त्री
नपुंसक
मिथ्यात्वमोह | मिश्रमोह | सम्यक्त्वमोह
अनंतानुबंधि क्रोध | अनंता० मान | अनंता० माया | अनंतानुबंधि लोभ

क्षपकश्रेणिस्वरूपयन्त्र आवश्यकनिर्युक्ति थकी लिखतोऽस्ति (लिखितमस्ति). चरम समये पांच ज्ञानावरणीय ५, च्यार दर्शनावरणीय ४, पांच अंतराय ५; एवं सर्व १४ पेपे. बार गुणस्थानके जद दो २ समये बाकी रहे तदा पहिले समय निद्रा १, प्रचला १, देवगति १, देवानुपूर्वी १, वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय अंगोपांग १, प्रथम संहनन वर्जी ५ संहनन, एक संस्थान पांच संस्थान ५, तीर्थ(कर)नाम १, आहारकद्विक २; एवं सर्व १९ प्रकृति पहिले जो तीर्थंकर होय तो १९ प्रकृति न होय तो तीर्थंकर(नामकर्म) टाली १८ प्रकृति

(१८१)

सज्वलन लोभ
„ माया
„ मान
„ क्रोध
पुरुषवेद पेपे

हास्य	रति	शोक	अरति	भय	जुगुप्सा

स्त्रीवेद पपावे
नपुसकवेद

अप्र॰ क्रोध	अप्र॰ मान	अप्र॰ माया	अप्र॰ लोभ	प्र॰ लोभ	प्र॰ मान	प्र॰ माया	प्र॰ लोभ

सम्यक्त्वमोहनीय
मिश्रमोहनीय
मिथ्यात्वमोहनीय

अनता॰ क्रोध	अनता॰ मान	अनता॰ माया	अनता॰ लोभ

आठ कषाय क्षपाया पीछे कुछक शेष रहे आठ कषाय पेपता बीचमे १७ प्रकृति पेपे तेहनां नाम—नरकगति १, नरकानुपूर्वी १, तिर्यंच गति १, तिर्यचानुपूर्वी १, एकेन्द्रिय आदि जाति ४, आतप १, उद्द्योत १, थावर १, सूक्ष्म, साधारण १, अपर्याप्त १, निद्रानिद्रा १, प्रचला १, थीणद्धि १. ए सत्तरे प्रकृति आठ कषाय क्षेपता बीचमे क्षपावे. तदनंतर अवशेष आठ कषाय पेपे; पीछे नपुसकवेद, स्त्रीवेद.

(१८२) अथ सीझणद्वार लिख्यते श्रीपूज्यमलयगिरिकृत नंदीजीकी वृत्तिथी

	बोल संख्यानामानि	द्रव्य परिमाण	निरंतर सीझे
१	ऊर्ध्वलोके उत्कृष्ट	४	२
२	समुद्रे उत्कृष्ट सर्वत्र	२	„
३	सामान्य जले	४	„
४	तिर्यग्लोके	१०८	८
५	अधोलोके	२० पृथक्त्व	४
६	नदनवने	४	२
७	पडगवने	„	„
८	एकैक विजयमे	वीस वीस	४
९	३० सर्व अकर्मभूमौ	दस दस	„
१०	१५ कर्मभूमिमे	१०८	८
११	कालद्वारे सुषमसुषम	१०	४
१२	कालद्वारे सुषम	१०	४
१३	„ सुषमदु षम	१०८	८
१४	„ दु.षमसुषम	„	„
१५	„ दु षम	२०	४
१६	„ दु षमदु.षम	१०	„
१७	गतिद्वारे देवगति आया	१०८	८
१८	„ शेष ३ गतिका „	दस दस	४
१९	„ रत्नप्रभाना „	१०	„
२०	„ शर्कराप्रभाना „	„	„
२१	„ वालुकाप्रभाना „	„	„
२२	„ पंकप्रभाना „	४	२

२३	गति० पृथ्वी, अप्कायना आया	४।४	२।२	४७	लिंगद्वारे स्वलिंगी	१०८	८
२४	„ वनस्पतिकायना „	६	२	४८	चारित्रद्वारे सा, सू, य	„	„
२५	„ तिर्यंच पचेन्द्रिय, पुरुषना „	१०	४	४९	„ सा, छे, सू, य	„	„
				५०	सा, प, सू, य	१०	४
२६	„ तिर्यंच स्त्रीना „	„	„	५१	„ सा, छे, प, सू, य	„	„
२७	„ सामान्ये मनुष्यगतिना „	२०	„	५२	बुद्धद्वारे प्रत्येकबुद्ध	„	„
२८	„ मनुष्यपुरुषना „	१०	„	५३	„ बुद्धबोधित पुरुष	१०८	८
२९	„ मनुष्यस्त्रीना „	२०	„	५४	„ „ स्त्री	२०	४
३०	„ भवनपतिना „	१०	„	५५	„ „ नपुंसक	१०	„
३१	„ भवनपतिनीना „	५	२	५६	„ बुद्धिबोधित स्त्री	२०	„
३२	„ व्यंतरना „	१०	४	५७	„ „ पुरुष सामान्ये	२० पृथक्	„
३३	„ व्यंतरीना „	५	२	५८	ज्ञानद्वारे, मति, श्रुत	४	२
३४	„ जोतिषीना „	१०	४	५९	„ मति, श्रुत, मनःपर्याय	१०	४
३५	„ जोतिषीनी देवीना „	२०	„				
३६	„ वैमानिक देवना „	१०८	८	६०	„ मति, श्रुत, अवधि	१०८	८
३७	„ वैमानिक देवीना „	२०	४	६१	„ मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्याय	„	„
३८	पुरुष मरी पुरुष	१०८	८				
३९	शेष भागे ८	दस दस	४	६२	अवगाहनाद्वारे जघन्य	४	२
४०	तीर्थद्वारे तीर्थंकर	४	२	६३	„ मध्यम	१०८	८
४१	„ स्वयंबुद्ध	„	„	६४	„ उत्कृष्ट	२	२
४२	„ बुद्धबोधित	१०८	८	६५	उत्कृष्टद्वारे अच्युत सम्यक्त्वधी	४	„
४३	„ स्त्री	२०	४	६६	संख्या, असंख्यकाल च्युत	१०।१०	४।४
४४	„ तीर्थंकरी	२	२				
४५	लिंगद्वारे गृहस्थलिंगी	४	„	६७	„ अनंत कालका पतित	१०८	८
४६	„ अन्यलिंगी	१०	४				

अथ सांतरद्वारे एक सो तीन १०३ से लेकर एक सो आठ ताइ सीझे तो एक समय पीछे अवश्य अंतर पडे; ९७ से लेकर १०२ पर्यंत दो समय निरंतर सीझे; ८५ से लेकर ९६

लगे तीन समय निरंतर सीझे; ७३ से लेकर ८४ लगे चार समय निरंतर सीझे; ६१ से लेकर ७२ लगे ५ समय०; ४९ से लेकर ६० ताइ ६ समय०; ३३ से लेकर ४८ लगे ७ समय०; एक से लेकर ३२ लगे ८ समय०.

गणनद्वार पूर्ववत् जघन्य १।२ यावत् ३२. एवं सर्व लगे जान लेना.

(१८३) क्षेत्रद्वार, अंतरद्वार लिख्यते. सांतर

१	जबूद्वीप धातकी षडे	पृथक् वर्ष
२	जंबूद्वीपके तथा धातकी षड विदेहे	,, ,,
३	पुष्करद्वीपे १ तथा तिसके विदेहे	१ वर्ष झझेरा
४	कालद्वारे भरत, ऐरावतमे जन्म आश्री	युगलकाल १८ सा नून (?)
५	साहारण आश्री भरत, ऐरावते	सख्याते हजार वर्ष
६	नरकगतिना आया उपदेशथी सीझे तिसका	१००० वर्ष
७	,, ,, हेतुये सीझे	सख्येय सहस्र वर्ष
८	तिर्यच गतिना आया उपदेशे	पृथक् १०० वर्ष
९	अनंतरोक्त तिर्यचना हेतुये सीझे तिसका	सख्येय सहस्र वर्ष
१०	तिर्यच स्त्रीना १, मनुष्यना २, मनुष्यस्त्रीना ३, सौधर्म, ईशान वर्जके सर्व देवता देवीना आया उपदेशे	१ वर्ष झझेरा
११	अनतरोक्त बोल हेतुये	सख्येय सहस्र वर्ष
१२	पृथ्वी १, अप् २, वनस्पति, गर्भज, पहिली, दूजी नरक, सौधर्म, ईशान दवका आया हेतुये सीझे	सख्येय सहस्र वर्ष
१३	वेदद्वारे पुरुषवेदे	१ वर्ष झझेरा
१४	स्त्री, नपुंसक वेदे	सख्येय सहस्र वर्ष
१५	पुरुष मरी पुरुष हुइ	१ वर्ष झझेरा
१६	शेष ८ भागे	सख्येय सहस्र वर्ष
१७	तीर्थद्वारे तीर्थकर	पृथक् ,, ,,
१८	तीर्थकरी	अनंत काल
१९	अतीर्थकर	१ वर्ष झझेरा
२०	नोतीर्थसिद्धाका प्रत्येकबुद्धी	सख्येय सहस्र वर्ष
२१	लिंगद्वारे अन्यलिंगे गृहलिंगे	,, ,, ,,
२२	स्वलिंगे	१ वर्ष झझेरा

२३	चारित्रद्वारे सामायिक १, सूक्ष्मसंपराय २, यथाख्यात ३	१ वर्ष झझेरा
२४	सामायिक १, छेदोपस्थापनीय २, सूक्ष्मसंपराय ३, यथाख्यात ४	१८ कोडाकोडी सागर किंचित् ऊणा
२५	सा० १, परिहारविशुद्धि २, सूक्ष्म० ३, यथा० ४	" " " "
२६	सा० १, छेदो० २, परिहार० ३, सूक्ष्म० ४, यथा० ५	" " " "
२७	बुद्धद्वारे बुद्धबोधित	१ वर्ष झझेरा
२८	बुद्धबोधित स्त्रियाका १, प्रत्येक बुद्धियाका २	संख्येयसहस्र वर्ष
२९	सयबुद्ध	पृथक् " "
३०	ज्ञानद्वारे मति १, श्रुत २	पल्यका असख्य भाग
३१	" मति १, श्रुत २, अवधि ३	१ वर्ष झझेरा
३२	" " मन पर्याय ३	सख्येय सहस्र वर्ष
३३	" " अवधि ३, मन.पर्याय ४	" " "
३४	अवगाहनाद्वारे जघन्य १, उत्कृष्ट २, यवमध्यम ३	श्रेणिके असख्य भाग
३५	अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना	१ वर्ष झझेरा
३६	उत्कृष्टद्वारे अप्रतिपतित सम्यक्त्व	१ सागरके असंख्य भाग
३७	सख्य, असख्य कालका पतित	सख्येय सहस्र वर्ष
३८	अनत कालका पतित	१ वर्ष झझेरा
३९	निरतरद्वारे	
४०	सातरद्वारे	सख्येय सहस्र वर्ष

अल्पबहुत्वद्वारे च्यार च्यार सिद्धा अने दस दस सिद्धा परस्पर सर्व तुल्य, तिण थकी वीस सिद्धा अने पृथक् वीस सिद्धा थोडा, तिण थकी एक सो आठ सिद्धा सख्येय गुणा. इति अनंतरसिद्धा प्ररूपणा समाप्ता.

अथ परम्परासिद्धस्वरूप लिख्यते—द्रव्यपरिमाणमे सर्व जगे अढाइ द्वीपमे. अनंते अनंते कहणे अंतर नहना (?), अतरका असभव है इस वास्ते.

(१८४)

नामानि		अल्पबहुत्व	नामानि		अल्पबहुत्व
१	समुद्रसिद्धा	१ स्तोक	१	ऊर्ध्वलोकसिद्धा	१ स्तोक
२	द्वीपसिद्धा	२ सख्येय	२	अधोलोकसिद्धा	२ संख्येय
३	जलसिद्धा	१ स्तोक	३	तिर्यग्लोकसिद्धा	३ "
४	स्थलसिद्धा	२ संख्येय			

(१८५)

लवणसमुद्रे सिद्धा	१ स्तोक	धातकीषंड सिद्धा	४ स.
कालोदधि ,,	२ सं	पुष्करार्धद्वीप ,,	५ स.
जंबूद्वीप ,,	३ सं.		

(१८६) अथ तीनो द्वीपकी मिलायके अल्पबहुत्वयंत्रम्. ए तीनो यंत्र परंपरासिद्ध.

द्वीपनाम	भरत ऐरा-वत	हैमवंत शिखरी	हैमवंत ऐरण्यवत	महाहेमवंत रूपी	हरिवास रम्यक	निषध नीलवंत	देवकुरु उत्तरकुरु	महा विदेह
जंबू	७ सं	१ स्तो	२ सं	३ सं	५ स	६ सं	४ सं	८ स
धातकी	,, ,,	,, ,,	४ वि	२ ,,	६ वि.	३ ,,	५ ,,	,, ,,
पुष्करार्ध	,, ,,	,, ,,	,, सं	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,

(१८७)

द्वीपनाम	भरत ऐरा वत	हैमवत शिखरी	हैमवंत ऐरण्यवत	महाहेमवंत रूपी	हरिवास रम्यक	निषध नीलवंत	देवकुरु उत्तरकुरु	महा विदेह
जंबू	१९ सं	१ स्तो	२ सं	३ सं	५ स	६ सं.	४ स	२२ सख्येय
धातकी	२० ,,	७ वि	१२ ,,	८ वि	१५ ,,	१० ,,	१४ ,,	२३ ,,
पुष्करार्ध	२१ ,,	९ स	१६ ,,	११ सं	१८ ,,	१३ ,,	१७ ,,	२४ ,,

(१८८) अथ आगे कालद्वारे परपरासिद्धांकी अल्पबहुत्व लिख्यते—

आरे ६	सुषमसुषम	सुषम	सुषमदुःषम	दुःषमसुषम	दुःषम	दुःषमदुःषम
अवसर्पिणी	५ वि	४ वि	३ असख्येय	६ सख्येय	२ सख्येय	१ स्तोक
उत्सर्पिणी	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,

(१८९) अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी दोनाकी एकठी अल्पबहुत्वयन्त्रम्

आरे ६	सुषमसुषम	सुषम	सुषमदुःषम	दुःषमसुषम	दुःषम	दुःषमदुःषम	
अवसर्पिणी	५ वि	४ वि	४ असंख्येय	६ संख्येय	३ संख्येय	१ स्तोक	अवसर्पिणी ७ सख्येय
उत्सर्पिणी	४ ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	२ ,,	,, ,,	उत्सर्पिणी ८ वि

(१९०) गतिद्वारे

गतिका आया अनंतर	नरक	तिर्यंच	तिर्यंचिणी	मनुष्य	मनुष्यणी	देव	देवी
अल्पबहुत्व	३ स	५ स	४ स	२ सं	१ स्तोक	७ स	८ स

(१९१)

एकेन्द्रियना आया अनंतर	१ स्तो
पचेन्द्रियना " ",सर्व जगे	२ सं
वनस्पतिना " अनंतर	३ "
पृथ्वीना " "	४ "
त्रसकायना " "	५ "
चौथी नरकना " "	१ स्तो
तीजी " " "	२ स
द्वितीय " " "	३ "
बादर वनस्पति पर्याप्तना आया	४ "
" पृथ्वी " "	५ "
" अप्काय " "	६ "
भवनपति देवीना आया अनतर	७ "
" देवताना " "	८ "
व्यंतरीना " "	९ "
व्यंतर देवताना	१० "
जोतिषीनी देवीना " "	११ "
जोतिषी देवताना	१२ "
मनुष्य स्त्रीना " "	१३ "
मनुष्यना " "	१४ स
प्रथम नरकना " "	१५ "
तिर्यंच स्त्रीना " "	१६ "
तिर्यंचना " "	१७ "
अनुत्तर विमानना " "	१८ "
ग्रैवेयकना " "	१९ "
अच्युतना " "	२० "
आरणना " "	२१ "
एम अधोमुख सनत्कुमार लगे	२८ "
ईशान देवीना आया	२९ "
सौधर्म " "	३० "
ईशान देवताना "	३१ "
सौधर्म देवताना "	३२ "

वेदद्वारे	अल्पबहुत्व
नपुंसकसिद्धा	१ स्तो
स्त्रीसिद्धा	२ स
पुरुषसिद्धा	३ "
तीर्थद्वारे	अल्पबहुत्व
तीर्थंकरी	१ स्तो
तीर्थंकरीतीर्थे प्रत्येकबुद्धी	२ स
" अतीर्थंकरी	३ "
" अतीर्थंकर	४ "
तीर्थंकरसिद्धा	५ "
तीर्थंकरतीर्थे प्रत्येकबुद्धा	६ "
" साध्वी	७ "
" अतीर्थंकर	८ "
लिंगद्वारे	अल्पबहुत्व
" गृहलिंगी	१ स्तो
" अन्यलिंगी	२ अस
" स्वलिंगी	३ "
चारित्रद्वारे	अल्पबहुत्व
छेद०, परि०, सू०, यथा०	१ स्तो
सामा०, छेद०, परि०, सू०, यथा०	२ अस
छेद०, सूक्ष्म०, यथा०	३ "
सामा०, छेद०, सू०, यथा०	४ स
सामा०, सूक्ष्म०, यथा०	५ स
बुद्धद्वारे	अल्पबहुत्व
स्वयबुद्धा	१ स्तो
प्रत्येकबुद्धा	२ स
बुद्धिबोधितसिद्धा	३ "
बुद्धबोधितसिद्धा	४ "
ज्ञानद्वारे	अल्पबहुत्व
मति, श्रुत, मन पर्याय	१ स्तो
मति, श्रुत	२ सं

मति, श्रुत, अवधि, मन पर्याय	३ सं
मति, श्रुत, अवधि	४ ,,
अवगाहनाद्वारे	अल्पबहुत्व
द्विहस्त अवगाहना	१ स्तो.
पृथक् धनुष अधिक ५०० धनुषवाला	२ असं
मध्यम अवगाहना	३ ,,
अवगाहनाविशेष	अल्पबहुत्व
७ हस्त अवगाहना	१ स्तो
५०० धनुष ,,	२ सं.
,, सें ऊणी ऊणी	३ ,,

झझेरी ७ हस्त	४ वि
उत्कृष्टद्वारे	अल्पबहुत्व
अप्रतिपतितसिद्धा	१ स्तो.
संख्येयकालपतित	२ अस.
असंख्येयकालपतित	३ सं.
अनतकालपतित	४ अस.
अतरद्वारे	अल्पबहुत्व
६ मास अंतरे सिद्धा	१ स्तो.
द्वि समय ,, ,,	२ स.
त्रि ,, ,, ,,	३ ,,

एवं तां लगे कहना जां लगे मध्य तिवारे पीछे संख्येय गुण हीना कहना. जां लगे १ समय हीन ६ मास सिद्धा संख्येय गुण हीना.

(१९२)

अनुसमयद्वारे	अल्पबहुत्व
१०८ सिद्धा	१ स्तो.
१०७ ,,	२ सं
१०६ ,,	३ सं.

एवं समय समय हानि तां लगइ कहनी जां लगे द्वि समय सिद्धा संख्येय गुणा

गणनद्वारे	अल्पबहुत्व
१०८ सिद्धा	१ स्तो
१०७ ,,	२ अनंत
१०६ ,,	३ ,,
१०५ सीझे	४ ,,

एवं एकैक हानि तां लगे जा लग ५० सिद्धा अनंत गुणा ५

४९ सिद्धा	६ अस
४८ ,,	७ अस

एव २५ लग कहेना

२४ सीझे	८ सं
२३ ,,	९ स

एवं एकेक हानि ता लगे कहनी जां लगे द्वि समय

विशेष सिद्धप्राभृतटीकातः लिख्यते

अधोमुख सिद्धा	१ स्तो
ऊर्ध्वमुख सिद्धा कायोत्सर्गे	२ सं.
ऊकडू आसन सिद्धा	३ ,,
वीरासन	४ ,,
न्युब्जासन ,,	५ ,,
पासेस्थित ,,	६ ,,
उत्तानस्थित ,,	७ ,,
सनिकर्षद्वारे	अल्पबहुत्व
सर्वसे बहोत एकैक सिद्धा	१
दो दो सिद्धा सख्येय गुण हीन	२

एन तां लगे कहना जा लगे २५ सिद्धा सख्येय गुण हीना ३

पचीस पचीस थकी छव्वीस ... सिद्धा असख्येय गुण हीना ४

एवं एकैक वृद्धि असंख्येय गुण हीन तां लगे कहना जां लगे ५० सिद्धा. पंचास पंचास सिद्धाथी ५१ सिद्धा अनत गुण हीन, बावन बावन सिद्धा अनंत गुण हीन, एव एकैक हानि तां लगे कहनी जां लगे १०८ आठ आठ सिद्धा अनंत गुण हीना.

तथा जिहां जिहां वीस वीस सिद्धा तिहा एकैक सिद्ध सर्वसे घणे १, द्वौ द्वौ सिद्धा संख्येय गुण हीन २; एव तां लगे कहना जां लगे पांच पाच सिद्धा.

अथ छ छ सिद्धा असंख्येय गुण हीना. एव दश लगे कहना. ग्यारेसे लइ अग्रे अनंत गुण हीना.

तथा अधोलोक आदिमे पृथक्त्व वीस सिद्धा. तिहां पहिले चौथे भागमे संख्येय गुण हीना, दूजे चौथे भागमे असंख्येय गुण हीना, तीजे चौथे भागसें लेकर आगे सर्वत्र अनंत गुण हीना. तथा जिहा हरिवर्ष आदिमे दश दश सिद्धा तिहा तीन लगे तो सख्येय गुण हीन, चौथे पांचमे असंख्येय गुण हीन, ६ से लेकर सर्वत्र अनंत गुण हीना.

जिहां पुनः अवगाहना यवमध्य ते अनुत्कृष्टी आठ तिहां चार लगे संख्येय गुण हानि तिस ते परे अनंत गुण हानि.

जिहां वली ऊर्ध्वलोक आदिमे चार चीसे एकैक सिद्धा सबसे बहुत, दो दो सिद्धा असंख्येय गुण हीना, तीन तीन सिद्धा अनंत गुण हीना, चार चार सिद्धा अनत गुण हीना.

जिहां लवण आदिकमे दो दो सिद्धा तिहां एकैक सिद्धा बहुत, दो दो सिद्धा अनंत गुण हीना, इति सन्निकर्ष द्वार सपूर्ण. शेष द्वार सिद्धप्राभृत टीकासे जानने. श्री ६ परमपूज्य महाराज आचार्य श्रीमलयगिरिकृत श्रीनदीजीकी वृत्तिथी ए स्वरूप लिख्या.

इति नवतत्त्वसंकलनायां मोक्षतत्त्व नवमं सम्पूर्णम्.

अथ ग्रंथसमाप्ति सवईया इकतीसा—

आदि अरिहत वीर पचम गणेस धीर भद्रबाहु गुर फी(फि) सुद्ध ग्यान दायके
जिनभद्र हरिभद्र हेमचंद देव इंद अभय आनंद चद चदरिसी गायके
मलयगिरि श्रीसाम विमल विग्यान धाम ओर ही अनेक साम रिदे वीच धायके
जीवन आनंद करो सुप(ख)के भंडार भरो आतम आनद लिखी चित्त हुलसायके १
धीर विभु बैन ऐन सत परगास दैन पठत दिवस रैन सम रस पीजीयो
मै तो मूढ रिदे गूढ ग्यान विन महाफूढ कथन करत रूढ मोपे मत पीजीयो
जैसे जिनराज गुरु कथन करत धुरु तैसे ग्रथ सुद्ध करु मोपे मत धीजीयो
मै तो बालख्यालवत् चित्तकी उमग करी हसके सुमान ग्या(ज्ञा)ता गुण ग्रह लीजीयो २
ग्राम तो 'वि(बि)नोली' नाम लाला चिरजी व स्याम भगत सुमान चित्त धरम सुहायो है

१ जीवनराम ए ग्रंथकर्त्तांना स्थानकवासी गुरुनु नाम छे।

२-३ लाला चिरजीलाल अने लाला श्यामलाल ए बंने श्रावको भक्त अने समजदार हता

सुपसे चोमास करी ग्यानकी लगन परी तिनकी कहन करी ग्यानरूप ठायो है
भव्य जन पठन करत मन हरषत ग्यानकी तरंग देत चित्तमे सुहायो है
संवत तो मुनि करे 'अंक 'इंदु 'संघ धर कातिक सुमास वर तीज बुध आयो है २

दोहा—ग्यान कला घटमे वसि, रसेसु निज गुण माहि
परचे आतमरामसे, अचल अमरपुरि जाहि १
संघ चतुर्विध वांचिउ, ग्यानकला घट चंग
गुरुजन केरे मुख थकी, लहिसो तत्त्वतरंग २

इति श्रीआत्मारामकृत नवतत्त्वसंग्रह संपूर्ण. लिपीचके 'वि(वि)नोली' मध्ये.
शुभं भवतु. वाच्यमानं चिर नन्यात्. श्रीरस्तु.

श्रीविजयानन्दसूरीश्वरकृत

॥ उपदेशबावनी ॥

(सवैया एकतीसा)

श्रीपार्श्वनाथाय नमो नमः ॥

ॐ नीत पच मीत समर समर चीत अजर अमर हीत नीत चीत धरीए
सूरि उज्झा मुनि पुज्जा जानत अरथ गुज्जा मनमथ मथन कथनमु न ठरीए
बार आठ पटतीस पणवीस सातवीस सत आठ गुण ईस माल बीच करीए
एसो विभु ॐकार बावन वरण सार आतम आधार पार तार मोक्ष वरीए १

अथ देवस्तुति —

नथन करन घन हनन करमघन धरत अनघ मन मथन मदनको
अजर अमर अज अलख अमल जस अचल परम पद धरत सदनको
समर अमर वर गनधर नगवर थकत कथन कर भरम कदनको
सरन परत तस(स) नमत अनघ जस अतम परम पद रमन ददनको २
नमो नीत देव देव आतम अमर सेव इद चद तार वृद सेवे कर जोरके
पाच अतराय मीत रति ने अरति जीत हास शोक काम वीत(थीन*) मिथ्यागिरि तोरके
निंद ने अत्याग राग द्वेष ने अज्ञान याग अष्टादश दोष हन निज गुण फोरके
रूप ज्ञान मोक्ष जश वध ने वैराग सिरी इच्छा धर्म वीरज जतन ईश घोरके ३

अथ गुरुस्तुति —

मगन भजन मग धरम सदन जग ठरत मदन अग भग तज सरके
कटत करम वन हरत भरम जन भववन सघन हटत सब जरके
नमत अमरवर परत सरन तस करत सरन भर अघ मग टरके
धरत अमल मन भरत अचर धन करत अतम जन पग लग परके ४
महामुनि पूर गुनी निज गुन लेत चुनी मार धार मार धुनि बुनी सुरा सेजको
ज्ञान ते निहार छार दाम धाम नार पार सातवीस गुण धार तारक से हजको
पुगल भरम छोर नाता ताता जोर तोर आतम धरम जोर भयो महातेजको
जग भ्रमजाल मान ज्ञान ध्यान तार दान सचाके सरूप आन मोक्षमे रहेन(ज)को ५

अथ धर्मस्वरूपमाह—

सिद्धमत स्यादवाद कथन करत आद भगके तरंग साद सात रूप भये है
अनेकत माने सत कथचित रूप ठत मिथ्यामत सब हत तत्त्व चीन लये है

नित्यानित्य एकानेक सासतीन वीतीरेक भेद ने अभेद टेक भव्याभव्य ठये है
शुद्धाशुद्ध चेतन अचेतन मूरती रूप रूपातीत उपचार परमकु लये है ६
सिद्ध मान ज्ञान शेष एकानेक परदेश द्रव्य खेत काल भाव तत्त्व नीरनीत है
नय सात सत सात भगके तरंग थात व्यय ध्रुव उतपात नाना रूप कीत है
रसकुंप फेरे रस लोहको कनक जैसे तैसे स्यादवाद करी तत्त्वनकी रीत है
मिथ्यामत नाश करे आतम अनघ धरे सिद्ध वधु वेग वरे परम पुनीत है ७
धरती भगत हीत जानत अमीत जीत मानत आनद चित भेदको दरसती
आगम अनुप भूप ठानत अनंत रूप मिथ्या भ्रम मेटनकु परम फरसती
जिन मुख वैन ऐन तत्त्वज्ञान कामधेन कवि मति सुधि देन मेघ ज्यु वरसती
गणनाथ चित(त्त) भाइ आतम उमग धाइ सतकी सहाइ माइ सेवीए सरसती ८
अधिक रसीले छीलें सुखमें उमंग कीले आतमसरूप ढीले राजत जीहानमे
कमलवदन दीत सुदर रदल(न) सीत कनक वरन नीत मोहे मदपानमे
रग वदरग लाल मुगता कनकजाल पाग धरी भाल लाल राचे ताल तानमें
छीनक तमासा करी सुपनेसी रीत धरी ऐसे वीर लाय जैसे वादर विहानमें ९
आलम अजान मान जान सुख दु ख खान खान सुलतान रान अतकाल रोये
रतन जरत ठान राजत दमक भान करत अधिक मान अत खाख होये है
केसुकी कलीसी देह छीनक भगुर जेह तीनहीको नेह एह दु'खबीज बोये है
रंभा धन धान जोर आतम अहित भोर करम कठन जोर छारनमे सोये है १०
इत उत डोले नीत छोरत विवेक रीत समर समर चित नीत ही धरतु(त) है
रग राग लाग मोहे करत कूफर धोहे रामा धन मन टोहे चितमे अचेतु(त) है
आतम उधार ठाम समरे न **नेमि** नाम काम दगे(हे) आठ जाम भयो महाप्रेतु(त) है
तजके धरम ठाम परके नरक धाम जरे नाना दु.ख भरे नाम कौन लेतु(त) है ११
ईस जिन भजी नाथ हिरदे कमलपाथ नाम वार सुधारस पीके महमहेगो
दयावान जगहीत सतगुरु सुर नीत चरणकमल मीत सेव सुख लहेगो
आतमसरूप धार मायाभ्रम जार छार करम वी(वि)डार डार सदा जीत रहेगो
दी(दे)ह खेह अत भइ नरक निगोद लइ प्यारे मीत पुन कर फेर कौन कहेगो ? १२
उदे भयो पुन पूर नरदेह शुरी नूर वाजत आनंदतूर मगल कहाये है
भववन सघन दगध कर अगन ज्यु सिद्धवधु लगन सुनत मन भाये है
संरध्या(धा)न मूल मान आतम सुज्ञान जान जनम मरण दु ख दूर भग जाये है
संजम खडग धार करम भरम फार नहि तार विधे पिछे हाथ पसताये है १३
ऊच नीच रंक कक कीट ने पतग ढक ढोर मोर नानाविध रूपको धरतु है
अगधार गजाकार वाज वाजी नराकार पृथ्वी तेज वात वार रचना रचतु है

आतम अनंत रूप सत्ता भूप रोग धूप वडे (परे[१]) जग अध कूप भरम भरतु है
सत्ताको सरूप भुल करनहींडोरे ज़ुल कुमताके वश जीआ नाटक करतु है १४
रिधी सिद्धि ऐसे जरी खोदके पतार धरी करथी न दान करी हरि हर लहेगो
रसना रसक छोर वसन ज(अं)सन दोर अंतकाल छोर कोर ताप दिल दहेगो
हिंसा कर मृषा घर छोर मोर काम पर छोर जोर कर पाप तेह साथ रहेगो
जौलो मित आत(दे) पान तौलो कर कर दान वसेहु मसान फेर कोन देद(दे) करेगो १५
रीत विपरीत करी जरता सरूप धरी करतो बुराइ लाइ ठाने मद मानकु
झुत झुत (झूठ) मस खात सुरापान जीवघात चोरी गोरी परजोरी वेश्यागीत गानकुं
सत कर सुत उत जाने न धेरमसूत माने न सरम भूत छोर अमेदानकु
मुत ने पुरीस खात गरम परत जात नरक निगोद वसे तजके जहानकु १६
लिखन पठन दीन शीखत अनेक गिन क(को)उ नहि तात([३]तत्व)चिन छीनकमें छिजे है
उत्तम उतंग संग छोरके विविध रंग रंभा दमा भोग लाग निश दिस भींजे है
काल तो अनत बली सुर वीर धीर दली ऐसे भी चलत ज्यु सींचान चिट लीजे है
छोरके धरम द्वार आतम विचार डार छारनमे भइ छार फेर कहा किजे है १७
लीलाधारी नरनारी खेमग जोगकु धारि ज्ञानकी लगन हारि करे राग ठमको
योवन पतंग रग छीनकमे होत भग सजन सनेहि संग विजकेसा जमको
पापको उपाय पाय अघ पुर सुर थाय परपरा तेहे घाय चेरो भये जमको
अरे मूढ चेतन अचेतन तु कहा भयो आतम सुधार तु भरोसो कहा दमको[४] १८
एक नेक रीत कर तोष धर दोष हर कुफर गुमर हर कर संग ज्ञानीको
खति निरलोभ भज सरल कोमल रज सत धार भा(मा)र तज तज संग मानीको
तप त्याग दान जाग शील मित पीत लाग आतम सोहाग माग माग सुख दानीको
देह खेह रूप एत(ते) सदा मीत थिर नही अत हि विलाय जैसे बुदबुद पानीको १९
ऐरावत नाथ इंद्र वदन अनुप चंद रंभा आद नारवृंद धु(धु[४])जे द्रग जोयके
खट खंड राजमान तेज भरे वर भान भामनिके रूप रंग दीसे सेज सोयके
हलधर गदाधर धराधर नरवर खानपान गानतान लाग पाप बोयके
आतम उधार तज बीनक इशक भज अत वेर हाय [५]टेर गये सब रोयके २०
[५]ओडक वरस शत आयु मान मान सत सोवत विहात आध लेतहे विभावरी
सत बाल खेल ख्याल अरध हरत प्रौढ आध व्याध रोग सोग सेव कांता मावरी
उदग तरग रंग योवन अनग सग सुखकी लगन लगे भई मित(मति) बावरी
मोह कोह दोह लोह जटक पटक खोह आतम अजान मान फेर कहा दावरी[१] २१

---

१ आनंद। २ धर्मसूत्र। ३ तत्त्वज्ञाता। ४ आवाज। ५ आयर।

औषध अनेक जरि मंत्र तत्र लाख करी होत न बचाव घरि एक कहु प्रानको
सार भार करी छार रूप रस धरे परे यम निशदिन खरे हरे मानी मानको
बाल लाल माल नाल थाल पाल भाल साल ढाल जाल डाल चले छोर थानको
आतम अजर कार सिंचत अमृत धार अमर अमर नाम लेत भगवानको २२
अघ ज्ञान द्रगरित मानत अहित चित ग(गि)नत अधम रीत रूप निज हार रे
अरव अनत अश ज्ञान विन तेरो हंस केवत अखंड वस वाके कर्म भार रे
चुरा नुरा लुरा सुरा श्यामा श्वेत रूप भूरा अमर नरक कुरा नर हे न नार रे
सत चित निराबाध रूप रग विना लाध पूरण अखड भाग आतम समार रे २३
अधिक अज्ञान करी पामर सरूप घरी मागे भीख घरि घरि नाना दु ख ल्हीये
गरे घरि रिध खरि करमत विज जरी मुल विन ज्ञान दिन हीन रहीये
गुरु विभु वेन ऐन सुनत परत चेन करत जतन जैन फेन सब दहिये
करमकलक नासे आतम विमल भासे खोल द्रग देख लाल तोपे सर्व(ब) कहिये २४
काची काया मायाके भरोसो भमीयो तुं बहु नाना दु ख पाया काया जात तोड छोरके
सास खास सुल हुल नीर भरे पेट फुल कोढ मोढ राज खाज जुरा तुर छोरके
मुरछा भरम रोग सदल डहल सोग मुत ने पुरीस रोक होक सहे जोरके
इत्यादि अनेक खरी काया सग पीड परी सुदर मसान जरी परी प्यार तोरके २५
खेती करे चिदानद अघ बीज बोत वृद रसहे शींगार आद लाठी रूप लइ हे
राग द्वेष तुव घोर कसाय बलद जोर शिरथी मिथ्यात भोर गर्दभी लगइ हे
तो होय प्रमाद आयु चक्रकार कार घटी लायु शिर मति भ्रष्ट हारा कर खइ हे
नाना अवतार कलार चिदानद वार धार इत उत प्रेरकार आतमकु दइ हे २६
गेरके विभाव दूर असि चार लाख नूर एहि द्रव्य वजन प्रजाय नाम ल्यो हे
मति आदि ज्ञान चार व्यजन विभाव गुन परजाय नाम सुन शुद्ध ज्ञान टर्यो हे
चरम शरीर पुन आतम किंचित न्यून व्यजन सुभाव द्रव्य परजाय धर्यो हे
चार हि अनत फुन व्यजन सुभाव गुन शुद्ध परजाय थाय धाय मोक्ष वर्यो हे २७
घरि घरि आउ घटे घरि काल मान घटे रूप रग तान टटे मूढ कैसें सोइये ?
जीया तु तो जाने मेरो मात तात सुत चेरो तामे कौन प्यारो तेरो पान कि गोइये
चाहत करण सुख पावत अनंत दु ख धरम, विमुख रूख फेर चित रोइये
आतम विचार कर करतो धरम वर जनम पदारथ अकारथ न खोइये २८
नरको जनम वार वार न विचार कर रिदे शुद्ध ज्ञान धर परहर कामको
पदम वदन घन पद मन अठ भन कनक वरन तन मनमथ वामको
हरि हर ब्रम(ब्रह्म)वर अमर सरव भर मन मद पर छर धरे चित भामको
शील फिल चरे जबु जारके मदनतबु निरारग अगकबु आतम आरामको २९

छरद करत फीर चाटत अनंत रीत जानत ना हित कित ध्यानदशा धरके
सुरी कुरी कुख परे नाना रूप पीर परे जात ही अगन जरे मरे दु ख करके
कुगुरु कुदेव सेव जानत न तत्त भेव मान अहमेव मूढ कहे हम डरके
मिथ्यामति आतमसरूप न पिछाने ताते डोलत जजालमें अनत काल भ(म)रके ३०
जोर नार गरभसें मद (मोह) लोभ ग्रसे राग रग जग लसें रसक जीहान रे
मनकी तरग फसे मान सनमान हसे खान पान घरमसें आतम अज्ञान रे
सिद्धि रिद्धि चित लावे पुतने विमुत भावे पुगलकु भोर धावे परो दु खखान रे
करमको चेरो हुवो आस बाध झुर मुवो फेर मूढ कहेवे हम हुवो ब्रम(ब्रह्म) ज्ञान रे ३१
जननी रोआई जेति जनमा(म) जनम धार आखुनसे पारावार भरीए महान रे
आतम अज्ञान भरी चाटत छरद करी मनमे न घी(घी ?)न परि भरे गद खान रे
तिशना तिहोरी यारी छोरत न एक घरी भमे जग जाल लाल भुले निज थान रे
अघ मति मद भयो तप तार छोर दयो फेर मूढ कहे हम हुवो ब्रह्मज्ञान रे ३२
जलके विमल गुण दलके करम फुन हलके अटल धुन अघ जोर कसीए
टलके सुधार धार गलके मलिन मार छलके न पुरतान मोक्ष नार रसीए
चलके सुज्ञान मग छलके समर ठग भलके भरम जगजालमें न फसीए
थलके वसन हार खलके लगन टार टलके कनक नार आतम दरसीए ३३
टहके सुमन जेम महके सुवास तेम जहके रतन हेम ममताकु मारी हे
दहके मदनवन करके नगन तन गहके केवलधन आस वा(ना ?)म डारी हे
कहके सुज्ञानभान लहके अमर थान गहके अखर तान आतम उजारी हे
चहके उचार दीन राजमति पारकीन ऐसे संत ईश प्रभु (बाल)ब्रह्मचारी हे ३४
ठोर ठोर ठानत विवाद पखपात मूढ जानत न मूर चूर सत मत वातकी
कनक तरग करी श्वेत पीत मान परि स्यादवाद हान करी निज गुण धातकी
पर्यो ब्रह्मजाल गरे मिथ्यामत रीझ धरे रहत मगन मूढ जुरी मरे सातकी
आतमसरूपघाती मिथ्यामतरूपकाति ऐसो ब्रह्मघाति है मिथ्याति महापातकी ३५
डर नर पाप करी देत गुरु शिख खरी मान लो ए हित धरी जनम विहातु है
जोवन न नित रहे बाग गुल जाल महे आतम आनद चहे रामा गीत गातु है
बके परनिंदा जेति तके पर रामा तेती थके पुन्य सेती फेर मूढ मुसकातु है
अरे नर भोरे तोकु कहु रे सचेत होरे पिंजरेकु तोरे देख पखी उड जातु है ३६
ढोरवत रीत धरी खान पान तान करी पुरन उदर च(भ)री भार नित वह्यो है
पीत अनगल नीर करत न पर पीर रहत अधीर कहा शोध नही लह्यो है
वाल विन पल तोल भक्षाभक्ष खात घोल हरत करत होल पाप राच रह्यो है
शींग पुछ दाढी मुछ बात न विशेष कछु(कुछ) आतम निहार अछु(उछ) मोटा रूप कह्यो है ३७

नीके मधु पीके टीके शीखंड सुगंड लीके करत कलोल जीके नागबेर चाख रे
अतर कपूर पूर अव(ग)र तगर भूर मृगमद घनसार भरे धरे खात(ख) रे
सेब आरू आब दारु पीसता बदाम चारु आतम चगेरा पेरा चखत सुदाख रे
मृदु तन नार फास सजक(के) जजीर पास पकरी नरकवास अंत भई खाख रे ३८
तरु खग वास वसे रात भए कसमसे सूर उगे जात दसे दूर करी चीलना
प्यारे तारे सारे चारे ऐसी रीत जात न्यारे कोउ न संभारे फेर मोह कहा कीलना
जैसे हटवाले मोल मीलके वीछर जात तैसे जग आतम संजोग मान दीलना
कौन वीर मीत तेरो जाको तु करत हेरो रयेन वस(से)रो तेरो फेर नहि मीलना ३९
थोरे सुख काज मूढ हारत अमर राज करत अकाज जाने लेयु जग लुंटके
कुटबके काज करे आतम अकाज खरे लछी जोरी चोर हरे मरे शीर फुटके
करम सनेह जोर ममता मगन भोर प्यारे चले छोर जोर रोवे शीर कुटके
नरको जनम पाय वीरथा गमाय ताह भूले सुख राह छले रीते हाथ उठके ४०
देवता प्रयास करे नर भव कुल खरे सम्यक श्रद्धान धरे तन सुखकार रे
करण अखड पाय दीरघ सुहात्त आय सुगुरु संजोग थाय वाणी सुधा धार रे
तत्त्व परतीत लाय सजम रतन पाय आतमसरूप धाय धीरज अपार रे
करत सुप्यार लाल छोर जग भ्रमजाल मान मीत जित काल वृथा मत हार रे ४१
धरत सरूप खरे अधर प्रवाल जरे सुदर कपुर खरे रदन सोहान रे
इदुवत वदन ज्यु रतिपति मदन ज्यु भये सुख मगन ज्यु प्रगट अज्ञान रे
पीक धुन साद करे धाम दाम भुर भरे कामनीके काम जरे परे खान पान रे
करता तु मान काहा(ह) आतम सुधार राह नहि भारे मान छोरे सोवना मसान रे ४२
नरवर हरि हर चक्रपति हलधर काम हनुमान वर भानतेज लसे है
जगत उद्धार कार सघनाथ गणधार फुरन पुमान सार तेउ काल ग्रसे है
हरिचंद मुज राम पांडुसुत्त शीलधाम नल ठाम छर वाम नाना दु ख फसे है
देढ दिन तेरी बाजी करतो निदान राजी आतम सुधार शिर काल खरो हसे है ४३
परके भरम भोर करके करम घोर गरके नरक जोर भरके मरदमे
घरके कुटब पूर जरके आतम नूर लरके लगन भूर परके दरदमें
सरके कुटंब दूर जरके परे हजूर मरके वसन मूर खरके ललदमे
भरके महान मद घरके निव न हद धरके पुरान रद मीलके गरदमें ४४
फटके सुज्ञान संग मटके मदन अग भटके जगत कग कटके करदमें
रटके तो नार नाम खटके कनक दाम गटके अभक्षधाम मटके विहदमें
हटके धरम नाल डटके भरमजाल छटके कगाल लाल रटके दरदमें
झटके करत प्रान लटके नरक थान खटके,व्यसन मिर(ल) आतम गरदमे ४५
ह्रा(बा)रामती नाथ निके सकल जगत टीके हलधर भ्रात जीके सेवे बहु रान है
हाटक प्रकार करी रतन कोशीश जरी शोभत अमरपुरी स(सा)जन महान रे

पुन ही(ची ?)ते हाथ रीते संपत विपत लीते हाय साद रोद कीते जयों निज नाथ(थान ?) रे
सोग भरे छोर चरे वनमे विलाप करे आतम सीयानो काको करता गुमान रे ४६
मूल परी मीत तोय निज गुन सब खोय कीट ने पतग होय अप्पा वीसरतु है
हीन दीन डीन चास दास वास खीन त्रास काश पास दु.ख मीन ज्ञानते गीरतु है
दु ख भरे झूर मरे आपदाकी तान गरे नाना सुत मित करे फिर विसरतु है
आतम अखड भूप करतो अनत रूप तीन लोक नाथ होके दीन क्यु फीरतु है ? ४७
महाजोधा कर्म सोधा सत्ताको सरूप वोधा ठारत अगन क्रोधा जडमति घोया हु
अजर अमर सिद्ध पुरन अखड रिद्ध तेरे विन कौन दीध सब जग जोया हु
सुससें हु न्यारो भयो चार गति वास थयो दु ख कहु(?) अनत लयो आतम वीगोया हुं
करता भरमजाल फस्यो हु बीहाल हाल तेरे विन मित मै अनत काल रोया हु ४८
यम आठ कुमतासें प्रीत करी नाथ मेरे हरे सब गुन तेरे सत वात बोलु हु
महासुखकारी प्यारी नारी न्यारी छारी घारी मोह नृप दारी कारी दोप भरे तोरु हु
हित करु चित्त धरु सुखके भडार भरुं सम्यक सरूप धरु कर्म छार छोरु हु
आतम पीयार कर कता(कुमत ?) मरम हट तेरे विन नाथ हु अनाथ भइ डोलु हु ४९
रुल्यो हु अनादि काल जगमें बीहाल हाल काट गत चार जाल ढार मोहकीरको
नर भव नीठ पायो दुषम अधेर छायो जग छोर धर्म धायो गायो नाम वीरको
कुगुरु कुसंग नो(तो)र सत मत जोर दोर मिथ्यामति करे सोर कौन देवे धीरको ?
आतम गरीब खरो अब न विसारो घरो तेरे विन नाथ कौन जाने मेरी पीरको ५० ?
रोग सोग दु ख परे मानसी चीयाकु धरे मान सनमान करे हु करे जजीरको
मदमति भूप(त) रूप कुगुरु नरक हूत सग करे होत भग काची (काजी ?) सग छिरको
चचल विहग मन दोरत अनंत(ग ?) वन धरी शीर हाथ कौन पुछे तृग नीरको
आतम गरीब खरो स(अ)व न विसारो धरो तेरे बीन नाथ कौन मेटे मेरी पीरको ? ५१
लोक बोक जाने कीत आतम अनत मीत पुरन अखड नीत अव्याबाध भूपको
चेतन सुभाव धरे जडतासो दूर परे अजर अमर खरे छाडत विरूपको
नरनारी ब्रह्मचारी श्वेत श्याम रूपधारी करता करम कारी छाया नहि धूपको
अमर अकप धाम अविकार बुध नाम कृपा भइ तोरी नाथ जान्यो निज रूपको ५२
वार वार कहु तोय सावधान कौन होय मिता नहि तेरो कोय उधी मति छइ है
नारी प्यारी जान धारी फिरत जगत भारी शुद्ध बुद्ध लेत सारी लुटवेको ठइ है
सग करो दु ख भरो मानसी अगन जरो पापको भडार भरो सुधीमति गइ है
आतम अज्ञान धारी नाचे नाना सग धारी चेतनाके नाथकु अचेतना क्या भइ है ? ५३
शीत सहे ताप दहे नगन शरीर रहे घर छोर वन रहे तज्यो धन थोक है
वेद ने पुराण परे तत्त्वमसि तान धरे तर्क ने मीमास भरे करे कठ शोक है
क्षणमति ब्रह्मपति सख ने कणाद गति चारवाक न्यायपति ज्ञान विनु बोक है
रगवी(ब)हीरग अछु मोक्षके न अग कछु आतम सम्यक विन जाण्यो सब फोक है ५४

पट पीर सात डार आठ छार पाच जार चार मार तीन फार लार तेरी फेरे है
तीन दह तीन गह पाच कह पाच लह पाच गह पाच वह पाच दूर करे है
नव पार नव धार तेरकु विडार डार दशकु निहार पार आठ सात लरे है
आतम सुज्ञान जान करतो अमर थान हरके तिमिर गान ज्ञानभान चरे है ५५
शीतल सरूप धरे राग द्वेष वास जरे मनकी तरग हरे ढोवनकी हान रे
सुदर कपाल उच कनक वरण कुच अधर अनग रुच पीक धुन गान रे
पोडश सिंगार करे जोवनके मद भरे देखके नमन चरे जरे कामरान रे
ऐसी जिन रीत मित आतम अनग जित काको मूढ वेद धीत ऐही ब्रह्मज्ञान रे ५६
हिरदेमे सुन भयो सुधता विसर गयो तिमिरअज्ञान छयो भयो महादु:खीयो
निज गुण सुज नाहि सत मत बुज नाहि भरम अरुझे ताहि परगुण रुखीयो
ताप करवेको सुर धरम न जाने मूर समर कसाय वह्नि अरणमे धुखीयो
आतम अज्ञान वल करतो अनेक छल धार अघमल भयो मूढनमे मुखीयो ५७
लबन महान अग सुदर कनक रग सदन वदन चग चादसा उजासा है
रसक रसील द्र(द)ग देख माने हार मृग शोभत मादार श्रृंग आतम वरासा है
सनतकुमार तन नाकनाथ गुण भन दव आय दरशन कर मन आसा है
छिनमे बिगर गयो क्या हे मूढ मान गयो पानीमें पतासा तेसा तनका तमासा है ५८
क्षीण भयो अग तोउ मूढ काम धन जोउ की(क)हा करे गुरु कोउ पापमति साजी है
खे(खै)लने शींघान चाट माने सुख केरो थाट आनन उचाट मूढ ऐसी मति चाजी है
मूत ने पुरिश परि महादुरगघ भरी ऐसी जोनी वास करी फेर चहे पाजी है
करतो अनेत रीत आतम कहत मित गढकीको कीरो भयो गदकीमें राजी है ५९
त्राता धाता मोक्षदाता करता अनत साता वीर धीर गुण गाता तारो अब चेरेको
तु ज (तुम) है महान मुनि नायनके नाथ गुणी सेवु निसदिन पुनी जानो नाथ देरेको
जैसो रूप आप घरो तैसो मुज दान करो अतर न कुछ करो फेर मोह चेरेको
आतम सरण पर्यो करतो अरज खरो तेरे विन नाथ कोन मेटे भव फेरेको ? ६०
ज्ञान भान का(क)हा मोरे खान पान ता(दा)रा जोरे मन हु विहग दोरे करे नाहि थीरता
मुजसो कठोर घोर निज गुण चोर भोर डारे ब्रह्म डोर जोर फीरु जग फीरता
अब तो छी(ठि)काने चर्यो चरण सरण पर्यो नाथ शिर हाथ धर्यो अघ जाय खीरता
आतम गरीब साथ जैसी कृपा करी नाथ पीछे जो पकरो हाथ काको जग फीरता ६१
शी(खि?)लीवार ब्रह्मचारी धरमरतन धारी **जीवन** आनदकारी गुरु शोभा पावनी
तिनकी कृपा ज करी तत्त्व मत जान परि कुगुरु कुसग टरी सुद्ध मति धावनी
पढतो आनद करे सुनतो विराग धरे करतो मुगत वरे आतम सोहावनी
सवत तो मुनि कर निधि इदु संख धर तत चीन नाम कीन **उपदेशबावनी** ६२
करता हरता आतमा, धरता निरमल ज्ञान, वरता भरता मोक्षको, करता अमृत पान. १

ग्राहकोनी शुभ नामावली

२५१ श्रीविजयदेवसूर संघनी पेढी
१०० श्रीसंघ पुना (उपधाननी उपजमांथी) ह संघवी केशवलाल मणिलाल
५१ रा मोतीलाल मूलजी
५१ ,, रायचद मोतीचद झवेरी
२५ अ सौ ख मगलाना स्मरणार्थ ह वाडीलाल चत्रभुज
२५ रा नरोत्तम खेतसी
२५ ,, हीरालाल फकीरदास ह कांतिलाल
२५ ,, सकराभाइ छगुभाइ
२० ,, कोठारी सुरजमल पुनमचद
१५ श्री जैन आत्मानंद सभा (भावनगर)
१५ रा लालचद खुशालचद
११ ,, पोपटलाल उत्तमचद
११ ,, उत्तमचद मानचद
११ ,, जीवणचद केसरीचद (राधनपुर)
११ ,, बाबु जीवणलाल पनालाल जे पी / भगवानलाल ,, / मोहनलाल ,,
११ ,, भोगीलाल लहेरचद
१० ,, नगीनचद कपुरचद
५ ,, फकलभाई भूधरभाई वकील
५ ,, कान्तिलाल ईश्वरलाल मोरखीआ
५ ,, गोदडजी डोसाजी
५ ,, गोविंदजी भारमल
५ ,, चिमनलाल वीरचद
५ ,, चुनीलाल उत्तमचद
५ ,, चुनीलाल गुलाबचद
५ ,, चुनीलाल वीरचद
५ ,, चदुलाल वछराज
५ ,, जेठाभाई कशलचद
५ ,, त्रिकमलाल न्यालचद
५ ,, त्रिकमलाल मगनलाल बीरवाडीया.
५ ,, दोशी कालीदास सांकलचद
५ ,, नगीनदास लल्लुभाई झवेरी
५ ,, नेमचद अमरचद
५ ,, प्रागजी धरमशी
५ रा बापुलाल चुनीलाल
५ ,, बाबु दोलतचदजी अमीचदजी
५ ,, मोहनलाल हेमचद झवेरी
५ ,, वाडीलाल पुनमचद
५ ,, वापमल खीमराज सादडीवाला
५ श्री जैन धर्म प्रसारक सभा
५ रा हरगोविंददास हरजीवनदास
५ ,, हरीलाल पानाचद
४ ,, रवचद ऊजमचद
३ ,, नवाब साराभाई मणिलाल
३ ,, पानाचद प्रेमचद जामनगरवाला.
३ ,, मूलचद हीराचद जामनगरवाला
२ ,, अमृतलाल रायचद झवेरी
२ ,, केरीगजी मोटाजी
२ ,, केशवलाल नरपतलाल
२ ,, खीमचद तलकचद
२ ,, गोविंदजी खुशाल
२ ,, चापसीभाई वसनजी पालाणी
२ ,, चीमनलाल मणिलालनी कपनी
२ ,, चुनीलाल ऊजमचद
२ ,, जीवतलाल चद्रभाण कोठारी
२ ,, जीवनचद धरमचद
२ ,, डीसा कॅम्प श्रीसघ
२ दक्षिणविहारी मुनिराज श्रीअमरविजयजी
२ देवेन्द्रविजय (यति)
२ रा दोशी हीरालाल पुरुषोत्तम
२ ,, नागरदास हुकमचद
२ ,, पेराज मनाजी
२ ,, प्रेमजी नागरदास
२ ,, प्रेमराज महेता
२ ,, भगुभाई हीराभाई
२ भातबजारना श्रीआदीश्वरजीना देहेरासरनी पेढी
२ रा भोगीलाल प्रेमचद
२ ,, मगनभाई नगीनभाई
२ ,, मणिलाल त्रिकम नरपत
२ ,, माणेकलाल न्यालचद
२ ,, मोतीलाल नानचद
२ ,, मगलदास मोतीचद महुधावाला
२ राजपुर (डीसा) श्रीसघ.

पट पीर सात डार आठ छार पाच जार चार मार तीन फार लार तेरी फेरे है
तीन दह तीन गह पांच कह पाच लह पाच गह पाच बह पाच दूर करे है
नव पार नव धार तेरकुं विडार डार दशकु निहार पार आठ सात लरे है
आतम सुज्ञान जान करतो अगर थान हरके तिमिर मान ज्ञानमान चरे है ५५
शीतल सरूप धरे राग द्वेष वास जरे मनकी तरग हरे दोषनकी हान रे
सुदर कपाल उच कनक वरण कुच अधर अनग रुच पीक धुन गान रे
षोडश सिंगार करे जोवनके मद भरे देखके नमन चरे जरे कामरान रे
ऐसी जिन रीत मित आतम अनग जित काको मूढ वेद धीत ऐही ब्रह्मज्ञान रे ५६
हिरदेमे सुन भयो सुधता विसर गयो तिमिरअज्ञान छयो भयो महादु'खीयो
निज गुण सुज नाहि सत मत बुज नाहि भरम अरुझे ताहि परगुण रुशीयो
ताप करवेको सुर धरम न जान मूर समर कसाय वह्नि अरणमे धुखीयो
आतम अज्ञान वल करतो अनेक छल धार अवमल भयो मूढनमे मुखीयो ५७
लवन महान अग सुदर कनक रग सदन वदन चग चादसा उजासा है
रसक रसील द्र(ह)ग देख माने हार मृग शोभत मादार शृंग आतम बरासा है
सनतकुमार तन नाकनाथ गुण भन दव आय दरशन कर मन आसा है
छिनमे बिगर गयो क्या हे मूढ मान गयो पानीमें पतासा तेसा तनका तमासा है ५८
क्षीण भयो अग तोउ मूढ काम धन जोड की(क)हा करे गुरु कोउ पापमति साजी है
खे(खै)लने शींघान चाट माने सुख केरो थाट आनन उचाट मूढ ऐसी मति चाजी है
मूत ने पुरिश परि महादुरगध भरी ऐसी जोनी वास करी फेर चहे पाजी है
करतो आनेत रीत आतम कहत मित गदकीको कीरो भयो गदकीमें राजी है ५९
त्राता धाता मोक्षदाता करता अनत साता वीर धीर गुण गाता तारो अब चेरेको
तु ज (तुम) है महान मुनि नाथनके नाथ गुणी सेवु निसदिन पुनी जानो नाथ देरेको
जैसो रूप आप धरो तैसो मुज दान करो अतर न कुछ करो फेर मोह चेरेको
आतम सरण पर्यो करतो अरज खरो तेरे विन नाथ कोन मेटे भव फेरेको ? ६०
ज्ञान भान का(क)हा मोरे खान पान ता(दा)रा जोरे मन हु विहग दोरे करे नाहि थीरता
मुजसो कठोर घोर निज गुण चोर भोर डारे ब्रह्म डोर जोर फीरु जग फीरता
अब तो छी(ठि)काने चर्यो चरण सरण पर्यो नाथ शिर हाथ धर्यो अघ जाय खीरता
आतम गरीब साथ जैसी कृपा करी नाथ पीछे जो पकरो हाथ काको जग फीरता ६१
शी(खि ')लीवार ब्रह्मचारी धरमरतन धारी **जीवन** आनदकारी गुरु शोभा पावनी
तिनकी कृपा ज करी तत्त्व मत जान परि कुगुरु कुसग टरी शुद्ध मति धावनी
पढतो आनद करे सुनतो विराग धरे करतो मुगत वरे आतम सोहावनी
संवत तो मुनि कर निधि इदु सख घर तत चीन नाम कीन **उपदेशबावनी** ६२
करता हरता आतमा, धरता निरमल ज्ञान, वरता भरता मोक्षको, करता अमृत पान. १

ग्राहकोनी शुभ नामावली

२५१ श्रीविजयदेवसूर संघनी पेढी
१०० श्रीसंघ पुना (उपधाननी उपजमांथी) ह संघवी केशवलाल मणिलाल
५१ रा मोतीलाल मूलजी
५१ ,, रायचद मोतीचद झवेरी
२५ अ. सौ स्व मगलाा सरणार्थे ह वाडीलाल चत्रभूज
२५ रा नरोत्तम खेतसी
२५ ,, हीरालाल चकोरदास ह कांतिलाल
२५ ,, सकराभाइ लल्लुभाइ
२० ,, कोठारी सुरजमल पुनमचद
१५ श्री जैन आत्मानद सभा (भावनगर)
१५ रा लालचद खुशालचद
१३ ,, पोपटलाल उत्तमचद
११ ,, उत्तमचद मानचद
११ ,, जीवणचद केसरीचद (राधनपुर)
११ ,, बाबु जीवणलाल पनालाल जे पी., भगवानलाल ,, मोहनलाल ,,
११ ,, भोगीलाल लहेरचद
१० ,, नगीनचद कपुरचद
५ ,, ककलभाई भूधरभाई वकील
५ ,, कान्तिलाल ईश्वरलाल मोरखीआ
५ ,, गोदडजी डोसाजी
५ ,, गोविंदजी मारमल
५ ,, चिमनलाल वीरचद
५ ,, चुनीलाल उत्तमचद
५ ,, चुनीलाल गुलाबचद
५ ,, चुनीलाल वीरचद
५ ,, चदुलाल वछराज
५ ,, जेठाभाई कचालचद
५ ,, निकमलाल न्यालचद
५ ,, निकमलाल मगनलाल वीरवाडीया.
५ ,, दोसी कालीदास सांकलचंद
५ ,, नगीनदास ल्लुभाई झवेरी
५ ,, नेमचद अमरचद
५ ,, प्रागजी धरमसी.
५ रा बापुलाल चुनीलाल.
५ ,, बाबु दोलतचदजी अमीचदजी.
५ ,, मोहनलाल हेमचद झवेरी
५ ,, वाडीलाल पुनमचंद
५ ,, बाघमल खीमराज सादडीवाला
५ श्री जैन धर्म प्रसारक सभा
५ रा हरगोविंददास हरजीवनदास.
५ ,, हरीलाल पानाचद
४ ,, रवचद रूजमचद
३ ,, नवाब साराभाई मणिलाल.
३ ,, पानाचद प्रेमचद जामनगरवाला.
३ ,, मूलचद हीराचद जामनगरवाला
२ ,, अमृतलाल रायचद झवेरी
२ ,, केरीगजी मोटाजी
२ ,, केशवलाल नरपतलाल
२ ,, खीमचद तलकचद
२ ,, गोविंदजी खुशाल
२ ,, चापसीभाई वसनजी पालाणी.
२ ,, चीमनलाल मणिलालनी कपनी.
२ ,, चुनीलाल रूजमचद
२ ,, जीवतलाल चद्रभाण कोठारी.
२ ,, जीवनचद धरमचद
२ ,, डीसा कॅम्प श्रीसंघ.
२ दक्षिणविहारी मुनिराज श्रीअमरविजयजी
२ देवेन्द्रविजय (यति).
२ रा दोशी हीरालाल पुरषोत्तम
२ ,, नागरदास हकमचद
२ ,, पेराज मनाजी
२ ,, प्रेमजी नागरदास
२ ,, प्रेमराज महेता
२ ,, भगुभाई हीराभाई
२ भातबजारना श्रीआदीश्वरजीना दहेरासरनी पेढी
२ रा भोगीलाल प्रेमचंद
२ ,, मगनभाई नगीनभाई
२ ,, मणिलाल निकम नरपत.
२ ,, माणेकलाल न्यालचद
२ ,, मोतीलाल नानचद.
२ ,, मगलदास मोतीचद महुधावाला.
२ राजपुर (डीसा) श्रीसंघ

२ रा हीराचद ऊजमचद पालनपुरवाला
२ ,, एहुभाई फतेचद
२ ,, लाला संतराम मगतराम
२ ,, धनमालीदास रामजी
२ ,, पाथीलाल मगनलाल
२ श्रीकुसुमविजयजी जैन श्वेतांबर पुस्तकालय.
२ रा ठाकरचद हेमचद
२ श्री प्रवचन पूजक सभा (मुंबई)
१ रा अमीचद खेमचद
१ ,, अमीचद मथुतमल
१ ,, अमृतलाल पुनमचद.
१ ,, उमरीबाई धर्मपत्नी लाला सुदरमल
१ ,, कीर्तिलाल हीरालाल भणशाली
१ ,, कीसनचंद पुजारा.
१ ,, कपूरचद जेचद
१ ,, केशरीचद चोथमल
१ ,, केशरीचद पुनमचद
१ ,, केशरबेन मोहनलाल पाटणवाला.
१ ,, केशवजी नारण
१ ,, केशवलाल बालाराम.
१ ,, केशवलाल दलसुखभाई
१ ,, केशुराम तेजमाल
१ ,, कोठारी सरदारमल जेठाजी
१ ,, खेमचद छोटालाल पाटणवाला
१ ,, गडकाबाईनो तरफथी
१ ,, गिरधरलाल हरजीवन
१ ,, गुलाबचद गगाराम
१ ,, गुलाबचद तीलोकचद
१ ,, चिमनलाल न्यालचद
१ ,, चिमनलाल नगीनदास
१ ,, चदुलाल सरूपचद
१ ,, चदुलाल साराभाई मो
१ ,, चदनदेई धर्मपत्नी
१ ,, चपालाल पोपटलाल
१ ,, चुनीलाल खेतशी
१ ,, छगनलाल मगनलाल
१ ,, छोटालाल छगनलाल काजी
१ ,, छोटालाल लहेरचद
१ ,, छोटुभाई ईच्छाचद
जवानमल देवाजी

१ रा जवानमल प्रेमचदजी.
१ ,, जीवाभाई वाडीलाल.
१ ,, जुवारमल मानमल
१ ,, जुमराम गोदडचद.
१ ,, जेठमलजी मगनीरामजी
१ ,, जेसिंगलाल हीमचद पाटणवाला.
१ ,, जेसिंगलाल मोतीलाल.
१ ,, जेसिंगलाल लल्लुभाई
१ जैनानद पुस्तकालय वनकोज
१ रा झवेरचद ठाकरशी
१ ,, डाह्याभाई घेलाभाई मेसाणावाला
१ ,, डी शान्तिलाल कान्तिलाल
१ ,, तलकचद प्रेमचद
१ ,, ताराचद जसरामजजी
१ ,, ताराचद वर्धिचद
१ ,, ताराचद हीराचद
१ ,, तिलोकचद राजमल
१ ,, दलपतलाल मनसुखलाल
१ ,, दिगबरदास देवलाल
१ ,, दीपचद केवलचद चोटीलावाला
१ ,, दीपचद सुरजमलजी
१ ,, दुर्लभ देवाजी
१ ,, देवसी हरपाल
१ ,, देवीदास कानजी
१ ,, दोशी हीराचद मयाचद
सरूपचद
१ रतनचद
१
१ भगवानदास
१
१
१ कच्छी
१
१
१
१

१ रा प्राणलाल पेलजी.
१ ,, फतेहचद त्वलाद
१ ,, फुलचद केशरीचद उटडीपाला.
१ ,, फुलचद पेलजी
१ बसन्तीबाई धर्मपत्नी लाला अमरनाथ थव
१ बाई नरभेकुवर
१ बाई नानीबाई
१ रा बागलाल हीलोकचद गांधी
१ ,, बागलाल शकरलाल मुबईगरा
१ ,, बागलाल मोहनचद कापडीया
१ ,, बाबू गोपीचद बी ए, एडवोकेट
१ ,, बाबू पेलचद देवलाल.
१ ,, बालाभाई जेसिंगलाल
१ ,, बालुभाई कस्तुरचद
१ ,, बावचद जादवजी
१ ,, बमुतमल जोरानी
१ ,, भीमाजी हुकमाजी
१ ,, भोगीलाल एबचद रामातवाला
१ ,, भोगीलाल ताराचद
१ ,, भोगीलाल दोलतचद.
१ ,, भोगीलाल दोलतचद शाह
१ ,, मगनभाई कल्याणचद
१ ,, मगनलाल गिरधरदास
१ ,, मगनलाल शीवलाल
१ ,, मणियार मोतीलाल नरपतलाल
१ ,, मणियार शिवलाल नरपतलाल
१ ,, मणिलाल मोहकमचद
१ ,, मणिलाल एम् धुपेलीया.
१ ,, मणिलाल वेलचद
१ ,, मणिलाल लल्लुभाई
१ ,, मणिलाल वाडीलाल मुकादम
१ ,, मणिलाल सूरजमलजी पेढी
१ ,, मीठुलाल पुजारा
१ ,, मीठुलाल दुलीचद
१ ,, मुलजी जगजीवन मांगरोलवाला
१ ,, मेता जीवराज मगलजी पालणपुरवाला
१ मोरबी जैन लायब्रेरी
१ रा मोहनलाल छोटालाल
१ ,, मोतीलाल लक्ष्मीचद पालनपुरवाला
१ ,, मोहनलाल झवेरचद

१ रा. मोहनलाल दीपचद
१ ,, मोहनलाल धर्मसिंह
१ ,, मोहनलाल खोडीदास
१ ,, मधुभाई अमरचद
१ ,, मनुशा टीकमलाल
१ ,, रतनचद हीराचद पाटणवाला
१ ,, रतनाजी जोरानी
१ ,, रतिलाल फुलचद
१ ,, रतिलाल भीखाभाई
१ ,, रतिलाल साराभाई
१ ,, रामलाल केशवलाल मास्तर राधनपुरवाला
१ ,, रामदास कीलाचद.
१ ,, रीखवचद बालचद
१ ,, लक्ष्मीचद लल्लुभाई
१ ,, लक्ष्मीचद हेमराज कोठारी
१ ,, लाला अगरमल जगन्नाथ
१ ,, लाल अमरनाथ तीर्थराम खंडेरवाल.
१ ,, लाला कपूरचद मेहरचद
१ ,, लाला कालूमल चांदनमल
१ ,, लाला कुन्दनलाल बनारसीदास
१ ,, लाला गुलजारीमल गुनशीराम
१ ,, लाला गोपीचद किशोरीलाल
१ ,, लाला गोपीचद रिषभदास
१ ,, लाला गोराभल अमरनाथ
१ ,, लाला गगाराम बनारसीदास
१ ,, लाला चांदनमल रतनचद
१ ,, लाला जयकिशनदास पारसदास
१ ,, लाला ताराचद निहालचद
१ ,, लाला तुलसीदास भोलानाथ (जैन).
१ ,, लाला दीपचद किशोरीलाल
१ ,, लाला दोलतराम रतनचद सराफ
१ ,, लाला दौलतराम ताराचद
१ ,, लाला नेमदास रतनचद.
१ ,, लाला परसराम जैन
१ ,, लाला पारसदास तीर्थदास
१ ,, लाला फग्गूमल प्यारेलाल
१ ,, लाला मलखीराम सराफ
१ ,, लाला महेरचद दीनानाथ मनसोवाई.
१ ,, लाला मुन्शीराम देवराज
१ ,, लाला मेघराज दुर्गादास गौरावाई

२ रा रीखवचद ऊजमचद पालनपुरवाला
२ ,, लल्लुभाई करमचंद
२ ,, लाला संतराम भगतराम
२ ,, वनमालीदास रामजी
२ ,, वाडीलाल मगनलाल
२ श्रीकुसुमविजयजी जैन श्वेतांबर पुस्तकालय
२ रा शाकरचद हेमचंद
२ श्री प्रवचन पूजक सभा (मुंबई)
१ रा अमीचद खेमचद
१ ,, अमीचद भभुतमल
१ ,, अमृतलाल पुनमचद
१ ,, उमरीबाई धर्मपत्नी लाला सुदरमल
१ ,, कीर्तिलाल हीरालाल भणशाली
१ ,, कीसनचद पुजाशा
१ ,, कक्कुचद जेचद
१ ,, केशरीचद चोकमल
१ ,, केशरीचद पुनमचद
१ ,, केशरबेन मोहनलाल पाटणवाला
१ ,, केशवजी नारण
१ ,, केशवलाल बालाराम
१ ,, केशवलाल दलसुखभाई
१ ,, केशुराम तेजमाल
१ ,, कोठारी सरदारमल जेठाजी
१ ,, खेमचद छोटालाल पाटणवाला.
१ ,, गडकाबाईओ तरफथी
१ ,, गिरधरलाल हरजीवन
१ ,, गुलाबचद गगाराम
१ ,, गुलाबचद तीलोकचद
१ ,, चिमनलाल न्यालचद
१ ,, चिमनलाल नगीनदास
१ ,, चदुलाल सरूपचद
१ ,, चदुलाल साराभाई मोदी बी ए
१ ,, चदनदेई धर्मपत्नी लाला गोकुलचद
१ ,, चपालाल पोपटलाल
१ ,, चुनीलाल खेतसी धानेरावाला
१ ,, छगनलाल मगनलाल
१ ,, छोटालाल छगनलाल काजी
१ ,, छोटालाल लहेरचद
१ ,, छोटुभाई ईच्छाचद.
१ ,, जवानमल देवाजी
१ रा जवानमल प्रेमचदजी.
१ ,, जीवाभाई वाडीलाल.
१ ,, जुहारमल मानमल
१ ,, जुमखराम गोदडचद.
१ ,, जेठमलजी भगीरामजी.
१ ,, जेसिंगलाल खीमचद पाटणवाला
१ ,, जेसिंगलाल मोतीलाल.
१ ,, जेसिंगलाल लल्लुभाइ
१ जैनानद पुस्तकालय बाकोडा
१ रा झवेरचद ठाकरशी.
१ ,, डाह्याभाई मेलाभाई मेसाणावाला.
१ ,, श्री शान्तिलाल कान्तिलाल
१ ,, तलकचद प्रेमचद
१ ,, ताराचद जसरामजजी
१ ,, ताराचद धर्मचद
१ ,, ताराचद हीराचद
१ ,, तिलोकचद राजमल
१ ,, दलपतलाल मनसुखलाल
१ ,, दिगंबरदास देवलाल
१ ,, दीपचद केवलचद चोटीलावाला
१ ,, दीपचद सुरजमलजी
१ ,, दुर्लभ देवाजी
१ ,, देवसी हरपाल
१ ,, देवीदास कानजी
१ ,, दोशी हीराचद मयाचद
१ ,, धीरजलाल सरूपचद
१ ,, नगीनदास रतनचद
१ ,, नथमल मुलचद
१ ,, नरोतमदास भगवानदास
१ ,, नवलाजी फुवाजी
१ ,, नानाभाई दीपचद
१ ,, नेणसी आशु कच्छी
१ ,, न्यालचद सरूपचद पाटणवाला.
१ ,, पारोबाई धर्मपत्नी लाला हरदयाल जोधांवाला
१ ,, पारेख नेमचद सोजी
१ पालनपुर जैनशाला
१ रा पारी दलपतलाल चदुलाल
१ ,, पुनमचद मोतीचद
१ ,, पोखराज धनराज मुता
१ ,, पोपटलाल पुजाशा.
१ ,, प्रागजी चनाजी.

१ रा. प्राणलाल वेलजी.
१ ,, फतेहचंद नवलचंद
१ ,, फुलचंद केशरीचंद उटडीवाला.
१ ,, फुलचंद वेलजी
१ बसन्तीबाई धर्मपत्नी लाला अमरनाथ वच
१ बाई नरमेकुवर
१ बाई नाथीबाई
१ रा बागलाल तीलोकचंद गांधी
१ ,, बागलाल बकरलाल मुवईगरा
१ ,, बागशल मोहनचंद कापडीया
१ ,, बाबू गोपीचंद बी ए, एडवोकेट
१ ,, बाबू वेलचंद देवलाल.
१ ,, बालाभाई जेसिंगलाल
१ ,, बल्लुभाई कस्तुरचंद
१ ,, बावचंद जादवजी.
१ ,, भभुतमल जोराजी
१ ,, भीमाजी हुकमाजी
१ ,, भोगीलाल खुबचंद खभातवाला
१ ,, भोगीलाल ताराचंद
१ ,, भोगीलाल दोलतचंद
१ ,, भोगीलाल दोलतचंद शाह
१ ,, मगनभाई कल्याणचंद
१ ,, मगनलाल गिरधरदास
१ ,, मगनलाल शीवलाल
१ ,, मणियार मोतीलाल नरपतलाल
१ ,, मणीयार शिवलाल नरपतलाल
१ ,, मणिलाल मोहकमचंद
१ ,, मणिलाल एम् घुपेलीया.-
१ ,, मणिलाल वेलचंद
१ ,, मणिलाल ल्हुभाई
१ ,, मणिलाल वाडीलाल मुकादम
१ ,, मणिलाल सूरजमलजी वेदी
१ ,, मीठुलाल पुजारा
१ ,, मीठुलाल दुलीचंद
१ ,, मुलजी आणंदजी मांगरोलवाला
१ ,, मेता शीवराज मगलजी पालनपुरवाला
१ मोरवी जैन लायब्रेरी
१ रा मोहनलाल छोटालाल
१ ,, मोतीलाल लक्ष्मीचंद पालनपुरवाला
१ ,, मोहनलाल झवेरचंद

१ रा. मोहनलाल दीपचंद.
१ ,, मोहनलाल धर्मसिंह.
१ ,, मोहनलाल खोडीदास
१ ,, मल्लुभाई अमरचंद
१ ,, मजुशा टीकमलाल.
१ ,, रतनचंद हीराचंद पाटणवाला.
१ ,, रतनाजी जोराजी
१ ,, रतिलाल फुलचंद
१ ,, रतिलाल मीखाभाई
१ ,, रतिलाल साराभाई
१ ,, रामलाल केशवलाल मास्तर राधनपुरवाला
१ ,, रामदास फीलाचंद
१ ,, रीखवचंद बालचंद
१ ,, लक्ष्मीचंद ल्हुभाई
१ ,, लक्ष्मीचंद हेमराज कोठारी
१ ,, लाला अगरमल जगन्नाथ
१ ,, लाल अमरनाथ तीर्थराम खंडेलवाल
१ ,, लाला कपूरचंद मेहरचंद
१ ,, लाला कालूमल चांदनमल
१ ,, लाला कुन्दनलाल बनारसीदास.
१ ,, लाला गुलजारीमल मुनशीराम
१ ,, लाला गोपीचंद किशोरीलाल
१ ,, लाला गोपीचंद रिषभदास
१ ,, लाला गोरामल अमरनाथ
१ ,, लाला गगाराम बनारसीदास
१ ,, लाला चांदनमल रतनचंद
१ ,, लाला जयकिशनदास पारसदास.
१ ,, लाला ताराचंद निहालचंद.
१ ,, लाला तुलसीदास भोलानाथ (गेटन).
१ ,, लाला दीपचंद किशोरीलाल
१ ,, लाला दोलतराम रतनचंद सराफ
१ ,, लाला दौलतराम ताराचंद.
१ ,, लाला नेमदास रतनचंद.
१ ,, लाला परसराम जैन
१ ,, लाला पारसदास तीर्थदास
१ ,, लाला फगूमल प्यारेलाल
१ ,, लाला मखीराम सराफ
१ ,, लाला महेरचंद दीनानाथ मनसोवाई.
१ ,, लाला मुन्शीराम देवराज
१ ,, लाला मेघराज दुर्गादास गीरावाई.

१ रा. लाला राधामल जोतिप्रसाद
१ ,, लाला राधामल नत्थुमल (जीरा)
१ ,, लाला रामप्रसाद किशोरीलाल जैन.
१ ,, लाला रामशरणदास विलायतीराम
१ ,, लाला वसतामल महरचद.
१ ,, लाला सदासुखराय मुनीलाल.
१ ,, लाला हरिचद इद्रशेन
१ ,, लाला हसराज (पपनाखा).
१ ,, लेरुभाई ल्यालचद
१ ,, वमलसी जीतमल.
१ ,, वाडीलाल कशलचद
१ ,, वाडीलाल मगनलाल.
१ ,, वाडीलाल मगनलाल वडोदरावाला.
१ ,, वाडीलाल हरजीवनदास (अमलनेर)
१ ,, विठलदास हरखचद
१ ,, विठलदास गोविंदराम
१ ,, वीरचद पानाचद बी. ए
१ ,, वीजपाल भोजराज कच्छपत्री.
१ ,, वृजलाल वी. पटेल
१ ,, वृजलाल मीठाभाई
१ ,, शेठ ब्रधर्स
१ श्री आत्मानद जैनपुस्तकभडार (मालेरकोटला)
१ श्री आत्मानद पुस्तकालय (आशापुर)
१ श्रीकर्पूरविजय जैन पाठशाळा.
१ श्री जैन लोंका गच्छ ज्ञानवर्धक लायब्रेरी (बालापुर)
१ श्री वर्धमानज्ञानमंदिर
१ श्री वीरतत्त्वप्रकाशकमडल (शिवपुरी).
१ श्री सनातन जैन विद्यार्थी.
१ श्री सीनोर संघ.
१ श्री सुमति विजय जैन लायब्रेरी, कसूर (ल
१ श्री सघ खामगाह डोगरा.
१ श्रीहसविजय जैन लाइब्रेरी (अमदावाद)
१ ,, ,, ,, (वडोदरा)
१ रा सरदारमल फुलचदजी.
१ रा. सुरचद नगीनचद, (मुबई)
१ ,, सुरचद नगीनचद (पाटण)
१ ,, सोनराज हेमराज मुत्ता.
१ ,, हरलाल सुदरलाल
१ ,, हरजीवन गोपालजी
१ ,, हरिचद मीठाभाई
१ ,, हरिलाल मनसुखलाल.
१ ,, हरिलाल सोभागचद.
१ ,, हीमतलाल माधवलाल.
१ ,, हीराचद फकीरचद
१ ,, हीराभाई अमीचद
१ ,, हीराभाई रामचद मलबारी
१ ,, हीरालाल रायचद